सत्यमेव जयते

स्कूल शिक्षा विभाग–राजस्थान सरकार

(प्रारम्भिक व माध्यमिक शिक्षा)

स्टेट इनिशिएटिव फॉर क्वालिटी एज्यूकेशन

बाल केन्द्रित शिक्षण

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन

स्त्रोत पुस्तिका

(टीचर हैण्डबुक)

हिन्दी, पर्यावरण अध्ययन

कला एवं शारीरिक शिक्षा के समेकन सहित

(प्राथमिक कक्षा के शिक्षकों के लिए)

रा.उ.मा.वि./मा.वि में संचालित

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान

सब पढ़ें सब बढ़ें

पढ़े चलो, बढ़े चलो

RASHTRIYA MADHYAMIK SHIKSHA ABHIYAN

स्रोत पुस्तिका

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन

प्रथम संस्करण – मई : 2012
द्वितीय संस्करण – मई : 2013
तृतीय संस्करण – सितम्बर : 2014
चतुर्थ संस्करण – जून : 2015

© स्कूल शिक्षा विभाग–राजस्थान सरकार
(प्रारम्भिक व माध्यमिक शिक्षा)

प्रकाशक :
राजस्थान प्रारंभिक शिक्षा परिषद एवं
राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद
शिक्षा संकुल, जे.एल.एन. मार्ग,
जयपुर।

'स्टेट इनिशिएटिव फॉर क्वालिटी एज्यूकेशन' (S.I.Q.E.) के विकास एवं क्रियान्वयन में सहभागी संस्थाएँ

राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद्

एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर

बोध शिक्षा समिति

यूनिसेफ, जयपुर

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद्

सत्यमेव जयते

स्कूल शिक्षा विभाग-राजस्थान सरकार

(प्रारम्भिक व माध्यमिक शिक्षा)

स्त्रोत पुस्तिका

(टीचर हैण्डबुक)

हिन्दी, पर्यावरण अध्ययन

कला एवं शारीरिक शिक्षा के समेकन सहित

(प्राथमिक कक्षा के शिक्षकों के लिए)

रा.उ.मा.वि./मा.वि में संचालित

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान

सब पढ़ें सब बढ़ें

पढ़े चलो, बढ़े चलो

RASHTRIYA MADHYAMIK SHIKSHA ABHIYAN

हमें स्रोत पुस्तक की ज़रूरत क्यों है ?

इस स्रोत पुस्तक में शिक्षकों द्वारा प्रायः पूछे जाने वाले प्रश्नों का उत्तर देने की कोशिश की गई है। यह पुस्तिका अध्यापन–अधिगम प्रक्रिया को बच्चों के आकलन के अभिन्न अंग के रूप में आसान बनाती है। यह उन सभी शिक्षकों के समक्ष बहुत से विचार तथा तरह–तरह के विकल्प प्रस्तुत करती है, जो आकलन के विभिन्न पहलुओं से संबंधित निर्णय लेते हैं। इस स्रोत पुस्तिका को निम्नलिखित लक्ष्यों के आधार पर तैयार किया गया है –

- शिक्षकों की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर समझ बनाना–
  - बच्चों का आकलन क्यों किया जाना चाहिए ?
  - किस बात का आकलन करना चाहिए ?
  - आकलन कब करना चाहिए ?
  - आकलन कैसे किया जाना चाहिए ?
  - आकलन द्वारा प्राप्त सूचनाओं का उपयोग किस तरह करना चाहिए ?
- राजस्थान के संदर्भ में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया के चरणों एवं फॉरमेट्स (formats) की जानकारी देना।
- विषय की प्रकृति, प्राथमिक स्तर पर विषय शिक्षण के व्यापक उद्देश्य एवं उच्चस्तरीय कौशल तथा विषय शिक्षण की नयी दृष्टि पर शिक्षकों की समझ बनाना।
- कक्षा–कक्ष में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया के क्रियान्वयन पर उदाहरण सहित शिक्षकों की समझ बनाना।
- एसआईईआरटी की पाठ्यपुस्तकों पर बच्चों के साथ काम कराते हुए सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के क्रियान्वयन पर समझ बनाने हेतु अवधारणा / पाठ / थीम की तैयारी किस तरह की जानी चाहिए, इस पर समझ बनाना।

हम उम्मीद करते हैं कि जैसे–जैसे आप इस स्रोत पुस्तक को पढ़ेंगे, समझेंगे और विभिन्न अध्यायों में प्रस्तुत विचारों को ट्रायल करेंगे तो उससे बच्चे 'क्या और कैसे सीखते हैं' के बारे में और गहरी समझ बनाने में मदद मिलेगी। विद्यालय उनके लिए आनंददायी स्थान कैसे बन सकेगा, बच्चों के अधिगम को बेहतर बनाने में हमारी क्या भूमिका होगी, इसे ठीक से समझ पाएँगे।

अनुक्रमणिका

अध्याय	विषयवस्तु	पृष्ठ संख्या
	हमें स्रोत पुस्तक की ज़रूरत क्यों है ?	
1	सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन/आकलन*	1 – 21
2	राजस्थान के संदर्भ में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया	22 – 35
3	भाषा की प्रकृति : हिन्दी	36 – 44
4	अधिगम उद्देश्यों के सापेक्ष आकलन सूचक	45 – 51
5	सीखना और आकलन	52 – 91
6	विषय की प्रकृति एवं ज्ञान निर्माण प्रक्रिया : पर्यावरण अध्ययन	92 – 102
7	सीखना और आकलन	103 – 117
8	कक्षा–कक्ष से गतिविधियाँ	118 – 152
9	कला की ज़रूरत : उद्देश्य	153 – 160
10	विषयों और कलाओं का इंटीग्रेशन	161 – 167
11	स्वास्थ्य एवम् शारीरिक शिक्षा	168 – 169
	संलग्नक	170 – 186
	संलग्नक–2	156 – 159

अध्याय– 1

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन/आकलन*

प्रस्तावना

हम सभी बच्चों के बारे में चिंतित हैं और इसीलिए हम सबका सरोकार इस बात से है कि हर स्कूल एक ऐसी जगह बने जहाँ हर बच्चे को सीखने के मौके मिलें। बच्चों की शिक्षा से जुड़े सभी लोग, विशेषकर शिक्षक इस संबंध में अपने आपको बहुत ही जिम्मेदार मानते हैं। ऐसा उनकी इच्छाओं से जाहिर होता है कि वे सभी बच्चों को उनके गुण और रुचियों के विकास में मदद करने के लिए तत्पर हैं। वे उन्हें विश्वास के साथ अपनी ज़िंदगी का सामना करने के लिए तैयार करना चाहते हैं। शिक्षकों का काफ़ी समय तो इसी बात का पता लगाने में निकल जाता है कि बच्चे स्कूल में कैसा कर पा रहे हैं। बहुत से शिक्षक आकलन को अपने स्कूल की रोज़मर्रा की महत्त्वपूर्ण गतिविधि के रूप में देखते हैं। शिक्षक विद्यालय में दैनिक आधार पर जो कुछ भी करते हैं, बच्चों का आकलन उनका एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। ऐसा क्यों है ?

शिक्षक इसके लिए बहुत से कारण बताते हैं– एक महत्त्वपूर्ण कारण यह जानना है कि बच्चों को जो कुछ भी सीखना चाहिए, क्या वे सीख पा रहे हैं ? दूसरी वजह एक अवधि विशेष में बच्चों की प्रगति के बारे में भी जानकारी प्राप्त करना है। जो भी हो तीसरी वजह, जिसको सिर्फ़ शिक्षक ही नहीं बल्कि हम सभी बहुत ही महत्त्वपूर्ण मानते हैं, वह यह पता लगाना है कि बच्चे की भिन्न–भिन्न विषय/क्षेत्रों में क्या उपलब्धियाँ रहीं। ऐसा शायद इसलिए कि हम बच्चों को 'अच्छी क्वालिटी' (गुणवत्ता) वाली शिक्षा देना चाहते हैं और महसूस करते हैं कि ऐसा तभी संभव हो सकता है जब टैस्ट और परीक्षाओं के ज़रिए पढ़ाए गए विषयों में बच्चों की उपलब्धियों का मूल्यांकन किया जाए। परीक्षणों (टैस्टों) का अपना एक उद्देश्य है पर यदि हम वास्तव में बच्चों को बेहतर तरीके से सीखने में मदद करना चाहते हैं तो हमें यह बात खास तौर से समझने की ज़रूरत है कि टैस्ट/परीक्षाओं में बच्चे द्वारा प्राप्त किए गए अंक और ग्रेड बच्चों की प्रगति या सीखने के बारे में क्या कुछ विशेष बता पाते हैं।

1.1 आकलन–किसलिए ?

आइए, नीचे दिए गए उदाहरण पर नज़र डालते हैं, एक शिक्षक होने के नाते अपने विद्यालय में इस तरह के हालातों से आपका बहुत बार सामना हुआ होगा।

*यह अध्याय एनसीईआरटी द्वारा तैयार की गई आकलन स्रोत पुस्तिका (प्राथमिक स्तर की कक्षाओं के लिए) से साभार लिया गया है।

एक प्राथमिक विद्यालय में कक्षा चार के बच्चों को पर्यावरण अध्ययन के अंतर्गत उनकी पाठ्यपुस्तक के जल से संबंधित अध्याय पर आधारित एक टैस्ट दिया गया। तीस बच्चों में से अधिकतर बच्चों ने 10 में से 6 अंक प्राप्त किए हैं। दो बच्चे जिनमें से मैथिली के आठ और रमन के 10 में से 3 अंक आए हैं। शिक्षक ने कक्षा में जब अंक बताए, तभी बच्चे रमन के अंक सुनकर हँसे और उसका मज़ाक भी बनाया क्योंकि उसके अंक सबसे कम थे। उस दिन के बाद से

रमन ने कभी नहीं चाहा कि वह स्कूल जाए। उसके माता–पिता के लिए उसे स्कूल जाने के लिए तैयार करना, मनाना बहुत ही कठिन था। ये अंक शिक्षक, माता–पिता या मैथिली और रमन की शिक्षा से सरोकार रखने वाले किसी को भी क्या बताना चाहते हैं ? क्या ये अंक यह बता पाएँगे कि दोनों बच्चों ने क्या और कैसे सीखा और वे दोनों क्या–क्या कर सकते हैं ?क्या ये अंक शिक्षकों को बता पाएँगे कि मैथिली और रमन की ज़रूरतों के आधार पर उनके लिए अध्यापन और सीखने की प्रक्रिया में कैसे सुधार लाया जाए ?

क्या ये अंक मैथिली और रमन दोनों बच्चों को उनके सीखने के संबंध में किसी तरह का संकेत दे पाएँगे कि आगे किस तरह का सुधार लाया जा सके ?बच्चों द्वारा प्राप्त किए गए अंक क्या किसी भी तरह से उनके माता–पिता या समुदाय के सदस्यों को उनकी प्रगति और सीखने के बारे में कोई उपयोगी रिपोर्ट या पृष्ठपोषण (Feedback) दे पाएँगे कि दोनों बच्चों में से कौन क्या जानता है ?

दुर्भाग्य से हो क्या रहा है कि इस तरह के मूल्यांकन से कुछ बच्चों को असुरक्षा, तनाव, चिंता और अपमान जैसी स्थितियों का सामना करना पड़ता है जैसा कि रमन के साथ भी हुआ। मूल्यांकन से सिर्फ़ यही पता लगता है कि बच्चे कितना नहीं जानते बजाए इसके कि बच्चे क्या जानते हैं और क्या कर सकते हैं ? इस तरह का मूल्यांकन पाठ्यपुस्तकों में पढ़ाई गई विषयवस्तु और रटंत प्रणाली द्वारा प्राप्त की गई जानकारी / ज्ञान का आकलन करने तक ही केंद्रित है। अधिकांशतः यह बच्चों में तुलना करने जैसे भाव रखता है और अवाँछनीय प्रतिस्पर्धा को जन्म देता है, यहाँ तक कि मात्र आधे अंक के लिए भी क्या शिक्षक होने के नाते हम चाहते हैं कि सभी बच्चे सीखें ?यदि ऐसा है तो आकलन के ज़रिए हम उनमें क्या खोजते हैं ?

आप इस सच्चाई को तो ज़रूर स्वीकार करेंगे कि इस तरह की स्थितियाँ विद्यालयों में अकसर देखी जाती हैं। स्थितियाँ कुछ महत्त्वपूर्ण सवालों की तरफ़ हमारा ध्यान खींचती हैं– हम वास्तव में किस चीज का आकलन कर रहे हैं ?क्या टैस्टों / परीक्षाओं के अतिरिक्त बच्चों का आकलन करने के कुछ और तरीके भी हो सकते हैं ? क्या अंकों और ग्रेड के रूप में रिपोर्ट करना पर्याप्त है ? आकलन संबंधी सूचनाएँ किस तरह की मदद करती हैं ? हम अपने काम को कठिन बनाए बगैर बच्चों के सीखने के बारे में सूचनाएँ किस तरह की इकट्ठी कर सकते हैं ? आखिरी सवाल बहुत ही महत्त्वपूर्ण है क्योंकि पूरे देश भर में शिक्षक रोज़ाना ही बहुत–सी समस्याओं का सामना करते हैं जैसे– विद्यार्थियों की अधिक संख्या, एक साथ दो–तीन या कभी–कभी तो इससे भी अधिक कक्षाओं को एक साथ बैठाकर पढ़ाना, इसके साथ उन्हें ऐसे बच्चों को पढ़ाना होता है, जो भिन्न–भिन्न पृष्ठभूमि से आते हैं, भिन्न–भिन्न भाषाएँ बोलते हैं और जिनकी विशेष आवश्यकताएँ भी होती हैं। शिक्षकों और उन सभी में, जो चाहते हैं कि बच्चे अपनी अधिकतम योग्यता के अनुसार सीखें, अधिक समय, धैर्य और समझ की ज़रूरत है। इस तरह की स्थितियों में शिक्षकों की मदद किस तरह से की जा सकती है ?

1.2 बच्चों और उनके सीखने के बारे में समझ बनाना :

एक पल के लिए हमें अपने बचपन की ओर लौटना होगा और वर्तमान समय की कक्षाओं और बच्चों के बारे में सोचना होगा जिन्हें हम पढ़ाते हैं। आप इस बात से तो ज़रूर सहमत होंगे कि हर बच्चे की अपनी पसंद, नापसंद, रुचियाँ, कौशल और व्यवहार के तरीके होते हैं। इस प्रकार हर बच्चे अपने आप में अद्वितीय है। चूँकि प्रत्येक बच्चा अपने आप में एक अद्वितीय व्यक्ति तथा किसी भी स्थिति के प्रति अपने ही ढंग से प्रतिक्रिया करता है। इसलिए बच्चों का आकलन करते समय यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि हम उनमें पाई जाने वाली भिन्नताओं को पहचान सकें और इस सच्चाई को भी स्वीकार करें कि वे सीखने के दौरान भिन्न तरीके से प्रतिक्रिया करते और समझते हैं।

आपने इस बात पर ज़रूर गौर किया होगा कि जब बच्चे पहली कक्षा में प्रवेश करते हैं तब उनके पास बहुत से अनुभव होते हैं और ज्ञान के कुछ प्रकारों का आधार भी होता है। बच्चे न तो 'कोरी स्लेट' हैं, जिन्हें उन सूचनाओं और ज्ञान से भरना है जो शिक्षक के ही पास है। आमतौर पर ऐसा ही सोचा जाता है। बच्चे विद्यालय में जिन अनुभवों के साथ आते हैं और जो भी वे जानते हैं उन्हीं को सीखने की प्रक्रिया का आधार बनाना महत्त्वपूर्ण है। बच्चे पहले से जो भी जानते और समझते हैं उसके आधार पर ही आगे कुछ सिखाने की योजना बननी चाहिए। इसके साथ ही यह समझना भी आवश्यक है कि प्राथमिक स्तर पर बच्चे कैसे सीखते हैं क्योंकि इसी आधार पर सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के दौरान बच्चों के आलकन की प्रक्रिया सुनिश्चित की जा सकती है। कुछ महत्त्वपूर्ण पहलू इस तरह हैं–

- सभी बच्चे सीख सकते हैं यदि उन्हें अपनी ही गति से सीखने दिया जाए और सीखने के अपने ही तरीकों का अनुसरण करने दिया जाए,
- बच्चे स्वाभाविक तौर पर खेल के माध्यम से सीखते हैं। वे एक–दूसरे से बहुत अच्छी तरह सीखते हैं जब वे वास्तव में किसी काम को करने की प्रक्रिया से जुड़े होते हैं,
- सीखना एक सतत् प्रक्रिया है इसलिए 'सीखना' सिर्फ़ विद्यालय में ही नहीं होता। अतः कक्षा में सीखने की प्रक्रिया को घर में जो कुछ भी हो रहा है उससे जोड़ा जाना ज़रूरी है,
- बच्चे अपने ज्ञान का निर्माण स्वतः करते हैं और केवल तभी नहीं सीखते, जब शिक्षक पढ़ाते हैं। प्राथमिक स्तर पर बच्चे ठोस अनुभवों, खेल, खोजबीन, बहुत–सी चीज़ों के साथ परीक्षण और बहुत–सी गतिविधियों को वास्तविक रूप से करते हुए बेहतर और अधिक आसानी से सीखते हैं,
- बच्चों के सीखने की दिशा एक सीधी रेखा में नहीं चलती, वह घुमावदार होती है यानी कि वे पहले सीखी गई अवधारणाओं तक पुनः पहुँचते हैं और इससे उनकी समझ बेहतर ही होती है,
- सीखने के कार्य से जुड़ी हुई है, बच्चों द्वारा अवलोकित और महसूस किए गए तथ्यों से जुड़ाव बना पाने की प्रक्रिया जो कुछ भी नया सीखा जा सकता है वह दिए जा रहे तथ्यों और सूचनाओं पर ही आधारित नहीं होता पर उन सबसे भी जुड़ा हुआ होता है और उस सबसे जोड़ा जा सकता है जो विद्यालय, घर या कहीं भी हासिल किया गया होगा। इसलिए सीखना सीधी रेखा में कभी भी नहीं हो सकता है।
- सीखना 'समग्रता' में ही संभव है न कि तब जब ज्ञान को छोटे–छोटे टुकड़ों में तोड़ा जाए या विषयों में बाँटा जाए। इसलिए सीखने के लिए समेकित विधि ही बेहतर है,
- यह देखा जाता है कि प्राथमिक स्तर पर बच्चे एक–दूसरे के साथ अंतःक्रिया (खेलते–कूदते, हँसते–गाते) करते हुए बेहतर तरीके से सीख पाते हैं,
- सीखने के दौरान बच्चे बहुत–सी गलतियाँ भी करते हैं जो उनके सीखने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग हैं। इसलिए गलतियाँ करके ही वे सीखते हैं।
- गलतियाँ बच्चों को विश्लेषण व तुलना करने का अच्छा अवसर उपलब्ध कराती हैं। जिससे अवधारणाओं पर बेहतर समझ बनाने एवं विभिन्न संदर्भो/परिस्थितियों में अनुप्रयोग करने की समझ बनती है।

उनके सीखने को खेल, अनुकरण, अभ्यास, मूर्त से अमूर्त की ओर ले जाकर, सरल से जटिल की ओर ले जाकर

बढ़ावा दिया जा सकता है और समूची अधिगम प्रक्रिया को आनंदमयी और स्फूर्तिदायक बनाकर भी। इसका तात्पर्य यह है कि सभी बच्चे दी जा रही सूचनाओं के अर्थ अपने पूर्व अनुभवों और अधिगम के आधार पर अपनी ही तरह से बना लेते हैं। यही प्रक्रिया बच्चे को अपनी समझ बनाने और निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित करती है। ज्ञान तक पहुँचने, उसे हासिल करने की हर बच्चे की अपनी एक अनोखी पद्धति होती है। यह प्रक्रिया लगातार चलती रहती है।

1.3 विद्यालय और कक्षा की समझ

कक्षा में चल रही सीखने–सिखाने की प्रक्रिया काफ़ी हद तक विद्यालय, परिवेश और उसकी संस्कृति पर निर्भर करती है। एक सुरक्षित चिंतामुक्त, सुविधाजनक और खुशनुमा विद्यालयी परिवेश बच्चों को बेहतर तरीके से सीखने और कुछ अधिक हासिल करने में मदद करता है। इस प्रयोजन को ध्यान में रखते हुए विद्यालय के लिए ज़रूरी है कि विद्यालय में आवश्यक सुविधाएँ हों जैसे– सीखने की सामग्री, सहायक सामग्री, उपकरण और गतिविधियाँ आयोजित करने के लिए साथ–साथ काम करने तथा खेलने के लिए उपयुक्त स्थान। प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों के सीखने को खेल विधियों और बाल केंद्रित पद्धतियों द्वारा उन्नत किया जा सकता है। आजकल 'बाल केंद्रित' शब्दावली बहुत अधिक प्रचलन में है, इससे क्या अभिप्राय है ?हम दो कक्षाओं पर नज़र डालते हैं, एक शिक्षक केंद्रित है और दूसरी बाल केंद्रित है, दोनों की गतिविधियों पर नज़र डालने से 'बाल केंद्रित' के अर्थ स्पष्ट होंगे। तस्वीर आगे दी गई है।

इन तस्वीरों के आधार पर निश्चित तौर पर हम 'बाल केंद्रित' कक्षा में ही काम करना चाहेंगे और इस तरह की व्यवस्था वाली कक्षा में आकलन के लिए –

- बाल केंद्रित पद्धतियाँ इस्तेमाल होंगी, शिक्षार्थियों के बीच पाए जाने वाले अंतरों को ध्यान में रखा जाएगा,
- आकलन प्रत्येक बच्चे की ज़रूरत, गति और सीखने के तरीकों को ध्यान में रखते हुए किया जाएगा,
- लचीलापन लिए हुए होगा,
- सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग होगा,
- सतत् और सारगर्भित होगा।

यहाँ दिखाई जा रही तस्वीर उस कक्षा की तस्वीर है जिसे वास्तव में हम चाहते हैं। इसे बाल केंद्रित कक्षा कहा जाता है। इस तरह की कक्षाओं में आकलन की प्रक्रिया कुछ इस तरह की होगी–

- बाल केंद्रित कक्षा में पाई जाने वाली विविधता को समझने वाली प्रक्रिया,
- हर बच्चे की ज़रूरत, गति और सीखने की शैली के अनुसार चलने वाली प्रक्रिया,
- ज़रूरत के अनुसार तथा बच्चे की आयु और स्तर के अनुसार चलने वाली लचीली प्रक्रिया,
- सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग सतत् और सारगर्भित।

दो कक्षाओं की तस्वीर

अध्यापक केंद्रित कक्षा

- अध्यापक निर्देश देते हैं और बच्चों से आज्ञापालन व अनुशासन की अपेक्षा करते हैं।
- अध्यापक के पढ़ाने के दौरान बच्चे सुनते हैं,
- अध्यापक पाठ्यपुस्तक पढ़ते हैं, श्यामपट्ट पर प्रश्न और उत्तर लिखते हैं। कभी–कभी एक बच्ची ज़ोर–ज़ोर से पढ़ती है, बाकी सुनते हैं,
- बच्चे पाठ्यपुस्तक में दिए गए तथ्यों या अध्यापक द्वारा बताए गए तथ्यों को याद करते हैं,
- कक्षा में अध्यापक का नियंत्रण रहता है। बच्चों की भागीदारी बहुत कम होती है,
- बच्चे आमतौर पर अकेले (स्वयं) ही सीखते हैं,
- समय सारणी में लचीलेपन का अभाव होता है,
- बैठने की व्यवस्था भी पहले से ही तय होती है,
- सामग्री केवल प्रदर्शन के लिए होती है,
- बच्चों में अधिकांश समय उकताहट और अरुचि का भाव रहता है।

बाल केंद्रित कक्षा

अध्यापक सीखने के अवसर प्रदान करते हैं और सीखने को दिशा देते हैं,

बच्चे तरह–तरह की गतिविधियों और कार्यकलापों में क्रियाशील होकर जुड़े रहते हैं,

किसी भी व्यक्ति के बाहर से आने पर बच्चों के लिए व्यवधान उपस्थित नहीं होता, चूँकि बच्चे काम में संलग्न रहते हैं अतः अध्यापिका ही बाहर आ जाती है।

समय सारणी में लचीलापन होता है और बच्चे क्या करना चाहते हैं, उन पर निर्भर करता है,

तरह–तरह की सामग्री, उपकरण कक्षा में उपलब्ध रहते हैं और बच्चे इनका इस्तेमाल करते हैं,

गतिविधि के अनुसार बैठने की व्यवस्था में परिवर्तन होता रहता है,

बच्चे व्यक्तिगत रूप से भी कार्य करते हैं और समूह में भी वे चर्चा करते हैं, अनुभव बाँटते हैं, सहयोग करते हैं और एक–दूसरे के विचारों का आदर करते हैं,

अध्यापक बच्चों के लिए ऐसी सीखने की स्थितियाँ उत्पन्न करते हैं जहाँ बच्चों को अवलोकन करने, खोजबीन करने, प्रश्न करने, अनुभव लेने और विभिन्न अवधारणाओं के प्रति अपनी समझ बनाने के अवसर मिलते हैं,

बच्चे स्वयं ही ज्ञान का निर्माण करते हैं जो उनके विद्यालय के बाहर प्राप्त अनुभवों पर आधारित होता है

1.4 बच्चों का आकलन क्यों किया जाना चाहिए ?

हम सभी बच्चों के सीखने और अच्छी शिक्षा पाने को लेकर चिंतित हैं, प्राथमिक कक्षाओं में आकलन क्यों किया जाना चाहिए, इसके बहुत से कारण हैं। हम कुछ मुख्य कार्यों में नज़र डालते हैं। इनमें से कुछ आप पहले से ही जानते होंगे और कुछ तो सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के दौरान इस्तेमाल भी करते होंगे। कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य निम्नलिखित हैं –

- भिन्न–भिन्न विषयों में समय की एक अवधि विशेष में बच्चे की प्रगति और उसमें आने वाले परिवर्तनों का पता लगाना,
- बच्चे की व्यक्तिगत और विशेष ज़रूरतों को पहचानना,
- अधिक उपयुक्त तरीकों के आधार पर अध्यापन और सीखने की स्थितियों की योजना बनाना,
- कोई भी बच्चे क्या कर सकते हैं और क्या नहीं, उनकी किन चीज़ों में विशेष रुचि है, वह क्या करना चाहते हैं और क्या नहीं, इन सबके प्रति समझ बनाने और महसूस करने में बच्चों की मदद करना,
- बच्चों को 'कुछ प्राप्त कर पाने / पूर्णता की भावना के विकास के लिए प्रोत्साहित करना,
- कक्षा में चल रही सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को बेहतर बनाना,
- बच्चे के प्रगति के प्रमाण तय कर पाना जिन्हें अभिभावकों और दूसरों तक संप्रेषित किया जा सके,
- बच्चों के आकलन के प्रति व्याप्त भय को दूर करना और उन्हें स्व–आकलन एवं परस्पर आकलन के लिए प्रोत्साहित करना,
- प्रत्येक बच्चे के सीखने और विकास में मदद करना और सुधार की संभावनाएँ खोजना।

1.5 किसका / किस बारे में आकलन किया जाना चाहिए ?

आकलन के संबंध में उठाए गए सवालों जैसे– 'बच्चों का आकलन क्यों किया जाना चाहिए' के बाद स्वाभाविक है कि बहुत से शिक्षक सवाल करें .....

आकलन किस बारे में किया जाना चाहिए ? हमें अपने आप से सवाल करने की ज़रूरत है कि आखिर वह है क्या जिसकी हमें बच्चों को आकलन करते समय तलाश रहती है। चूँकि शिक्षा बच्चे के कुल समग्र विकास से जुड़ी हुई है (जैसे– शारीरिक, सामाजिक, भावात्मक और संज्ञानात्मक)। इसलिए यह ज़रूरी है कि सभी पहलुओं का आकलन किया जाए, सिर्फ अकादमिक उपलब्धियों का नहीं, जो वर्तमान में विद्यालयों में इस्तेमाल की जा रही आकलन पद्धतियों का मुख्य केन्द्र है। इस प्रकार यह बहुत आवश्यक हो जाता है कि विद्यालय और कक्षा के बाहर और भीतर होने वाली सभी गतिविधियों, जिनमें बच्चे की भागीदारी रहती है, का आकलन किया जाना चाहिए। यह आकलन की सारगर्भित प्रक्रिया होगी। आकलन की प्रक्रिया को सूचना और पृष्ठपोषण (Feedback) देने का ज़रिया बनाना होगा कि विद्यालय और शिक्षक शिक्षा देने की प्रक्रिया में किस सीमा तक सफल हो पाए हैं। बच्चे के अधिगम की पूरी तस्वीर समझने के लिए आकलन द्वारा निम्नलिखित बिंदुओं को उभारना होगा–

- भिन्न–भिन्न विषयों/क्षेत्रों में बच्चों का सीखना और प्रदर्शन,
- बच्चों के कौशल, रुचियाँ, रुझान और अभिप्रेरणा कुछ और पहलू हैं,
- एक निश्चित अवधि में बच्चों के सीखने और व्यवहार में होने वाले परिवर्तन,
- विद्यालय के भीतर और बाहर मौजूद भिन्न–भिन्न स्थितियों और अवसरों के प्रति बच्चों की प्रतिक्रिया।

1.6. आकलन कब किया जाना चाहिए?

हममें से बहुतों द्वारा पूछा गया एक बहुत अहम् सवाल 'आकलन किस बात का किया जाए' से जुड़ा हुआ एक ही सवाल– बच्चों के सीखने की प्रक्रिया और प्रगति को कब और कैसे आँका जाए? सीखने के परिणामों का आकलन अध्यापन अधिगम प्रक्रिया के साथ सतत् रूप से जुड़ा हुआ है। समग्र रूप से आकलन करने के लिए, सीखने के सभी पहलुओं को अपेक्षित पहचान देनी होगी। इस तरह से तो प्रत्येक बच्चे का प्रोफ़ाइल बनाना ज़रूरी हो जाता है।

हालांकि तरीके और पद्धतियाँ तो भिन्न–भिन्न होंगी ही। जब शिक्षक नियमित रूप से बच्चों की प्रगति पर बराबर नज़र बनाये हुए हों तो उस पर प्रतिक्रिया करने, पृष्ठपोषण देने और सुधार संबंधी तरीकों को अपनाने के लिए कुछ अवधियाँ तो तय करनी होंगी। इसके लिए ज़रूरी है कि व्यावहारिक अवधियाँ तय की जाएँ और उनका अनुसरण किया जाए। हालाँकि कक्षा में अनौपचारिक रूप से अवलोकन की प्रक्रिया तो चलती ही रहनी चाहिए। हर सात दिन में एक बार पीछे मुड़कर देख लेना (बच्चे के शुरूआती दौर को) और पारदर्शिक समीक्षा भी कर लेना ज़रूरी होगा, इससे बच्चों के सीखने को उन्नत और सुदृढ़ किया जा सकता है। अतः आकलन–

- दिन–प्रतिदन के आधार पर– बच्चों के साथ सतत् रूप से अन्तःक्रिया करना और सतत् रूप से उनका कक्षा और कक्षा के भीतर और बाहर आकलन करना। नियमित समीक्षा करके आवश्यकता के अनुरुप कराए जा रहे काम में अपेक्षित बदलाव लाना।
- सावधिक – हर दूसरे महीने में एक बार शिक्षक बच्चों के कामों की जाँच करें और एकत्र की गई सूचनाओं के आधार पर उन्हें अपनी राय बताएँ। यह किसी प्रकार की जाँच के रूप में नहीं होना चाहिए।

1.7 आकलन कैसे किया जाए?

विभिन्न चरण और विधियाँ जो कि चक्रीय एवं क्रमिक हैं विस्तार से आगे दिए गए चित्र (पृष्ठ सं. 14 व 15) में दिखाई गई हैं।

पहला चरण

भिन्न–भिन्न स्रोतों और विधियों द्वारा सूचना और प्रमाण जुटाना :

यदि हम सभी यह स्वीकार करते हैं और मानते भी हैं कि सभी बच्चे अपनी ही शैली से सीखते हैं और वे सिर्फ़ स्कूल में ही नहीं सीखते। तब हमें बच्चों का आकलन करते समय दो चीज़ों पर तो काम करना ही होगा। पहला, तरह–तरह के स्रोतों से जानकारी इकट्ठी करना। दूसरा, तरह–तरह की गतिविधियों, अनुभवों और अधिगम कार्यकलापों से जुड़े बच्चे क्या वास्तव में सीख रहे हैं, यह जानने और समझने के लिए आकलन की बहुत सी विधियाँ इस्तेमाल में लाना।

सूचनाओं के स्रोत :

आज भी यही देखने में आता है कि शिक्षक ही सूचनाओं का मुख्य स्रोत है और यही वह व्यक्ति है जो बच्चों के सीखने का आकलन भी करता है। जो भी हो, चूँकि आकलन सीखने की प्रक्रिया का ही हिस्सा है, बच्चे स्वयं भी अपने अधिगम और प्रगति का आकलन करने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षक बच्चों की, स्वयं का आकलन करने में मदद कर सकते हैं।

बच्चों से क्या अपेक्षा की जा रही है, इसकी बेहतर समझ विकसित करने में मदद की जा सकती है, अपने काम और प्रदर्शन को आलोचनात्मक नज़रिए से देखने के लिए अनुभव प्रदान किए जा सकते हैं। बच्चों से यह भी कहा जा सकता है कि वे अपने उन कामों का चयन करें जो उनकी नजर में सर्वोत्तम हैं और यह भी बताएँ कि उन्होंने उनका चयन क्यों किया। बच्चों के अतिरिक्त क्या कोई और भी है जिनसे बच्चों के आकलन के संबंध में सूचनाएँ ली जा सकती हैं? बच्चों के विकास के दूसरे पहलुओं की पूरी तस्वीर स्पष्ट करने के लिए इन्हें भी आकलन की प्रक्रिया में शामिल किया जा सकता है। वे कौन हो सकते हैं?शिक्षक और भी बहुत से व्यक्तियों के साथ बातचीत कर उन्हें आकलन की प्रक्रिया में शामिल कर सकते हैं, वे व्यक्ति हो सकते हैं–

- माता–पिता / अभिभावक
- दूसरे शिक्षक
- बच्चों के मित्र / सहपाठी
- समुदाय के लोग

अब अगला सवाल यह उठता है कि भिन्न–भिन्न स्रोतों से सूचना इकट्ठी कैसे की जाए?

1.8. आकलन के तरीके

किसी भी तरीके को चुनने से पहले प्राप्त की जाने वाली ज़रूरी सूचनाओं के लिए आकलन के प्रकार का निर्धारण आवश्यक है। आकलन करने के चार मूलभूत तरीके हैं–

- व्यक्तिगत आकलन – एक बच्चे को केन्द्र में रखते हुए किया गया आकलन जब वह कोई गतिविधि / कार्य करता है और उसे पूर्ण करता है।
- सामूहिक आकलन – किसी कार्य को पूर्ण करने के उद्देश्य से बच्चों द्वारा, सामूहिक रूप से कार्य करते समय सीखने और प्रगति का आकलन सामूहिक आकलन है। आकलन का यह तरीका बच्चों के सामूहिक कौशलों, सहयोग द्वारा सीखने की प्रक्रिया तथा बच्चों के व्यवहार से संबंधित अन्य मूल्यों के आकलन के लिए बहुत उपयुक्त पाया गया है।
- स्व–आकलन – बच्चे द्वारा स्वयं के सीखने तथा ज्ञान, कौशल, प्रक्रियाओं, रुचि, व्यवहार आदि में प्रगति के स्व–आकलन से संबंधित है।

- सहपाठियों द्वारा आकलन (परस्पर आकलन) – एक बच्चे द्वारा दूसरे बच्चे का आकलन, इसे दो बच्चों की जोड़ी या समूह में करवाया जा सकता है।

सभी स्कूलों में शिक्षकों द्वारा तैयार किए गए उपकरणों/तकनीकों के इस्तेमाल का ही प्रचलन है। इसमें पेपर, पैंसिल, टैस्ट/कार्यकलाप, लिखित और मौखिक परीक्षाएँ, तस्वीर आधारित सवाल, कृत्रिम (सिमुलेटेड) कार्यकलाप और विद्यार्थियों के साथ वार्तालाप/संवाद शामिल हैं। शिक्षकों द्वारा बच्चों के सीखने की प्रगति का आकलन करने के लिए छोटे–छोटे क्लास टैस्टों का इस्तेमाल एक आसान और शीघ्रगामी तरीके के रूप में किया जाता है।

सामान्यतः एक अवधि विशेष में पढ़ाई गई निर्धारित विषय वस्तु के आधार पर सत्र या माह के अंत में ये टैस्ट करवाए जाते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि ये उपयोगी होते हैं परन्तु इनका इस्तेमाल बहुत सावधानी के साथ किया जाना चाहिए। इस तरह के परीक्षणों में पूछे जाने वाले सवालों की प्रकृति ऐसी न हो कि उनसे पूर्व–निर्धारित उत्तर ही निकल कर आते हों अपितु इन प्रश्नों की शब्द संरचना इस तरह की हो कि बच्चों को अपने विचार और भाव तरह–तरह से अभिव्यक्त करने की पूरी गुँजाइश हो। टैस्ट में दी जाने वाली प्रविष्टियाँ/प्रश्न कुछ इस प्रकार के हों कि वे चिंतन और विश्लेषण पर बल दें न कि पाठ्यपुस्तकों में दी गई सामग्री को याद करके पुनः लिख देने पर। क्या आपने कभी सोचा है कि तरह–तरह की विधियों का इस्तेमाल क्यों करना चाहिए? ऐसा इस वज़ह से किया जाता है–

- भिन्न–भिन्न विषयों, क्षेत्रों और विकास के भिन्न–भिन्न पहलुओं में सीखने का आकलन किया जाता है,
- बच्चे एक विधि की तुलना में किसी दूसरी विधि के प्रति बेहतर तरीके से प्रतिक्रिया करते हैं,
- बच्चों के सीखने के संबंध में शिक्षकों की समझ बनाने में हर विधि का अपनी ही तरह से योगदान रहता है।

विकास के भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में बच्चों की प्रगति और अधिगम के बारे में सूचनाएँ और प्रमाण जुटाने के लिए आकलन का कोई भी एक उपकरण या विधि अपने आप में पर्याप्त नहीं है। पढ़ाते समय आपने ज़रूर महसूस किया होगा कि बच्चों का अवलोकन करके, उन्हें सुनकर, उनके अभिभावकों, दोस्तों और दूसरे शिक्षकों के साथ उनके बारे में अनौपचारिक तरीके से चर्चा करके, उनके लिखित कार्य (कक्षा तथा गृहकार्य दोनों ही), बच्चों द्वारा लिखे गए लेखों और उनके स्व–आकलन के आधार पर बहुत कुछ समझा जा सकता है।

चार्ट में दर्शाए गए साधनों के अतिरिक्त तस्वीरों और श्रव्य–दृश्य रिकॉर्डिंग का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। ये बच्चों के कार्य करते समय के अनुभवों का ही नहीं बल्कि कार्यपूर्ति का प्रलेखन प्रदान करते हैं। इसमें एक समयावधि में प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए आकलन किया जाता है। दोनों ही घटनाओं की सटीक पुनरावृत्ति तथा बच्चे के सोचने तथा संवाद के तरीकों को सही ढंग से परखने में सहायक है। बच्चों और अभिभावकों दोनों के साथ अनुभव बाँटने में भी इनसे मदद मिलती है। आकलन के ये तरीके महँगे हैं, इनके लिए तकनीकी विशेषज्ञों की आवश्यकता पड़ती है, समय अधिक लगता है तथा विश्लेषण अधिक समय की माँग करता है। इसलिए इनके इस्तेमाल में बहुत सावधानी की आवश्यकता है।

सीखने और आँकने

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया और आकलन की योजना एवं संगठन

पुनर्विचार/प्रतिबिम्बात्मक प्रक्रिया

बच्चों के सीखने से जुड़ी बातों और प्रगति को रिपोर्ट करना और पृष्ठपोषण संप्रेषित करना

प्रत्येक बच्चा सीख सकता है। सीखने की कोई सीमा नहीं है।

सुनिश्चित करना कि पृष्ठपोषण किसे और कैसे दिया जाए

सूचनाएँ दर्ज करना और प्रगति रिपोर्ट तैयार करना

(आकलन) का चक्र

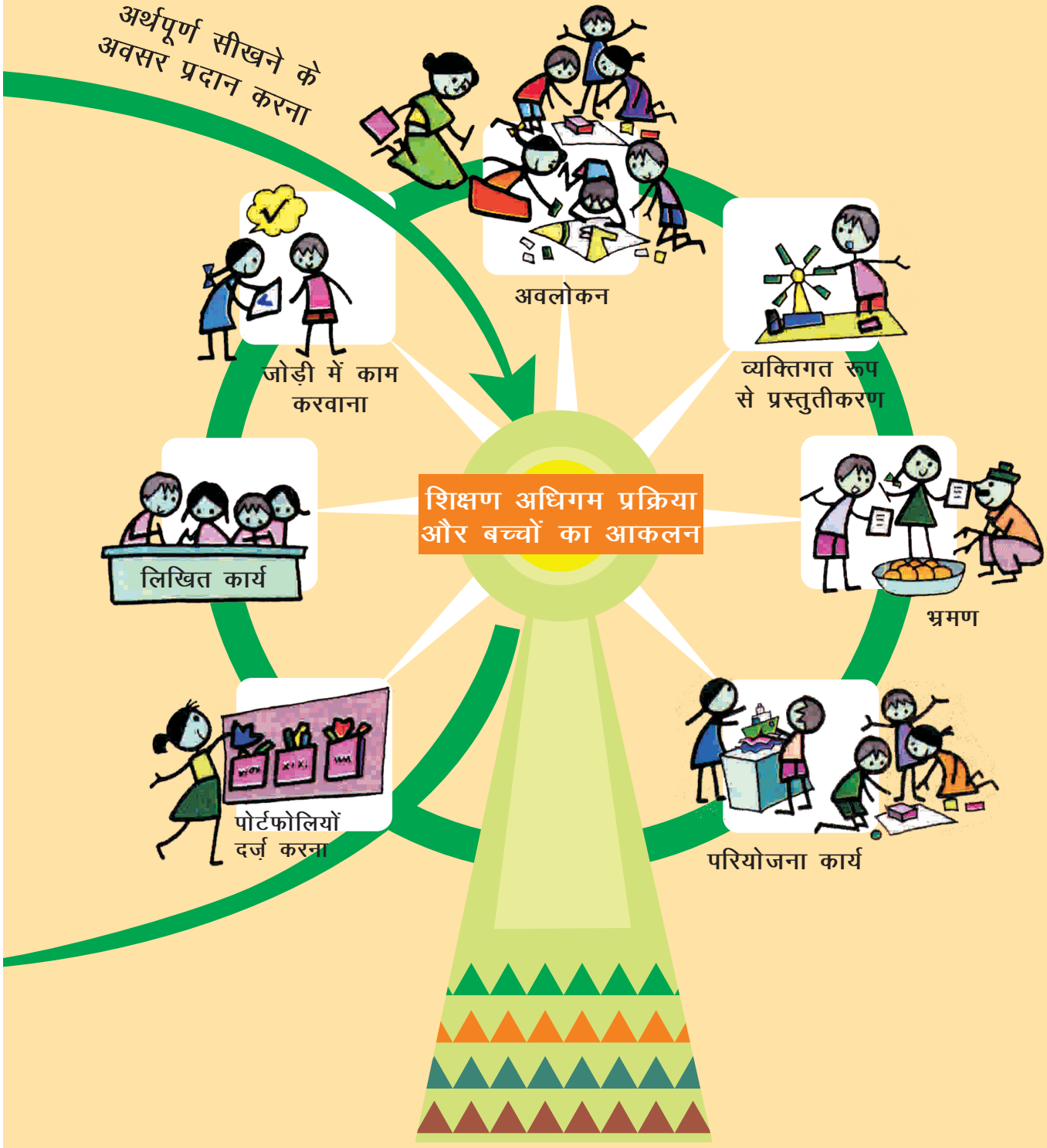
अर्थपूर्ण सीखने के अवसर प्रदान करना
अवलोकन
व्यक्तिगत रूप से प्रस्तुतीकरण
भ्रमण
परियोजना कार्य
पोर्टफोलियों दर्ज़ करना
लिखित कार्य
जोड़ी में काम करवाना
शिक्षण अधिगम प्रक्रिया और बच्चों का आकलन

दूसरा चरण

सूचनाओं को दर्ज़ करना या सूचनाओं की रिकॉर्डिंग करना :

पूरे देश के सभी विद्यालयों में रिपोर्ट कार्ड का इस्तेमाल रिकॉर्डिंग का सर्वाधिक प्रचलित तरीका है। अधिकतर रिपोर्ट कार्डों में बच्चों द्वारा टैस्ट/परीक्षाओं में प्राप्त किए अंकों और ग्रेडों (श्रेणियों) के रूप में सूचनाएं दर्ज़ होती हैं। अंकों और ग्रेडों की उपयोगिता तथा निहितार्थ के बारे में पहले ही चर्चा की जा चुकी है। महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह उठता है कि दर्ज़ करने (रिकॉर्ड रखने) की प्रक्रिया में सुधार लाने के लिए क्या किया जा सकता है। कक्षा में किया गया वार्तालाप बच्चे के व्यवहार तथा सीखने का अवलोकन करने के लिए अनेकानेक अवसर प्रदान करता है।

जैसा कि आप जानते हैं कक्षा में नित्य शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के दौरान अनौपचारिक रूप से कुछ अवलोकन किए जा सकते हैं। दिन–प्रतिदिन के अवलोकनों को अगर दर्ज़ नहीं किया जाए तो शीघ्र ही उनके भूलने की आशंका रहती है। बच्चों के कार्यों/गतिविधियों के कई अवलोकन सुनियोजित होते हैं। इस प्रकार के अवलोकन किसी उद्देश्य से योजनाबद्ध होते हैं और इसलिए स्वरूप में औपचारिक होते हैं।

सूचना दर्ज़ करने की प्रक्रिया को और अधिक प्रभावशाली कैसे बनाया जाए ? • बच्चों का अवलोकन करना और तुरंत मुख्य बिंदुओं को या फिर देखे जा रहे परिवर्तन को डायरी, रजिस्टर, नोटबुक आदि में दर्ज़ कर लेना, • किसी गतिविधि को करने के दौरान या फिर जब गतिविधि पूरी हो जाए, बच्चे का आकलन करना, • बच्चे द्वारा किए गए काम का या उससे जुड़ी रुचिकर घटना का गुणात्मक उल्लेख यानी कि विस्तार से लि खने के लिए विशेष प्रयास करना।, • बच्चे का प्रोफ़ाइल तैयार करना, पोर्टफोलियो में बच्चों के काम के नमूने रखना, • अवलोकन करते समय तथा सूचना दर्ज़ करते समय बच्चे से बातचीत करना कि क्या किया जा रहा है और कैसे किया जा रहा है। • महत्त्वपूर्ण बदलाव, समस्याओं, सकारात्म क बिंदुओं, मजबूतियों और सीखने के साक्ष्यों को नोट करने के लिए विशेष प्रयास करना, • सूचना दर्ज़ करते समय यदि किसी तरह का संदेह उत्पन्न होता है तो तत्क्षण उसे स्पष्ट कर लेना	<u>ध्यान रखें, पूर्वाग्रह/त्रुटियाँ, दर्ज की जा रही सूचनाओं को प्रभावित करती हैं</u> बहुधा ऐसा पाया गया है कि बच्चों के सीखने और प्रगति का अवलोकन करते समय कुछ गलतियाँ हो जाती हैं। ये गलतियाँ हमारे पूर्वाग्रहों का परिणाम हो सकती हैं– • बच्चों की योग्यता, संभाव्यता व कार्य निष्पादन के संबंध में पहले के अनुभव, • लड़कियों की अपेक्षा लड़कों को अ धिक प्रिय मानना, किन्हीं परिस्थितियों में स्थिति इसके उलट (विपरीत) भी हो सकती है, • दूसरे विषय क्षेत्रों में बच्चों के पूर्व निष्पादन के आधार पर उसके द्वारा किए जा रहे कामों के एक ही पहलू पर विशेष ध्यान देना, • बच्चे की सामाजिक पृष्ठभूमि, जैसे– जाति, वर्ग, समुद ाय, भौगोलिक पृष्ठभूमि (स्थान जहाँ वह रहते हैं) आदि। • किसी एक विषय और उसके किसी एक क्षेत्र की परीक्षा से जुड़े पूर्व परिणाम, • एक ही विषय में किसी एक मानदंड से मिलते–जुलते मानदंड के लिए एक से अंक दे देना। नोट– किस बात का अवलोकन किया जा रहा है, इस बात पर ध्यान देना बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

बच्चे के सीखने और प्रगति की पूरी तस्वीर देने के लिए इसके क्षेत्र को विस्तृत करने की आवश्यकता है। रिकॉर्डिंग में बच्चों द्वारा किए कार्यों/प्रदत्त कार्यों में उनकी प्रस्तुति के अवलोकन तथा उन पर की गई टिप्पणियों– बच्चे क्या करते हैं, उनका व्यवहार कैसा है की रेटिंग, बच्चों के दूसरों के साथ व्यवहार की घटनाओं को सम्मिलित करने की आवश्यकता है।

संभावनाओं के विस्तार की ज़रूरत है, जिसके अंतर्गत शामिल हो सकते हैं– अवलोकनों के रिकॉर्ड, किसी कार्यकलाप या प्रदत्त कार्य में बच्चों के प्रदर्शन पर टिप्पणियाँ, बच्चे क्या करते हैं और कैसे करते हैं, के बारे में श्रेणियाँ बनाना, दूसरों के साथ बच्चों के व्यवहार से जुड़ी घटनाएँ और वर्णन। इस संबंध में आगे आने वाले अध्यायों में बहुत से उदाहरण और आरेख दिए गए हैं। यदि आप कर सकें तो नीचे लिखे बिंदुओं से भी आपको मदद मिलेगी–

- बच्चों का अवलोकन करने के बाद तुरंत ही अवलोकनों को दर्ज़ करें,
- कला और शिल्पकारी, जिनको बहुत अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता, के क्षेत्र में बच्चों के काम और प्रदर्शन के नमूनों का संग्रह करें,
- गुणात्मक टिप्पणियाँ लिखने के बारे में विचार करें।

यह भी बहुत महत्त्वपूर्ण है कि जिन सूचनाओं का संग्रह किया गया है, उन्हें अच्छी तरह से समझा जाए और उत्तरों की विभिन्नता तथा विविधता को प्रोत्साहित किया जाए और उसकी सराहना की जाए। इस संबंध में बहुत–से उदाहरण और दृष्टांत दिए गए हैं।

तीसरा चरण

एकत्रित सूचनाओं से अर्थ निकालना :

एक बार सूचनाएँ दर्ज़ कर ली जाएँ फिर तीसरा महत्त्वपूर्ण पहलू या अगला चरण है– उपलब्ध साक्ष्यों की मदद से एक समझ बना पाना कि क्या सूचनाएँ इकट्ठा की गई और दर्ज़ की गई और फिर बच्चे के सीखने तथा प्रगति के बारे में निष्कर्ष निकालना। 'बच्चे की प्रगति कैसी है' और बच्चे की मदद के लिए क्या किया जाना चाहिए, यह समझने के लिए रिकॉर्डिंग बहुत ज़रूरी है। इसके लिए ज़रूरी है कि बच्चे के संबंध में दर्ज़ किए गए रिकॉर्डों का नियमित रूप से विश्लेषण किया जाए और समीक्षा भी। साथ ही संग्रहीत सूचनाओं के प्रति सावधिक प्रतिक्रिया भी दी जाए। ये सभी प्रक्रियाएँ शिक्षक को भी बहुत तरह से मदद करेंगी जैसे– अपनी शिक्षण पद्धतियों, कक्षा प्रबंध, सभी शिक्षण शास्त्रीय पहलुओं के साथ–साथ सामग्री का प्रयोग जैसे– प्रक्रियाओं के प्रति चिंतन करना और शिक्षार्थी के लाभार्थ, इन सभी में आवश्यक सुधार करना।

इस स्रोत पुस्तक के बाद के अध्यायों में विषय क्षेत्र के लिए संकेतक दिए गए हैं। ये संकेतक प्रत्येक कक्षा/स्तर के लिए दिए गए हैं। ये संकेतक यूँ ही नहीं बना दिए गए हैं अपितु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 पर आधारित एसआईईआरटी द्वारा प्राथमिक स्तर के लिए बनाए गए पाठ्यक्रम में दिए गए प्रत्येक अधिगम क्षेत्र के लिए सीखने के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर बनाए गए हैं। इन संकेतकों को संदर्भ बिंदु के रूप में प्रस्तुत किया गया है। हम अपनी स्थानीय ज़रूरतों के अनुसार इन्हें ज्यों का त्यों आवश्यक परिवर्तनों के साथ इस्तेमाल कर सकते हैं।

1.9 संकेतक महत्त्वपूर्ण क्यों हैं?

दिए गए संकेतक शिक्षक की कई तरह से मदद कर सकते हैं –

- सीखने की निरंतरता को ध्यान में रखते हुए बच्चों के सीखने की बेहतर समझ और उसे केन्द्र में रखना,
- पर्यवेक्षण, अधिगम और प्रगति को रिपोर्ट करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करते हैं,
- अभिभावकों, बच्चों और कई दूसरों के लिए बच्चों की प्रगति को आसान तरीके से समझने के लिए संदर्भ बिंदु की तरह कार्य करते हैं।

यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है कि सूचनाएँ जो एकत्रित की गई हैं, आँकड़ों और प्रमाणों के संग्रह के बाद भी सूचनाओं का संग्रह करना जारी रहना चाहिए। इन संकेतकों के आधार पर गुणात्मक टिप्पणियाँ भी तैयार की जा सकती हैं– एक दिए गए उत्तर के प्रति यह कितना (स्वीकार्य, महत्त्वपूर्ण और रुचिकर) है। बहुधा यह देखा जाता है कि शिक्षार्थी को 'अ' या 'ब' के द्वारा उसके उत्तर/प्रतिक्रिया को चिह्नित किया जाता है शिक्षार्थी के साथ किसी भी तरह की अंतःक्रिया किए बगैर। यह बहुत ही आवश्यक विधियों में प्रयोग करें।

- सूचना एकत्र करने की प्रक्रिया सतत् रहे और सूचनाओं को दर्ज़ भी करते चलें,
- प्रत्येक बच्चे को प्रतिक्रिया करने, सीखने और अपना ही समय लेने को महत्त्व दें,
- एक सतत् प्रक्रिया के रूप में रिपोर्टिंग भी करें और प्रत्येक बच्चे की प्रतिक्रिया / उत्तर के प्रति सरोकार रखें,
- पृष्ठपोषण दें, जो सकारात्मक क्रियाओं के लिए संभावनाएँ जुटाए और बच्चे को बेहतर करने के लिए मदद दें।

अब तक जिस नज़रिए की चर्चा की गई है उसके तहत आगे दिए गए अध्याय भिन्न–भिन्न विषय क्षेत्रों में बच्चों का आकलन करने में मदद करेंगे। महत्त्वपूर्ण है कि उत्तरों को सही और गलत के आधार पर अंक या ग्रेड देने से आगे भी कहीं हमको सोचना होगा क्योंकि आकलन संबंधी आँकड़ों का उद्देश्य अध्यापन अधिगम पद्धतियों और प्रक्रियाओं को सुदृढ़ करना है। शिक्षकों को एक समझ बनाने में भी मदद मिलेगी कि बच्चे ने अपनी व्याख्या देने के संदर्भ में जो भी किया है, वह क्यों किया है। इस स्रोत पुस्तक में इन पहलुओं पर विस्तार से उदाहरण देकर चर्चा की गई है। व्याख्या करने के बाद ज़रूरत है योजना बनाने की कि कैसे और किसे आकलन संबंधी पृष्ठपोषण दिया जाना है।

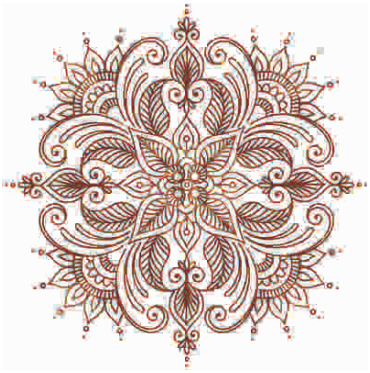

सतत एवं व्यापक आकलन पद्धति की विशेषताएं

आकलन उपकरणों व तकनीकों के प्रकार	इनकी मजबूतियाँ और लाभ क्या है?
1. अवलोकन बच्चों के बारे में जानकारी प्राकृतिक परिवेश में इकट्ठी करनी चाहिए। शिक्षार्थी के बारे में कुछ सूचनाएं अध्यापक के पढ़ाने के दौरान किए गए अवलोकन के आधार पर प्राप्त की जा सकती हैं। कुछ सूचनाएँ विद्यार्थियों के पूर्व नियोजित और अर्थपूर्ण अवलोकन पर भी आधारित हो सकती है।	• अवलोकन द्वारा व्यक्तित्व के विकास के बहुत से पहलुओं का अवलोकन किया जा सकता है • व्यक्तिगत व सामूहिक दोनों ही रूपों में अवलोकन किया जा सकता है • अलग–अलग समयावधि के दौरान आकलन किया जा सकता है • बच्चे के प्रदर्शन/ज्ञान के प्रमाण या साक्ष्य 'स्थल' पर ही आधारित होने चाहिए अर्थात् जहाँ बच्चे गतिविधियाँ कर रहे हों/पढ़ रहे हों वही से साक्ष्य जुटाने चाहिए • अतिरिक्त समय, व्यवहार का बारीकी से अवलोकन, रुचियाँ चुनौतियाँ–ये कुछ इस तरह की प्रवृत्तियाँ/बिंदु है जो अध्यापक को बच्चे के बारे में एक सारगर्भित चित्र प्रस्तुत करते हैं।
2. प्रदत्तकार्य कक्षा कार्य तथा गृहकार्य के रूप में विषय–वस्तु/ थीम आधारित कार्य करवाए जाने चाहिए यह खुले अंत वाले (विकल्प सहित) या संरचनात्मक भी हो सकते हैं। पाठ्यपुस्तकों से बाहर के प्रसंगों पर भी आधारित हो सकते हैं।	• विद्यार्थियों को सूचनाओं की खोज करने, अपने विचारों का सृजन करने, उन्हीं विचारों को मौखिक, लिखित या दृश्यात्मक रूप से अभिव्यक्त करने के अवसर मिलते हैं, • सीखने के उद्देश्यों और विषयवस्तुओं के व्यापक दायरे का आकलन करने में मदद मिलती है, • विद्यालय के भीतर और बाहर होने वाले अधिगम को जोड़ने तथा उनका संश्लेषण करने के अवसर मिलतेग हैं।
3. परियोजनाएँ एक सत्र में बहुत–सी परियोजनाएँ करवाई जा सकती हैं, आमतौर पर इन परियोजनाओं के माध्यम से आँकड़ों का संग्रह और विश्लेषण करवाया जाता है, थीम पर आधारित सीखने की प्रक्रिया में परियोजनाएँ महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं।	• खोजबीन करने, हाथ से काम करने (शारीरिक श्रम करने, अवलोकन करने आँकड़ों का संग्रह करने, विश्लेषण, नियोजन व्याख्या और सामान्यीकरण करने के अवसर मिलते हैं, • समूह एवं जीवन की वास्तविक स्थितियों में काम करने के अवसर मिलते हैं, • समूह कार्य एक दूसरे से सीखने और अनुभव बाँटने के अवसर मिलते हैं।
4. पोर्ट फोलियो समय की एक निश्चित अवधि में विद्यार्थी द्वारा किए गए कार्यों का संग्रह, ये रोज़मर्रा के काम भी हो सकते हैं या फिर शिक्षार्थी के कार्य के उत्कृष्ट नमूने भी हो सकते हैं।	• संचयी रिकार्ड उपलब्ध होते जाते हैं इस प्रक्रिया के माध्यम से किसी भी कौशल या ज्ञान क्षेत्र के विकसित होने की तस्वीर स्पष्ट होती जाती है, • अपनी स्वयं की प्रगति और अधिगम के बारे में दूसरों को बताने के लिए विद्यार्थियों को तैयार करना, • बच्चे सीखने और आकलन की प्रक्रिया के सबसे अधिक क्रियाशील सदस्य बन जाते है।
5. चैकलिस्ट किसी खास व्यवहार/क्रिया के बारे में सुव्यवस्थित तरीके से दर्ज़ किए गए उल्लेख किसी भी ख़ास पहलू की तरफ़ ध्यान आकर्षित करने में मदद करते हैं।	• शीघ्र और आसानी से क्रियान्वयन हो सकता है, • विशिष्ट उद्देश्यों के बारे में विशिष्ट सूचनाएँ मिल जाती हैं, • उन प्रवृत्तियों की ओर संकेत करती है कि एक बच्ची और बच्चों का समूह द्वारा कब और कैसे कौशल सीखे जाते हैं।
6. रेटिंग स्केल इसका इस्तेमाल विद्यार्थी के काम की गुणवत्ता दर्ज़ करने और निर्धारित मानदण्डों के आधार पर गुणवत्ता तय करने के लिए किया जाता है। समग्र रूप से तैयार रेटिंग स्केल एक अकेले काम के एक अंश का पूरा आकलन कर सकता है।	• विकास के बहुत से पहलुओं का आकलन किया जा सकता है, • व्यक्तिगत रूप से और समूह में दोनों ही तरीकों को आकलन करने के लिए इस्तेमाल में लाया जा सकता है, • अलग–अलग समय अवधि के दौरान और भिन्न–भिन्न पर्यावरणीय परिवेश में आकलन किया जा सकता है, • बच्चे के प्रदर्शन/ज्ञान के प्रमाण/साक्ष्य, 'स्थल' (जहाँ काम किया जा रहा हो) से प्राप्त रिकार्डों पर आधारित होते हैं, • अतिरिक्त समय व्यवहार, रुचियों चुनौतियों का बारीकी से अध्ययन आदि प्रतिमान/प्रवृत्तियाँ अध्यापक को बच्चे के बारे में सारगर्भित तस्वीर प्रस्तुत करने में मदद करती है।
7. वर्णन और संचयी रिकॉर्ड (अभिलेख) बच्चे के जीवन में हुई महत्त्वपूर्ण घटनाओं, जिनका अवलोकन किया गया हो, के वर्णनात्मक रिकार्ड प्रस्तुत करते हैं।	• भिन्न–भिन्न विकासात्मक क्षेत्रों के बारे में सूचनाओं का खजाना प्रस्तुत करते हैं, • बच्चों के सामाजिक, भावात्मक विकास, पसंदों, रुचियों और संबंधों के बारे में टिप्पणी लिखने में मदद करते हैं, • मज़बूत पक्ष और कमज़ोरियों की पहचान करते हैं, • बच्चे की एक समय विशेष के भीतर होने वाली प्रगति का आकलन करते हैं।

ध्यान में क्या रखना चाहिए?	किस तरह से और मूल्य जोड़े जा सकते है?
• किसी भी निष्कर्ष या व्याख्याओं या निर्णयों तक पहुँचने से बचें, वास्तव में क्या देखा जाता है उससे भी कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है, अधिक से अधिक ग्रहण करना। • किसी चीज़/बात का अवलोकन किया जाना है, यह पूरी तरह से अवलोकनकर्ता के कौशल पर निर्भर करता है। • अवलोकन के लिए संवेदनशीलता व अप्रत्यक्ष अर्थात् अनावश्यक रूप से सामने न आने की ज़रूरत है। • अवलोकन, समय की अवधि विशेष में भिन्न–भिन्न गतिविधियों और परिवेशों में किया जाना चाहिए	• रिकार्ड में दर्ज़ किए गए उल्लेख बच्चों के सिर्फ़ काम के बारे में ही बताएँ बल्कि यह भी स्पष्ट करें कि वह कैसा महसूस कर रहे हें। इस बारे में भी विस्तार से जानकारी मिलनी चाहिए कि बच्चे काम किस तरह करते हैं, कब करते हैं, लोगों और सामग्री के साथ उसके अंत:संबंधों की गुणवत्ता और सीमाएँ और वे क्या कहते हैं, इसके बारे में भी जानकारी दर्ज़ की जा सकती है। • बच्चों की व्यवहारिक टिप्पणियों को दर्ज़ किया जाना चाहिए जिनके आधार पर बाद में प्रक्रियाओं के संबंध में निर्धारण किया जा सकता है।
• बहुत अधिक गृहकार्य या कक्षा कार्य नहीं दिया जाता जो कि आजकल बहुत सामान्य है और प्रचलन में है। प्रदत्त कार्यों की प्रकृति इस तरह की होनी चाहिए कि विद्यार्थी उन्हें स्वयं कर सकें। • आकलन का एकमात्र तरीका नहीं बन जाना चाहिए।	• प्रदत्त कार्यों के संग्रह के कहीं बहुत आगे जाकर विश्लेषण, चर्चा और अपने विचार/प्रतिक्रिया देना, प्रतिबिंबित करना। • विद्यार्थियों में रचनात्मकता को बढ़ावा देना। • विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त भी पढ़ने/जानने के लिए प्रोत्साहित करना। • समूह कार्य को बढ़ावा दिया जाता है। • पोर्ट–फोलियों का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन सकते हैं।
• परियोजनाओं की प्रकृति और कठिनाई स्तर कुछ इस तरह का होना चाहिए कि विद्यार्थी उन्हें स्वयं कर सकें। • परियोजना में प्रयुक्त सामग्री विद्यालय, आस पड़ोस या घर से ही ली जानी चाहिए। सामग्री के लिए अभिभावकों पर अतिरिक्त आर्थिक भार नहीं पड़ना चाहिए। • प्रत्येक विद्यालय में एक संसाधन केन्द्र होना चाहिए जिसमें स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री संगह करके रखी जा सकती है।	• एक परियोजना के लिए थीम/विषय वस्तु/ टॉपिक का चयन करने और परियोजना का संचालन करने में विद्यार्थियों की भूमिका महत्त्वपूर्ण रहेगी और अध्यापक की भूमिका गाइड की रहेगी। • समूह परियोजनाओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। समूह परियोजनाएँ विद्यार्थियों को साथ–साथ काम करने, अनुभव बाँटने और एक–दूसरे से सीखने के मौके देती है। • परियोजनाएँ विद्यार्थियों को खोजबीन करने, जाँच–पड़ताल करने और समूह में करने का मौका देती हैं। विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया जा सकता है कि वे सामग्री का विवेकपूर्ण/समझदारी से इस्तेमाल करें और इस्तेमाल करने के बाद पुनः यथा स्थान पर रखें।
• पोर्टफ़ोलियों में बच्चों के चयनित कार्यों का संग्रह करने के कुछ ख़ास कारण हैं। • सभी तरह के कागज़/विषय वस्तुओं को शामिल करने की ज़रूरत नहीं है अन्यथा प्रबंध करना मुश्किल हो जाएगा।	• पोर्टफ़ोलियों के लिए विषयवस्तु का चयन करते समय विद्यार्थियों की भागीदारी को भी प्रोत्साहित किया जाना जरूरी है। साथ ही विषयवस्तु के चयन के लिए इस्तेमाल किए गए मानदंडों के बारे में भी सलाह लेनी चाहिए। • बच्चे के बढ़ने के साथ–साथ पोर्ट–फ़ोलियों में सतत् रूप से नवीनता लानी चाहिए। • पोर्ट–फ़ोलियों के लिए चुनी गई सामग्री की सावधानीपूर्वक योजना बनाना और प्रतिबिंबात्मक टिप्पणी भी तैयार करना। • संदर्भ के लिए विषयवस्तु की लेबलिंग और उस पर संख्या डालना। • बच्चों के व्यवहार संबंधी टिप्पणियाँ नोट करना जिनके आधार पर बाद में कभी प्रतिक्रियाओं के संबंध में निष्कर्ष निकाले जा सके।
• सीमित सूचना, सिर्फ़ कौशल की उपस्थिति की ओर संकेत। • बच्चों की भिन्न–भिन्न स्थितियों के प्रति प्रतिक्रियाओं और उत्तरों की ओर संकेत नहीं करती या फिर उत्तरों के सिर्फ़ विशिष्ट उदाहरण ही प्रस्तुत कर पाती है। • संदर्भ के बारे में किसी तरह की सूचना नहीं देती। • कई बार जब विशिष्ट विषय–वस्तुओं/मदों की संख्या अधिक हो तो समझने में मुश्किलें आती हैं। • अगर ये दूसरों के द्वारा बनाई गई हैं तो ज़रूरी नहीं कि उन उद्देश्यों के उपयुक्त हों जो एक अध्यापक होने के नाते आपने उस समूह के लिए तय किए होंगे जिनके लिए आप इनका इस्तेमाल करना चाहते हैं।	• चैक लिस्ट बनाते समय यदि उसमें 'टिप्पणी' का कॉलम/स्थान रखा जाए तो वह सूचनाओं को व्यापक रूप दे सकता है। • आकलन की दूसरी विधियों के साथ इस उपकरण को एक 'सहायक' योजक के रूप में इस्तेमाल करें।
• निष्कर्ष, व्याख्याएँ या निर्णय देने से बचें, जो देखा गया है उस पर ध्यान केन्द्रित करें। • अवलोकनकर्ता के कौशल ही सुनिश्चित करेंगे कि किस बारे में अवलोकन करना है। • अवलोकन के समय संवेदनशील तो बनें ही, प्रत्यक्ष रूप से सामने भी न आएँ। इनका तात्पर्य भी यह कदापि नहीं कि एक बड़ दूरी बनाकर रखी जाए। • समय की भिन्न–भिन्न अवधियों और अलग–अलग गतिविधियों तथा परिवेश में अवलोकन किया जाए।	• उन बारीकियों को भी दर्ज़ करें जो सिर्फ 'क्रियाओं' का ही उल्लेख नहीं करतीं अपितु यह भी स्पष्ट करती हैं कि काम के दौरान वह कैसा महसूस कर रही/रहा था। • उपचारात्मक तरीके भी सुझाएँ। • टिप्पणियों को दर्ज़ किया जा सकता है जिनके आधार पर बाद में प्रक्रियाओं का निर्धारण किया जा सकता है।
• एक अकेला वर्णन अन्तिम या उपसंहारात्मक सूचनाएँ नहीं दे सकता। • केवल 'समस्यात्मक' स्थितियों पर ही ध्यान जाता है। • घटनाओं का वर्णन करना बेहतर है बजाए कि निर्णयात्मक टिप्पणियाँ देना। • कक्षा में घटित होने वाली बहुत रुचिकर/मज़ेदार घटनाओं में से कुछ ही का चयन होता है, सभी घटनाओं को शामिल नहीं किया जाता। • सामान्य टिप्पणियों से बचें। • सौंदर्यात्मक गुणवत्ता पर सवाल हो सकते हैं। • अपनी टिप्पणी और सुझाव देने में कैमरे के सामने झिझकने से बचें।	• बच्चों के जीवन में जो चुनौती पूर्ण बातें घटित हो रही हैं, और बच्चों की स्थायी रुचियों के बारे में एक अवधि विशेष के भीतर वर्णनों को तैयार करना और संग्रह करना। कक्षा की भिन्न–भिन्न स्थितियों में बच्चों के व्यवहार और प्रतिक्रियाओं को समझने में मदद करना। • एक ही बच्चे के बारे में अलग–अलग बच्चों से वर्णन प्राप्त करके समूह की विचारधारा और भावनाओं को दर्शाया जा सकता है। • जहाँ तक संभव हो सके घटना के घटित होने के तुरंत बाद रिकार्ड करना (रिकार्ड करना) ज़रूरी होगा जिससे कि समृद्ध, एकदम सही और महत्त्वपूर्ण वर्णन बाद की व्याख्याओं के लिए शामिल किए जा सकें। • जिस अनुभव, प्रक्रिया या उत्पादय का फोटोग्राफ़ लिया जा रहा है उसकी सभी महत्त्वपूर्ण बारीकियाँ उभारनी ज़रूरी हैं। • विचार किया जा सकता है कि फोटोग्राफ़ आकलन के दूसरे उपकरणों के किस तरह से पूरक बन सकते हैं। • बाद में कभी फोटोग्राफ़ का इस्तेमाल करके बच्चे स्वयं अपने बारे में चर्चा कर सकते हैं।

1.10 आकलन संबंधी सूचनाओं का इस्तेमाल कैसे किया जा सकता है :

रिपोर्टिंग और पृष्ठपोषण देना

सीखने की प्रक्रिया के दौरान जब आकलन साथ–साथ चल रहा होता है तब शिक्षकों के पास बच्चों के बारे में बहुत सी सूचनाएँ जुट जाती हैं। सूचनाएँ दर्ज़ कर लेने एवं उनका विश्लेषण कर लेने के बाद यह जान लेना भी ज़रूरी होगा कि इनका क्या किया जाए ?इस बात से आप सहमत होंगे कि सामान्यतः सभी विद्यालयों में बच्चों के सीखने और प्रगति के आकलन से जुड़ी सूचनाएँ एक रिपोर्ट कार्ड के माध्यम से दी जाती हैं। ये रिपोर्ट कार्ड एक प्रकार से भिन्न–भिन्न विषयों में बच्चों के प्रदर्शन और निष्पादन की एक तस्वीर विद्यालयी सत्र में आयोजित टैस्टों, परीक्षाओं में प्राप्त अंकों और ग्रेडों के आधार पर प्रस्तुत करते हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों का जो आकलन किया जाता है और इस संबंध में वे जो भी रिकॉर्ड रखते हैं, वे सभी शिक्षकों को मदद करते हैं। ये रिकॉर्ड शिक्षकों की निम्न प्रकार से मदद करते हैं –

- यह समझने में कि बच्चे किस तरह और कितना सीख पा रहे हैं,
- स्वयं की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को उन्नत करने में,
- प्रत्येक बच्चे की सीखने की प्रक्रिया को समुन्नत करने के उद्देश्य से उन्हें और अधिक अर्थपूर्ण अवसर तथा अनुभव प्रदान करने की दिशा में।

उपर्युक्त संदर्भ में रिपोर्टिंग रचनात्मक, संप्रेषणीय तथा इस तरह से प्रस्तुत की जानी चाहिए जिससे कि संबंधित व्यक्ति उसे सरलतापूर्वक समझ सके। यह तभी संभव है जब शिक्षक विद्यार्थी के संबंध में उन सभी सूचनाओं को प्रतिबिंबित (रिफ्लैक्टिव) करें जो उन्होंने अपने दिन–प्रतिदिन के अनुभव के आधार पर हासिल की हैं और सीखने के क्षेत्र विशेष के संकेतकों के आधार पर प्राप्त की हैं।

शिक्षक द्वारा

दैनिक अथवा सावधिक रूप से किया जाने वाला आकलन आपके लिए तभी मददगार है, जब आप–

- निश्चित अवधि के भीतर (हर दो महीने के भीतर) निरंतरता को आधार बनाते हुए पोर्टफ़ोलियो तथा दूसरे रिकॉर्ड का आकलन करें,
- बच्चे से जुड़ी महत्त्वपूर्ण रुचिकर घटनाओं का पुनरावलोकन करें तथा बच्चे के व्यक्तित्व के और भी पहलुओं का आकलन करें,
- बच्चे के संबंध में पहले से अर्जित की गई सूचनाओं से तुलना करें,
- सुनिश्चित करें कि एक बार जिस समस्या का सामना किया गया है, उसकी पुनरावृत्ति न हो,
- समस्याओं / कठिनाइयों को किस तरह से सुलझाया गया है, उन तरीकों को समझा जाए,
- आकलन करें कि बच्चे ने किसी प्रकार की प्रगति की है अथवा नहीं। यदि किसी प्रकार की कमी रह जाती है तो

उन पर सीखने–सिखाने वालों की प्रक्रिया के दौरान ही ध्यान दिया जाए।

शिक्षक की प्रतिबिंबात्मक (रिफ्लैक्टिव) टिप्पणी प्रगति पत्रक बनाने में मदद करेगी। प्रगति पत्रक एक निश्चित अवधि में बच्चे की प्रगति से संबंधित स्पष्ट तस्वीर प्रदान करने में सहायक सिद्ध होगा। इसी स्थिति में शिक्षक द्वारा बच्चों के सीखने की दिशा को अर्थपूर्ण बनाया जा सकता है और समझ तथा कौशल प्राप्ति के निम्न स्तर को उच्च एवं जटिल स्तर की ओर अग्रेसित किया जा सकता है। इस तरह से हमें इस बात की समझ बनाने में भी मदद मिलती है कि बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में क्या–क्या कठिनाइयाँ आ रही हैं और इन कठिनाइयों तथा अंतरों का समाधान किस तरह से ढूँढ़ा जा सकता है। पृष्ठपोषण ही वह माध्यम है जिसके जरिए शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में परिवर्तन लाया जा सकता है।

पृष्ठपोषण के संबंध में महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है कि शिक्षक द्वारा दी जाने वाली रिपोर्ट में क्या–क्या होना चाहिए। इस रिपोर्ट द्वारा एक निश्चित अवधि में की गई प्रगति का संपूर्ण ब्यौरा होना चाहिए। बच्चे द्वारा की गई प्रगति का उल्लेख किस तरह से किया जा सकता है? आइए, हम इस पर विचार करते हैं कि कौन–कौन सी सूचनाएँ शामिल की जानी चाहिए।

रिपोर्ट – बच्चे द्वारा की जा रही प्रगति को मापना

- विषय क्षेत्रों में ए, बी, सी ग्रेड देना। ये ग्रेड बच्चे के अधिगम तथा प्रदर्शन के उस विस्तार की ओर ध्यान दिलाएँगे, जो तीन स्तरीय सूची द्वारा दर्शाया जाता है,
- बच्चे द्वारा किए गए कामों का संग्रह और उनका प्रदर्शन बच्चे की सीखने के प्रति समझ बनाने में मददगार होगा,
- बच्चे के व्यक्तित्व के भिन्न–भिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करके,
- ग्रेड के साथ–साथ बच्चे के सीखने के तरीकों के बारे में गुणात्मक कथन देकर,
- बच्चे द्वारा किए गए कामों के उदाहरण प्रस्तुत करके,
- बच्चे के सीखने की प्रक्रिया के मजबूत पक्ष को और अधिक उभारकर तथा उन पहलुओं पर विशेष ध्यान देकर जहाँ पुनर्बलन की ज़रूरत है।

रिपोर्ट तैयार करते समय शिक्षक के लिए ज़रूरी है कि वह बच्चे और माता–पिता के साथ पृष्ठपोषण संप्रेषित करें। यह पहलू बहुत ही महत्त्वपूर्ण है और बहुत ही सावधानीपूर्वक रचनात्मक तथा सकारात्मक तरीके से संप्रेषित किया जाना चाहिए।

बच्चे को संप्रेषित करना

दिन–प्रतिदिन के अध्यापन में जब बच्चे बहुत–सी गतिविधियों में संलग्न होते हैं, शिक्षक अनौपचारिक रूप से पृष्ठपोषण देते चलते हैं। बच्चे शिक्षकों, दूसरे बच्चों या समूहदार/जोड़ीदार की कार्य प्रणाली का अवलोकन करते समय स्वयं की गलतियाँ भी दूर कर लेते हैं और समुन्नत भी करते चलते हैं। सीखने के संदर्भ में स्थिति समस्याजनक तब हो जाती है जब रिपोर्ट केवल यह दर्शाती है कि बच्चे सही तरह से काम कर नहीं पाते, यानी कि उनकी अक्षमताओं और असफलताओं का ही चित्रांकन किया जाता है। इस तरह की रिपोर्ट बच्चों को निरुत्साहित करती है। शिक्षक को चाहिए कि वह–

- प्रत्येक बच्चे से उसके काम के बारे में बातचीत करें, कौन–कौन सा काम अच्छी तरह से किया गया है, कौन–सा नहीं और कहाँ–कहाँ सुधार की ज़रूरत है,
- बच्चे और शिक्षक दोनों मिलकर इस बात की पहचान करें कि बच्चों को किस तरह की मदद की ज़रूरत है,
- बच्चे को अपना–अपना पोर्टफोलियो देखने तथा वर्तमान में (हाल ही में) किए गए कामों की तुलना पुराने काम से करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए,
- काम करने की प्रक्रिया के दौरान या बाद में भी सकारात्मक रचनात्मक टिप्पणियाँ देनी ज़रूरी हैं।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात जिसे पृष्ठपोषण के माध्यम से सबसे अधिक प्रोत्साहित किया जाना चाहिए वह यह है कि स्वयं की तुलना अपने पिछले कार्यों की प्रगति से करें न कि दूसरे के कार्यों से। उदाहरण के तौर पर ''कल एक सप्ताह पहले तक मैं क्या कर पा रही थी और आज मेरा स्तर कहाँ है ?'' बच्चों के बीच तुलना करना किसी भी मायने में हितकारी नहीं है। आमतौर पर इससे कुछ इस तरह की धारणा जन्म लेती है 'मैं तो एकदम बेकार हूँ। मैं तो किसी भी काम की नहीं।' स्थिति इससे भिन्न भी है, यदि किसी बच्चे ने उच्चतम अंक प्राप्त किए हैं या बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है, तो उस पर विद्यालय एवं घर दोनों ही स्थलों पर उस स्थिति को बनाए रखने का दबाव बना रहता है।

अभिभावकों के साथ बाँटना

सामान्यतः सभी अभिभावकों को यह जानने में रुचि रहती है कि उनकी बच्ची विद्यालय में कैसा कर रही है, उसने क्या–क्या सीखा है, दूसरे बच्चे किस तरह का प्रदर्शन कर रहे हैं एक निश्चित समयावधि के भीतर उनके बच्चे की क्या प्रगति है। आमतौर पर शिक्षक यह महसूस करते हैं कि उन्होंने अभिभावकों को उनके बच्चों की प्रगति के बारे में भली–भाँति संप्रेषित कर दिया है ''अच्छा कर सकती है, 'अच्छा', 'खराब', अधिक प्रयास करने की ज़रूरत है,'' किसी भी अभिभावक के लिए इन टिप्पणियों की क्या सार्थकता है? क्या इस तरह की टिप्पणियाँ किसी तरह की स्पष्ट सूचना प्रदान कर सकती हैं कि उनकी बच्ची क्या कर सकती है और क्या सीख चुकी है। यह सुझाव दिया जाता है कि आप आसानी से समझी जाने वाली भाषा में पृष्ठपोषण दें–

- बच्चे क्या–क्या कर सकते हैं, क्या करना चाह रहे हैं और क्या करने में उसे कठिनाई होती है,
- बच्चे को क्या–क्या करना पसंद है और क्या नहीं,
- बच्चों द्वारा किए गए कामों के नमूने गुणात्मक कथन, मात्रात्मक पृष्ठपोषण के साथ प्रस्तुत किए जा सकते हैं,
- बच्चों ने किस तरह से सीखा (प्रक्रिया) और सीखने में कहाँ–कहाँ कठिनाई का सामना किया,
- बच्चों के कार्यों की चर्चा अभिभावकों से करना जो उनकी सफलता और सुधार के क्षेत्रों को दिखाने में मदद करे,

- कठिनाई अनुभव करने पर काम पूरा कर सके या नहीं,
- सहयोग, उत्तरदायित्व, संवेदनशीलता, रुचि आदि पहलुओं पर बात करनी ज़रूरी होगी,
- अभिभावकों के साथ चर्चा करना कि वे (अ) बच्चों की किस तरह से मदद कर सकते हैं, (ब) घर पर उन्होंने किस तरह का अवलोकन किया है।

आप बच्चे की उन्नति/प्रगति को ग्राफ (लेखा चित्र) के माध्यम से भी प्रस्तुत कर सकते हैं, जिसे समझना बच्चों और अभिभावकों दोनों के लिए सरल होगा।

बच्चों के अधिगम तथा प्रगति के संबंध में एकत्रित की गई सूचनाएँ तथा पृष्ठपोषण अंततः समग्र शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को समुन्नत करेगी और बेहतर तरीके से सीखने के लिए प्रोत्साहित करेगी। यहाँ शिक्षकों द्वारा पुनर्विचार करने व प्रतिबिंबित करने की ज़रूरत है। आकलन का चक्र प्रभावशाली, उपयोगी रूप से चलता रहे, इसके लिए ज़रूरी है कि वे अपनी शिक्षण अधिगम प्रणाली, सहायक शिक्षण सामग्री, गतिविधियों के आयोजन/नियोजन और दूसरे बहुत से पहलुओं पर पुनर्विचार करें।

शिक्षक द्वारा प्रतिपुष्टि (टीचर्स रिफ्लेक्शन) – बच्चों के अधिगम को समुन्नत करना :

कुछ महत्त्वपूर्ण सवाल जो आपको पुनर्विचार करने तथा दूसरों के साथ चर्चा करने में मदद करेंगे–

- क्या मेरे बच्चे पूरी तरह से गतिविधियों में संलग्न हैं और ठीक तरह से सीख पा रहे हैं?यदि नहीं तो वे किस स्तर पर हैं?
- क्या मैं बच्चों की भिन्न–भिन्न ज़रूरतों को समझ सकती हूँ? यदि हाँ तो उन ज़रूरतों की समझ के आधार पर मैं क्या करने वाली हूँ?
- क्या कुछ ऐसे बच्चे भी हैं, जो पहले स्तर तक पहुँचने में भी कठिनाई अनुभव कर रहे हैं?उन्हें प्रेरित तथा उत्साहित करने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?
- बच्चों को एक स्तर से अगले स्तर तक ले जाने के लिए मुझे अपनी अध्यापन अधिगम प्रक्रिया को उन्नत करने के लिए क्या करना चाहिए?
- मैं बच्चों को स्व आकलन के लिए किस तरह प्रेरित कर सकती हूँ?
- मुझे किन–किन क्षेत्रों में कठिनाइयाँ आती हैं– (बच्चों का समूह बनाने में, बच्चों की उम्र और स्तर के अनुसार गतिविधियों का चयन करने में, सामग्री की कमी व अनुपयुक्तता पर),
- मुझे और भी किस तरह की सहायता की ज़रूरत है?मुझे कौन इस तरह की मदद दे सकता/सकती है? (शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े लोग, अभिभावक, समुदाय, अन्य शिक्षक),
- बेहतर अध्यापन अधिगम अभ्यासों के लिए और क्या–क्या प्रयास किए जा सकते हैं?

यह संभव है—आप ऐसा कर सकते हैं

आकलन एक बहुत रुचिकर तथा लाभदायी उपयोगी प्रक्रिया बन सकती है। इसका साक्षात् अनुभव करने के लिए हमें ध्यान रखना होगा—

- हम बच्चों का आकलन क्यों कर रहे हैं, इस बात में स्पष्टता हो,
- बच्चों पर किसी तरह का ठप्पा नहीं लगाना होगा, जैसे– मंद, निकृष्ट, बुद्धिमान, व्यवधान पहुँचाने वाले और बच्चों की आपस की तुलना से भी बचना होगा,
- विषयों तथा अन्य क्षेत्रों में बच्चों के सीखने संबंधी प्रगति के बारे में सूचनाएँ इकट्ठी करने के लिए विविध प्रकार के तरीकों का इस्तेमाल करना होगा,
- सतत् रूप से सूचनाओं का संग्रहण और उन्हें दर्ज़ करना,
- प्रत्येक बच्चे के सीखने के तरीके, उसकी गति और उत्तर देने की शैली को महत्त्व देना होगा,
- सतत् आधार पर रिपोर्ट देना और प्रत्येक बच्चे की प्रतिक्रिया के प्रति संवेदनशील रहना होगा,
- नकारात्मक टिप्पणियों से बचना होगा, आकलन व पृष्ठपोषण के समय तकनीकी शब्दावली का उपयोग किया जा सकता है,
- सरल व स्पष्ट भाषा में पृष्ठपोषण देना जो बच्चे को सकारात्मक दिशा की ओर प्रवृत्त करने में मदद करें,

अगले अध्याय, चर्चा किए गए उपागमों की परिधि में प्राथमिक स्तर पर बच्चों के विषय शिक्षण को समझने एवं आकलन करने में सहायक होंगे।

अध्याय–2

राजस्थान के संदर्भ में सतत एवं व्यापक आकलन प्रक्रिया

प्रस्तावना :

''शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009'' एवं ''राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005'' हमारे समक्ष भारत में शिक्षा की समग्र तस्वीर रखते हैं।

जो रूपरेखा हमारे समक्ष उभर कर आती है वह सीखने के लिए स्वस्थ वातावरण निर्माण, कक्षा–कक्ष प्रक्रिया और परिणामों में वास्तविक बदलाव की माँग करता है। ''आरटीई एक्ट–2009'' और ''एनसीएफ–2005'' दोनों ही इस संदर्भ में आकलन प्रक्रिया के महत्त्व को स्पष्ट रूप से प्रकट करते हैं। जैसा कि एनसीएफ–2005 कहता है, आकलन प्रक्रिया जो कि हमारी शिक्षा प्रणाली में निहित है उसमें परिवर्तन के बिना पाठ्यक्रम का नवनिर्माण करने के सभी प्रयास औचित्य विहीन हो जाते हैं।

अतः आकलन को इस भूमिका में देखा जा रहा है कि वह सभी नवीनीकरण की प्रक्रियाओं को धुरी प्रदान करता है, प्राथमिकताओं को तय करता है और जवाबदेही की माँग का भी निर्माण करता है। इसी भावना एवं दृष्टिकोण के साथ सीसीई नवीन आकलन एवं कक्षा–कक्षीय परिवर्तन की प्रक्रिया के रूप में एक सार्थक विकल्प हो सकता है।

भाग एक – पायलट परियोजना एवं स्केल–अप

2.1 पायलट परियोजना की पृष्ठभूमि

राजस्थान राज्य में सन् 2010 से पायलट परियोजना द्वारा 60 राजकीय विद्यालयों में आकलन एवं कक्षा–कक्षीय प्रक्रियाओं में एक नवीन एवं समग्र बदलाव लाने की प्रक्रिया की रूपरेखा निर्मित की गई है। जिसके तहत सीसीई के संदर्भ में निम्न मुख्य क्षेत्र उभर कर आए हैं –

1	2	3	4
पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य, कक्षा–कक्षीय प्रक्रिया और आकलन के मध्य सीधे सम्बन्ध को स्थापित करना।	शिक्षण प्रक्रिया एवं निर्देशों के स्वरूप के लिए एक वृहद् रूपरेखा प्रदान करना।	पाठ्यक्रमणीय समग्रता को विद्यालयी शिक्षा के केन्द्र में लाना।	बच्चों के स्तरों के अनुरूप कक्षा–कक्षीय योजना बनाने एवं उस संदर्भ में निर्णय लेने में शिक्षकों की मदद करना।
5	**6**	**7**	**8**
बच्चों की प्रगति एवं स्तर की वास्तविक सूचना एकत्र कर पाना।	व्यवस्थाओं एवं स्कूल की प्रभावशीलता के मूल्यांकन हेतु रूपरेखा प्रदान करना।	सीखने के प्रमाण एकत्रित करने व व्यवस्थात्मक जवाबदेही को सुनिश्चित करने की प्रक्रिया	समुदाय को स्कूल के अकादमिक विमर्श में सम्मिलित करने की प्रक्रिया

मुख्य रूप से पायलट परियोजना द्वारा तीन वर्षों में विभिन्न प्रभाव देखे गए और कुछ ऐसे क्षेत्र भी सामने आए जो कि चुनौतीपूर्ण हैं और पूरी प्रक्रिया और परिणामों के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण भी हैं ।

प्रभाव :

(अ) बच्चों के सीखने के स्तरों में बढ़ोत्तरी (जिसे जाँचा जा चुका है)।

(ब) नामांकन, नियमितता एवं ठहराव में बढ़ोत्तरी।

(स) शिक्षकों की समझ, क्षमता व व्यवहार में सकारात्मक बदलाव जो कि उनके द्वारा बनाई गई नियमित योजना एवं कक्षा–कक्षीय प्रक्रियाओं के माध्यम से देखा जा सकता है।

(द) बच्चों के वास्तविक स्तर की पहचान व उसके अनुरूप योजना निर्माण करना।

(य) अभिभावकों एवं समुदायों द्वारा बच्चों द्वारा किए गए कार्यों, प्रगति एवं नवीन प्रक्रिया की सराहना करना।

चुनौतियाँ :

(अ) छात्र शिक्षक अनुपात को सुनिश्चित करना क्योंकि परिणामों पर इसका गहरा प्रभाव पड़ता है।

(ब) विद्यालय स्तर पर समर्थन एवं गुणवत्तापूर्ण नियमित मासिक कार्यशालाओं को सुनिश्चित करना।

(स) व्यवस्थित समझ आधारित समर्थन हेतु परिवीक्षण की कमी।

(द) कला, संगीत एवं हस्तकार्य को पाठ्यक्रमणीय समग्रता हेतु स्कूल एवं कक्षा–कक्षा का नियमित हिस्सा बना पाना।

(य) स्कूल से बाहर रहे बच्चों का समावेश सुनिश्चित करना।

सीसीई परियोजना के अन्तर्गत विकसित की गई सामग्री –

(अ) प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के लिए सीसीई स्कीम, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यचर्या हेतु मॉड्यूल का निर्माण।

(ब) योजना एवं समीक्षा प्रपत्रों सहित सतत रचनात्मक आकलन चैकलिस्ट एवं योगात्मक आकलन फॉर्मेट्स।

(स) विभिन्न स्तरों के लिए प्रशिक्षण मॉड्यूल।

(द) प्राथमिक कक्षाओं के लिए सीसीई स्रोत पुस्तिका।

(य) पायलेट परियोजना का प्रक्रिया दस्तावेज़।

सीसीई विस्तार कार्यक्रम के गुणवत्तापूर्ण क्रियान्वयन हेतु जिला एवं ब्लॉक स्तर पर समितियों का गठन किया जाना प्रस्तावित है। ये समितियाँ मुख्य रूप से सीसीई विस्तार के क्रियान्वयन में सहभागी रहेंगी तथा विभिन्न स्तरों पर होने वाली कार्यशालाओं तथा विद्यालयों से संबंधित एवं समर्थनोन्मुखी परिवीक्षण की प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभाएंगे।

2.2 प्रथम चरण – स्केलअप (सीसीई विस्तार)

- सत्र 20012–13 में पायलेट परियोजना में विकसित की गई सीसीई स्कीम को राज्य के 3059 विद्यालयों में जो कि राज्य के सभी जिलों (178 ब्लॉक) में फैले हुए हैं, में लागू किया गया।

- विद्यालयों के चयन हेतु कुछ मानकों को आधार बनाया गया। जैसे कि छात्र–शिक्षक अनुपात, गतिविधि

आधारित शिक्षण एवं आँगनबाड़ी का विद्यालय परिसर में होना इत्यादि।

सीसीई कार्यक्रम के विस्तार हेतु केआरपी प्रशिक्षण मॉड्यूल का भी निर्माण किया गया। तत्पश्चात् केआरपी प्रशिक्षण दिया गया। जिन्होंने आगे एमटी और शिक्षकों को प्रशिक्षित किया।

बदलाव के मुख्य क्षेत्र जो इस चरण में सामने आए उन्हें निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा समेकित किया जा सकता है –

(1) सीसीई स्कीम व उसकी विषयवस्तु मात्र विचार का केन्द्र नहीं रही बल्कि बच्चों के सीखने का स्तर व सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं में आने वाली चुनौतियों पर विचार–विमर्श ने मुख्य स्थान ग्रहण किया।

(2) बच्चों के स्तरों में आ रही असमानताओं पर काम करने की अनिवार्यता के महत्त्व को महसूस किया गया।

(3) सीखने व कक्षा–कक्षीय प्रक्रियाओं को दर्ज़ करने व उनके प्रमाण संकलित करने की समझ का निर्माण हुआ।

(4) कक्षा उन्नति से जुड़े हुए मुद्दों व आरटीई के बाद सीसीई की भूमिका की समझ।

(5) कक्षा–कक्षीय कार्य में पाठ्यचर्या के उद्देश्य एवं पाठ्यक्रम के महत्त्व पर समझ।

(6) आकलन एवं योजना के मध्य सहसम्बन्ध को समझ पाना।

कुछ चुनौतियाँ जो कि विस्तार के इस चरण से उभरकर आई हैं वे इस रूप में महत्वपूर्ण हैं जो सीसीई को सम्पूर्ण राज्य में लागू करने में आ सकने वाली चुनौतियों की ओर इंगित करती हैं –

(1) प्रशिक्षण के विभिन्न स्तर होने पर सही समझ शिक्षकों तक पहुँचाने में कठिनाई आती है।

(2) सिर्फ एक बार प्रशिक्षण करना पर्याप्त नहीं है।

(3) विद्यालयी समर्थन एवं शिक्षक क्षमता संर्वधन हेतु नियमित कार्यशाला की प्रक्रिया सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष के रूप में उभर कर आए हैं।

(4) समर्थनोन्मुखी एवं समझ आधारित परिवीक्षण प्रक्रिया के अभाव की वजह से शिक्षक साथियों को नई प्रक्रियाओं के आधार पर कार्य करना मुश्किल होता है।

(5) एक ब्लॉक में स्कूलों के विस्तारित होने की वजह से स्थानीय एवं ब्लॉक स्तर के प्रशासन की भागीदारी प्रभावी रूप से नहीं हो पाती।

(6) डाइट के तकनीकी समर्थन के बिना अपेक्षित अकादमिक बदलाव लाना एवं उद्देश्यों को प्राप्त करना संभव नहीं।

(7) संकुल स्तर पर किसी भी विद्यालय में प्रभावी क्रियान्वयन के उदाहरण की उपलब्धता का न होना।

सीसीई विस्तार के प्रथम चरण के आधार पर यह स्पष्ट है कि अपेक्षित बदलाव एवं उद्देश्यों की पूर्ति का सामर्थ्य मौजूद है और किसी भी नई प्रक्रिया के अन्तर्गत व्यवस्थाओं में गति भी उत्पन्न होती है। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि रुकावटों एवं चुनौतियों को पहचाना जा सके व अनुभव के आधार पर उन्हें वास्तविक रूप से सुलझाया जा सके।

इस अनुभव के आधार पर विस्तार के प्रथम चरण में आई चुनौतियों को सम्पूर्ण ब्लॉक क्रियान्वयन मॉडल के जरिए सुलझाया जा सकेगा व अपेक्षित उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकेगा।

2.3 सीसीई विस्तार के लिए रूपरेखा

हमारे स्कूलों की वास्तविक स्थितियाँ व बच्चों के सीखने के स्तर में सीसीई द्वारा कितना बदलाव आ पाएगा, यह बहुत कुछ इस पर निर्भर करता है कि इसका विस्तार कैसे किया जाता है। अतः इसके विस्तार के सम्बन्ध में कुछ प्रमुख बिन्दु इस प्रकार हैं –

(1) सीसीई कार्यक्रम का राज्य स्तर पर विस्तार करने के लिए कार्यक्षेत्र बहुत वृहद् है। सीसीई को सही रूप से लागू करने हेतु स्कूल व शैक्षिक प्रबन्धन की प्रक्रियाओं में मूल बदलाव की जरूरत है जिसका अर्थ है बड़े स्तर पर प्रक्रियाओं में मूल बदलाव।

(2) इसे एक लम्बी प्रक्रिया के रूप में देखा जाना चाहिए, जिससे गुजरकर इसका प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जा सकेगा।

(3) स्थानीय क्षमताओं एवं प्रक्रियाओं का निर्माण विस्तार से पहले किया जाना जरूरी है।

(4) गुणवत्तापूर्ण क्रियान्वयन तभी किया जा सकता है जब समर्थनोन्मुखी परिवीक्षण प्रक्रियाएँ सुचारू रूप से सुनिश्चित की जा सकें।

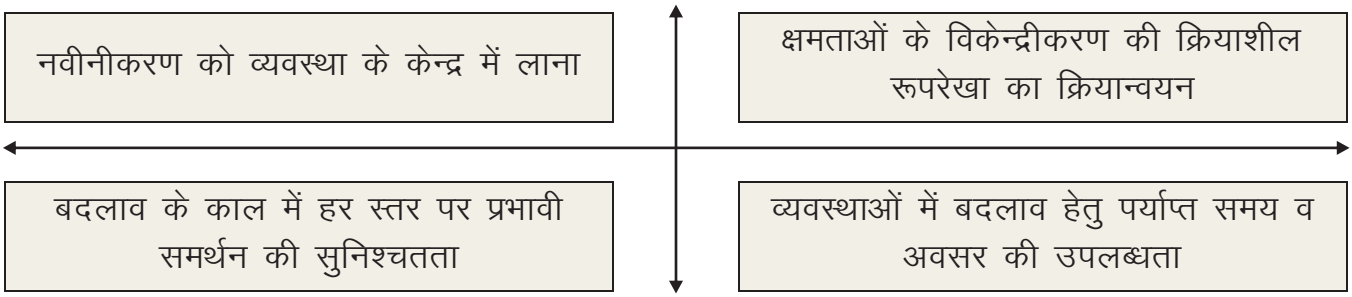

ये सभी बिन्दु सीसीई के प्रभावी क्रियान्वयन की पृष्ठभूमि का निर्माण करते हैं। इन्हीं के आधार पर जो प्रक्रिया तार्किक रूप से उभर कर आती है उसे हम 'सम्पूर्ण ब्लॉक में देख सकते हैं।

2.4. पूर्ण ब्लॉक की रूपरेखा

सत्र 2013–14 के लिए जिन 2000 विद्यालयों में सीसीई का विस्तार किया जाना है वह पूर्ण ब्लॉक के अन्तर्गत होगा, जिससे कि गुणात्मक रूप से बेहतर क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जा सकेगा।

सम्पूर्ण ब्लॉक क्रियान्वयन मॉडल निम्न बिन्दुओं पर आधारित है –

(1) ब्लॉक परिवीक्षण एवं शैक्षणिक प्रबन्धन की व्यवस्थात्मक इकाई है।

(2) पूर्ण ब्लॉक मॉडल नवीनीकरण के प्रयासों को व्यवस्था एवं सम्बन्धित विभागों के केन्द्र में स्थापित कर पाएगा, जिसका मुख्य कारण यह है कि ब्लॉक के सभी स्कूलों में सीसीई लागू किया जाना है।

(3) यह भी सुनिश्चित करता है कि क्षमताएँ विकेन्द्रीकृत रूप में विकसित हों। ऐसी प्रणालियों व संसाधनों का संकुल स्तर पर निर्माण करना जो कि आवश्यक है।

(4) प्रभावशाली विस्तार हेतु एक व्यवस्थित मॉडल के रूप में विकल्प का निर्माण।

(5) डाइट का अधिक अकादमिक समर्थन जो कि इस कार्यक्रम की गुणवत्ता हेतु अनिवार्य है, को सुनिश्चत किया जा सकता है।

पूर्ण ब्लॉक क्रियान्वयन रणनीति के अन्तर्गत यह माना जा रहा है कि इसके अन्तर्गत गुणवत्ता के मुद्दों को व्यवस्था के केन्द्र में लाया जा सकेगा एवं सभी सम्बन्धित विभागों का समर्थन सुनिश्चित किया जा सकेगा। जिसके आधार पर ज़मीनी स्तर पर अपेक्षित बदलाव हो पाएँ।

पूर्ण ब्लॉक मॉडल के क्रियान्वयन की रूपरेखा

मूल घटक

शिक्षकों के क्षमता संवर्धन व समर्थन प्रक्रिया	सूचित एवं समर्थनोन्मुखी परिवीक्षण की प्रक्रिया	मुख्य संस्थाओं की संपोषित (Sustainability) सुनिश्चित करने हेतु संवर्धन
संकुल स्तर पर गुणवत्तापूर्ण संसाधनों को विकसित करना		शोध एवं दस्तावेज़ीकरण

ब्लॉक एप्रोच में कार्य के लिए गठित की जाने वाली समितियाँ

- ब्लॉक स्तरीय अकादमिक समिति :– इसमें ब्लॉक के समस्त अधिकारियों के अतिरिक्त चयनित दक्ष प्रशिक्षक एवं आरपी, डाइट संकाय सदस्य, जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय के प्रतिनिधि और एस एस ए जिला कार्यालय से सहायक परियोजना समन्वयक (सीसीई) भाग लेंगे। इस समिति की बैठक प्रतिमाह आयोजित की जाएगी जिसमें दो या तीन शिक्षकों को भी प्रतिनिधि के रूप में आमंत्रित किया जाएगा। इसका कार्य होगा सीसीई अकादमिक प्रगति की समीक्षा करना और विषयवार मासिक कार्यशालाओं की गहन समीक्षा करना।

- ब्लॉक स्तरीय समन्वयन समिति :– इसमें ब्लॉक के समस्त अधिकारियों के अतिरिक्त चयनित दक्ष प्रशिक्षक ,जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय के प्रतिनिधि और एसएसए जिला कार्यालय से सहायक परियोजना समन्वयक सीसीई भाग लेंगे। इसका कार्य होगा सीसीई को लागू करने में आ रही प्रशासनिक चुनौतियों की समीक्षा करना और तदनुसार कार्यवाही करना।

- जिला स्तरीय अकादमिक समिति :– यह समिति सीसीई की प्रगति की जिला स्तर पर समीक्षा करेगी। समिति में डाइट की प्रमुख भूमिका होगी। जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय के समन्वयन में इस समिति की बैठक होगी। समिति में डाइट के प्राचार्य के अतिरिक्त विषयवार संकाय सदस्य, एडीपीसी, एसएसए, एपीसी–सीसीई, ब्लॉक स्तर से ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, अतिरिक्ति ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, संदर्भ संस्था (बोध)

के प्रतिनिधि, चुने हुए दक्ष प्रशिक्षक और जिला स्तर पर कार्य कर रहे सीसीई के मुख्य संदर्भ व्यक्ति होंगे।

- जिला स्तरीय समन्वयन समिति :– इस समिति में जिला शिक्षा अधिकारी (प्रा.), प्राचार्य–डाइट, अतिरिक्त जिला परियोजना समन्वयक–एसएसए, अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी (प्रा.), एपीसी (सीसीई), ब्लॉक शिक्षा अधिकारी (जयपुर पूर्व एवं जयपुर पश्चिम), संदर्भ संस्था (बोध) के प्रतिनिधि, अतिरिक्त ब्लॉक शिक्षा अधिकारी एवं चुने हुए दक्ष–प्रशिक्षक भाग लेंगे। यह समिति सीसीई के क्रियान्वयन में आ रही प्रशासनिक चुनौतियों की समीक्षा कर कार्य को गति प्रदान करेगी।

संकुल मॉडल स्कूल बनाने के मापदण्ड

- जितना संभव हो सके संकुल स्कूल उसे बनाया जाये जिसमें पहले से ही सीसीई प्रक्रिया से आकलन किया जा रहा हो और वह स्कूल पहले से ही अच्छा काम कर रहा हो। वह पायलेट परियोजना का, लहर परियोजना अथवा नोडल स्कूल हो सकता है।

- विद्यालय का स्टाफ व संस्था प्रधान सकारात्मक सोच वाले हों। इस प्रक्रिया को पूरे मन से स्वीकार करके उसको सफल बनाने में अपनी ओर से पूरी ईमानदारी से प्रयास करें।

- संकुल से सम्बन्धित स्कूलों के शिक्षकों के आने–जाने के लिए सुविधजनक हो। उनकी पहुँच में हो तथा अपने साधन से वहाँ आने–जाने में कम से कम परेशानी हो।

- स्कूल का भौतिक स्वरूप ठीक हो यानि कि पर्याप्त कक्षा–कक्ष हों, जहाँ मासिक कार्यशाला करने के लिए कक्ष उपलब्ध हो सके।

- संकुल मॉडल स्कूल के शिक्षक इस कार्यशाला के आयोजन में सहयोग करेंगे। वहाँ का शिक्षक समूह इस जिम्मेदारी का वहन करने के लिए अपनी इच्छा से तैयार हो।

शिक्षकों की क्षमता संवर्धन हेतु समर्थन (मासिक कार्यशाला)

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि प्रशिक्षण के साथ मासिक रूप से होने वाली विषय आधारित कार्यशाला के ज़रिए ही गुणवत्ता को सुनिश्चित किया जा सकता है।

मासिक कार्यशालाओं के ज़रिए शिक्षकों की शैक्षिक चुनौतियों का निवारण, विषयों की गहराई से समझ एवं कक्षा–कक्षीय प्रक्रियाओं को सुचारू व गुणवत्तापूर्ण क्रियान्वयन आदि पर क्षमतासंवर्धन किया जाता है। अभी तक के अनुभव और शिक्षक साथियों द्वारा प्राप्त सुझावों के आधार पर भी यह कहा जा सकता है कि मासिक कार्यशालाएँ गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए सबसे उपयुक्त प्रक्रिया एवं साधन हैं।

इस सम्बन्ध में यह भी समझना जरूरी है कि कार्यशालाओं की प्रक्रिया एवं प्रकृति प्रशिक्षणों से भिन्न होती है। इसी कारण इस संदर्भ में तकनीकी समर्थन समूह की भूमिका अहम हो जाती है।

शुरूआती दौर में प्रशिक्षकों को एक ऐसे दौर से गुजरने की जरूरत होती है जहाँ पर वे देख सकें कि गुणवत्तापूर्ण कार्यशालाएँ कैसे की जाती हैं, जिससे कि कुछ समय उपरान्त वे स्वतंत्र रूप से उन्हें कर सकें।

पूर्ण ब्लॉक मॉडल में मासिक कार्यशालाओं को सबसे प्रमुख माना गया है और इनको पूरे अकादमिक सत्र में प्रत्येक माह में आयोजित किया जाना सुनिश्चित किया गया है।

भाग – दो : सतत एवं व्यापक मूल्यांकन स्कीम

2.5. एक अकादमिक (शैक्षिक) सत्र के लिए योजना एवं आकलन की संरचना

राजस्थान के संदर्भ में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया

सत्र 2010 – 2011 मे राजस्थान प्रारंभिक शिक्षा परिषद, यूनिसेफ एवं बोध शिक्षा समिति के सहयोग से राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा – 2005 एवं आर.टी.ई.– 2009 के संदर्भ में, सीखने–सिखाने एवं आकलन की परियोजना जयपुर एवं अलवर के 60 राजकीय विद्यालयों में कक्षा 1 से 4 के लिए प्रारंभ की गई।

पायलेट परियोजना के द्वितीय चरण में यानि कि सत्र 2011–2012 में इन्हीं 60 राजकीय विद्यालयों में कक्षा 5 से 8 के लिए भी सतत एवं व्यापक आकलन की परियोजना को बढ़ाया गया।

राजस्थान में सतत एवं व्यापक आकलन के स्केल–अप के प्रथम चरण के लिए पायलेट परियोजना से जुड़े हुए राजकीय शिक्षक, बोध संदर्भ शिक्षक, एसआईईआरटी, राजस्थान प्रारंभिक शिक्षा विभाग, यूनिसेफ एवं बोध ईआरसी के प्रतिनिधियों द्वारा दिए गए फीडबैक एवं अनुभवों को ध्यान में रखकर लगभग 3059 राजकीय विद्यालयों के लिए सतत एवं व्यापक आकलन हेतु निर्मित प्रक्रिया को सत्र 2012–2013 से लागू किया गया।

स्केल–अप के द्वितीय चरण में सम्पूर्ण ब्लॉक की अप्रोच पर राजस्थान के 9 ब्लॉक के लगभग 2000 और राजकीय विद्यालयों में इसी निर्मित प्रक्रिया को सत्र 2013–2014 से लागू किया गया।

वर्ष 2014–2015 में पूर्ण ब्लॉक मॉडल के तहत ही सीसीई को राज्य के लगभग 20 हजार स्कूल (सभी जिलों के दो–दो पूर्ण ब्लॉक) लेते हुए लागू किया गया।

वर्ष 2015–2016 में पूर्ण ब्लॉक मॉडल के तहत ही सीसीई को राजस्थान के 33 जिलों के 45000 विद्यालयों में प्रारम्भ किया जा रहा है।

राजस्थान सीसीई स्कीम विवरण

राजस्थान में संचालित सीसीई स्कीम के अंतर्गत निम्नलिखित प्रक्रियाएँ एवं दस्तावेज़ सम्मिलित हैं–

2.6. आधार रेखा आकलन :

क्या : सत्र के प्रारंभ में बच्चों के शैक्षिक स्तर को जानने के लिए किया जाने वाला परीक्षण 'आधार रेखा आकलन' कहलाता है।

आवश्यकता क्यों : आधार रेखा आकलन (कक्षा 2 से प्रारंभ करते हुए) किसी भी कक्षा में अध्ययनरत बच्चों के वास्तविक शैक्षिक स्तर को जानने के लिए आवश्यक है, जिससे कि बच्चों को उनके शैक्षिक स्तर के आधार पर उचित योजना बनाकर कार्य करवाया जा सके। जिन विद्यालयों में पूर्व से ही सीसीई संचालित है, वहाँ बच्चों के अन्तिम योगात्मक आकलन को आधार माना जाता है। फिर भी बच्चों के प्लेसमेंट के लिए आधाररेखा आकलन किया जा सकता है। इन विद्यालयों में कक्षा 1 को छोड़कर अन्य कक्षाओं में नवीन प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों का आधार रेखा आकलन लेना आवश्यक है। लेकिन जिन विद्यालयों में पहली बार सीसीई संचालित किया जाना है, वहाँ पर कक्षा 2 से 5वीं तक की सभी कक्षाओं के बच्चों का आधार रेखा आकलन उनके शैक्षिक स्तर की जाँच करने के लिए आवश्यक है।

कैसे : आधार रेखा आकलन हेतु सत्र के प्रारंभ में 15–20 दिन बच्चों के साथ पूर्व की कक्षा के कार्यों का दोहरान करा लेने के पश्चात एक आधार रेखा आकलन पत्रक (टूल) द्वारा बच्चों का आकलन किया जाएगा। इस पत्रक/टूल में मौजूदा स्तर से पूर्व की 1 से 3 कक्षाओं के स्तर की मुख्य क्षमताओं पर आधारित प्रश्न होने चाहिए। इसके लिए

संदर्भित नमूना स्रोत पुस्तिका में दिया गया है। आधार रेखा आकलन/प्लेसमेंट टूल के नमूने विषयवार अनुलंग्नकों में दिए गए है।

कहाँ दर्ज़ करें ? आधार रेखा द्वारा प्राप्त शैक्षिक स्तर 'अध्यापक योजना डायरी' में निर्धारित स्थान पर दिए गए प्रारूप में दर्ज करें।

नोट : आधार रेखा आकलन हिन्दी, गणित एवं अंग्रेजी विषयों में ही किया जाना है।

2.7 अध्यापक योजना डायरी (रचनात्मक आकलन)

क्या : अध्यापक योजना डायरी एक ऐसा दस्तावेज़ है जिसमें प्रत्येक कक्षा से सम्बन्धित विषय के लिए शिक्षण–आकलन कार्य योजना, समीक्षा एवं रचनात्मक आकलन चैकलिस्ट को सम्मिलित किया गया है। प्रत्येक सत्र के लिए अध्यापक योजना डायरी का प्रावधान रखा गया है।

विषयवार अलग–अलग डायरियाँ रखी गई हैं। प्राथमिक स्तर पर कुल 7 डायरियाँ हैं। जिनका विवरण इस प्रकार से है –

विषय	कक्षा	संख्या	कुल	
हिन्दी	कक्षा : 1 व 2 एवं 3 से 5	1 + 1 =	2	
गणित	कक्षा : 1 व 2 एवं 3 से 5	1 + 1 =	2	
अंग्रेजी	कक्षा : 1 व 2 एवं 3 से 5	1 + 1 =	2	
पर्यावरण अध्ययन	कक्षा : 3 से 5	1	1	**कुल डायरियाँ=7**

क्यों : सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में योजना एवं तैयारी एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है। शिक्षक के पास पूर्व से ही वर्षभर के लिए एक निर्धारित पाठ्यक्रम एवं उसके अनुरूप तैयार की गई पाठ्यपुस्तक उपलब्ध होती है। लेकिन इस लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु बच्चों के स्तरानुरूप कक्षा में सीखने– सिखाने की प्रक्रिया सुगम एवं गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए योजना की आवश्यकता होती है। जिससे बच्चों की सीखने की स्थितियों पर निरंतर ध्यान रखना एवं उनकी आवश्यकता के अनुरूप योजना में बदलाव करते हुए उचित पृष्ठपोषण देना रचनात्मक आकलन के तहत आता है।

कैसे : विद्यालय समय सारणी के अनुसार आवंटित विषय के अनुरूप संबंधित कक्षाओं की डायरी विद्यालय के प्रत्येक शिक्षक के पास होगी, जिसे उनके द्वारा संधारित किया जाएगा। संधारण का मुख्य आधार विषय के संदर्भ में दिए गए अधिगम उद्देश्यों के सापेक्ष शिक्षण योजना तैयार करना, उसका कक्षा–कक्ष में क्रियान्वयन करना तथा योजना पर कार्य करवाते हुए मध्यावधि में शैक्षिक योजना की समीक्षा करना है। इस प्रकार कार्य करवाते हुए प्रत्येक माह में बच्चों की प्रगति को रचनात्मक आकलन चैकलिस्ट में दर्ज़ करते रहना है। अध्यापक योजना डायरी में निहित सामग्री आगामी पृष्ठ पर दी गई है।

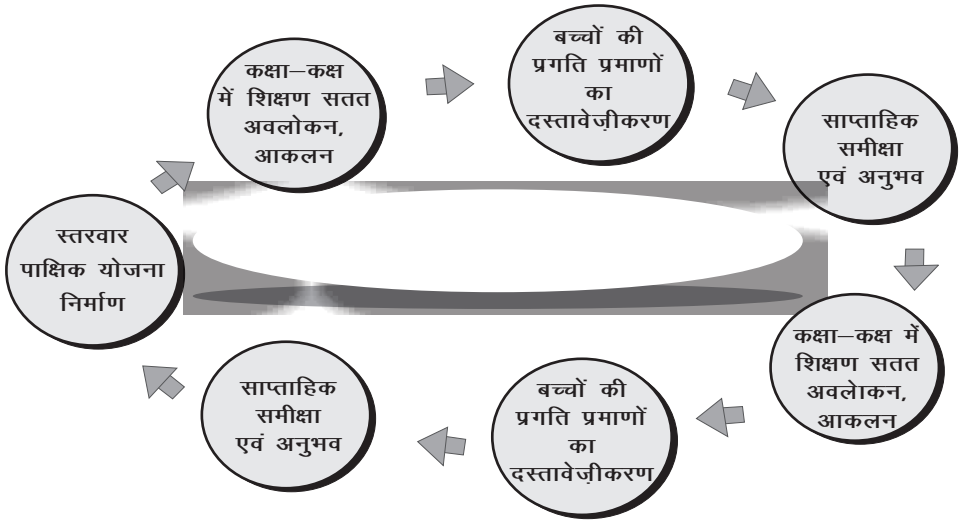

2.8 पाठ्यक्रम एवं टर्मवार अधिगम उद्देश्य (1 से 5)

क्या : यह एक ऐसा दस्तावेज़ है जिसके अन्तर्गत विषय से सम्बन्धित उद्देश्य, कक्षावार पाठ्यक्रम, टर्मवार पाठ्यक्रम एवं सूचकों का विवरण तथा पाठवार एवं टर्मवार अधिगम कार्य एवं उद्देश्यों को व्यवस्थित किया गया है।

क्यों : बच्चों के लिए सीखने–सिखाने की प्रक्रिया से पूर्व योजना निर्धारण एवं तैयारी के लिए पाठ्यपुस्तक के साथ पाठ्यक्रम एवं विषय के मुख्य उद्देश्यों को देखना भी आवश्यक हो जाता है, जिससे कि उनके सापेक्ष योजना को बनाने में मदद मिल सके।

कैसे : योजना बनाने के दौरान पाठों से सम्बन्धित अधिगम कार्य/उद्देश्य को देखने के लिए काम में ली जाएगी।

शिक्षक आकलन योजना

पाठ/अवधारणा/थीम ..... सम्पूर्ण कक्षा के लिए शिक्षण–आकलन योजना	दिनांक .....से .....तक
सम्पूर्ण कक्षा के लिए अधिगम उद्देश्य :	

सम्पूर्ण कक्षा के लिए शिक्षण योजना (1. सामूहिक कार्य 2. उपसमूहों में कार्य 3. व्यक्तिगत कार्य की योजना)	सतत आकलन योजना
.....	.....
समूह–एक के लिए क्षमता संवर्धन हेतु योजना	
.....	.....

II. समूह–2 के लिए आवश्यकतानुसार अतिरिक्त शिक्षण–आकलन योजना

समूह–2 के लिए विशेष अधिगम उद्देश्य : .....

शिक्षण योजना (1. सामूहिक कार्य 2. उपसमूहों में कार्य 3. व्यक्तिगत कार्य की योजना)	सतत आकलन योजना
.....	.....

शिक्षण योजना की समीक्षा: सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के दौरान आई समस्या, समाधान एवं उपलब्धि के सन्दर्भ में

साप्ताहिक : समयान्तराल ..... से ..... तक	पाक्षिक : समयान्तराल ..... से ..... तक
बच्चों की सहभागिता, सीखने–सिखाने में आई कठिनाई एवं योजना में आवश्यक बदलाव के बारे में :–	बच्चों की सहभागिता, सीखने–सिखाने में आई कठिनाई एवं अधिगम उपलब्धि के बारे में :– .....

सतत रचनात्मक आकलन की स्थिति

प्रथम टर्म : सतत रचनात्मक आकलन की स्थिति

कक्षा : 3

अधिगम उद्देश्यों के सापेक्ष आकलन सूचक	आवृत्ति	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30
सुनकर समझना और समझकर बोलना																															
सुनी या पढ़ी हुई कविता,गीत को लय, हावभाव एवं पहल करते हुए अभिव्यक्त कर पाना।	I																														
	II																														
सुनी कविता/कहानी/प्रसंग आदि से सम्बन्धित (क्या,कहाँ,कैसे, कौन से, क्यों) वाले प्रश्नों के उत्तर पूरे–पूरे वाक्यों में दे पाना।	I																														
	II																														
सुनी घटना/कहानी/प्रसंग आदि विभिन्न संदर्भों के साथ स्वयं के अनुभवों को जोड़कर अभिव्यक्त कर पाना। (अपनी भाषा/बोली में)	I																														
	II																														
कविता/कहानी को सुनकर उसका सार या भाव अपने शब्दों में बता पाना।	I																														
	II																														
पसंद/नापसंद या अन्य सामाजिक मुद्दों पर चर्चा में अपनी बात को समूह में व्यक्त कर पाना एवं दूसरों की बात को सुन पाना।	I																														
	II																														

पूर्व कक्षा से संबंधित बुनियादी क्षमताओं के सापेक्ष सतत रचनात्मक आकलन की स्थिति

कक्षा –1	विद्यार्थियों के रोल नम्बर → * पढ़ना और पढ़कर समझना ** लिखना	टर्म																													
* वर्णाकृतियों की पहचान करते हुए सही उच्चारण के साथ पढ़ पाना।		I																												
		II																													
		III																													
		IV																													
मात्राओं की ध्वनि एवं चिह्नों को समझते हुए पढ़ पाना। ** चित्र के माध्यम से शब्दों को लिख पाना।		I																													
		II																													
		III																													
		IV																													

2.9. सतत एवं व्यापक आकलन अभिलेख (योगात्मक आकलन)

क्या : प्रत्येक टर्म में विभाजित पाठ्यक्रमीय लक्ष्यों के सापेक्ष उपलब्धि के स्तर के आकलन को योगात्मक आकलन कहा गया है। इस अभिलेख को एक रजिस्टर के रूप में तैयार किया गया है। इसमें प्रत्येक विद्यार्थी से संबंधित चारों टर्मों का विवरण दर्ज़ किया जाना है। इस प्रकार इस रजिस्टर में लगभग 50 विद्यार्थियों की प्रगति को दर्ज़ किया जा सकता है।

क्यों : बच्चों की प्रगति को सालभर में एक बार देखने से वास्तविक रूप में उनके सीखने की गति, सीखने में आ रही समस्याओं एवं प्रगति आदि को ठीक से नहीं आंका जा सकता है। अतः सालभर में कम से कम तीन–चार बार बीच में ठहर कर देखते रहने से स्वयं की काम की समीक्षा के साथ–साथ बच्चों की प्रगति को देखते रहने से उन्हें उचित प्रतिपुष्टि मिलती रहती है। जो कि सीखने–सिखाने में मददगार होती है।

कैसे : प्रत्येक विषय के लिए अधिगम उद्देश्यों से संबंधित विशिष्ट टिप्पणियाँ पूर्व से ही प्रपत्र में लिख दी गई हैं जिनके सापेक्ष ग्रेड दर्ज़ करने का निर्णय मासिक समेकित रचनात्मक आकलन चैकलिस्ट के आधार पर (रचनात्मक आकलनों से प्राप्त सूचनाओं, कक्षा कार्य, गृहकार्य तथा पोर्टफोलियो में संकलित विभिन्न कार्यपत्रकों में की गई शिक्षक टिप्पणियों आदि सामग्री) किया जाएगा। इसमें प्रत्येक टर्म के अंत में निर्धारित अवधि पर बच्चों की प्रगति को दर्ज़ किया जाना है। सतत एवं व्यापक आकलन अभिलेख का प्रपत्र नीचे दिया गया है।

योगात्मक आकलन

सतत एवं व्यापक आकलन अभिलेख	विद्यार्थी क्रमांक	नाम : .... नामांकित कक्षा :........... आधार रेखा/पदस्थापन मूल्यांकन से प्राप्त कक्षा स्तर हिंदी ...., गणित ...., अंग्रेजी ....

1.हिन्दी अधिगम उद्देश्यों के सापेक्ष आकलन बिन्दु		ग्रेड SA-1	SA-2	SA-3	SA-4
सुनकर समझना और समझकर बोलना	कक्षा स्तर				
	समेकित ग्रेड				
घर की भाषा और स्कूल की भाषा के बीच संबंध बनाते हुए अपनी बात को सहज रूप से कह पाना। (कक्षा 1 व 2)					
बोलने में पहल और आत्मविश्वास के साथ स्वयं की बात को रख पाना। 1-2 3-5					
कक्षा–कक्ष में हो रही चर्चा में भाग लेना। 1-2 3-5					
दूसरे के विचारों को सुनने के लिए उत्साहित होना और सुनकर उचित प्रतिक्रिया दे पाना। (कक्षा 3 से 5)					
सुनकर समझना और अपनी प्रतिक्रिया तार्किक ढंग से आत्मविश्वास के साथ व्यक्त कर पाना। (कक्षा 3 से 5)					
भाषा के सौंदर्य की सराहना करने की योग्यता का विकास कर पाना। (कक्षा 3 से 5)					
वस्तुस्थिति को समझना एवं विश्लेषण कर पाना। (कक्षा 3 से 5)					
पढ़ना और पढ़कर समझना	कक्षा स्तर				
	समेकित ग्रेड				
परिवेश में उपलब्ध संदर्भों, चित्रों और छपी हुई लिखित सामग्री को पढ़ने के लिए उत्सुक होना। 1-2 3-5					
ध्वनि व लिपि संकेतों के मध्य सहसम्बन्ध तथा लिखित/मुद्रित सामग्री से रिश्ता जोड़ पाना। 1-2 3-5					
पढ़ी कहानियों, चित्रों और कविताओं से अपने अनुभव जोड़ पाना, उनके बारे में बात कर पाना। 1-2 3-5					
सामग्री को उचित गति व शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ पाना एवं उसे समझते हुए अपनी राय बता पाना। (कक्षा 3 से 5)					
स्तरानुसार संबंधित सूचनाओं ,निर्देशों एवं पत्रों को पढ़कर समझते हुए कार्य कर पाना। (कक्षा 3 से 5)					
विषयवस्तु के बढ़ते क्रम में शब्दावली का संदर्भ के साथ अर्थ ग्रहण कर पाना व नवीन जानकारियाँ प्राप्त कर पाना। (कक्षा 3 से 5)					
चित्र कथाओं, पत्रों, चुटकुलों को पढ़कर समझना व पूछे गए प्रश्नों के उत्तर तार्किकता के साथ दे पाना। (कक्षा 3 से 5)					
पुस्तकों को पढ़ने एवं चुनने में रुचि होना। 1-2 3-5					
अधिगम उद्देश्यों के सापेक्ष आकलन बिन्दु		ग्रेड SA-1	SA-2	SA-3	SA-4
लिखना	कक्षा स्तर				
	समेकित ग्रेड				
विषयवस्तु के बढ़ते क्रम में लिपि चिह्नों को देखकर और उनकी ध्वनियों को सुनकर, समझकर उनमें सहसंबंध बनाते हुए लिख पाना। (वर्ण, सरल शब्द, मात्रायुक्त शब्द) (कक्षा 1 व 2)					
विभिन्न सन्दर्भों, चित्रों, चित्र दृश्यों एवं विषयवस्तु में निर्देशानुसार 1–2 वाक्य लिखना। (कक्षा 1 व 2)					

अधिगम उद्देश्यों के सापेक्ष आकलन बिन्दु		ग्रेड SA-1	SA-2	SA-3	SA-4
लिखना					
विषयवस्तु के बढ़ते क्रम में आने वाले प्रश्नों जैसे –क्या, क्यों, कौन, कैसे....... के उत्तर तार्किकता के साथ लिख पाना। (कक्षा 3 से 5)					
किसी परिचित संदर्भ/विषयवस्तु/चित्र पर स्पष्टता के साथ मानक शब्दावली व विराम चिह्नों का उपयोग करते हुए 8–10 वाक्य लिख पाना। (कक्षा 3 से 5)					
पढ़े गए संवाद को कहानी के रूप में स्वयं के स्तर पर लिख पाना। (कक्षा 3 से 5)					
पहेलियों, लोकोक्तियों, लोककथाओं को खोजकर लेखन कर पाना। (कक्षा 3 से 5)					
चित्रों एवं विषयवस्तु के आधार पर कहानी का सृजन कर पाना। (कक्षा 3 से 5)					
पढ़े गए पत्रों के आधार पर उचित प्रारूप में स्वयं पत्र लिख पाना। (कक्षा 3 से 5)					
व्यवहारिक व्याकरण (कक्षा 3 से 5 तक)	कक्षा स्तर				
	समेकित ग्रेड				
संज्ञा, सर्वनाम एवं विशेषण की पहचान कर पाना।					
वाक्यों में कारक चिह्नों की उपयुक्तता को समझ पाना एवं सही कारकों का उपयोग करते हुए वाक्य संरचना करना।					
समानार्थी शब्दों को समझना एवं अपनी भाषा में प्रयोग भी कर पाना।					
वचन, पर्यायवाची एवं विपरीतार्थक शब्दों को संदर्भ के अनुसार प्रयोग कर पाना।					
उपसर्ग एवं प्रत्यय से नवीन शब्द संरचना करना।					
क्रिया और क्रिया विशेषण की पहचान कर पाना एवं प्रयोग कर पाना।					
मुहावरों की समझ एवं उनका प्रयोग कर पाना।					
सृजनात्मक अभिव्यक्ति		SA-2		SA-4	
	समेकित ग्रेड				
चित्रकारी के माध्यम से अभिव्यक्ति कर पाना। 1-2 3-5					
कविता गायन एवं अभिनय के प्रति रुचि होना। 1-2 3-5					
विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को बनाने के प्रति पहल करना। 1-2 3-5					
परिवेशीय सजगता		SA-2		SA-4	
	समेकित ग्रेड				
प्राकृतिक एवं अन्य घटनाओं के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर पाना। (कक्षा 3 से 5)					
देखी सुनी घटनाओं के घटनाक्रम को समझना और समझा पाना। (कक्षा 3 से 5)					
आसपास मौजूद हालातों के बारे में कारण जानने के लिए सवाल कर पाना। (कक्षा 3 से 5)					
व्यक्तिगत या विद्यालय स्तर की सामग्री के व्यर्थ उपयोग को रोकने की पहल कर पाना। (कक्षा 3 से 5)					

नाम : ———————————— हस्ताक्षर : ———————————

विषय अध्यापक/अध्यापिका :

2.9. विद्यार्थी वार्षिक आकलन प्रतिवेदन :

क्या : विद्यार्थी वार्षिक आकलन प्रतिवेदन विद्यार्थी को सत्र उपरांत प्रदान किया जाएगा। इस प्रपत्र में विद्यार्थी से संबंधित व्यक्तिगत सूचनाएँ एवं सभी विषयों (संज्ञानात्मक एवं सह संज्ञानात्मक क्षेत्रों) पर रही उपलब्धि का विवरण ग्रेड व समेकित टिप्पणी सहित उल्लेख किया जाएगा।

कैसे : विद्यार्थी वार्षिक प्रतिवेदन तैयार करने हेतु 'सतत एवं व्यापक अभिलेख'' में संधारित सूचनाओं को समेकित करते हुए लिखा जाएगा। जिसका प्रपत्र इस प्रकार रखा गया है –

स्कूल शिक्षा विभाग (माध्यमिक) – राजस्थान सरकार

स्टेट इनिशिएटिव फॉर क्वालिटी एज्यूकेशन कार्यक्रम में सम्मिलित आदर्श–विद्यालयों हेतु

विद्यार्थी वार्षिक आकलन प्रतिवेदन

(सतत एवं व्यापक मूल्यांकन योजना पर आधारित)

प्राथमिक कक्षाओं के लिए

सत्र : .....

विद्यार्थी का नाम : ..... **कक्षा :** .....

पिता का नाम : ..... **माता का नाम :** .....

जन्म दिनांक : (अंकों में) ..... **(शब्दों में)** .....

रोल नं. : ..... **एस.आर.नं. :** .....

अध्ययन हेतु आगामी कक्षा : .....

विद्यालय का नाम : ..... ब्लॉक : .....

डायस कोड ..... जिला : .....

टर्म अवधि	SA-1	SA-2	SA-3	SA-4	लम्बाई	वजन
कार्य दिवस					सत्रारम्भ :	सत्रारम्भ : .....
उपस्थिति					सत्रान्त :	सत्रान्त : .....

हस्ताक्षर मय नाम
कक्षाध्यापक / कक्षाध्यापिका

प्रतिवेदन
जारी करने की तिथि

हस्ताक्षर मय सील
प्रधानाध्यापक / प्रधानाध्यापिका

समेकित आकलन विवरण

1. हिन्दी (अधिगम उद्देश्य; आकलन बिन्दु)	प्रथम टर्म कक्षा स्तर	SA-1 ग्रेड	द्वितीय टर्म कक्षा स्तर	SA-2 ग्रेड	तृतीय टर्म कक्षा स्तर	SA-3 ग्रेड	चतुर्थ टर्म कक्षा स्तर	SA-4 ग्रेड
सुनकर समझना और समझकर बोलना								
पढ़ना और पढ़कर समझना								
लिखना								
व्यावहारिक व्याकरण (कक्षा 3 से लागू)								
सृजनात्मक अभिव्यक्ति	–	–		–	–			
परिवेशीय सजगता	–	–		–	–			
2. गणित (अधिगम उद्देश्य; आकलन बिन्दु)	प्रथम टर्म कक्षा स्तर	SA-1 ग्रेड	द्वितीय टर्म कक्षा स्तर	SA-2 ग्रेड	तृतीय टर्म कक्षा स्तर	SA-3 ग्रेड	चतुर्थ टर्म कक्षा स्तर	SA-4 ग्रेड
आकृति एवं स्थान की समझ								
संख्या ज्ञान की समझ								
संक्रियाओं की समझ								
मापन की समझ								
आँकड़ों का प्रबन्धन एवं पैटर्न								
गणितीय तर्कशीलता एवं अधिसंज्ञान	–	–		–	–			
गणितीय संप्रेषण एवं अभिव्यक्ति	–	–		–	–			
गणित के प्रति रुझान	–	–		–	–			
3. ENGLISH (Learning Objectives; Assessment Points)	प्रथम टर्म कक्षा स्तर	SA-1 ग्रेड	द्वितीय टर्म कक्षा स्तर	SA-2 ग्रेड	तृतीय टर्म कक्षा स्तर	SA-3 ग्रेड	चतुर्थ टर्म कक्षा स्तर	SA-4 ग्रेड
Listening with Understanding								
Speaking with Confidence								
Reading with Comprehension								
Writing								
Functional Grammar (Class 2 onwards)								

4. पर्यावरण अध्ययन (अधिगम उद्देश्य; आकलन बिन्दु)	SA-1 ग्रेड	SA-2 ग्रेड	SA-3 ग्रेड	SA-4 ग्रेड
अवलोकन और दर्ज़ करना।				
संप्रेषण कौशल (अभिव्यक्ति/चर्चा)				
वर्गीकरण करना।				
व्याख्या/विश्लेषण करना।				
प्रश्न करना।				
प्रयोग करना				
न्याय व समता के प्रति सरोकार	–		–	

नोट : SA-1, SA-2, SA-3 & SA-4 का तात्पर्य क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ योगात्मक आकलन से है।

5.व्यक्तिगत गुण व अभिवृत्तियाँ (द्वितीय एवं चतुर्थ योगात्मक–आकलनों की सहायता से उल्लेखित बिन्दुओं के सापेक्ष सही (✓) का निशान लगाएं।)

(i) **सहयोग एवं देखभाल :** ● सहपाठी एवं अध्यापकों के साथ मित्रवत व्यवहार एवं सहयोग करना। ● दूसरों के विचारों को समझना एवं संवेदनशील होना। ● आपस में सहजता के साथ अवसर बाँटना।

(ii) **आत्मविश्वास एवं पहल :** ● स्वयं के स्तर पर जिम्मेदारी लेना। ● पहल करना। ● चुनौतिपूर्ण स्थितियों में सहपाठी एवं शिक्षकों की मदद लेना।

(iii) **समय की पाबन्दी :** ● श्रेष्ठ ● औसत ● संतोषजनक

6. स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा (द्वितीय एवं चतुर्थ योगात्मक–आकलनों की सहायता से उल्लेखित बिन्दुओं के सापेक्ष सही (✓) का निशान लगाएं।)

(i) **स्वच्छता :** ● व्यक्तिगत साफ–सफाई। ● स्कूल एवं आस–पास के परिवेश की साफ–सफाई में भागीदारी।

(ii) **पोषण एवं स्वास्थ्य की स्थिति :** ● पूर्ण स्वस्थ ● औसत ● कमजोर

(iii) **व्यायाम :** ● अत्यधिक रुझान ● कम रुझान ● बिल्कुल रुझान नहीं

(iv) **खेल :** ● खेल गतिविधियों में पहल एवं रुचि के साथ भाग लेना। ● दूसरों के द्वारा प्रोत्साहित करने पर ही भाग लेना।

7. कला शिक्षा (आकलन बिन्दु)	SA-2	SA-4
(i) संगीत	**कोड**	**कोड**
संलग्नता : 1 आनन्द के साथ संलग्न 2 व्यस्त किन्तु जुड़ाव नहीं 3 कम रुचि के साथ		
अभिव्यक्ति (बालगीतों की प्रस्तुति के संदर्भ में)	**कोड**	**कोड**
□ **लय में गाना :** 1 सामान्यतः 2 कभी–कभी 3 अक्सर नहीं		
□ **हावभाव व अभिनय के साथ गाना :** 1 सहजता से 2 सामान्य हिचकिचाना 2 ज्यादातर कतराना		
□ **स्मृति के बारे में :** 1 पूरा गीत याद रहना 2 अधूरा याद रहना 3 एक–दो पंक्ति याद रहना		
□ **सामूहिक एवं एकल प्रस्तुति :** 1 दोनों प्रस्तुति दे पाना 2 सामूहिक कर पाना, एकल में संकोच 3 केवल सामूहिक		

(ii) चित्रकला–दस्तकारी	कोड	कोड
संलग्नता : 1 आनन्द के साथ संलग्न 2 व्यस्त किन्तु जुड़ाव नहीं 3 कम रुचि के साथ		
अभिव्यक्ति : 1 सृजनात्मक, मौलिक 2 प्रयोगात्मक 3 अनुकरणात्मक		
(iii) नाटक	कोड	कोड
संलग्नता : 1 आनन्द के साथ संलग्न 2 व्यस्त किन्तु जुड़ाव नहीं 3 कम रुचि के साथ		
अभिव्यक्ति : 1 सृजनात्मक, मौलिक 2 प्रयोगात्मक 3 अनुकरणात्मक		
(iv) नृत्य	कोड	कोड
संलग्नता : 1 आनन्द के साथ संलग्न 2 व्यस्त किन्तु जुड़ाव नहीं 3 कम रुचि के साथ		
अभिव्यक्ति : 1 सृजनात्मक, मौलिक 2 प्रयोगात्मक 3 अनुकरणात्मक		

समेकित अध्यापकीय टिप्पणी :

हस्ताक्षर विद्यार्थी

हस्ताक्षर अभिभावक

प्रतिवेदन एवं विविष्टियों के सम्बन्ध में स्पष्टीकरण

1. यह प्रतिवेदन सत्र के अन्त में भरकर विद्यार्थियों को **प्रगति–पत्र** के रूप में दिया जाना है। पर्यावरण अध्ययन विषय कक्षा 3 से लागू है।
2. यह प्रतिवेदन विद्यालय में संधारित विद्यार्थी के **सतत एवं व्यापक आकलन अभिलेख पंजिका** के आधार पर तैयार किया गया है।
3. **योगात्मक आकलनों में अधिगम उपलब्धि स्तर के लिए** A , B अथवा C **ग्रेड दिए गए हैं। ग्रेड देने के आधार :** A = स्वतंत्र रुप से कार्य कर पाना या अपेक्षित स्तर की समझ/दक्षता होना ; B = शिक्षक की सहायता से कार्य कर पाना या मध्यम स्तर की समझ/दक्षता होना ; C = शिक्षक की विशेष सहायता से कार्य कर पाना या आरम्भिक स्तर की समझ/दक्षता होना।
4. **हिन्दी, गणित एवं अंग्रेजी विषय में प्रत्येक योगात्मक आकलन** के साथ **कक्षा–स्तर** का कॉलम दिया गया है। इस कॉलम में, विद्यार्थी के साथ संबंधित टर्म में जिस कक्षा स्तर की बुनियादी अवधारणाओं एवं कौशलों पर कार्य किया गया है, उस कक्षा का उल्लेख किया गया है। कक्षा–स्तर का निर्धारण **आधार–रेखा आकलन** अथवा **पूर्व के योगात्मक आकलन** के आधार पर किया गया है।
5. **कला–** शिक्षा के आकलन में **ग्रेड** के स्थान पर क्षेत्र विशेष में विद्यार्थी की स्थिति के अनुसार **कोड** : 1 , 2 या 3 दर्ज किया गया है।
6. **आकलन कथन एवं प्रतिपुष्टि टिप्पणी** में सम्बन्धित विषय/क्षेत्र में विद्यार्थी की **सत्रांत अधिगम उपलब्धि** एवं उसके द्वारा की गई **प्रगति** का उल्लेख किया गया है। साथ ही वहाँ विद्यार्थी विशेष के संदर्भ में खास प्रतिपुष्टि (Feedback) को भी यथासम्भव दर्ज किया गया है।

2.10 पोर्टफोलियो :

क्या : पोर्टफोलियो एक ऐसी फाइल है जिसमें विद्यार्थी द्वारा किए गए कार्य के प्रतिनिधि नमूनों को व्यवस्थित कर लगाया जाता है। यह प्रत्येक विद्यार्थी की अलग–अलग फाइल होती है।

क्यों : प्रत्येक विद्यार्थी के सीखने में हो रहे परिवर्तनों को अथवा प्रगति को शिक्षक, अभिभावक एवं बच्चों को स्वयं देखने व समझने के लिए पोर्टफोलियो को संधारित किया जाना आवश्यक है।

कैसे : प्रत्येक बच्चे के द्वारा किए जाने वाले विषय–क्षेत्रवार कार्यों के नमूनों को वर्गीकृत करके लगाया जाएगा इसमें लगाया जाने वाला प्रत्येक नमूना–पत्रक शिक्षक द्वारा उद्देश्यों के सापेक्ष विश्लेषित करते हुए गुणात्मक टिप्पणी लिखकर लगाया जाएगा। इसको कक्षा–कक्ष में सुरक्षित स्थान पर रखा जाए, इनके संधारण में बच्चों की मदद ली जाए।

2.11 शिक्षक, विद्यार्थी एवं अभिभावक शेयरिंग बैठक के दौरान पृष्ठपोषण

बच्चे की सीखने की स्थिति को अभिभावक के साथ शेयर करना, उनसे बच्चे के सीखने के बारे में तथा विद्यालय की कार्य प्रक्रिया के बारे में रचनात्मक सुझाव प्राप्त करना इस प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण घटक है।

कब करें ? सीसीई स्कीम के तहत एक सत्र में दो बार यानि द्वितीय योगात्मक और चतुर्थ योगात्मक आकलन की शेयरिंग के समय इस बैठक को किया जाना है। उनके द्वारा दी गई प्रतिपुष्टि को सतत एवं व्यापक आकलन अभिलेख में नियत स्थान पर दर्ज़ किया जाएगा।

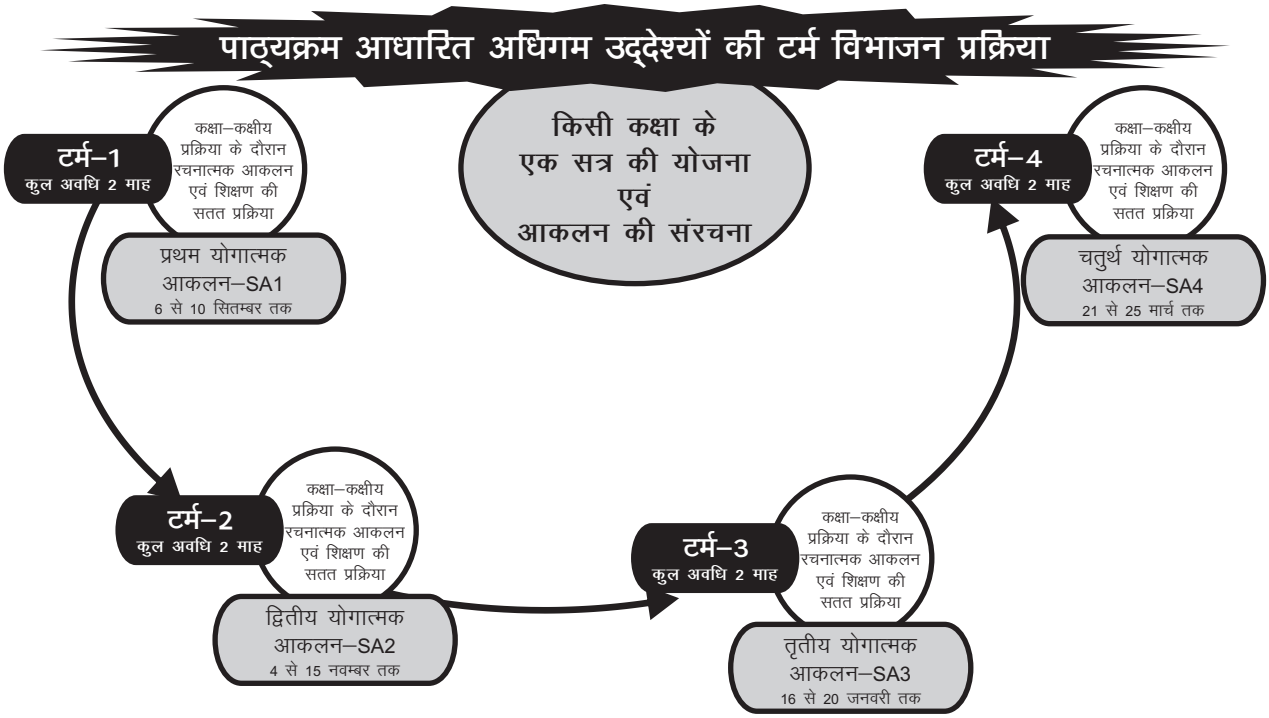

अध्याय–3

भाषा की प्रकृति : हिन्दी

प्रस्तावना

भाषा–शिक्षण समस्त शिक्षा का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पहलू है, विभिन्न विषय क्षेत्र और ज्ञान के क्षेत्रों से संबंधित शिक्षण मूल रूप से भाषा पर निर्भर करते हैं। मानव की समझ, सम्प्रेषण क्षमता, अभिव्यक्ति की सशक्तता, सुनकर और पढ़कर समझ पाने की क्षमता, अन्य विषयों या ज्ञान के क्षेत्रों में ज्ञानार्जन की क्षमता के निर्धारण में भाषा मुख्य भूमिका निभाती है। साथ ही हम सब यह भी जानते हैं कि लिखने–बोलने, सुनने और पढ़ने की भाषिक क्षमताएँ स्कूल के सभी विषयों के शिक्षण से भी विकसित होती हैं, अतः बच्चों के ज्ञान निर्माण में इनके बुनियादी महत्त्व को ठीक से समझने की आवश्यकता है।

एन.सी.एफ. 2005 में भाषा शिक्षण के इस मत का समर्थन किया है कि भाषा सीखने–सिखाने में अर्थ, उद्देश्य, आवश्यकता, प्रयोग एवं रुचि का तत्त्व सदैव केन्द्र में रहना चाहिए। बच्चों की अभिव्यक्ति स्वाभाविक रूप से उनकी बोलचाल की भाषा से ओतप्रोत होती है। भाषा शिक्षण में उसके प्रति पर्याप्त सहज, उत्साहित एवं संवेदनशील रहते हुए, उनके हिन्दी रूपान्तरणों की ओर बार–बार ले जाने की आवश्यकता होती है, लेकिन संभवतः स्कूली व्यवस्था में भाषा की कक्षाओं में इस प्रकार की सहजता कम दिखाई देती है। शिक्षक इसे जितने सधे ढंग से कर पाते हैं, बच्चे उतने ही अधिक आत्मविश्वास, समझ और आनंद के साथ भाषा को आरम्भिक स्तर पर व्यवहार में लेना, उसे पढ़ना–लिखना एवं सोच विचार तथा अभिव्यक्ति करना सीख पाते हैं।

हमें इस बात को समझने की आवश्यकता है कि भाषा सोचने, चीज़ों से जुड़ने और महसूस करने का साधन है। जैसे– 'महसूस करने' को समझना चाहें तो हम स्वयं के अनुभवों में ही यदि खोज करें तो पाएँगे कि जब हम किसी से नाराज़ या खुश होते हैं तो हम अपने उस गुस्से के या खुशी के एहसास को प्रकट करने के लिए गुस्से वाले शब्द व स्वर चुनते हैं जो कि परिस्थिति पर हमारी स्थिति के अनुसार असर डालें।

3.1 बच्चे के भाषा विकास की प्रकृति (एन.सी.एफ. 2005 एवं आधार पत्र से)

भाषा सीखने की प्रक्रिया के संदर्भ में एक आम धारणा बनी हुई है कि भाषा अभ्यास, नकल व रटने से सीखी जाती है, लेकिन कुछ लोग इसके विपरीत भाषा विकसित होने की प्रक्रिया में बच्चे की खोजी प्रवृत्ति का होना भी मानते हैं, जिसके अंतर्गत अवलोकन, वर्गीकरण, संकल्पना एवं निर्माण आदि भी शामिल होते हैं। यह सब कैसे और किस–किस प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से किया जा सकता है, इसके बारे में आगे के अध्यायों में और बात करेंगे। इसके अतिरिक्त बच्चे की भाषा विकास के संदर्भ में और भी अनेक अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य हैं, जिनकी आरंभिक समझ होना भाषा – शिक्षण करवाने वाले अध्यापक साथियों के लिए आवश्यक है।

बच्चों में भाषा की जन्मजात क्षमता होती है :

हम रोज़मर्रा के अनुभव से जानते हैं कि ज्यादातर बच्चे, स्कूल की शिक्षा की शुरुआत से पहले ही भाषा की जटिलताओं और नियमों को कैसे आत्मसात कर पूर्ण भाषिक क्षमता रखते हैं। कई बार जब बच्चे स्कूल में

आते हैं तो उनमें पहले से ही दो या तीन भाषाओं को समझने और बोलने की क्षमता होती है। वे न केवल उन भाषाओं को सही–सही बोल लेते हैं, बल्कि उनका उचित प्रयोग भी कर रहे होते हैं। अतः यह कथन दो शिक्षाशास्त्रीय पहलू सामने रखती है :

- पर्याप्त अवसर मिले तो बच्चे नयी भाषाओं को आसानी से सीख सकते हैं।
- शिक्षण का फोकस व्याकरण पर न होकर विषय–वस्तु पर होना चाहिए।

यदि भाषा के शिक्षक बच्चों को कल्पना करने, तर्क करने एवं विश्लेषण करने आदि जैसी गतिविधियों के अवसर प्रदान करते हैं, तो बच्चों के ये कौशल उतने ही ज़्यादा विकसित होंगे, वे उतने ही स्पष्ट, सटीक और तार्किक ढंग से भाषा का इस्तेमाल करने में सक्षम हो सकेंगे। उनकी अभिव्यक्ति उतनी ही प्रभावशाली होगी।

देखा जाए तो यह बात अत्यधिक रोमांचकारी है कि कैसे तीन साल का बच्चा भी अपनी बात को कहने के लिए ध्वनियों ,शब्दों तथा वाक्यों के निर्माण की इतनी जटिल व्यवस्था को आत्मसात कर लेता है। बच्चे भले ही भाषा के नियमों और व्याकरण की शब्दावली की बात न कर सकें पर इन नियमों को वे घर और अपने आसपास भाषा सुनते–सुनते सहज रूप से सीख जाते हैं। सहज रूप से भाषा के नियम सीखने की यह प्रक्रिया स्कूल में भी जारी रहनी चाहिए। इसलिए यहाँ पर इस बात को बल दिया गया है, कि शिक्षण का फोकस व्याकरण पर न होकर विषय–वस्तु पर होना चाहिए, जिससे कि सहज ढंग से बच्चे भाषा के नियमों को भी सीख जाएँ।

हमारे बच्चों के साथ लगातार किए गए शिक्षण के अनुभवों में चाहे वह सीखने–सिखाने की पायलेट परियोजना हो या फिर उससे पूर्व इस प्रकार से किए जा रहे कार्य, दोनों में ही हमने पाया कि बच्चों को कक्षा–कक्ष में सहज ढंग से विविधिताओं के साथ भाषा–शिक्षण के दौरान दिए गए अवसरों एवं कार्यों का परिणाम रहा कि बच्चे ज्यादा विस्तार एवं कल्पना के साथ भाषा की जटिल संरचनाओं का इस्तेमाल करते हुए अपनी बात को बखूबी अभिव्यक्त कर पाने में सफल रहे हैं।

भाषा एक प्रकार से स्मृतिकोष का भी काम करती है :

भाषा के स्मृतिकोष के रूप में काम करने को इस प्रकार से समझ सकते हैं कि बच्चे अपने सम्पर्क में आए (परिवार के सदस्य, मित्र आदि जिनसे भी उनका संवाद होता है) लोगों से विरासत में मिले संकेतों के साथ अपने जीवन–काल में बनाए संकेत भी उसमें शामिल करते हैं। ये वे माध्यम भी हैं जिनसे अधिकतर ज्ञान का निर्माण होता है। मातृभाषा को पढ़ने–पढ़ाने के दौरान स्थान देने से उसकी प्रभावी समझ और भाषा के प्रयोग के माध्यम से बच्चे अपने विचारों, व्यक्तियों और वस्तुओं तथा अपने आसपास के संसार से अपने आपको जोड़ पाते हैं।

भाषा और समाज :

विभिन्न भाषाओं को सीख जाना खास सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भों में होता है। कौन–सी बात किसे और कहाँ कहनी है, यह प्रत्येक बच्चा सीख जाता है। भाषा अपने आप में परिवर्तनशील होती है और

अलग–अलग उम्र के समूह द्वारा संदर्भ के अनुसार अलग–अलग ढंग से प्रयुक्त की जाती है। भाषिक व्यवहार में यह विविधता बिखरी हुई नहीं है, बल्कि यह भाषा, संप्रेषण, विचार और ज्ञान के तंत्रों को जोड़ती है। भाषा का अस्तित्व एवं विकास समाज के बाहर नहीं हो सकता है। साथ ही हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि भाषाएँ देश–कालबद्ध जैसी कोई जमी हुई चीज़ें नहीं है बल्कि वे लगातार बदलती हुई, व्यवहारों में लचीली व्यवस्था है जिन्हें मनुष्य खुद को और अपने आसपास के जगत को समझने के क्रम में सीखता और बदलता रहता है।

बहुभाषिकता :

सभी स्कूलों में यह आवश्यक नहीं है कि एक जैसी भाषा बोलने समझने वाले बच्चे हों। बच्चों की भाषा में लगभग दो प्रकार के अंतर हो सकते हैं। एक तो, एक ही प्रकार की भाषा में थोड़े से फेर–बदल लिए हुए अलग–अलग रूप या फिर अलग–अलग पृष्ठभूमि में बोली जाने वाली भाषा की भिन्नता के रूप। ऐसे में हिन्दी भाषा की शुद्धता की चाहत एक गंभीर समस्या के रूप में खड़ी हो सकती है, जो बच्चे व शिक्षक दोनों के लिए संभव है। एक तरफ तो बोली जाने वाली भाषा है जो ज़्यादा लचीली है, जीवंत है जबकि दूसरी तरफ, पाठ्यपुस्तक की, स्कूल की भाषा है जो जड़ है। दोनों के बीच की दूरी में बच्चे का आत्मविश्वास और रचनात्मकता खो जाते हैं। पुस्तकों की भाषा अपनाने के चक्कर में अपनी भाषा भी पता नहीं कहाँ खामोशी की संस्कृति में खो जाती है। मानक भाषा सीखना आवश्यक है लेकिन बच्चों के संदर्भ में देखें तो इसके ज़रिए हर तरह की चर्चा या दिल की बात बाहर नहीं आ पाती है। अतः यहाँ पर इस बात को बल देने का प्रयास किया जा रहा है कि स्थानीय भाषा का प्रयोग सैद्धांतिक स्पष्टता को बढ़ावा देता है, इसलिए हमें लगता है कि बच्चों के घर में बोली जाने वाली भाषा, दोस्तों या परिवेश की भाषाओं तथा स्कूल में प्रयुक्त की जाने वाली भाषा के फ़ासले को पाटने का प्रयास हम शिक्षकों को करना चाहिए।

कल्पनाशीलता, मौलिकता, सौंदर्यबोध और भाषा :

भाषा में कई कल्पनापरक तत्त्व भी मौजूद होते हैं। जो हमारे जीवन के सौंदर्यपरक पहलू को समृद्ध करते हैं, साथ ही यह हमारे पढ़ने और लिखने की क्षमता के स्तर को भी ऊँचा उठाते हैं। कल्पना करना या अभिव्यक्ति का अर्थ सिर्फ कहानी या कविता लिखना ही नहीं होता। जब हम दूसरों के नज़रिए से घटना को देखते हैं, उसके विभिन्न मोड़ों पर अनुमान लगाते हैं, उसकी समाप्ति के बाद भी कहानी सुनाते हैं, उसमें घटित घटनाओं की तसवीर अपने मन में बनाते हैं तो ये सभी पक्ष हम कल्पना और अभिव्यक्ति की सहायता से कर रहे होते हैं। अतः भाषा कक्षा में इस प्रकार के कार्यों की उपलब्धता एवं बच्चों को उनके स्वतंत्र चिंतन के लिए अवसर उपलब्ध करवाने की माँग करती है।

रुचियों एवं क्षमताओं के विकास में भाषा की भूमिकाः

बच्चों के व्यक्तित्व और उसकी क्षमताओं के विकास को आकार देने में भाषा विशेष भूमिका निभाती है। एक सूक्ष्म किंतु मज़बूत ताकत की तरह भाषा संसार के प्रत्येक बच्चे के दृष्टिकोण, उसकी रुचियों, क्षमताओं, यहाँ तक कि मूल्यों और मनोवृत्तियों को भी आकार देती है। अतः पुनः इस बात पर ग़ौर करने की आवश्यकता है कि भाषा की कक्षा में क्या एवं कैसा कार्य करवाएँ जिससे कि बच्चों की रुचियों एवं क्षमताओं को समृद्ध व विकसित करने में सहायता मिल सके। तब निश्चित रूप से भाषा शिक्षण के तरीकों और गतिविधियों की

विविधता की ओर हमारा ध्यान जाना ही चाहिए कि हम भाषाई खेल, कला और सौंदर्यबोध, लोककथाएँ एवं लोकगीतों और पहेलियों आदि को कितना व किस प्रकार से स्थान दे पाते हैं।

3.2 ज्ञान निर्माण में भाषा की भूमिका

ज्ञान सृजन की प्रक्रिया में भाषा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ज्ञान–निर्माण और भाषा का संबंध अटूट है। भाषा के बिना ज्ञान के सृजन की कल्पना भी नहीं की जा सकती । बच्चों के ज्ञान का संज्ञान लिया जाए और बच्चों को मौके दिए जाएँ ताकि वे अपने ज्ञान को संगठित करके व्यक्त कर सकें। (यहाँ पर संज्ञान से तात्पर्य है कि कर्म और भाषा के माध्यम से स्वयं और दुनिया को समझना।) इसके लिए उनको अपने अनुभव और अपने परिवेश को ज़्यादा गहराई से महसूस करने के मौके दिए जाएं। कक्षा में भाषाई क्षमता को **उच्च स्तर के संवाद** (जैसे– स्तर के अनुसार वक्ता के द्वारा कहे गए संदर्भो को सुनकर, समझकर तार्किक ढंग से अपनी बात को प्रस्तुत कर पाना) के माध्यम से विकसित करने की आवश्यकता है।

कक्षा 3 के बाद से मौखिक और लिखित माध्यमों से **उच्चस्तरीय संवाद कौशल** और **समालोचनात्मक चिंतन** के विकास के प्रयास हों। प्राथमिक स्तर पर बच्चों की भाषा(ओं) को बिना सुधारे उसी रूप में स्वीकार करना चाहिए जिस रूप में वे होती हैं।

कक्षा 4 के बाद अगर **समृद्ध** और **रुचिकर** मौके दिए जाएँ, तो बच्चे स्वयं भाषा के मानक रूप को ग्रहण कर लेते हैं, लेकिन इस प्रक्रिया के दौरान बच्चे की घरेलू भाषा के प्रति उचित सम्मान का भाव बना रहना चाहिए। गलतियाँ, अधिगम का हिस्सा होती हैं फिर भी कमियों पर ध्यान दिए जाने की बजाय अधिक समय बच्चों को विस्तृत, रुचिकर और चुनौतीपूर्ण कार्य दिए जाने चाहिए।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 से

बच्चे कहानी, कविता, गीतों और नाटकों के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक धरोहर से जुड़ते हैं और इससे उनको अपने अनुभव विकसित करने और दूसरों के प्रति **संवेदनशील** होने के भी अवसर मिलते हैं। इस प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से बच्चे व्याकरण भी अधिक आसानी से सीख सकते हैं न कि उबाऊ व्याकरण शिक्षण से।

स्कूल को पठन व लेखन पर विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है। बच्चे सर्वांगीण परिस्थितियों में अधिक सीखते हैं जिनमें बच्चों को सार्थकता दिखती है, बजाय एक योगात्मक या बँधे–बँधाए ढर्रे से जिसमें कोई अर्थ नहीं निकलता है।

भाषा कौशलों के पुंज के रूप में, **चिंतन और अभिमान** के रूप में स्कूल के सभी विषयों में मौजूद है। बोलना और सुनना, पढ़ना और लिखना सभी सामान्य कौशल हैं और उनमें बच्चों की दक्षता, स्कूल में उनकी सफलता को प्रभावित करती है। **स्कूल स्तर पर भाषा का शिक्षण सभी की चिन्ता का कारण होना चाहिए, न कि केवल भाषा शिक्षक का दायित्व है।**

परम्परागत रूप से प्रशिक्षित भाषा–शिक्षक बोलने के प्रशिक्षण को, भाषा के सहभागी और अभिव्यक्तिमूलक कौशल पर ज़ोर देने की बजाए शुद्धता से जोड़ते हैं। अगर शिक्षक बच्चे के बोलने को बकवास के बदले संसाधन के तौर पर देखें तो **अभिव्यक्ति और प्रत्युत्तर** की संभावना बढ़ जाएगी।

3.3 भाषा सीखने के घटक

भाषा सीखने के प्रमुख घटकों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है :

कहानी सुनाना न केवल शाला पूर्व शिक्षा के लिए आवश्यक है, बल्कि वह बाद में भी महत्त्वपूर्ण बना रहता है। कथात्मक विमर्श होने के कारण, मौखिक रूप से कही गयी कहानियाँ तार्किक समझ का आधार तैयार करती हैं, साथ ही, ये हमारी **कल्पनाशीलता** को समृद्ध बनाती हैं और अपने जीवन से अलग परिस्थितियों में भागीदारी की क्षमता का विकास भी करती हैं। कल्पनाशीलता और रहस्यात्मकता का बच्चे के विकास में बड़ा योगदान होता है। भाषा शिक्षण के एक पहलू के रूप में सुनने की कला का भी विकास संगीत की मदद से किया जाना चाहिए, जिसमें लोक, शास्त्रीय और लोकप्रिय सभी रचनाएँ शामिल हों।

पठन को भाषा का महत्त्वपूर्ण अवयव माना जाता है। पढ़ने की संस्कृति के विकास के क्रम में वैयक्तिक पठन को प्रोत्साहित किए जाने की आवश्यकता है, और शिक्षकों को इस संस्कृति का हिस्सा बनकर स्वयं उदाहरण पेश करना चाहिए। पठन एक कौशल के ही रूप में नहीं सिखाया जाना चाहिए, बल्कि आत्मविश्वास, चिन्तन की योग्यता और प्रश्नों के समाधान में बच्चों की वृद्धि के साधन के रूप में उसका उपयोग किया जाना चाहिए।

लिखने का महत्त्व सर्वविदित है, लेकिन पाठ्यचर्या में इसको लेकर नवाचार अपनाने की ज़रूरत है। शिक्षको का ज़ोर इस पर होता है कि बच्चे सही तरीके से लिखें। लिखने के माध्यम से अपने विचारों की अभिव्यक्ति को महत्त्वपूर्ण नहीं माना जाता है ठीक, जैसे समय से पहले उच्चारण का बोझ, बच्चे के खुलकर अपनी बोली में बात करने की क्षमता को कुण्ठित करता है, उसी तरह से मशीनी रूप से शुद्ध लिखने की माँग विचारों को अभिव्यक्त करने में बाधा बनती है। लेखन को एक कला की तरह समझें, न कि कार्यालयी कौशल की तरह। आरंभिक वर्षों में, लिखने की क्षमता का विकास, बोलने, सुनने और पढ़ने की क्षमता की संगति में होना चाहिए। ऐसे प्रयास भी आवश्यक हैं जिनसे पत्र–लेखन और निबंध लेखन के परंपरागत और अरुचिकर तरीकों की बजाय कल्पना और मौलिकता संबंधी गतिविधियों को आयोजित कर बच्चों को बेहतर अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान किए जाने की आवश्यकता है।

संप्रेषण : संप्रेषणात्मक क्षमता परस्पर समझ को प्राप्त करने के लिए जरूरी है। संप्रेषण, भाषा का एक महत्त्वपूर्ण घटक है क्योंकि इसमें बहुत ज्यादा व्यक्तिगत स्तर की अभिव्यक्ति के दायरे में आम सहमति या सार्वभौम समझ की ओर उन्मुख होने की संभावनाएं मौजूद होती हैं। अतः कक्षा में संप्रेषण को एक माध्यम के रूप में ही नहीं अपितु सीखने के एक उपकरण के रूप में काम लेने की आवश्यकता है, इसके लिए बच्चों को विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से अपनी बात को संप्रेषित करने के पर्याप्त अवसर दें।

अभिव्यक्ति : भाषा में अभिव्यक्ति का महत्त्वपूर्ण स्थान है और अभिव्यक्ति बच्चों का नैसर्गिक स्वभाव भी है। विभिन्न प्रकार की अभिव्यक्तियों के माध्यम के रूप में भाषा का प्रमुख स्थान है। कक्षा में बच्चों को विभिन्न माध्यमों के द्वारा अभिव्यक्ति के भरपूर अवसर उपलब्ध कराना और साथ ही निश्चित प्रकार की अंतःक्रिया स्थापित करना आवश्यक है। जिससे कि बच्चे के सीखने–सिखाने की गति और रुचि का आकलन सहजता व निरंतरता के साथ किया जा सके। इसके अंतर्गत निम्न बिंदुओं को देखा व समझा जा सकता है –

– व्याख्या करना

– सही तरीके से अभिव्यक्ति समझना व प्रयोग कर पाना।

– विभिन्न संदर्भों में उसका प्रयोग एवं प्रतिक्रिया करना, यह प्रतिक्रिया – मौखिक एवं लिखित दोनों रूपों में संभव है।

भाषा प्रक्रिया : प्राथमिक स्तर पर भाषा विकसित होने अर्थात् सीखे जाने की प्रक्रिया में बच्चे की खोजी प्रवृत्ति विद्यमान रहती है; जैसे– अवलोकन, वर्गीकरण, संकल्पना, निर्माण आदि करना।

शायद कभी हमने अपने आपसे प्रश्न किया हो कि क्या बच्चों के लिए चित्र, बातचीत और कविताओं से उभरी हुई मौखिक भाषा को लिखित रूप देने की संभावना है ? यदि हाँ, तो बच्चों को भाषा सीखने के स्वाभाविक तरीकों को कक्षाकक्ष में इस्तेमाल किया जाना आवश्यक है। बच्चे अपने आस–पास के परिवेश से लेकर कहीं दूर तक की दुनिया के बारे में अचंभित – से रहते हैं। वे अपने आसपास के संसार को केवल देखते और महसूस ही नहीं करते बल्कि अर्थ भी देना जानते हैं। अपनी दुनिया को खोजने का उनके पास एक अचूक औज़ार है 'भाषा' जिसके बारे में हममें से बहुतों को यह भ्रम रहता है कि बच्चे भाषा तो विद्यालय आकर ही सीखते हैं, जबकि सत्य तो यह है कि अरुचिकर स्कूली कवायदें बच्चे को भाषायी रूप से विकलांग बना देती हैं। अतः हमारा प्रयास अब इस प्रकार के अरुचिकर तरीकों में बदलाव लाते हुए बच्चे को स्वयं की अभिव्यक्ति करने, अपने प्राकृतिक और सामाजिक परिवेश को खोजबीन करने, संसाधनों का प्रयोग करने और स्वस्थ्य रूप से विकसित होने में सहायता करने का होना चाहिए।

हम शिक्षकों को प्रयास करना होगा कि भाषा शिक्षण में बच्चे के लिए रचनात्मकता प्रदान कर सकें। रचनात्मक अधिगम (सीखना) के संदर्भ में किसी पाठ/अध्याय/अवधारणा/विषयवस्तु को विस्तार से समझने के लिए शिक्षक एक उत्प्रेरक है जो बच्चों को अभिव्यक्ति के लिए और ज्ञान सृजन के क्रम में व्याख्या और विश्लेषण के लिए प्रोत्साहित करता है।

हिन्दी विषय के संदर्भ में रचनात्मक तरीके से सीखने की एक परिस्थिति का निम्नलिखित उदाहरण देखें : (संदर्भ एनसीएफ 2005)

प्रक्रिया	रचनात्मक तरीके से भाषा सीखना
परिस्थिति : बच्चे **'छगन और बौने'** कहानी (हिन्दी कक्षा–3) पढ़ते हैं। बाद में, उनको उसकी पृष्ठभूमि से जुड़े कुछ रेखाचित्र और कहानी के कुछ दृश्य संक्षिप्त विवरण के साथ दिए जाएं। कुछ बच्चे उसके कुछ दृश्यों के रेखाचित्र भी बना सकते हैं।	
अवलोकन	बच्चे उन दृश्यों को घटित होते हुए देखें।
संदर्भीकरण	वे कहानी के पाठ की उसके रेखाचित्र से संबद्धता बिठा कर देखें।
संज्ञानात्मक सीखना	पाठ में दिखाए गए किसी एक दृश्य को आधार बनाकर शिक्षक बच्चों को बताते हैं कि किस प्रकार कहानी के वाचन और आधार सामग्री को समेकित करके पढ़ा जाए। जिससे कि दृश्य और लिखित सामग्री के आपस में सहसंबंध

	को समझा जा सके।
सहयोग	बच्चे समूह में व्याख्या तैयार करें। शिक्षक इसमें उनका मार्गदर्शन करें।
सृजन	वे विश्लेषण करें और कहानी का अपना नवीन सृजन उत्पन्न करें।
विविध व्याख्या	व्याख्या करते हुए समूह के अंदर और बाहर तुलना कर वे यह समझ विकसित कर सकते हैं, कि कैसे '**छगन और बौने**' कहानी पर अलग–अलग प्रतिक्रियाएँ हो सकती हैं।
विभिन्न अभिव्यक्तियाँ	पाठ, उससे जुड़े रेखाचित्रों और अन्य प्रभावों के आधार पर बच्चे यह देखें कि एक ही प्रकार के विषय और चरित्रों को विविध प्रकार से दिखाया जा सकता है।

आपसी संवाद : भाषा सीखने के स्वाभाविक तौर–तरीकों में मौखिक भाषा का खुलासा बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। कक्षा में बच्चों के साथ की गई बातचीत का बहाव, इस्तेमाल किए जाने वाले शब्दों के साथ बातचीत करने, उन्हें बातचीत करने के मौके प्रदान करने, सीखने और सीखी हुई चीज़ को सुदृढ़ बनाने का एक बुनियादी माध्यम है। बच्चों द्वारा आपस में की जाने वाली अनौपचारिक संवाद को निरर्थक सा मान लिया जाता है पर ज़रा दिए गए संवाद पर ग़ौर करें –

कोमल – पता है मैंने अभी सब्जी के ठेले पर एक बड़ा सा कद्दू देखा। (दोनों हाथों को फैलाकर बताने का संकेत करती हुई) वह गोल और हरे रंग का था।

चुनमुन – झूठी कहीं की हरा कद्दू तो बेल पर ही लगा होता है, तोड़ने पर तो वह पीला पड़ जाता है। जैसे– फूल को तोड़ते हैं तो वह मुरझा कर रंग नहीं बदल देता है वैसे ही।

कोमल – कैसे नहीं हरा हो सकता है ? जब मैंने देखा है तो। नहीं मानती तो असली में सब्जी वाले के पास जाकर देखें।

अब ज़रा सोचकर देखें कि इस बातचीत में सीखने की क्या संभावना नज़र नहीं आ रही ? इस बातचीत से मुखरित होता है – अवलोकन, अपने–अपने अवलोकनों का आदान–प्रदान फिर उस आधार पर तर्क करना, अपने अवलोकन की सत्यता को प्रमाणित करना और उस आधार पर चुनौती देना। यह सब भाषा सीखने का हिस्सा है।

सोचने और तर्क करने की क्षमता, स्वयं व दुनिया को समझने तथा भाषा का प्रयोग करने का सामर्थ्य अकेले व परस्पर मिलकर काम करने और दूसरों से अंतःक्रिया करने से घनिष्ठ रूप से जुड़ा है। जैसे– समस्या का समाधान, विचार–विमर्श सकारात्मक–नकारात्मक पक्ष को तर्क के साथ समझना, निर्णय लेना एवं उसकी तुलना करना आदि।

कौशल : पढ़ना–लिखना सीखने के मामले में समग्रतावादी (हॉलिस्टिक) रुख़ अपनाने की आवश्यकता है। भाषा को चारों कौशलों में विभाजित करने की सहूलियत से बचते हुए बोलने और पढ़ना–लिखना सीखने में निहित समानता को पहचानते हुए इन कौशलों के उत्तरोत्तर विकास करने में मदद करने की आवश्यकता है। इसके लिए हमें बच्चों के पूर्वज्ञान की पहचान करते हुए उन्हें विभिन्न प्रकार के अवसर पाठ्यपुस्तक से संबंधित पाठों के इर्द–गिर्द रचते हुए स्वयं के आसपास की जानकारी, अपने बारे में जानने–समझने, स्वयं को परिवेश की अन्य वस्तुओं/लोगों आदि की जगह रखकर देखने, सोचने या चिंतन करने के अवसर तथा सामाजिक–सांस्कृतिक कार्यक्रमों में रुचि लेने व भाग लेने आदि जैसी गतिविधियों के समावेश की आवश्यकता होगी।

3.4 मूल्यों के विकास में भाषा की भूमिका

भाषा शिक्षण मूल्यों के विकास में महती भूमिका निभाती है, जिसे उपदेशात्मक शैली के विपरीत कहानियों के ताने–बाने में पिरोकर बच्चों के सामने सहज रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। जैसे –

- दूसरों के प्रति संवेदनशील होना
- दूसरों की सहायता करना
- परिवेशीय सजगता
- परिवार के बुजुर्गों के प्रति सम्मान
- उनकी छोटी–बड़ी प्रत्येक आवश्यकता का ध्यान रखना आदि...।

मूल्य विकसित करने के अवसरों की उपलब्धता के लिए विभिन्न कहानियों, कविताओं आदि रचनाओं पर शिक्षक अवश्य बच्चों के साथ चर्चा करें, इससे वे अपनी सांस्कृतिक धरोहर से जुड़ते हैं और इससे उनको अपने अनुभव विकसित करने एवं दूसरों के प्रति संवेदनशील होने के अवसर मिलते हैं, और प्रत्येक रचना में गुँथे हुए मूल्य को बच्चे स्वयंमेव ढूँढ़ सकने में प्रयासरत हो पाएँ।

जैसे – किसी जानवर को सताने या किसी पेड़ को नुकसान पहुँचाते हुए जब आप देखते हैं तो लिखिए कि ऐसी स्थिति में उस जानवर या उस पेड़ को कैसा लगता होगा ?

इसके अंतर्गत बच्चों को संवाद करने, जानकारी एकत्रित करने, ऐसा क्यों हुआ या ऐसा करने के लिए और क्या किया जा सकता है, जैसे चिंतन करने योग्य प्रश्नों, आपस में चर्चा करना, अपना मत व्यक्त करना, दूसरों के मतों को सुनना और उनका विश्लेषण करने आदि विविध प्रकृति के अभ्यास कार्यों के माध्यम से बच्चों में मूल्यों का विकास करने में शिक्षक मदद कर सकते हैं।

भाषा शिक्षण के उद्देश्य, पाठ्यक्रम के चरण एवं भाषा शिक्षण की युक्तियाँ

सबसे महत्त्वपूर्ण लक्ष्य बच्चे को इस प्रकार से साक्षर बनाना है कि बच्चा समझने के साथ पढ़ने व लिखने की क्षमता हासिल कर सके।

बहुत लंबे समय से हम भाषा शिक्षण के उद्देश्य को महज सुनने–बोलने–पढ़ने–लिखने के मद्देनज़र देखते रहे हैं। आखिर जब हम बोल रहे होते हैं तभी सुन भी रहे होते हैं और जब लिख रहे होते हैं तभी पढ़ भी रहे होते हैं। साथ ही कई परिस्थितियाँ ऐसी होती हैं जिसमें हमारी भाषाई क्षमता के सभी पहलू और संज्ञानात्मक योग्यताएँ एक साथ काम कर रही होती हैं।

- **जो कुछ वह सुनते हैं उसे समझने की दक्षता** : उसमें गैर शाब्दिक संकेतों के द्वारा सुनकर और समझकर संबंध जोड़ने और अनुमान लगाने की कुशलता होनी चाहिए।

- **समझकर पढ़ना यानि कि पढ़ने का विकास एकरेखीय ढंग से न हो वरन् बच्चे आगे–पीछे के संदर्भ में पढ़कर अर्थग्रहण कर पाएँ** : उसे विभिन्न व्याकरण सम्मत, अर्थगत और लिपि संकेतों के प्रयोग द्वारा आरेखित तरीके से संबंधित विषयवस्तु से पठन की आदत विकसित करनी चाहिए तथा संबंधित विषयवस्तु को अपने पिछले ज्ञान के साथ जोड़कर निष्कर्षों द्वारा अर्थ निर्माण एवं पठन के लिए आत्मविश्वास विकसित करना तथा विवेचनात्मक दृष्टिकोण के साथ पढ़ते समय प्रश्न भी सामने रखने चाहिए। वास्तव में पढ़ना पाठ के साथ संवाद करना है, अपने अनुभवों व सैद्धांतिक संरचना के साँचे में पाठ को ढालना है।

- **सहज अभिव्यक्ति :** उसे विभिन्न परिस्थितियों में अपने संप्रेषणात्मक कौशलों को प्रयोग में लाने में समर्थ होना चाहिए। वह तार्किक, विश्लेषणात्मक तथा रचनात्मक ढंग से परिचर्चा में शामिल हो सके।

- **सुसंगत लेखन** : लेखन एक यांत्रिक कौशल नहीं है। इसमें विभिन्न संबद्ध युक्तियाँ अर्थात् तत्संबंधी विषयों के द्वारा उस विषय को संयोजित करने, पर्यायवाची इत्यादि के प्रयोग द्वारा विचारों को सुसंगत ढंग से संयोजित करने की योग्यता के साथ–साथ व्याकरण, शब्द–ज्ञान, विषय, विराम–चिह्नों आदि पर पर्याप्त नियंत्रण इत्यादि कौशल सम्मिलित हैं। बच्चों में अपने विचार सहज, व्यवस्थित ढंग से प्रकट करने एवं अपने लिए विषय का चयन करने का आत्मविश्वास विकसित करना चाहिए।

- **'विभिन्न प्रयुक्तियों** (प्रयोग होने वाली) **पर अधिकार' (विभिन्न रजिस्टरों पर नियंत्रण**) भाषा का प्रयोग कभी भी एक तरह से नहीं होता है। इसके असंख्य प्रकार, अर्थ भेद व रंग होते हैं जो विभिन्न परिस्थितियों और विभिन्न क्षेत्रों के अनुसार होते हैं। एक विद्यार्थी शब्द/वाक्य भंडार का एक अंश होना चाहिए। विद्यालय के विषयों के अतिरिक्त विद्यार्थी को विभिन्न प्रयोजनों जैसे–संगीत, खेलकूद, फिल्म, बागवानी, निर्माण कार्य, पाककला आदि में प्रयोग की जाने वाली विभिन्न भाषाओं को समझने और उनके प्रयोग में भी दक्ष होना चाहिए।

- **भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन** : कराए जाने वाले कार्य इस प्रकार से होने चाहिए कि उससे बच्चा वैज्ञानिक प्रक्रिया के तमाम अवयवों जैसे– आँकड़ों का संकलन, आँकड़ों का अवलोकन और उनकी समानताओं और विभिन्नताओं के आधार पर उनका वर्गीकरण एवं परिकल्पना करने, आदि के अनुसार अग्रसर हो। इस प्रकार से बच्चे की संज्ञानात्मक योग्यताओं को विकसित करने में भाषा विज्ञान के ये उपकरण महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। इससे व्याकरण के मानक नियमों को बेहतर ढंग से सीखा जा सकेगा।

- **सृजनात्मकता** : भाषा की कक्षा में प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी कल्पना और सृजनात्मकता विकसित करने के लिए पर्याप्त अवसर मिलना चाहिए।

- **संवेदनशीलता** : भाषा की कक्षा द्वारा विद्यार्थियों को हमारी समृद्ध संस्कृति विकसित करने एवं समकालीन जीवन के विभिन्न पहलुओं से अवगत करवाने के बेहतर अवसर उपलब्ध होते हैं।

अध्याय–4

अधिगम उद्देश्यों के सापेक्ष आकलन सूचक

हिंदी विषय के सतत आकलन व मूल्यांकन के लिए भाषा–शिक्षण के उद्देश्यों और कौशलों को संकेतकों के माध्यम से दिया गया है। प्रत्येक कौशल के लिए भिन्न–भिन्न संकेतक दिए गए हैं। जिनकी मदद से सतत रूप से बच्चों के साथ कक्षाकक्ष में करवायी जा रही गतिविधियों/शिक्षण कार्य के दौरान तथा अन्यत्र उनके द्वारा किए जा रहे कार्यों को अवलोकन के ज़रिए इन सूचकों को देखा जाए। इन सूचकों का आधार मुख्यतः एसआईआरटी पाठ्यक्रम, स्रोत पुस्तिका– एनसीईआरटी और पायलेट परियोजना के अनुभव रहे हैं। **'अध्यापक योजना डायरी'** में कक्षावार एवं टर्मवार इन सूचकों को विभाजित करते हुए विस्तार से दिया गया है। हिन्दी भाषा में सूचकों की लगातार पुनरावृत्ति होती है, अतः यहाँ पर विषयवस्तु के बढ़ते क्रम के सापेक्ष आकलन किया जाना अपेक्षित है।

कक्षा : 1

अधिगम क्षेत्रों के सापेक्ष आकलन सूचक
कौशल/अधिगम क्षेत्र : सुनकर समझना और समझकर बोलना
• सुनी हुई सरल कविताओं को स्पष्ट शब्दों में दोहरा पाना।
• विभिन्न दृश्यात्मक चित्रों को देखकर उनका वर्णन समूह में एवं एकल रूप से कर पाना।
• विभिन्न संदर्भों के अनुसार दिए गए दृश्यों के संदर्भ में – चित्रों के साथ अपने अनुभवों को जोड़कर बता पाना।
• संदर्भ के अनुसार पूछे गए विभिन्न प्रश्नों/निदेर्शों को सुनकर जबाव दे पाना।
• दृश्यात्मक चित्रों को क्रमबद्धता के साथ कहानी के रूप में बता पाना एवं अपने अनुभव से जोड़ पाना।
• विभिन्न परिवेशीय संदर्भों में समूह चर्चा के दौरान अपनी बात को पहल के साथ रख पाना एवं दूसरों की बात को सुन पाना।
• संदर्भ के अनुसार बढ़ते क्रम में गीत कविता को लय एवं हावभाव के साथ व्यक्तिगत रूप से पहल के साथ सुना पाना।
• संदर्भ के अनुसार पूछे गए प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दे पाना (कब, कौन, कहाँ, कैसे, कितने...)
• सुनी हुई कहानी को अपने शब्दों में सुना पाना।
कौशल/अधिगम क्षेत्र : पढ़ना और पढ़कर समझना
• संदर्भ के अनुसार चित्र के साथ नाम का पठन कर पाना।
• विषयवस्तु के अनुसार शब्द में प्रयुक्त वर्णों को ध्वनि के साथ पढ़ पाना।
• विषयवस्तु के बढ़ते क्रम में आए वर्णों की पहचान कर पाना। **(ट, र, ल, च, ब, क, न, थ, ह, द, ग, ख, ड, झ, स, श)**
• सीखे गए वर्णों से बने नवीन शब्दों को स्वतंत्र रूप से पढ़ पाना। (विषयवस्तु के बढ़ते क्रम में वर्णों के संयोजन के अनुसार)
• संदर्भ के अनुसार बढ़ते क्रम के आधार पर मात्रा युक्त शब्दों को पढ़ पाना। **(ए, आ, ई, ओ, इ, ऐ, औ)**
• सीखे गए वर्ण एवं मात्रा से संबधित मात्रायुक्त शब्दों को पढ़ पाना।
• सीखे गए वर्ण एवं मात्रायुक्त शब्दों से बने सरल वाक्यों को पढ़ पाना।

लगभग 5–6 सरल वाक्यों की कहानी एवं चित्र – कथा का पठन कर पाना।
• छोटे वाक्यों की कविता पढ़कर समझ पाना।
• संदर्भ के अनुसार प्रश्न एवं निर्देशों को पढ़कर समझ पाना।
कौशल/अधिगम क्षेत्र : लिखना
• सीखे गए वर्णो /शब्दों पर पेंसिल फेरना एवं अनुकरण के द्वारा लिख पाना।
• नवीन शब्दों को देखकर स्पष्टता एवं सुंदरता के साथ लिख पाना।
• सीखे गए वर्णों एवं मात्रा का प्रयोग करते हुए शब्द लिख पाना।
• शब्दों के संयोजन से वाक्य बनाकर लिख पाना।
• विषयवस्तु के बढ़ते क्रम में वर्ण, शब्द, एवं वाक्यों का अनुकरण से लेखन कर पाना।
• उपयुक्त वर्णों एवं मात्राओं का चयन कर स्वयं शब्द बनाकर लिख पाना।
• शब्दों की अन्तिम ध्वनि को सुनकर उनसे प्रारम्भ होने वाली ध्वनि के आधार पर शब्द लेखन कर पाना।
• संदर्भ के अनुसार उपयुक्त शब्दों का चयन कर वाक्य लिख पाना।
कौशल/अधिगम क्षेत्र : सृजनात्मक अभिव्यक्ति
• निर्देशानुसार चित्र को पूरा कर पाना।
• अपनी मनपसंद के चित्र बनाकर रंग भर पाना।
• कविता, कहानी पर आधारित एवं अपनी पसंद के चित्र बना पाना।
• चित्रों में सफाई के साथ रंग भर पाना।
• पेपर फोल्डिंग द्वारा मनपसंद चीज़ें बना पाना।

कक्षा : 2

अधिगम क्षेत्रों के सापेक्ष आकलन सूचक
कौशल/अधिगम क्षेत्र : सुनकर समझना और समझकर बोलना
• संबंधित कविताओं को हावभाव एवं लय के साथ सामूहिक एवं एकल रूप से पहल के साथ सुना पाना।
• विषयवस्तु से संबंधित निर्देशों को सुनकर समझ पाना एवं उनकी अनुपालना कर पाना।
• विषयवस्तु से जुड़े विभिन्न प्रसंगों के संदर्भ में हो रही चर्चा में अपनी बात को स्पष्टता के साथ रख पाना।
• सुनी या पढ़ी हुई विषयवस्तु को अपने शब्दों में सुना पाना।
• सुनी/पढ़ी कविता/कहानी से संबंधित प्रश्नों के उत्तर पूरे–पूरे वाक्य में दे पाना।
• कल्पनात्मक सवालों के जवाब बिना किसी झिझक के अभिव्यक्त कर पाना।
• सुनी/पढ़ी पहेलियों को पूछ पाना एवं चुटकुले सुनाने की पहल कर पाना।
कौशल/अधिगम क्षेत्र : पढ़ना और पढ़कर समझना
• संबंधित कविताओं को आनन्द के साथ पढ़ पाना।
• लघु–दीर्घ मात्रायुक्त शब्दों को उनके उच्चारण भेद के अनुसार पढ़ पाना।
• चित्रात्मक पहेलियों/पहेलियों को पढ़कर समझते हुए हल कर पाना।
• संबंधित निर्देशों को पढ़कर समझते हुए कार्य कर पाना।
• संयुक्ताक्षर, अनुस्वार, अनुनासिक शब्दों को सही ध्वनि के साथ पढ़ पाना।
• वर्णमाला में निहित संयुक्त व्यंजनों को पहचान पाना एवं पढ़ पाना (श्र,त्र,ज्ञ,क्ष और ऋ)
• पढ़ी हुई कहानी/कविता को समझकर उसके पात्रों आदि के बारे में बता पाना।

• छोटी कहानियों को स्वतंत्र रूप से पढ़ पाना।
• चुटकुलों को पढ़कर समझते हुए आनन्द ले पाना।
• शब्दों में होने वाले ध्वनि भेद के अंतर को समझते हुए पढ़ पाना।
कौशल/अधिगम क्षेत्र : लिखना
• सीखे गए वर्णों एवं मात्रा से बने शब्दों को स्पष्ट एवं साफ शब्दों में लिख पाना।
• अर्द्धाक्षरों के योग से नवीन शब्द बनाकर लिख पाना।
• विभिन्न प्रकार के प्रश्नों के उत्तर पूरे वाक्य में दे पाना।
• समान घ्वनि वाले शब्दों के आधार पर वैसे ही पैटर्न के अन्य नवीन शब्द बना पाना।
• अपनी बात को लगभग 3–4 वाक्यों में लिख पाना।
• विभिन्न प्रकार की विषयवस्तु से संबंधित शब्दावलियों को स्वयं के परिवेशीय शब्दों में लिख पाना।
• विभिन्न संदर्भो में वर्णमाला का अनुप्रयोग कर पाना।
• दिए गए शब्दों का स्वयं के स्तर पर वाक्य में प्रयोग कर पाना।
• विभिन्न संदर्भों से संबंधित सरल 3–4 पंक्तियों की कविता, कहानी की रचना कर पाना।
कौशल/अधिगम क्षेत्र : सृजनात्मक अभिव्यक्ति
• चित्रों में अपनी कल्पना से सफाई के साथ रंग संयोजन कर पाना।
• निर्देशानुसार कागज आदि से वस्तुएँ बना पाना।
• परिवेशीय रंगोली/माँडणे आदि बना पाना।
• विषयवस्तु के आधार पर स्वयं चित्र बना पाना।
• कहानी/कविता में आए पात्रों के अनुरूप मुखौटे बना पाना।
• मुखौटों को लगाकर पात्र के अनुरूप अभिनय कर पाना।
• विभिन्न प्रकार के पशु–पक्षियों आदि की आवाजें निकाल पाना।

कक्षा : 3

अधिगम क्षेत्रों के सापेक्ष आकलन सूचक
कौशल/अधिगम क्षेत्र : सुनकर समझना और समझकर बोलना
• सुनी हुई अथवा पढ़ी हुई कविता, गीत को सुर, लय, गति और हावभाव के तालमेल के साथ स्पष्ट शब्दों में स्वयं पहल के साथ अभिव्यक्त कर पाना।
• सुनी कविता/कहानी/प्रसंग आदि से सम्बन्धित (क्या, कहाँ, कैसे, कौन से, क्यों) वाले प्रश्नों के उत्तर पूरे–पूरे वाक्यों में दे पाना।
• सुनी घटना/कहानी/प्रसंग आदि विभिन्न संदर्भों के साथ स्वयं के अनुभवों को जोड़कर अभिव्यक्त कर पाना।
• कविता/कहानी को सुनकर उसका सार या भाव को अपने शब्दों में बता पाना।
• अपनी पसंद/नापसंद या अन्य सामाजिक मुद्दों पर चल रही चर्चा में अपनी बात को समूह में व्यक्त कर पाना एवं दूसरों की बात को सुन पाना।
• दिए गए संदर्भ के आधार पर दो पात्रों के मध्य संवाद को कल्पना करते हुए बता पाना।
• सुनी हुई कहानी/कविता के बारे में अपनी बात को पसंद या नापसंद के संदर्भ में रख पाना।
कौशल/अधिगम क्षेत्र : पढ़ना और पढ़कर समझना
• पठन के दौरान विराम चिह्न को ध्यान में रखते हुए उचित गति व स्पष्ट उच्चारण, भाव के साथ पढ़ना/संयुक्ताक्षर, अनुस्वार, अनुनासिक आदि शब्दों को सही उच्चारण के साथ पढ़ पाना।

• सरल वाक्यों/निर्देशों/प्रश्नों को पढ़कर समझ पाना एवं स्वयं हल कर पाना।
• पहेलियों को पढ़कर उनके अर्थ का अनुमान लगाकर उत्तर दे पाना।
• पठित विषयवस्तु पर कक्षा में व बाहर अपने दोस्तों के साथ चर्चा कर पाना।
• दी गयी शब्द सामग्री को प्रवाह के साथ पढ़ पाना एवं पठित सामग्री की समझ को अपने शब्दों में व्यक्त करना। विचारों एवं घटनाओं को क्रमबद्ध रूप में बता पाना।
• वर्ग पहेलियों को पढ़कर समझते हुए संदर्भ के अनुसार हल कर पाना।
• पठित सामग्री में आए नवीन शब्दों/परिवेशीय शब्दों के अर्थ एवं मानक रूप को समझ पाना।
कौशल/अधिगम क्षेत्र : लिखना
• शब्दों के लेखन में उपयुक्त दूरी, सीधी लाइन, शिरो रेखा के प्रयोग के साथ किसी परिचित घटना/चित्रों आदि को देखकर मानक शब्दों का प्रयोग करते हुए 6 से 8 वाक्यों में लिख पाना।
• अनुमान एवं कल्पना आधारित प्रश्नों के अनुसार स्वयं की बात को लिख पाना।
• अपने अनुभव/पूर्वज्ञान के आधार पर प्रश्नों के जवाब लिख पाना।
• संबंधित कविता/कहानी के भाव को अपने शब्दों में लिख पाना।
• तुकबंदी के माध्यम से छोटी–छोटी कविताएँ बनाकर लिख पाना।
• विषयवस्तु आधारित दिए गए प्रश्नों (क्या, कौन, कहाँ, कैसे, कौनसे) के उत्तर पूरे वाक्यों में लिख पाना।
• संदर्भ के अनुसार अपने अनुभवों एवं पूर्व अवलोकित चीज़ों के बारे में लिखकर व्यक्त कर पाना।
• संदर्भ के अनुसार दिए जाने वाले संवादों का अपनी कल्पना के आधार पर लेखन कर पाना।
कौशल/अधिगम क्षेत्र : व्याकरण
• स्वतन्त्र रूप से संज्ञा नाम बता पाना (लिखित/मौखिक),उनका वर्गीकरण कर पाना ।
• सर्वनाम शब्दों की पहचान एवं प्रयोग कर पाना एवं संज्ञा शब्दों को संदर्भ के अनुसार सर्वनाम शब्दों में परिवर्तित कर पाना।
• विशेषण शब्दों की पहचान कर पाना एवं उनको वाक्यों में प्रयोग कर पाना।
• मुहावरों की प्रारंभिक समझ एवं वाक्यों में प्रयोग कर पाना।
• पर्यायवाची शब्दों को पहचानते हुए प्रयोग कर पाना।
• विपरीत अर्थ वाले शब्दों की पहचान एवं वाक्य में प्रयोग कर पाना।
• वचन एवं लिंग की पहचान कर पाना एवं उसका उचित स्थान पर प्रयोग कर पाना।
• क्रिया की आरंभिक पहचान करते हुए वाक्य बना पाना।
कौशल/अधिगम क्षेत्र : सृजनात्मक अभिव्यक्ति
• कागज से मुखौटे या अन्य वस्तुएँ बना पाना ।
• परिवेश से सम्बन्धित विभिन्न पात्रों का अभिनय एवं संबंधित पात्र के अनुरूप संवाद बोल पाना।
• चित्रों में रंग का संयोजन चित्र के अनुसार कर पाना।
• सुनी व पढ़ी कहानी, कविता, विशेष विषयवस्तु से सम्बन्धित एवं स्वतंत्र रूप से चित्र बना पाना एवं नाम दे पाना।
परिवेशीय सजगता
• अपने परिवेश के प्रति सहज व सजग हो पाना।
• समूह में मिलकर कार्य कर पाना।
• परिवेशीय घटनाओं के प्रति राय व्यक्त कर पाना एवं आसपास की हालातों के बारे में कारण खोज पाना।
• सामग्रियों के व्यर्थ उपयोग को रोकने की पहल कर पाना।
• लोगों और जीवों के प्रति संवेदनशील हो पाना।

कक्षा : 4

अधिगम क्षेत्रों के सापेक्ष आकलन सूचक
कौशल/अधिगम क्षेत्र : सुनकर समझना और समझकर बोलना
• कहानी/कविता/परिवेशीय घटना से सम्बन्धित क्या ,क्यों ,कहाँ, कब.. वाले प्रश्नों को सुनकर पूर्ण वाक्य में उत्तर सुना पाना।
• सुनी गयी कविता/कहानी का भाव अपने शब्दों में आत्मविश्वास के साथ कह पाना।
• समूह चर्चा के दौरान अपने तर्कों के आधार पर अपने विचार रख पाना एवं दूसरे की बात को सुनने की क्षमता का विकास कर पाना।
• विषयवस्तु से सम्बन्धित क्या, क्यों, कैसे वाले प्रश्न बना पाना एवं पूछने की क्षमता का विकास हो पाना।
• सुनी गई/पढ़ी गई विषयवस्तु के आधार पर कल्पनात्मक वाक्य बोल पाना।
• कविता व कहानी में आए नए शब्दों को सुनकर मानक भाषा से सह–सम्बन्ध बैठाते हुए बोल पाना।
• विषयवस्तु में निहित 'र' के रूप एवं ध्वनि की समझ बना पाना एवं सही उच्चारण के साथ शब्दों को बोल पाना।
कौशल/अधिगम क्षेत्र : पढ़ना और पढ़कर समझना
• संबंधित सामग्री को उतार–चढ़ाव एवं धारा प्रवाह के साथ पढ़कर मुख्य तत्वों एवं नवीन शब्दावली को ग्रहण कर पाना।
• पढ़कर प्रश्नों को समझते हुए उनके उत्तर सटीक वाक्य संरचना के साथ व्यक्त कर पाना।
• जानकारी तथा मनोरंजन के लिए विविध प्रकार की पाठ्यसामग्री को पढ़ने की पहल कर पाना।
• विभिन्न परिवेशीय शब्दावली को पढ़कर संदर्भ से जोड़ते हुए अर्थ ग्रहण कर पाना।
• वस्तु बनाने की विधि, निर्देशों एवं सांकेतिक भाषा को पढ़कर समझना एवं उपयोग कर पाना।
• विभिन्न विधाओं के माध्यम से बहु–भाषिक और बहु–सांस्कृतिक संदर्भ से जुड़ पाना एवं नवीन जानकारी ले पाना।
कौशल/अधिगम क्षेत्र : लिखना
• शब्दों की उपयुक्त दूरी व सीधी लाइन में स्पष्टता के साथ विषय के अनुसार भावों, विचारों, अनुभवों व चिन्तन को लगभग 8–10 वाक्यों में लिख पाना।
• संबंधित विषयवस्तु / संदर्भ के अनुसार क्या, क्यों, कौन, कैसे .... प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्यों में व्यवस्थित लिख पाना।
• चित्र दृश्यों को देखकर क्रमबद्धता के साथ कहानी का सृजन कर लिख पाना।
• साक्षात्कार लेने हेतु विविध प्रकार की जानकारी प्राप्त करने हेतु प्रश्नावली तैयार कर पाना।
• अनुमान व कल्पना के आधार पर स्वयं लिख पाना।
• स्वयं की आत्मकथा एवं यात्रा का वर्णन लिख पाना। विषयवस्तु के आधार पर भावों, विचारों, अनुभवों व चिंतन को अपने शब्दों में लिख पाना।
कौशल/अधिगम क्षेत्र : व्याकरण
• द्विअर्थी शब्दों को वाक्य में प्रयोग कर पाना।
• सर्वनाम शब्दों की पहचान कर पाना एवं वाक्यों में प्रयोग कर पाना।
• अनुनासिक, अनुस्वार को समझ के साथ पढ़ते हुए इस्तेमाल कर पाना।
• पूर्व में सीखे गए एवं विषयवस्तु से संबंधित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कर पाना।
• शब्दों में प्रत्यय को पहचान पाना एवं स्वयं के स्तर पर प्रयोग कर पाना।
• काल के अनुसार क्रिया को प्रारंभिक स्तर पर समझ पाना।

• विराम चिह्नों की समझ एवं लेखन में उपयोग कर पाना।
• वचन ,लिंग एवं विलोम शब्दों की समझ पाना एवं संदर्भ के अनुसार वाक्यों में प्रयोग कर पाना।
• गुणवाचक विशेषण की समझ एवं वाक्यों में प्रयोग कर पाना।
कौशल/अधिगम क्षेत्र : सृजनात्मक अभिव्यक्ति
• चित्र बनाकर रंग भर पाना।
• विषयवस्तु से संबंधित आए विभिन्न पात्रों का अभिनय कर पाना।
• दिए गए निर्देशानुसार विभिन्न प्रकार की सामग्री बना पाना।
• दी गई विधि को पढ़कर पेपर फोल्डिंग द्वारा वस्तुएँ बना पाना।
• कोलाज एवं चिकनी मिट्टी के खिलौने बना पाना।
• पुस्तकालय से एकांकी पढ़कर नाटक तैयार कर मंचन कर पाना।
परिवेशीय सजगता
• अपने परिवेश के प्रति सहज व सजग हो पाना।
• समूह में मिलकर कार्य कर पाना।
• परिवेशीय घटनाओं के प्रति राय व्यक्त कर पाना एवं आसपास की हालातों के बारे में कारण खोज पाना।
• सामग्रियों के व्यर्थ उपयोग को रोकने की पहल कर पाना।
• लोगों और जीवों के प्रति संवेदनशील हो पाना।

कक्षा : 5

अधिगम क्षेत्रों के सापेक्ष आकलन सूचक
कौशल/अधिगम क्षेत्र : सुनकर समझना और समझकर बोलना
• कहानी/कविता/गीत आदि के अर्थ एवं भाव को समझकर हाव–भाव सहित आनन्द के साथ सुना पाना।
• कविता, कहानी, गीत आदि से सम्बन्धित प्रश्न पूछना एवं पूछे गए प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्यों में दे पाना।
• अपने आस–पास घटने वाली घटनाओं/अपने अनुभव एवं अपनी भावनाओं को 8–10 वाक्यों में उचित प्रवाह एवं नवीन शब्दावली के प्रयोग के साथ वर्णन करते हुए व्यक्त कर पाना।
• कक्षा में हो रही चर्चा में पहल के साथ अपना मत रख पाना एवं अपने साथियों के विचार सुन पाना एवं सुनकर तर्कसंगत प्रतिक्रिया दे पाना।
• चल रहे कार्यों (बातचीत/गतिविधि/खेल/कहानी आदि) के सम्बन्ध में तर्क संगत प्रश्न पूछ पाना एवं सुनकर क्यों व कैसे वाले प्रश्नों के तर्कसंगत उत्तर पूरे वाक्य में दे पाना।
कौशल/अधिगम क्षेत्र : पढ़ना और पढ़कर समझना
• चित्र, कविता, कहानी, अनुच्छेद, पहेलियों को स्पष्ट उच्चारण एवं उतार–चढ़ाव के साथ धारा प्रवाह गति से पढ़ पाना।
• संबंधित पाठ्य सामग्री के मूल भाव एवं विचार को समझ कर अभिव्यक्त कर पाना।
• अपरिचित शब्दों को संदर्भ के साथ समझ पाना एवं शब्दकोश का उपयोग कर पाना।
• साहित्य की विभिन्न विधाओं से सम्बन्धित संदर्भ पुस्तकों का अध्ययन कर पाना।
• खोजपूर्ण जानकारी एवं अनुमान–कल्पना आधारित प्रश्नों के उत्तर तार्किकता के साथ दे पाना।
• पाठ्यसामग्री से संबंधित बहुसांस्कृतिक संदर्भो को पढ़कर समझते हुए उनके बारे में बता पाना।
• पठन हेतु दी गई सामग्री को उचित गति व शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ पाना एवं पठित सामग्री को समझते हुए अपनी राय बता पाना।

• स्तरानुसार संबंधित सूचनाओं ,निर्देशों एवं पत्रों को पढ़कर समझते हुए संबंधित कार्य कर पाना।
• शब्दावली का संदर्भ के साथ अर्थ ग्रहण कर पाना व नवीन जानकारियाँ प्राप्त कर पाना।
• चित्र कथाओं, पत्रों, चुटकुलों को पढ़कर समझना व पूछे गए प्रश्नों के उत्तर तार्किकता के साथ दे पाना।
कौशल/अधिगम क्षेत्र : लिखना
• क्यो, कब कैसे वाले प्रश्नों के उत्तर तर्क के साथ विस्तार से लिख पाना।
• पाठ्य सामग्री को पढ़ कर उसके अर्थ एवं मूल भाव को विराम चिह्नों का प्रयोग करके स्पष्ट लिख पाना।
• चित्र को देख कर क्रमबद्धता के साथ लगभग 9–10 वाक्य लिख पाना।
• दिए गए संदर्भ पर आधारित पढ़ी /सुनी लोककथा को स्वयं के स्तर पर लिख पाना।
• किसी परिचित संदर्भ/विषयवस्तु/चित्र पर 8–10 वाक्यों में शुद्धता एवं स्पष्टता के साथ मानक शब्दावली व विराम चिह्नों का उचित उपयोग करते हुए अनुच्छेद लिख पाना।
• दिए गए चित्रों के आधार पर कहानी का सृजन कर पाना एवं विभिन्न मुद्राओं को देखकर खेलों के बारे में लिख पाना।
• पढ़े गए पत्रों के आधार पर उचित प्रारूप में स्वयं पत्र लिख पाना।
• पढ़े गए संवाद को कहानी के रूप में स्वयं के स्तर पर लिख पाना।
• पहेलियों, लोकोक्तियों, लोककथाओं को खोजकर लेखन कर पाना।
कौशल/अधिगम क्षेत्र : व्याकरण
• लेखन–पठन में विराम चिह्नों का प्रयोग कर पाना।
• अनुनासिक एवं अनुस्वार शब्दों को उच्चारण भेद के साथ प्रयोग कर पाना।
• उपसर्ग की समझ एवं प्रयोग कर पाना।
• संज्ञा एवं विशेषण शब्दों की समझ एवं वाक्यों में प्रयोग कर पाना।
• 'र' के विभिन्न रूप की समझ एवं अनुप्रयोग कर पाना।
• कारक चिह्न को समझ के साथ पठन लेखन में उपयोग कर पाना।
• पर्यायवाची एवं विपरीतार्थक शब्दों को संदर्भ के अनुसार प्रयोग कर पाना।
• क्रिया और क्रिया विशेषण की पहचान कर पाना एवं प्रयोग कर पाना।
कौशल/अधिगम क्षेत्र : सृजनात्मक अभिव्यक्ति
• विभिन्न प्रकार के संकलन कर उन्हें सृजनात्मक रूप से प्रस्तुत कर पाना।
• विभिन्न प्रकार के पात्रों का अभिनय कर पाना।
• गीत/कविताओं को हावभाव एवं लय –ताल के साथ सुना पाना।
• अपने अनुभवों को चित्र द्वारा व्यक्त कर पाना। ऐसे चित्र जिनमें एक से अधिक चीज़ें हो रही हों।
परिवेशीय सजगता
• अपने परिवेश के प्रति सहज व सजग हो पाना।
• समूह में मिलकर कार्य कर पाना।
• परिवेशीय घटनाओं के प्रति राय व्यक्त कर पाना एवं आसपास की हालातों के बारे में कारण खोज पाना।
• सामग्रियों के व्यर्थ उपयोग को रोकने की पहल कर पाना।
• लोगों और जीवों के प्रति संवेदनशील हो पाना।

अध्याय– 5

सीखना और आकलन

5.1 सतत एवं व्यापक मूल्यांकन विधि में भाषा के आकलन के विशिष्ट संदर्भ

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 की अनुशंषाओं पर आधारित सीखने–सिखाने और सतत एवं व्यापक मूल्यांकन हेतु प्रस्तावित दस्तावेज़ में बच्चों के साथ किए जाने वाले क्रियाकलाप एवं कक्षा प्रबंधन की कुछ तकनीकों के बारे में दिया गया है।

इस दस्तावेज़ में भाषा के संदर्भ में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि भाषा – संबंधी मूल्यांकन को किसी विशेष पाठ्यक्रम के संदर्भ में उपलब्धियों से नहीं बाँधना चाहिए, बल्कि उसे भाषाई दक्षता को मापने में पुनःनियोजित किया जाना चाहिए। मूल्यांकन को बाधा के रूप में देखने की बजाए अधिगम की समर्थक प्रक्रिया के रूप में देखने की ज़रूरत है। यानि कि बच्चे की जो भी स्थिति उपलब्धि के संदर्भ में आई हो उसके आधार पर आगे की योजना का निर्धारण करते हुए भाषाई कौशलों पर बच्चे के साथ कार्य किया जाना चाहिए। दरअसल यह मूल्यांकन और उससे प्राप्त उपलब्धि शिक्षक के लिए दिशा–निर्देशक का काम करती है। जो बच्चे के साथ और ठीक व उसके स्तर के कार्य कराने के लिए एक नियोजन है।

आकलन सीखने–सिखाने और पढ़ने–पढ़ाने की प्रक्रिया का अभिन्न हिस्सा है अतः आकलन एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है, इसलिए आकलन रोज़ की गतिविधियों के साथ स्वाभाविक रूप से किया जाना चाहिए और एक निश्चित समयावधि के दौरान उनकी प्रगति का मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 ने 'एक समग्र भाषिक निपुणता' की बात पर बल दिया है। यानि कि सिर्फ लिखना–पढ़ना आ जाना ही भाषा –शिक्षण का कार्य नहीं है वरन् बच्चों की कल्पनाशीलता को पोषित करने, उसके सौंदर्यात्मक पहलू की पहचान कराने की क्षमता, लिखे हुए में से अर्थ ढूँढ़ना, अपने अनुभवों को व्यवस्थित करने, समझने और व्याख्या करने, आसपास की दुनिया को खोजने और समस्याओं को हल करना आदि को सम्मिलित करते हुए भाषा शिक्षण किया जाना चाहिए तभी समग्र रूप से भाषिक निपुणता की बात आ सकती है। इस संदर्भ को मद्देनज़र रखते हुए मूल्यांकन के नज़रिए और फिर उसके साथ मूल्यांकन की युक्तियों, तकनीकों में भी बदलाव की आवश्यकता है। सीखने वाले का आकलन भाषिक ज्ञान और संप्रेषणात्मक कौशलों दोनों के स्तरों पर होना आवश्यक है।

बच्चे अपने आसपास की दुनिया से बहुत ही सक्रिय रूप से जुड़े रहते हैं। वे खोजबीन करते हैं, प्रतिक्रिया करते हैं, चीज़ों के साथ कार्य करते हैं, चीज़ें बनाते हैं और अर्थ गढ़ते हैं। बच्चा अपने अनुभवों के साथ नवीन ज्ञान को ग्रहण करता है और अपने लिए नए ज्ञान को रचता है। समाज में मिलने वाली अनौपचारिक शिक्षा, बच्चों में अपना ज्ञान स्वयं सृजित करने की स्वाभाविक क्षमता को विकसित करती है। जिससे बच्चों में अपने आस–पास के सामाजिक एवं भौतिक वातावरण से और विभिन्न कार्यों से जुड़ने की क्षमता बढ़ती है। इसी प्रकार स्कूल बच्चों के साथ औपचारिक रूप से स्वयं के बारे में सीखने के, दूसरों व समाज के बारे में जानने के अवसर प्रदान करते हैं ताकि वे अपने परिवेश को समझ कर उससे जुड़ पाएँ। जिन प्रक्रियाओं को स्कूल संभव बनाता है वे बच्चों के जीवन में समझ व दुनिया से जुड़ने की नई संभावनाएँ खोल सकती हैं।

बच्चों की आवाज़ व अनुभवों को कक्षा में अभिव्यक्ति देना, उन्हें पहल करने के अवसर उपलब्ध करवाना जिससे कि वे अपनी उत्सुकता का पोषण कर पाएँ, स्वयं कार्य कर पाएँ, सवाल पूछें, जाँचें–परखें और अपने अनुभवों को स्कूली ज्ञान के साथ जोड़ सकें। हमें निम्नलिखित बिन्दुओं को समझने की आवश्यकता है कि –

वास्तव में बच्चे कैसे सीख रहे हैं ?

क्या नहीं सीख पा रहे हैं और क्यों नहीं सीख पा रहे ?

सिखाने के कौन से तरीके उन्हें आनंद देते हैं और किन विधियों से उनमें झुँझलाहट या तनाव पैदा होता है ?

यह सब जानना मूल्यांकन की प्रक्रिया का हिस्सा है। बच्चे के सीखने के स्तर और उपलब्धियों को परखने के स्थान पर यह तय करना जरूरी है कि कक्षा में अपनाई गई सीखने की तकनीकें बच्चों की समझ बढ़ाने में कितनी सहायक हुई हैं।

भाषा शिक्षण के संदर्भ में भी आकलन और मूल्यांकन की प्रक्रिया इसी सिद्धांत की माँग करती है। भाषाई कौशलों का आकलन/मूल्यांकन कैसे किया जाए ? यदि हम व्यापक संदर्भ में देखें तो मूल्यांकन का उद्देश्य बच्चों के सीखने की क्षमताओं का आकलन करना और सीखने के दौरान सामने आने वाली समस्याओं की पहचान करना होता है। भाषा के संदर्भ में मूल्यांकन के निम्न तीन उद्देश्यों को देखना आवश्यक है :

1. बच्चों की भाषाई समझ का मूल्यांकन।
2. विभिन्न संदर्भों में भाषा का उपयुक्त इस्तेमाल करने के कौशलों का मूल्यांकन।
3. भाषा के सौंदर्य को सराह पाने की क्षमता का मूल्यांकन।

प्रत्येक प्रक्रिया में बच्चे ने जो सीखा या नहीं सीखा है उसका कोई न कोई परिणाम होता है। बच्चे द्वारा किए जा रहे कार्य के दौरान उसकी गतिविधि, क्रिया आदि को तथा उसके परिणाम को देखा जा सकता है। शिक्षक को इस प्रकार का नज़रिया और नियोजन की प्रक्रिया को समझने की आवश्यकता है।

कार्य की क्या–क्या संभावित प्रक्रियाएँ हैं और उनकी व्यावहारिक स्थितियों एवं उनसे संबंधित साक्ष्यों को निम्न तालिका की मदद से समझ सकते हैं।

प्रक्रियाएँ	व्यावहारिक स्थितियाँ	कार्य के साक्ष्य
बोलना	विवरण	चित्र – रचना
पढ़ना	अनुभव का वर्णन	संकलन
संवाद करना	कहानी	एलबम
संप्रेषण	कविता	तालिकाएँ
नाटक	पत्र	बच्चे के कार्य की चैकलिस्ट
अभिनय	संवाद	स्वयं के बारे में टिप्पणी
रोल प्ले	अभिनय गीत	किताबें
कहानी आदि।		कापियाँ एवं पोर्टफोलियो

उपर्युक्त सभी चीज़ें बच्चे के साथ कक्षाकक्ष में की जाने वाली सीखने–सिखाने की गतिविधि के दौरान ही होती हैं।

5.2 भाषा की आकलन संबधी युक्तियाँ

हिन्दी भाषा के आकलन के संबंध में 'पढ़ाने और सीखने' की प्रक्रिया को एकीकृत रूप में देखना आवश्यक है। भिन्न–भिन्न युक्तियों का इस्तेमाल करते हुए आकलन की सतत प्रक्रिया द्वारा भाषा के सभी कौशलों की जाँच करना न केवल आसान हो जाता है अपितु प्रभावशाली भी बन जाता है। भाषा सीखने की प्रक्रिया का आकलन करने के लिए यह महत्त्वपूर्ण है कि बच्चों को भी आकलन की प्रक्रिया में शामिल किया जाए। स्व आकलन, परस्पर आकलन, उपसमूह में आकलन बच्चों को बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रोत्साहित करता है।

स्व आकलन :

बच्चे के स्वयं के द्वारा किए गए कार्य के बाद मैंने कार्य कैसे किया, कैसे करना चाहिए, मैं क्या सीखा, क्या सीखना चाहिए ? यह बच्चे द्वारा स्वयं के काम का आकलन है। वह स्वयं की गतिविधियों को किस प्रकार देखता है ? उसकी स्वयं के बारे में क्या राय है, उसने जो सोचा या लिखा है वह संबंधित दिए गए लक्ष्य /समस्या के समाधान के संदर्भ में कितना सही रहा इस का स्वयं आकलन करना। इससे बच्चों को स्वयं के सीखने के प्रति एक राह भी मिल सकती है। वह दूसरों की अपेक्षा स्वयं के द्वारा पूर्व में किए जा रहे कार्य के सापेक्ष अपने कार्य को देख पाने की स्थिति में आ सकता है। इससे वह सीखने के लिए स्वयं का आकलन करेगा। जिससे उसके सीखने की गति और सीखने के बारे में गुणात्मक परिवर्तन आएगा। साथ ही बच्चे का अपने सीखने के बारे में आत्मविश्वास कि वह क्या जानता है, उसने कार्य को कैसे किया, उसे किस प्रकार की परेशानी हुई, उसे उसने किस प्रकार से हल किया आदि के लिए वे जितने स्पष्ट होते हैं उसे बयाँ करने में उन्हें किसी प्रकार कि झिझक नहीं होती है। उदाहरण के लिए कुछ इस प्रकार से स्वआकलन प्रपत्र तैयार किया जा सकता है –

स्व आकलन चैकलिस्ट

नाम :..... दिनांक :..... वार :.....

आकलन के सूचक	कार्य के बारे में राय
दिए गए कार्य को समझकर किया गया।	
एक बार में समझ न आने पर शिक्षक से पूछा गया।	
साफ–सफाई से कार्य किया गया।	
शब्द/वाक्य को लिखने में किताब / दोस्त की मदद ली।	
निर्धारित समय में कार्य को पूरा किया।	

अपने कार्य के बारे में कुछ खास बातें जो अच्छी लगी या जिनमें परेशानी हुईं।

1.....

2.....

2.....

एक विद्यालय के बच्चों द्वारा अपने कार्यों का किया गया स्व–आकलन की नमूना प्रतियाँ देख सकते हैं –

स्वआकलन चैकलिस्ट

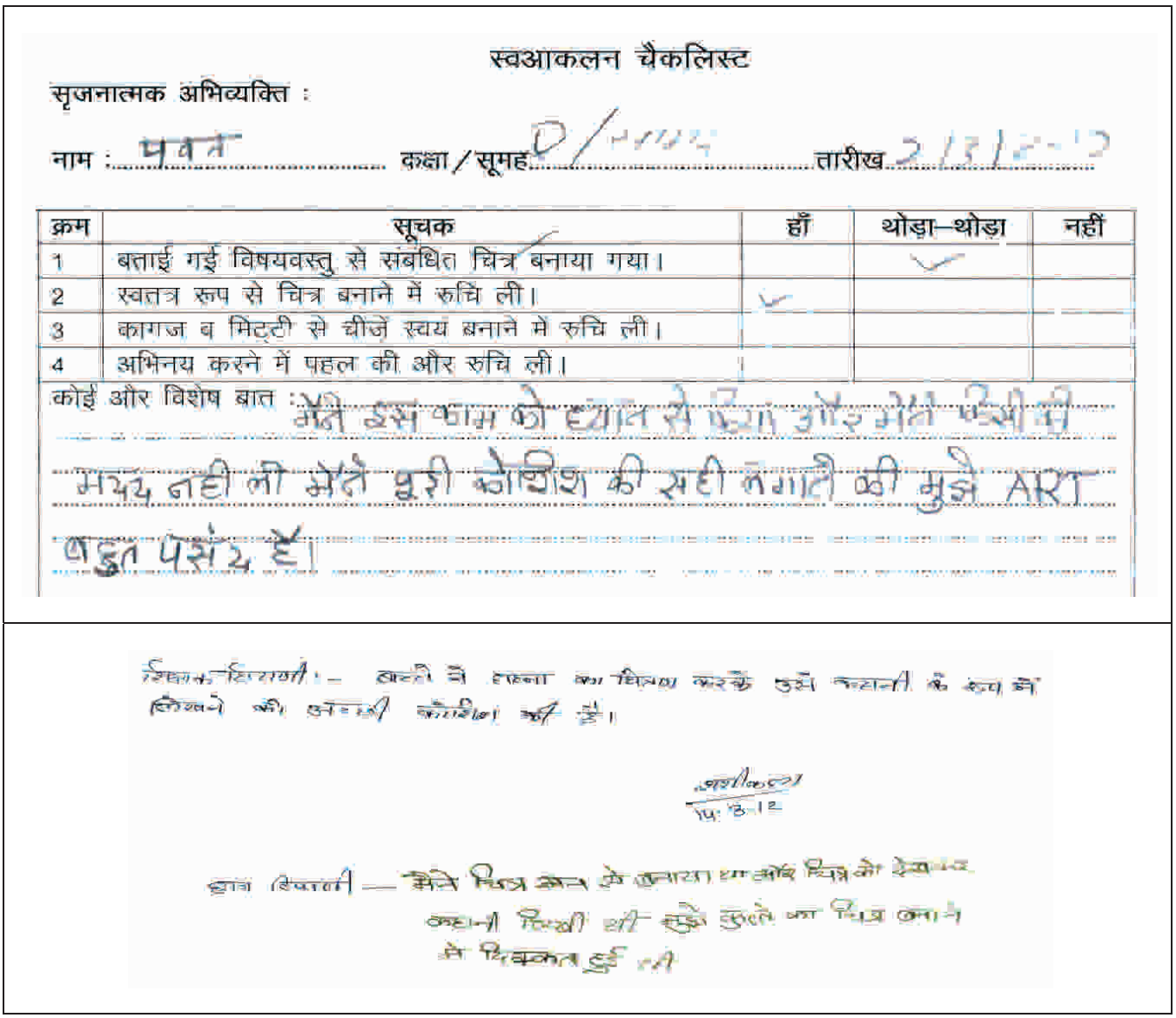

सृजनात्मक अभिव्यक्ति :

नाम : पवन कक्षा / समूह .... तारीख 2/3/2012

क्रम	सूचक	हाँ	थोड़ा–थोड़ा	नहीं
1	बताई गई विषयवस्तु से संबंधित चित्र बनाया गया।		✓	
2	स्वतंत्र रूप से चित्र बनाने में रुचि ली।	✓		
3	कागज व मिट्टी से चीजें स्वयं बनाने में रुचि ली।			
4	अभिनय करने में पहल की और रुचि ली।			

कोई और विशेष बात : मैंने इस काम को ध्यान से किया और मैंने किसी की मदद नहीं ली मैंने पूरी कोशिश की सही बनाने की मुझे ART बहुत पसंद है।

शिक्षक टिप्पणी :– बच्चे ने रचना का चित्रण करके उसे कहानी के रूप में लिखने की अच्छी कोशिश की है।

(हस्ताक्षर) 14.3.12

छात्र टिप्पणी – मैंने चित्र कहानी के अनुसार बनाया था और चित्र को देखकर कहानी लिखी थी मुझे कुत्ते का चित्र बनाने में दिक्कत हुई थी

समूह आकलन

प्रत्येक समूह कार्य में बच्चों के सतत एवं व्यापक आकलन के लिए संभावनाएँ निहित हैं। कब, कहाँ, कैसे एवं किन–किन तरीकों से आकलन किया जाना है इसके बारे में सटीक धारणा शिक्षक को अपनी योजना में निर्धारित करनी है। छोटे–छोटे उपसमूहों में दिए गए टास्क/बिंदु आदि के संदर्भ में समूह में कार्य करने की स्थिति, भागीदारी की स्थिति, एक–दूसरे को सीखने के अवसर उपलब्ध करने, एक–दूसरे के सुझावों को सुनने और अपने विचारों को तार्किक ढंग से रख पाने जैसे सामूहिक रूप से कार्य करने की योग्यता एवं व्यक्तिगत गुण/अभिवृत्ति का विकास होता है। एक समूह में कार्य करने के दौरान बच्चों के द्वारा अपने व दूसरे समूहों में हो रहे कार्य के अवलोकन व अनुभव के आधार पर आकलन किया जा सकता है। इससे सामूहिक रूप से कार्य करने की योग्यता एवं व्यक्तिगत गुण/अभिवृत्ति के विकास में गुणात्मक विश्लेषण के साथ–साथ बच्चों में आपस में कार्य करने की स्थितियों को समर्थन भी मिल सकता है। समूह आकलन से संबंधित नमूना पत्रक –

समूह का आपसी आकलन : चैकलिस्ट नमूना

आकलन करने वाले समूह सदस्यों का नाम :.....

दिनांक : ..... प्रस्तुति की विषयवस्तु /विषय :.....

आकलन सूचक	समूह–1	समूह–2	समूह–3	समूह–4
कार्य को करने के तरीके में विविधता रही।				
समूह द्वारा की गई प्रस्तुति की स्थिति				
कार्य से संबंधित लेखन में सभी बातों को ध्यान में रखा गया है।				
लेखन के साथ चित्र को भी बनाया गया है।				
अन्य समूह के द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दे पाए				

समूह में कार्य के दौरान परस्पर आकलन का एक और नमूना और देख सकते हैं–

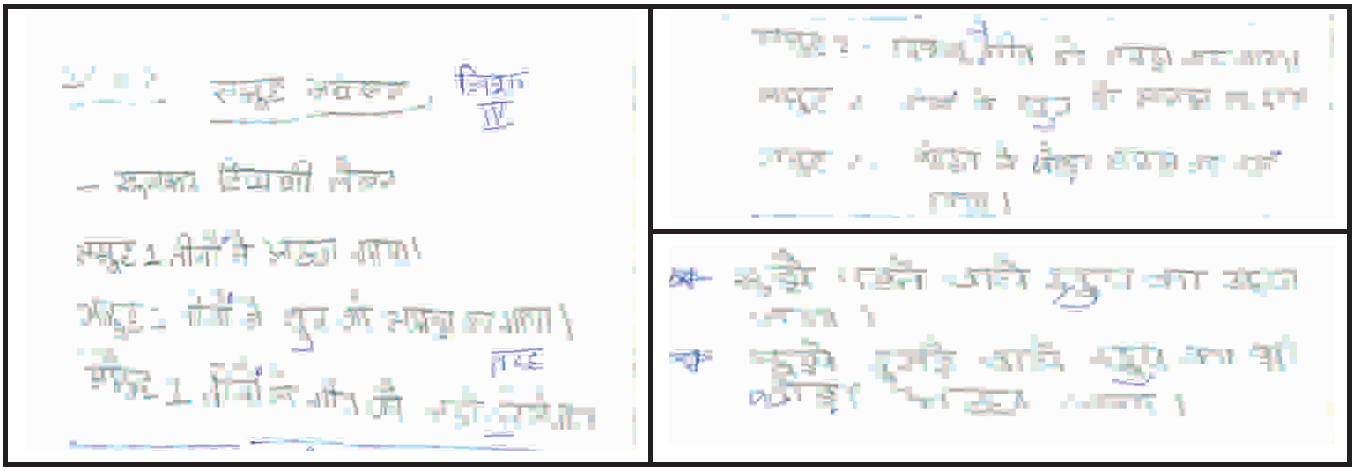

परस्पर आकलन :

सीखने का उद्देश्य और उसे प्राप्त करने का मानक क्या है। इस बात को समझने के एक स्वाभाविक मौके के रूप में हम परस्पर आकलन को देख सकते हैं। किए गए कार्य/कौशल की स्थिति को परस्पर जाँच करके उसे बेहतर करने के सुझाव देने से सीखने का गुणात्मक विश्लेषण करते हैं, साथ ही इस प्रक्रिया से स्वाभाविक तौर पर परस्पर पृष्ठपोषण भी मिल सकता है।

समूह का स्व आकलन

समूह सदस्यों के नाम : .....

दिनांक..... किए गए कार्य की विषयवस्तु/विषय.....

आकलन के सूचक	कार्य के बारे में राय
समूह के प्रत्येक सदस्य की बात को ध्यान से सुना गया।	
दिए गए कार्य को हल करने में सभी की सहभागिता रही।	
समूह में कार्य के दौरान कोई नई समझ या विचार बना पाए।	
निर्धारित समय में कार्य को पूरा किया।	

अगली बार समूह कार्य को करने में जिन बातों को ध्यान में रखेंगे –

1...

2...

बच्चों के द्वारा उपसमूह में आपस में किए आकलन का एक नमूना प्रस्तुत है–

परस्पर आकलन / उपसमूह –आकलन

कार्य करने के संदर्भ में
उपसमूह सदस्यों के नाम : कृष्णा, [illegible], निकिता, [illegible] तारीख 3/3/2012

क्रम	सूचक	हाँ	थोड़ा–थोड़ा	नहीं
1	मिलकर कार्य किया गया।	✓		
2	दूसरे साथियों की बात को सभी ने ध्यान से सुना।	✓		
3	सभी साथियों को बोलने का अवसर दिया।	✓		
4	बीच–बीच में किसी प्रकार की बाधा नहीं पहुँचायी।	✓		
5	समय पर कार्य को पूरा किया।		✓	

अपने समूह के बारे में कोई और विशेष बात : हमारे समूह ने मिलकर तुकबन्दी से कविता बनाई। सभी ने ध्यान से बात सुनी। सब ने एक दूसरे को बोलने का अवसर दिया। बीच बीच में बैठने पर बाधा पहुचाई। समयपर कार्य करने की कोशिश की थी।

शिक्षक द्वारा आकलन :

बच्चे की सीखने की स्थिति का आकलन करना, एक शिक्षक के दैनंदिन काम का महत्त्वपूर्ण भाग

है। भाषा शिक्षण के मामले में आकलन को बच्चों के साथ प्रतिदिन हो रहे कार्य/किए जा रहे कार्य के दौरान अवलोकन करते हुए किया जाना आवश्यक है। शिक्षक के संदर्भ में इसका क्या उद्देश्य है ?

- सीखने–सिखाने की प्रक्रिया से बच्चे ने निर्धारित/निश्चित ज्ञान की प्राप्ति की है, यह जाँचने के लिए।
- एक निश्चित समय/अवधि में बच्चे द्वारा प्राप्त प्रगति को जानने के लिए।
- विविध विषय क्षेत्र में प्राप्त स्थिति, गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए।
- बच्चे के विकास के विभिन्न क्षेत्रों, उसकी प्रगति एवं परिणाम को समझ कर उसके आधार पर आगे की योजना तैयार करने के लिए।

इस प्रकार कक्षा के बाहर तथा कक्षा में बच्चे के समग्र विकास के लिए उचित संदर्भ में प्रतिपुष्टि देना और उसे नोट करना आवश्यक है। ऐसे में –

बच्चे को समग्र रूप से देख पाना।

उसके बारे में जानकारी एकत्रित करना।

एकत्रित जानकारी की पृष्ठभूमि में उचित पृष्ठपोषण देना।

आवश्यकता के अनुरूप मदद करना। इस प्रकार से यह एक शिक्षिक के प्रतिदिन के काम का महत्त्वपूर्ण भाग है।

सामूहिक गतिविधियों के दौरान आकलन :

भाषा शिक्षण के अन्तर्गत बच्चों को विभिन्न प्रकार के कार्य छोटे–छोटे उपसमूहों में देने के पश्चात शिक्षक बच्चों के समूह में कार्य की स्थितियों का अवलोकन करते हुए अपनी डायरी में निम्न बिंदुओं का आकलन करेंगे जिससे कि बच्चे के रचनात्मक मूल्यांकन की टिप्पणी के लिए आधार तैयार हो सके।

बच्चों ने काम/अध्ययन से संबंधित जिम्मेदारी ठीक प्रकार से निभाई।

सवाल/विषयवस्तु/समस्या की ठीक से पहचान की।

समस्या–समाधान के लिए सामूहिक रूप से चिंतन का कार्य किया।

बच्चों के सामने कार्य के दौरान किस प्रकार चुनौतियाँ रहीं।

उनके द्वारा लिखा गया कार्य कितना विषयवस्तु केन्द्रित रहा।

प्रत्येक ने स्वयं की भूमिका का निर्देशानुसार निर्वहन किया।

अन्य विषयों से संबंधित विषयवस्तु शिक्षण के दौरान अवलोकन :

हर विषय की अपनी प्रकृति और क्षेत्र अलग–अलग होता है। इसी प्रकार किसी क्षेत्र विशेष से संबंधित विभिन्न प्रकार की शब्दावली का प्रयोग बच्चे की अभिव्यक्ति या संप्रेषण में आना बहुत आवश्यक है। इससे ही पता चलता है कि वह विषय को समझ पा रहे हैं या नहीं ? क्योंकि भाषा के ज़रिए हम अन्य ज्ञान के क्षेत्रों की प्रमुख शब्दावलियों, परिभाषाओं को ग्रहण करते हैं। यह देखना भी आवश्यक है कि बच्चा सीखे हुए ज्ञान का अनुप्रयोग उचित संदर्भों में कर पा रहा है या नहीं। इसके लिए किस प्रकार के अवलोकन बिंदु हो सकते हैं, एक नमूना प्रस्तुत है –

- अन्य विषय की शब्दावली का प्रयोग करते हैं।
- शब्दावली का प्रयोग उचित संदर्भों में करते हैं।
- व्यावहारिक जीवन में विषयों को समग्रता में समझने की कोशिश करते हैं।

मौखक कार्य :

भाषाई कौशलों के आकलन की यह एक प्रभावशाली तकनीक है। मौखिक आकलन के लिए औपचारिक और अनौपचारिक रूप से बहुत–सी गतिविधियाँ आयोजित की जा सकती हैं। जिनमें से कुछ गतिविधियाँ अग्र लिखित हैं इन्हें कक्षा शिक्षण के दौरान करवाएँ और बच्चों की प्रतिक्रिया के आधार पर उनका आकलन भी करते जाएँ।

संवाद करना एवं समूह में चर्चा :

बच्चों के साथ कक्षा–कक्ष में ऐसे सामाजिक या उनके जीवन से जुड़े विभिन्न प्रकार के मुद्दों पर चर्चा/संवाद करें। चर्चा के दौरान आकलन के बिन्दु निम्न होंगे :

- मौखिक अभिव्यक्ति के साथ–साथ बोलने का प्रवाह।
- शब्दों का प्रयोग।
- विषय के प्रति उनकी जानकारी।
- अपने विचारों को स्पष्ट रूप से संप्रेषित करने की योग्यता।

कुछ मुद्दे जिन पर बच्चों के साथ चर्चा/संवाद की जा सकती है, इस प्रकार के हो सकते हैं–

- पानी की समस्या और पानी के बचत संबंधी।
- बच्चों के विभिन्न खेलों और उसकी आवश्यकता संबंधी।
- अपने एवं अपने आसपास की स्वच्छता के मुद्दे .....आदि।

प्रश्न–उत्तर करना :

बच्चों की भाषा संबंधी तत्परता, शब्द संपदा, उच्चारण और भाषा की बुनावट संबंधी कौशल जानने के लिए तरह–तरह के सवाल बनाएँ । सवाल बनाते समय यह ध्यान रखें कि प्रश्न पाठ्यपुस्तक के इर्द–गिर्द के ही न हों। सवाल ऐसे हों जो बच्चों को सोचने के लिए प्रेरित करे, उनमें प्रतिक्रिया देने की रुचि पैदा हो तथा एक चुनौती सी महसूस हो। बच्चों के रोज़मर्रा की ज़िंदगी से जुड़े सवाल। बच्चे अपने बारे में, अपने परिवार और प्रिय वस्तुओं के बारे में बोलना पसंद करते हैं। जो कुछ उन्होंने चारों ओर देखा है, उसके बारे में बोलने के लिए वे सदैव तत्पर रहते हैं। अतः सवाल बनाते समय उनकी रुचियों को अवश्य ध्यान में रखें। कुछ सवाल इस प्रकार के हो सकते हैं–

- आप बनठन कर कहाँ–कहाँ जाते हैं ?
- आप अपने पड़ोसी दोस्तों के साथ कौन–कौन से खेल खेलते हैं ?
- आपको बारिश में भीगना कैसा लगता है, किस–किस प्रकार से बारिश में भीगते हैं ?
- आपके घर में लोग क्या–क्या काम करते हैं ?
- आपको क्या–क्या खाना अच्छा लगता है और क्या–क्या खाना अच्छा नहीं लगता है ?

चित्र के आधार पर किए गए प्रश्नों के उत्तर पूछना :

विभिन्न प्रकार के क्रियात्मक चित्रों पर स्तर के अनुसार प्रश्न बनाकर पूछना जिससे बच्चों के द्वारा प्रश्न को समझते हुए चित्र के आधार पर उसका जबाव तलाश कर दे सकें। इससे अवलोकन एवं चित्र को अपनी भाषा दे पाने की कुशलता का विकास बच्चों में होता है। जैसे–

अ) पेड़ पर चढ़ा लड़का क्या कर रहा है, वह ऐसा क्यों कर रहा होगा ?

ब) लड़की कुर्सी पर क्यों बैठी है ?क्या तुम ऐसे किसी बच्चे को जनते हो?

स) यदि तुम्हें इस प्रकार के बच्चे मिल जाएँ तो तुम उनकी किस प्रकार से मदद करोगे?

अभिनय करना :

अभिनय अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है, इससे बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ता है। साथ ही बच्चों का कार्य के प्रति रुझान एवं रुचि के लिए भी इस प्रकार की गतिविधियाँ शिक्षण में महती भूमिका निभाती हैं। इसके लिए किसी कविता, कहानी में आए विभिन्न पात्रों एवं विभिन्न प्रकार के कार्यों आदि के बारे में अभिनय करवाया जा सकता है। इस कार्य को प्रतिदिन की जाने वाली गतिविधियों के रूप में स्थान दिया जाना अपेक्षित है।

कहानी कहना :

विद्यालय आने से पूर्व से ही बच्चों का कथा कहानी के साथ अटूट रिश्ता होता है। सुनी हुई कहानी को अपने शब्दों में सुनाना और अपनी तरफ से कहानी सुनाना भी भाषाई कौशलों के आकलन की प्रभावशाली विधि है। बच्चे द्वारा कहानी सुनाते समय आपके लिए आकलन के बिंदु निम्न होंगे –

सुने गए शब्दों के अतिरिक्त कुछ नए शब्द स्थिति के अनुरूप डाल पाना।
आवश्यकतानुसार हावभाव का प्रयोग कर पाना।
घटनाक्रम को याद रख पाना।

कक्षा–कक्षीय गतिविधियों के दौरान कुछ बातों पर ध्यान देना आवश्यक होगा :

जिस बच्चे को थोड़ी मदद की आवश्यकता हो, सहयोग करें पर सबको मौका दें।
बच्चों को छोटे–छोटे समूहों में अपनी कहानी सुनाने को कहें।
उनके द्वारा अपनी मनपसंद कहानी सुनाने का ज़्यादा से ज़्यादा अवसर दें और उनकी इस क्षमता को पहचानने के लिए आकलन करें।

कहानी सुनना :

बच्चों के सुनने के कौशल पर कार्य करने के लिए आवश्यक है कि उन्हें कहानी/कविता आदि शिक्षक के द्वारा सुनाई जाए। इन कहानियों का चयन आपको पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त करना चाहिए। शिक्षक द्वारा भी कहानी सुनाई जाए उसके बाद आकलन की दृष्टि से उससे संबंधित प्रश्नों को पूछा जाए जिससे बच्चे की सुनकर समझने की स्थिति को आकलित किया जा सके।

वर्णन करना :

देखी–सुनी या पढ़ी बात का वर्णन करना सुनने में बहुत आसान लगता है पर यह अपने आप में कहीं बहुत जटिल कौशल है। बच्चों में यह कौशल स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहता है। 'वर्णन करना' आकलन करने की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। बच्चों के साथ किसी भी परिचित परिवेश में जानी–पहचानी वस्तु, चित्र दिखाकर या फिर कोई क्रिया दिखाकर वर्णन करने के लिए कहा जा सकता है।

चित्र देखकर उसमें हो रही क्रियाओं/घटनाओं का वर्णन करना ।

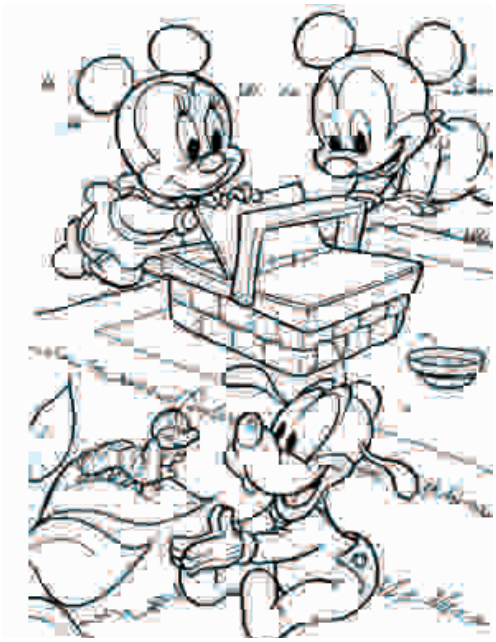

सस्वर वाचन/पठन करना :

भाषा संबंधी आकलन की इस पारंपरिक विधि की उपयोगिता और महत्त्व को किसी भी दृष्टि से नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। इसके अंतर्गत निम्न बिंदुओं का आकलन किया जाएगा–

- कहानी/कविता पढ़ने का तरीका (अक्षर जोड़–जोड़ कर पढ़ा/मात्राओं को ठीक ढंग से पढ़ा/ पढ़ते समय किस प्रकार की गलतियाँ की।)
- कितना पढ़ पाया/पाई (एक पैराग्राफ/दो पैराग्राफ/कुछ वाक्य/कुछ शब्द)

अवलोकन – अभिलेखन :

कक्षा–कक्षीय प्रक्रियाओं के दौरान होने वाली विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से, जैसे–चर्चा करना, अभिनय, स्वतंत्र अभिव्यक्ति, समूह में संवाद आदि। बच्चे जब इन प्रक्रियाओं में संलग्न होते हैं तब आपके लिए इन सभी प्रक्रियाओं का अनौपचारिक अवलोकन सतत रचनात्मक आकलन का एक महत्त्वपूर्ण अंग बन जाता है। कक्षा कक्ष में की जाने वाली प्रत्येक गतिविधि के दौरान बच्चों की स्थिति का आकलन करना कि – बातचीत में किस प्रकार की पहल रहती है, मौखिक अभिव्यक्ति किस प्रकार की रहती है, समूह में संवाद किस प्रकार से करते हैं, अभिनय संबंधी कार्य में कैसी सहभागिता रहती है, निर्देशों को सुनकर समझने व उस पर अमल करने की क्या स्थिति रहती है? आदि, को प्रतिदिन शिक्षक अपनी **अवलोकन डायरी** में नोट कर सकते हैं। अवलोकन आकलन का हिस्सा तभी होगा जब वह –

- नियमित रूप से किया जा रहा हो।
- किसी भी तरह के पूर्वाग्रह से दूर हो।
- आवश्यकतानुसार और सुविधानुसार उसका रिकॉर्ड भी रखा जा रहा हो।

लिखित कार्य का आकलन :

कक्षा कार्य, गृह कार्य, प्रदत्त परियोजना कार्य, कार्यपत्रक, आकलन/मूल्यांकन पत्रक आदि के आधार पर लिखित कार्य का आकलन किया जाता है। लिखित कार्य से बच्चों के सिर्फ़ लेखन कौशल का ही आकलन नहीं करते अपितु पढ़ना, समझना, ग्रहण करना, कल्पना करना, स्वतंत्र अभिव्यक्ति– इन सभी पक्षों का आकलन करने में मदद करता है। अतः लेखन का आकलन करने में मात्र योगात्मक मूल्यांकन के दौरान दिए उपकरणों में उल्लेखित कार्यों के आधार पर ही आकलन न करते हुए कक्षाकक्ष में किए जाने वाले विभिन्न कार्यों, कार्यपत्रकों में किए कार्य आदि के आधार पर भी समग्र रूप से बच्चे की स्थिति को देखते हुए उचित टिप्पणी लिखने का कार्य करना है। लिखित कार्य के लिए करवाए जाने वाले प्रश्नों की प्रकृति खासतौर से –

संदर्भ को विस्तार देने वाले हों।
समालोचनात्मक चिंतन को बल देने वाले हों।
अनुभव आधारित उत्तरों का पोषण करने वाले हों।
विश्लेषण क्षमता को बढ़ावा देने वाले हों।
कल्पनाशीलता का पोषण करने वाले हों।

प्रश्नों के उत्तर के संबंध में एक महत्त्वपूर्ण बात पर ग़ौर करना बहुत आवश्यक है– ***बच्चों के शब्दों को महत्त्व देना।*** यह बात निम्न उदाहरण से समझ सकते हैं ;

एक अध्यापक बच्चे के लिखित उत्तर का आकलन करते हुए कह रहे हैं– '' बात तो बच्चे ने बिल्कुल सही लिखी है, पर मैंने जिन शब्दों में बताई थी, वे शब्द नहीं हैं, क्या करूँ, पुनः लिखने को कहूँ या फिर बी ग्रेड दे दूँ?' आप इन शिक्षक महोदय की मदद किस तरह से करेंगे ?

वर्ग पहेली

बच्चों के पास विद्यालय आने से पहले अच्छा खासा शब्द–भंडार होता है। वे शब्दों के धनी और शब्दों के जादूगर होते हैं। संकेत भर मिलने से ही वे अनेक शब्दों को गढ़ना सीख जाते हैं। उनकी इसी कुशलता, सृजनशीलता को ध्यान में रखकर अलग–अलग प्रकार की वर्ग पहेलियों को भरवाने का काम करवाया जा सकता है। इससे बच्चों की शब्द–संपदा और लेखन की कुशलता, समान अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों में से संदर्भ के अनुसार किसी एक का चयन करना, शब्दों में निहित उचित अक्षर–क्रम की कुशलता का आकलन किया जा सकता है।

जैसे – वर्ग पहेली में से जानवरों के नाम छाँटने से संबंधित दो उदाहरण –

कु	त्ता	बि	स
गा	य	ल्ली	ब
गा	बै	ल	क
हि	र	न	री

श्रुतलेख :

लेखन की गतिविधियों में श्रुतलेख को भी भाषाई क्षमता के आकलन के उपकरण के रूप में इस्तेमाल में लाया जा सकता है। लेकिन यह पारंपरिक श्रुतलेख से भिन्न है। यह बच्चे की स्मृति और मात्राओं की जाँच नहीं है वरन् समग्र भाषिक निपुणता/दक्षता की स्थिति को समझने में सहायक है।

प्रश्न बनाना :

लिखित एवं पठित कार्य के अंतर्गत यह एक महत्त्वपूर्ण गतिविधि है। इससे बच्चों के पढ़ने के कौशल के साथ–साथ उनके चिंतन कौशल को भी हम समझ सकते हैं। प्रश्न बनाने के कौशल को विकसित करने के लिए बच्चों को विभिन्न प्रकार के अवसर दिए जाने आवश्यक हैं। किसी गद्य में से प्रश्न बनवाना।

छात्र – जावेद	छात्रा – सोनू
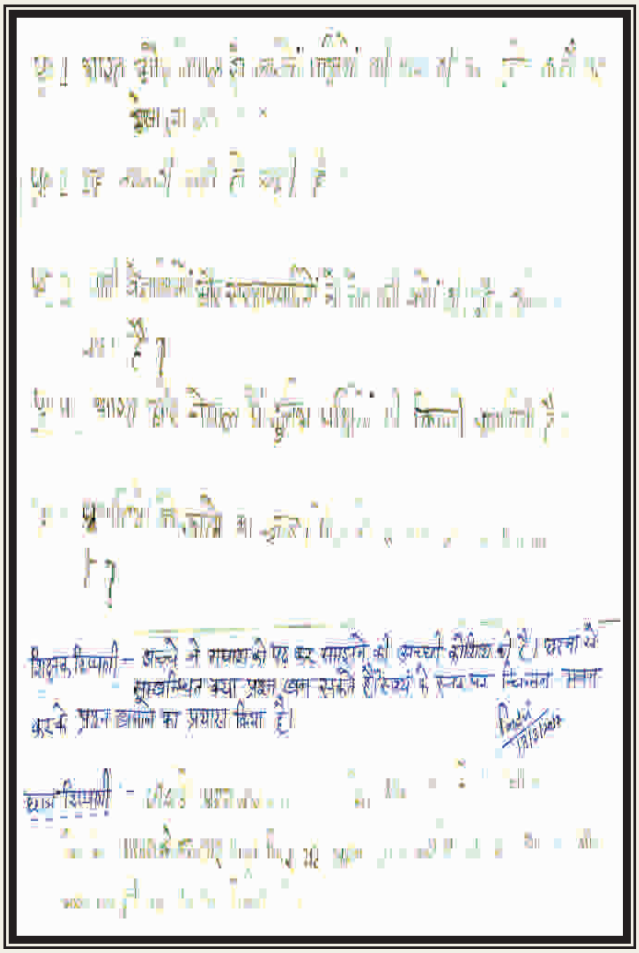	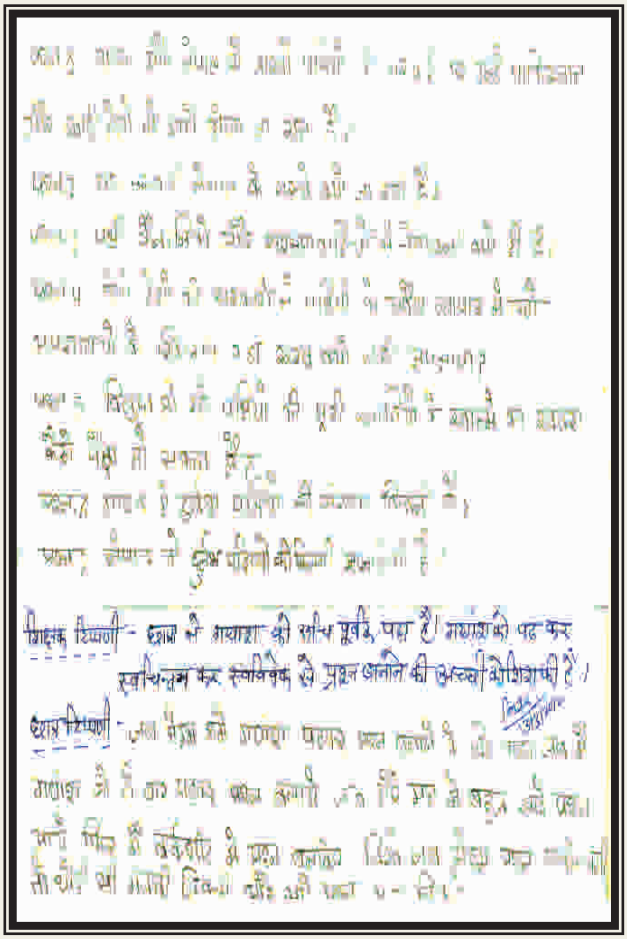

चित्रों के आधार पर प्रश्न बनवाना।
जैसे–

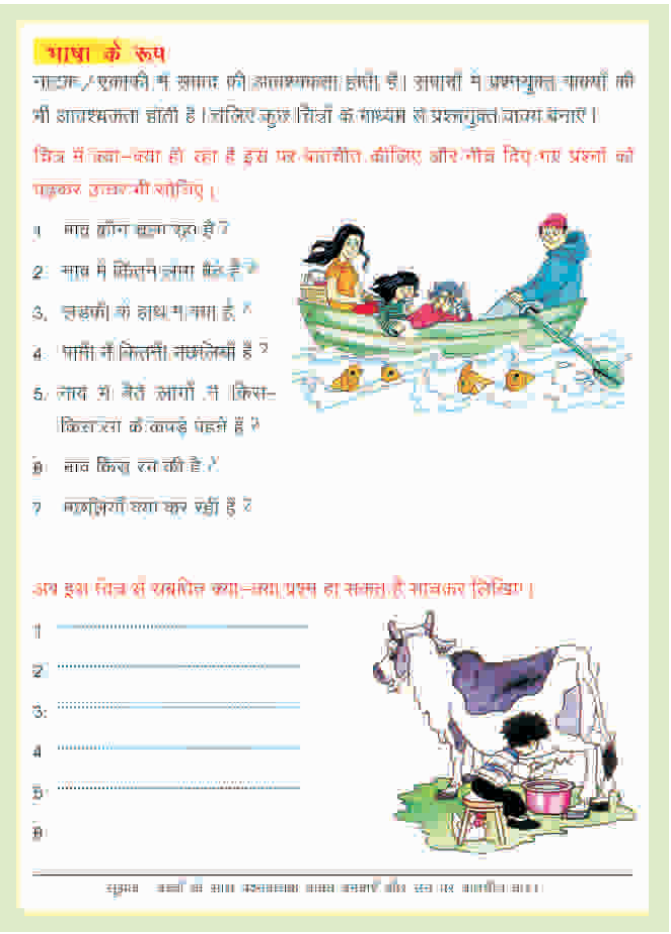

भाषा के रूप

नाटक/एकांकी में संवाद की अत्यधिकता होती है। कहानी में प्रश्नयुक्त वाक्यों की भी अधिकता होती है। नीचिए कुछ चित्रों के माध्यम से प्रश्नयुक्त वाक्य बनाएँ।

चित्र में क्या–क्या हो रहा है इस पर बातचीत कीजिए और नीचे दिए गए प्रश्नों को पढ़कर उत्तर भी खोजिए।

1. नाव कौन खेल रहा है?
2. नाव में कितने लोग बैठे हैं?
3. लड़की के हाथ में क्या है?
4. नदी में कितनी मछलियाँ हैं?
5. नाव में बैठे लोगों में किस–किसने क्या कपड़े पहने हैं?
6. नाव किस रंग की है?
7. मछलियाँ क्या कर रही हैं?

अब इस चित्र से संबंधित क्या–क्या प्रश्न हो सकता है सोचकर लिखिए।

1. .....
2. .....
3. .....
4. .....
5. .....
6. .....

स्वयं कहानी पूरी करके उस पर प्रश्न बनाना।
जैसे–

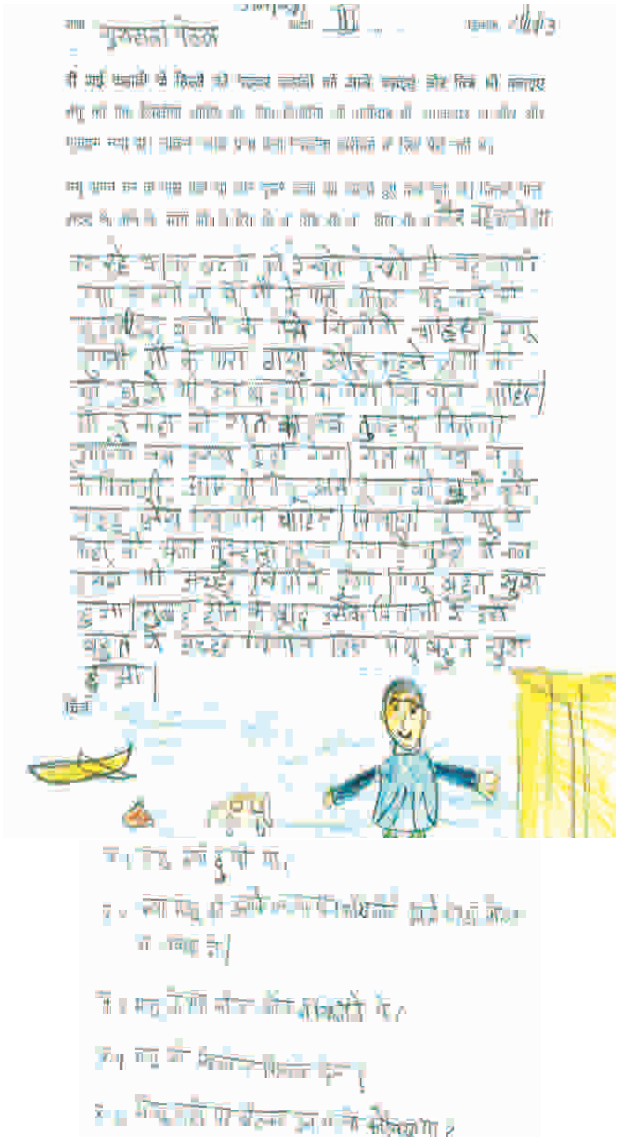

सृजनात्मक अभिव्यक्ति :

"सृजन बाल–आत्मा की गहराइयों में सोये नेक विचारों, नेक भावनाओं को जगाता है। बच्चे को अपने चारों ओर की दुनिया के सौन्दर्य की अनुभूति करते हुए शिक्षक इन गहराइयों की झलक पा लेता है।" वसीली सुख़ोम्लीन्स्की

सृजनात्मक अभिव्यक्ति के विभिन्न पहलुओं पर कार्य करवाना और उनका आकलन करना, कक्षा–कक्षीय गतिविधियों को रोचक बनाने व बच्चों की रुचि को संबल देने का काम करता है।

बच्चों को उनकी कल्पना की ऊँची उड़ान भरने के भरपूर अवसर देना आवश्यक है। इस प्रकार के अभ्यासों का उद्देश्य यही है कि बच्चों को अपने मन की बात, कहानी, कविता आदि बोलने के साथ–साथ लिखकर अभिव्यक्त करने का मौका मिले।

जैसे– चित्र देखकर स्वयं कहानी लिखना – लेखन व वाचन के अतिरिक्त कुछ अन्य गतिविधियाँ सुझाव के तौर पर दी जा रही हैं, आप अपनी पाठ्यपुस्तक के साथ आवश्यकतानुसार कुछ गतिविधियाँ स्वयं सृजित कर सकते हैं।

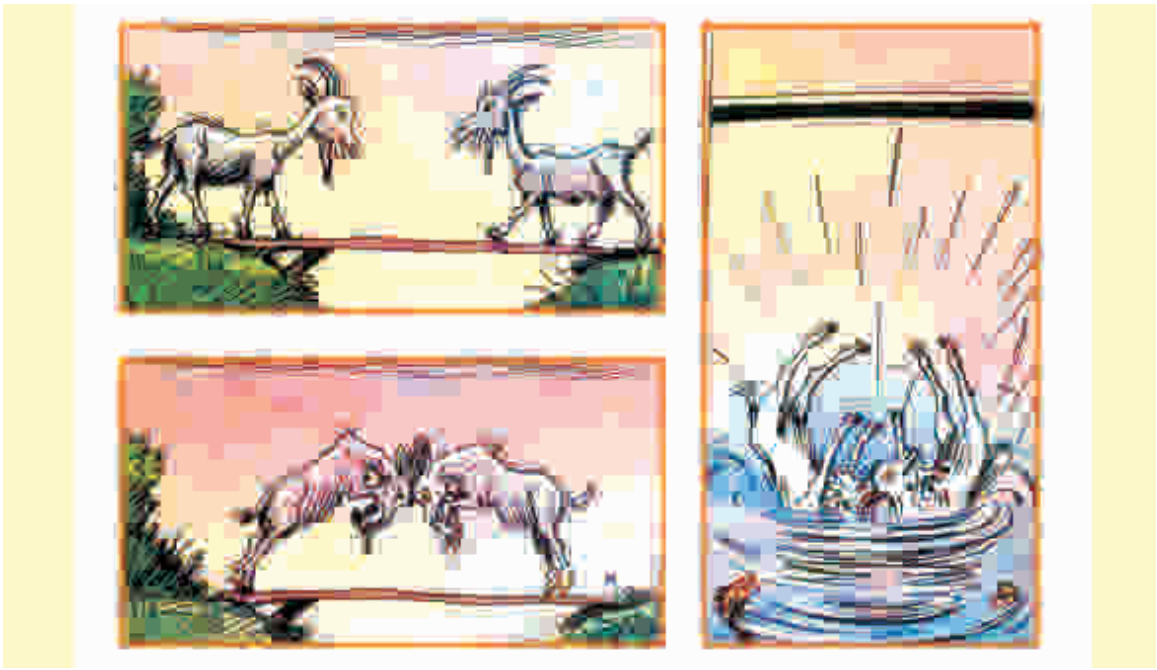

– अभिनय करना।

– लिखी गई बात को चित्र के माध्यम से अभिव्यक्त करना।

– कहानी का नाटक के रूप में प्रदर्शन करना।

– बच्चों को उनके मनपसंद की चीज़ों से कुछ वस्तुएँ बनाने को कहें। जैसे – कागज़ की पतंग, चिड़िया...। मिट्टी के खिलौने, कोलाज़ या फिर किसी सुनी कहानी/कविता के चित्र/दृश्य आदि। खिलौने/चित्र बनाने की प्रक्रिया को ग़ौर से देखने पर यह पता चल सकेगा कि बच्चे खिलौने को उचित आकार, बनावट आदि देने या चित्र बनाने व उसके रंग संयोजन के लिए किन कुशलताओं या उपायों/तरीकों का इस्तेमाल करते हैं। यह सूक्ष्म अवलोकन बच्चों के चिंतन और कार्यशैली की जानकारी देगा। साथ ही कल्पनात्मक विचारों को अभिव्यक्ति प्रदान करेगा।

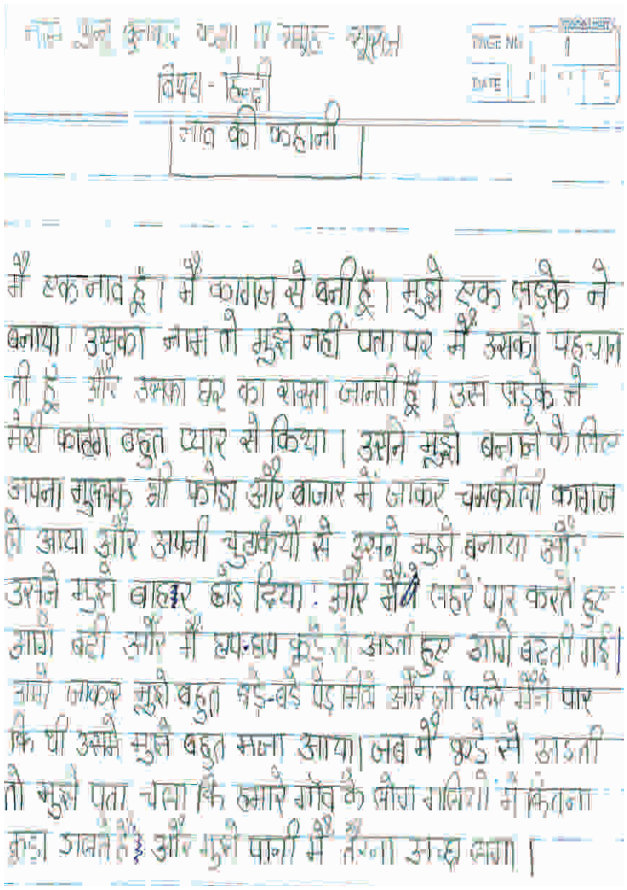

विषय - हिन्दी

नाव की कहानी

मैं एक नाव हूँ। मैं कागज से बनी हूँ। मुझे एक लड़के ने बनाया। उसका नाम तो मुझे नहीं पता पर मैं उसको पहचानती हूँ और उसका घर का रास्ता जानती हूँ। उस लड़के ने मेरा फोल्ड बहुत प्यार से किया। उसने मुझे बनाने के लिए अपना गुल्लक भी फोड़ा और बाजार से जाकर चमकीला कागज ले आया और अपनी चुटकियों से उसने मुझे बनाया और उसने मुझे बाहर छोड़ दिया। और मैं लहरें पार करते हुए आगे बढ़ी और मैं छप-छप करते उड़ाती हुए आगे बढ़ती गई। आगे जाकर मुझे बहुत बड़े-बड़े पेड़ मिले और जो पहले मैंने पार कि थी उसमें मुझे बहुत मजा आया। जब मैं कूड़े से उड़ती तो मुझे पता चला कि हमारे गाँव के लोग नालियों में कितना कूड़ा डालते हैं और मुझे पानी में तैरना अच्छा लगा।

बच्चों द्वारा स्वयं के स्तर पर किए गए सृजन के कुछ नमूने आप देख सकते हैं –

क्लोज़ प्रक्रिया :

भाषाई निपुणता जानने के लिए यह टेस्ट या जाँच का एक सुव्यवस्थित तरीका है। क्लोज़ टैस्ट में विद्यार्थियों को कोई भी पाठ्य सामग्री पढ़ने के लिए दी जाती है। पढ़ने के लिए देने से पहले प्रत्येक वाक्य का कोई–सा–शब्द, आमतौर पर पाँचवाँ या सातवाँ शब्द हटा दिया जाता है। विद्यार्थी से यह अपेक्षा की जाती है कि वह पूरी पाठ्य–सामग्री को पढ़े और हटाए गए शब्दों के स्थान पर, जो रिक्त स्थान के रूप में है, अपनी समझ से शब्द सुझाए।

विद्यार्थी रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिए भाषा विज्ञान से जुड़े ज्ञान–भाषाई ज्ञान, पाठ से जुड़े संदर्भों की समझ तथा व्यावहारिक जगत की समझ को आधार बनाएंगे।

यह देखा गया है, जो बच्चे क्लोज़ टेस्ट में निपुणता दिखाते हैं वे भाषा के हर पहलू में अच्छा कर सकते हैं। वे प्रभावशाली प्रदर्शन करते हैं। ऐसे बच्चों में अन्य विषयों में कुछ बेहतर प्रदर्शन की संभावनाएँ नज़र आती हैं। आखिरकार कुछ भी सीखने के लिए भाषा की जानकारी, समझ और निपुणता महत्त्वपूर्ण है।

क्लोज़ टैस्ट करने के लिए शिक्षक स्वयं के स्तर पर निर्णय लेकर इसे कर सकते हैं, जिसमें सुझाव के तौर पर एक पाठ/अध्याय के पूरा होने पर/एक यूनिट के पूरा होने पर भी किया जा सकता है।

क्लोज़ टेस्ट बनाने की प्रक्रिया :

- पाठ्यसामग्री में से किसी भी गद्य या पद्य का कोई सा भी अंश चुन सकते हैं।
- अंश रुचिकर हो, चुनौतिपूर्ण हो।
- पहले और आखिरी वाक्य को ज्यों का त्यों रहने दीजिए।
- उस शब्द के स्थान पर यानि कि खाली जगह पर रेखा/लाइन खींचिए।
- हर वाक्य में जो सातवाँ या पाँचवाँ शब्द हटेगा, रिक्त स्थान दर्शाने वाली रेखा/लाइन की लंबाई एक समान ही होनी चाहिए। जैसे माना एक वाक्य में से 'बैठा' शब्द व दूसरे में वाक्य का 'से' शब्द हटाया। 'बैठा' शब्द 'से' की अपेक्षा अधिक जगह घेरता है पर रिक्त स्थान दर्शाने वाली लाइन दोनों ही स्थानों पर बराबर आकार की होगी। इस नियम के पीछे तथ्य यह है कि बच्चे कम या ज़्यादा जगह के आधार पर शब्दों का अनुमान न लगाएँ।

क्लोज़ टेस्ट के लिए कम से कम बीस रिक्त स्थान तो होने ही चाहिए। इस प्रकार देखा जाए तो उस खंड में कम से कम 160–170 शब्द ज़रूर होंगे ही/होने चाहिए।

बच्चों के साथ कार्य की प्रक्रिया :

- बच्चों को खाली स्थान वाला अंश पढ़ने के लिए दें। उन्हें बताएँ –
- दिए गए अंश को दो बार ज़रूर पढ़ें।
- खाली स्थान को तभी भरें जब आप इसे तीसरी बार पढ़ रहे हों।
- हर खाली स्थान में केवल एक ही शब्द भरें।

क्लोज़ टेस्ट के अंकन करने के बहुत–से–तरीके हैं। पहले तरीके में तो केवल उन्हीं शब्दों को सही माना जाता है जो मूल पाठ्य–सामग्री में मौजूद हैं। दूसरे तरीके में उन शब्दों को भी सही मान लिया जाता है जो मूल खंड में मौजूद नहीं हैं पर संदर्भ से मेल खाते हैं।

क्लोज़ टेस्ट का एक उदाहरण प्रस्तुत है :

किसान की होशियारी

एक किसान अपना खेत जोत रहा था, अचानक कहीं से भालू आ गया। भालू किसान को मारने झपटा। किसान ने कहा, '' मुझे क्यों मारते हो ? फ़सल आने दो, जो कहोगे वही खिलाऊँगा।'' भालू ने कहा, ''ज़मीन के ऊपर की फ़सल मेरी और नीचे की तुम्हारी रहेगी।'' किसान ने आलू बो दिए। फ़सल आई तो भालू को पत्ते खाने को मिले। भालू चिढ़कर रह गया। अगली बार भालू ने कहा, ''देखो इस बार ज़मीन के नीचे की फ़सल मेरी और ऊपर की तुम्हारी।''किसान ने गेहूँ बो दिए। जब फ़सल तैयार हुई तो किसान को मिले चमकीले गेहूँ। भालू को मिली खाली जड़ें। भालू खींझकर रह गया। इस बार भालू ने किसान को मज़ा चखाना चाहा। उसने किसान से कहा, ''ज़मीन के सबसे ऊपर और ज़मीन के नीचे की फ़सल मेरी।'' किसान मान गया।इस बार किसान ने लगाया गन्ना। जब फ़सल आई तो भालू को मिले पत्ते और जड़ें। भालू का सिर चकरा गया।

गतिविधि 1 रिक्त स्थान की पूर्ति : नीचे लिखे गद्यांश को पहले दो बार ध्यान से पढ़िए।

तीसरी बार पढ़ते समय हर खाली स्थान में एक उपयुक्त शब्द भरिए। ध्यान रहे कि एक खाली स्थान में केवल एक ही शब्द भरना है।

एक किसान अपना खेत जोत रहा था, अचानक कहीं से भालू आ गया। भालू किसान को मारने (1) .....। किसान ने कहा, '' मुझे (2) .....मारते हो ? फ़सल आने दो, जो (3) .....खिलाऊँगा।'' भालू ने कहा, ''ज़मीन (4) .....ऊपर की फ़सल मेरी और (5) ..... की तुम्हारी रहेगी।'' किसान ने आलू बो (6) .....। फ़सल आई तो भालू (7) ..... पत्ते खाने को मिले। भालू चिढ़कर रह गया। अगली बार भालू ने (8) ....., ''देखो इस बार ज़मीन के (9) .....की फ़सल मेरी और ऊपर की तुम्हारी।'' किसान ने गेहूँ बो दिए। जब फ़सल तैयार हुई (10) ..... किसान को मिले चमकीले गेहूँ। भालू को मिली खाली (11) .....। भालू खींझकर रह गया। इस बार भालू ने (12) ..... को मज़ा चखाना चाहा। उसने किसान से कहा, ''(13) .....के सबसे ऊपर और ज़मीन के नीचे की फ़सल मेरी।'' किसान मान गया। इस बार किसान ने (14) ..... गन्ना। जब फ़सल आई तो (15) ..... को मिले पत्ते और जड़ें। भालू का सिर चकरा गया।

सही शब्द क्रमांक	सही शब्द	सही शब्द
1	झपटा	दौड़ा, लपका, को पलटा
3	कहोगे	चाहोगे, बोलोगे, कहो, कह दो
5	नीचे	ताले, बीच, बाकी की
8	कहा	साफ–साफ बोल दिया, बोला, धमकाया
9	नीचे	ठेंगा, फूस, तिनके, ज़मीन
14	लगाया	बोया, डाला, रोपा, बीजा, पेरा, काटा

गतिविधि 2– प्रश्न बनाना

गतिविधि के अंतर्गत बच्चों द्वारा जो प्रश्न बनाए गए, वे इस तरह हैं –

1. किसान ने भालू की मार से बचने के लिए क्या कहा ?
2. दोनों में से कौन चालाक था ? भालू या किसान ?
3. किसान ने माल हड़पने के लिए कौन–सी जुगत लगाई ?
4. भालू की हर बार लिल्ली–लिल्ली पोके क्यों हुई ?
5. दूसरी बार किसान ने खेत में कौन–कौन सी फ़सल लगायी?
6. भालू बार–बार बुद्धू क्यों बन रहा था?.....

(इसी प्रकार लगभग 25–30 और प्रश्न बच्चों के द्वारा स्वयं बनाए गए हैं।)

गतिविधि 3 – नाम लिखिए (शीर्षक)

कक्षा में उपस्थित बच्चों ने कहानी के लिए जो शीर्षक सुझाए, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं–

क्र.सं.	शीर्षक	क्र.सं.	शीर्षक
1.	किसान चालाक	7.	पाजी किसान
2.	किसान और भालू	8.	और लगा तू शर्त
3.	तीन–तीन शर्तें	9.	धोखेबाज किसान
4.	कौन हार गया शर्त	10.	समझदार किसान
5.	बुद्धू बन गया भालू	11.	भालू ठगा रह गया
6.	आलू की फ़सल	12.	अक़्ल बड़ी किसान की

गतिविधि 4– सही और स्वीकार्य प्रविष्टियों पर चर्चा

खाली स्थानों में बच्चों द्वारा भरे गए शब्दों पर उनके साथ चर्चा करने पर बच्चों के द्वारा अपने शब्दों के बारे में बताए गए कारणों में से कुछ कारण प्रस्तुत हैं :

1. दौड़ा	– मारने के लिए तो कोई दौड़ेगा ही नहीं।
लपका	– भालू तो हर काम के लिए लपकता है।
को पलटा	– बिना पलटी मारे कोई कैसे मार सकता है।
2. चाहोगे	– किसान भालू की इच्छा जानना चाहता था।
बोलोगे	– यही फिट बैठ रहा था।
कहो	– शर्त लगाने पर यही तो कहेंगे।
3. साफ–साफ बोल दिया	– भालू को डर थोड़े ही न था किसी का
बोला	– बोलकर ही कहेगा, नहीं तो कैसे बताएगा
धमकाया	– पिछली बार टें बोली तो अबके धमकाया।
हड़काया	– उसे ज़बरदस्त गुस्सा आ रहा था।

अंततः आपने यह ज़रूर महसूस किया होगा कि बच्चों का आकलन करना एक अलग गतिविधि नहीं है और न ही यह बच्चों, अभिभावकों और शिक्षकों पर अतिरिक्त भार है जिसके लिए हमें अतिरिक्त समय या प्रयास चाहिए। यहाँ पर यह बात जोड़नी भी ज़रूरी है कि बच्चों के सीखने के संबंध में एक विषय में सूचनाएँ एकत्रित करते समय दूसरे विषय/क्षेत्रों के पहलुओं के बारे में भी जानकारी हासिल की जा सकती है।

अंकन का नमूना :

क्लोज़ टेस्ट का अंकन नीचे दिए तरीके से किया जा सकता है। एक तरफ विद्यार्थियों के नाम लिखें दूसरी तरफ खाली जगह में भरे जाने वाले शब्द लिखें। भरे जाने वाले सही शब्दों के लिए सही (9) का निशान लगाएँ। सही शब्दों को गिनें। चाहें तो अंतिम कॉलम में उनका प्रतिशत भी निकाल सकते हैं।

शब्द	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
बच्चों के क्र.	झपटा	क्यों	कहोगे	के	नीचे	दिया	को	कहा	नीचे	तो	जड़ें	किसान	ज़मीन	लगाया	भालू
1	✓	काहे	✓	✓	✓	✓	✓	साफ बोला	✓	ठेंगा	✓	बोया	✓	✓	✓
2	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	ताले	✓	✓	✓	✓	✓	✓
3	दौड़ा	✓	✓	✓	✓	लगाया	✓	✓	✓	✓	✓	उसको	✓	डाला	जिनावर
4	✓	✓	चाहोगे	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	फूस	✓	मिट्टी	✓	उसको
5	✓	✓	✓	से	बीच	✓	✓	✓	अंदर	तभी	✓	✓	✓	✓	उसे
6	✓	✓	✓	✓	✓	फेरा	✓	बोला	✓	✓	✓	चालाक	✓	रोपा	✓
7	लपका	✓	में	बाकी	रोपा	✓	✓	✓	✓	✓	✓	पृथ्वी	✓	✓	✓
8	✓	✓	✓	✓	✓	लौं	✓	✓	तभी	✓	✓	✓	✓	✓	✓

पोर्टफोलियो

सामान्यतया पोर्टफोलियो को एक फाइल के रूप में समझा जाता है। पोर्टफोलियो प्रत्येक बच्चे की एक फाइल होती है। जिसमें विषयवार नमूनों को वर्गीकृत करके व्यवस्थित किया जाता है। यह समय की एक निश्चित अवधि में विद्यार्थी द्वारा किए गए कार्यों में से उसके सीखने की प्रकृति, स्थिति/स्तर, उपलब्धि तथा प्रगति पक्ष के चरणों को प्रदर्शित करने वाले नमूनों का संग्रह है। ये सामग्री रोज़मर्रा के काम से भी हो सकती है या फिर विशेष तौर पर किए गए कार्यों या जाँचों/अवलोकनों से ली जा सकती है।

यह भाषाई कौशलों के आकलन का महत्त्वपूर्ण और कारगर तरीका है। बच्चों द्वारा किए गए लेखन, चित्रकारी आदि से संबंधित नमूने के कार्यपत्रकों आदि का व्यवस्थित संकलन। जिन पर शिक्षक द्वारा समय–समय पर अपनी टिप्पणी/बच्चों की स्वयं की टिप्पणी/परस्पर की गई टिप्पणियाँ भी अंकित होंगी।

उपर्युक्त में से सामूहिक ज्ञान निर्माण के लिए उचित तरीके कौन–कौन से हैं ? सीखने के साथ आकलन भी होने की स्थिति में सीखने के तरीके को ही आकलन के लिए उपयोग कर सकते हैं। लेकिन प्रत्येक तरीके का उद्देश्य, इस्तेमाल किए जा रहे उपकरण/टूल आदि के आधार पर आकलन संबंधित जानकारियाँ भी भिन्न होंगी। पोर्टफोलियो रखने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि बच्चे अपने काम को बार–बार देख सकते हैं,

अभिभावकों को भी अपने बच्चे के काम की जानकारी मिलती रहेगी, आपको भी उसे सिर्फ़ जाँच नहीं अपितु सिखाने की प्रक्रिया का महत्त्वपूर्ण उपकरण बनाना है। पोर्टफोलियो में क्या–क्या हो सकता है, कुछ प्रस्ताव आपके लिए सुझाए गए हैं :

• अपनी समझ से लिखी गई कहानी, घटना वृतांत आदि। • हस्तलेख के नमूने • श्रुतलेख, अनुकरण लेखन	• स्व आकलन टिप्पणियाँ • पत्र • निबंध • स्वरचित कविताएँ
• अपनी समझ से लिखी गई कहानी, घटना वृतांत आदि। • हस्तलेख के नमूने • श्रुतलेख, अनुकरण लेखन • चित्र एवं उनसे संबंधित लेख • तैयार किए गए विज्ञापन, नोटिस • अनुच्छेद लेखन • कहानी आदि पर बनाए गए चित्र आदि। • प्रायोजना कार्य	• स्व आकलन टिप्पणियाँ • पत्र • निबंध • स्वरचित कविताएँ • नाटक प्रस्तुति • क्लोज़ टैस्ट से संबंधित कार्य • योगात्मक आकलन से संबंधित टूल आदि। • अभिभावकों के द्वारा की गयी टिप्पणी को भी लिखकर लगाया जा सकता है।

5.3 स्वयं के पढ़ने की आदत का आकलन

बच्चों के अंदर पढ़ने की आदत का विकास करने के लिए आवश्यक है कि वह स्वयं के पढ़ने की आदत को समय–समय पर आकलित करें। यह तभी सम्भव हो पाएगा जबकि विद्यालय पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त पुस्तकालय से सम्बन्धित पुस्तकों को बच्चों को उपलब्ध करवाते हुए उनको स्वतंत्र रूप से पढ़ने की आदत का विकास करने के अवसर उपलब्ध करवाए। अतः आवश्यक रूप से हिन्दी विषय शिक्षण के दौरान पुस्तकालय का उपयोग भी नियमितता के साथ किया जाए। स्वयं पढ़ने की आदत से सम्बन्धित एक नमूना प्रपत्र दिया गया है, जिसका इस्तेमाल आप अपनी ओर से आवश्यक सुधार करते हुए कर सकते हैं :

मेरी पढ़ने की आदत				
क्र. सं.	मेरे पठन के संदर्भ में	मेरा आकलन		
		हमेशा	कभी–कभी	कभी नहीं
1	मुझे पठन पसंद है और इससे खुशी मिलती है।			
2	खाली समय में मैं पठन करती/करता हूँ।			
3	दिन में कम से कम एक घण्टा मैं पढ़ती/पढ़ता हूँ।			
4	कहानी, जीवनी, विज्ञान संबंधी पुस्तक, कविता आदि मैं पढ़ती/पढ़ता हूँ।			
5	पठित सामग्री के संदर्भ में दूसरों के साथ चर्चा करना अच्छा लगता है।			
6	पठित सामग्री के संदर्भ में लिखना व नोट करना मुझे अच्छा लगता है।			
7	मैं अच्छा/अच्छी पाठक हूँ			
8	मैं जिन पुस्तकों को पढ़ना चाहती/चाहता हूँ।.....			

एक बच्चे द्वारा अपने पढ़ने की आदत का नमूना :

मेरी पढ़ने की आदत

क्र. सं.	मेरे पढ़ने के संदर्भ में	मेरा आकलन		
		हमेशा	बीच–बीच में	कभी–कभी
1	मुझे पढ़ना पसंद है और इससे खुशी मिलती है।	✓		
2	खाली समय में मैं पठन करती/करता हूँ।			✓
3	दिन में कम से कम एक घण्टा मैं पढ़ती /पढ़ता हूँ।			✓
4	कहानी, जीवनी, विज्ञान संबंधी पुस्तक, कविता आदि मैं पढ़ती/ पढ़ता हूँ।			✓
5	पठित सामग्री के संदर्भ में दूसरों के साथ चर्चा (बातचीत) करना अच्छा लगता है।	✓		
6	पठित सामग्री के संदर्भ (बारे) में लिखना और नोट करना मुझे अच्छा लगता है।	✓		
7	मैं अच्छा/अच्छी पाठक (पढ़ने वाला/वाली) हूँ।	✓		
8	आज तक मैंने जिन पुस्तकों को पढ़ा, उनमें से मुझे सबसे अच्छी पुस्तक लगी – मुझे स्कूल अच्छा लगता है। मुर्गियों की गिनती। उस पुस्तक में से मैंने सीखा – कि हर मेंग को हमेशा प्यार से समझाना चाहिए और एक बार गलती करे तो उसे माफ करे और अगर वह दुबारा वही गलती वापस करे तो उसे सजा दे। हर माँ बाप को अपने बच्चों को पढ़ाने भेजना चाहिए नो की उनसे काम करताएँ।			
9	मैं जिन पुस्तकों को पढ़ना चाहती/चाहता हूँ। मुर्गियों की गिनती। होसिए से कौन डरता है। मुझे स्कूल अच्छा लगता है। स्वामी विवेकानन्द। रक्षा। पौधा समुद्री। अंधी लड़की			

बच्चों की पढ़ने की आदत उन्हें नई जानकारियों से स्वयं भी अवगत कराती है जिसका एक नमूना प्रस्तुत है–

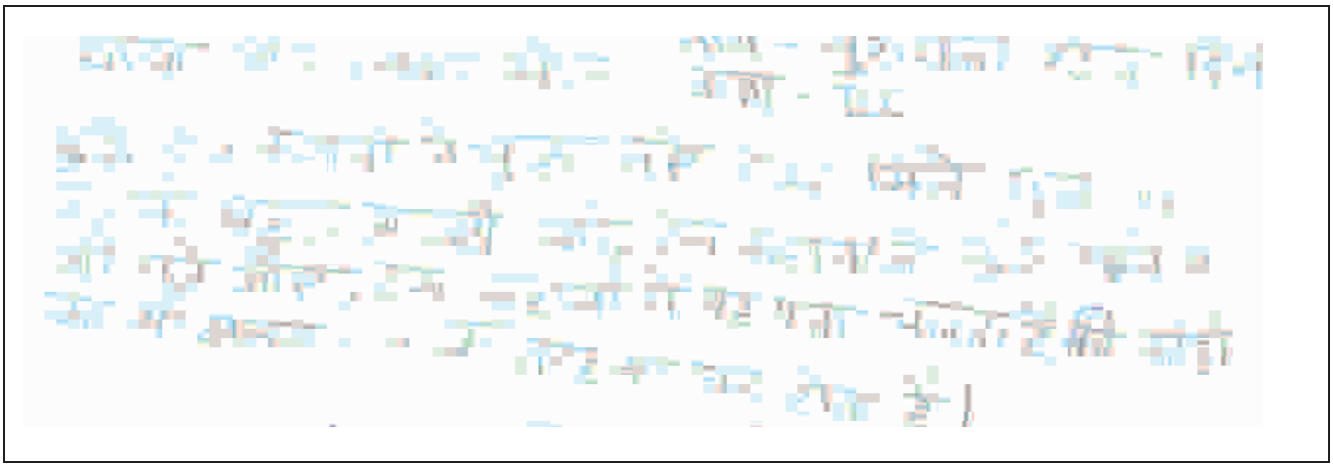

बच्चों के द्वारा पुस्तकालय की पुस्तकों को पढ़ने के बाद स्वयं जो सीखा और जिन पुस्तकों को पढ़ा उनके बारे में किया गया कार्य का नमूना –

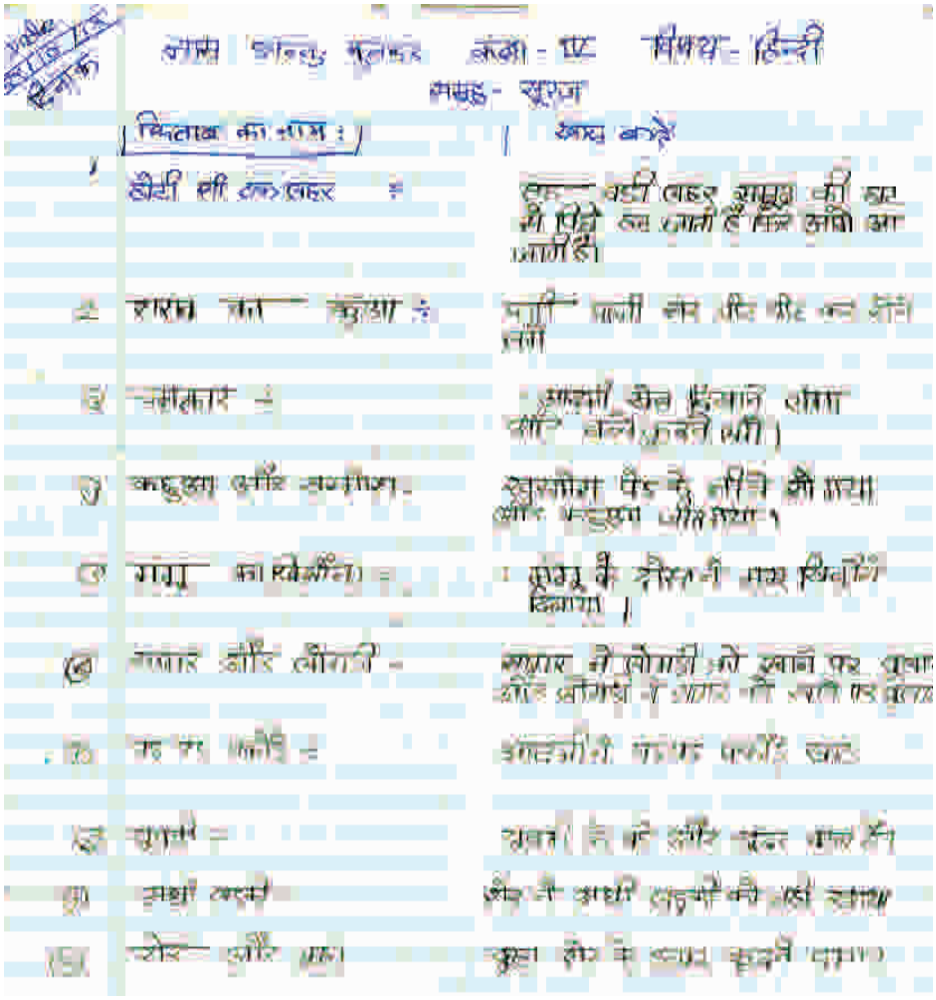

5.4 कक्षा–कक्ष शिक्षण योजना क्रियान्वयन एवं आकलन

सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में योजना एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है। इसमें हम निम्न बातों पर सोच विचार करते हैं कि बच्चों को क्या सिखाना है, किस तरीके से सिखाना है ? इसके लिए मुझे किन–किन सामग्रियों की आवश्यकता है ? आकलन कब करना है ? इसके लिए क्या उपकरण (Tools) उपयोग में लेने है ? जो बच्चे नहीं सीख पा रहे हैं, उनके लिए किस प्रकार की तैयारी की जानी चाहिए ....आदि ।

बच्चों के बेहतर अधिगम के लिए उनको अवसर उपलब्ध करवाने, उनके द्वारा स्वयं ज्ञान–सृजन कर पाने के लिए गतिविधियों का आयोजन करने, उन्हें स्वयं की बात को, विचार को अभिव्यक्त करने देने के अवसर उपलब्ध करवाने, उनकी रचनात्मक क्षमता को बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रकार के चिन्तन संबंधी गतिविधियों का आयोजन करने और व्यापक दृष्टि के साथ सीखने के मायनों को समझने आदि कार्यों को समाहित करते हुए विषयवस्तु को आधार बनाना और उसका क्रियान्वयन करना साथ ही यह देख पाना कि बच्चे सीखते कैसे हैं, उनके प्रतिदिन के प्रदर्शन में किस प्रकार का बदलाव आ रहा है ? आदि पक्षों को लेते हुए बेहतर शिक्षण करवाने के लिए एक पाठ पर कार्य करने की अनुमानित समयावधि 8 से 10 दिन हो सकती है।

आगे पाठ योजना के नमूने शिक्षक साथियों की मदद हेतु इस संदर्भ में दी जा र ही है ताकि सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के अर्थ को कक्षा–कक्षीय प्रक्रियाओं में मूर्त रूप में लागू करने में सुविधा महसूस कर सकें।

शिक्षण–आकलन योजना	कक्षा 4

पाठ / इकाई : **पापा जब बच्चे थे , अवधारणा / थीम** :.....

सम्पूर्ण कक्षा समूह के लिए अधिगम उद्देश्य : समूह चर्चा के दौरान अपने तर्कों के आधार पर अपने विचार आत्मविश्वास के साथ व्यक्त कर पाना, कहानी को पढ़कर आनन्द लेना एवं स्वयं के अनुभवों से जोड़ना। तुकान्त शब्दों को समझना एवं खोजबीन करना। परिचित लोगों से बातचीत कर सूचना एकत्र करना एवं समूह में बताना। स्वयं प्रश्न बनाकर समाधान सोचना व खोजना। सम्बन्धों की समझ मज़बूत बनाना, सम्बन्धों के आधार पर लोगों को सम्बोधित कर सम्मान दे पाने की समझ बनाना। स्थान विशेष के कार्यों से अवगत होना। विभिन्न कामों से जुड़े व्यवसाय को समझना एवं उनके प्रति संवेदनशील होना। विशेषण एवं सर्वनाम की अवधारणा को समझना एवं प्रयोग करना। साक्षात्कार विधा से परिचित होना एवं साक्षात्कार हेतु प्रश्नों को बनाना एवं जानकारी एकत्र करनाा।

शिक्षण योजना (1. सामूहिक कार्य 2. उपसमूहों में कार्य 3. व्यक्तिगत कार्य की योजना)	सतत आकलन योजना
सामूहिक कार्य – बच्चों से सामूहिक रूप से बातचीत करना, जिसमें चर्चा हेतु निम्न प्रश्न होंगे– (1) आप बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं? (2) आपके पापा क्या काम करते हैं? (3) कौनसा काम आपको सबसे अच्छा लगता है? बच्चों के जवाबों को समेकित करके एक रूप प्रदान करना। **काल्पनिक अभिव्यक्ति** : बच्चों से पुलिस वाला, कुल्फी वाला, चौकीदार के बारे में पूछना और उनकी कल्पना करवाते हुए बच्चों को अपने विचार देने हेतु प्रेरित करना। **उपसमूह में कार्य** – कहानी को छोटे–छोटे उपसमूहों में पढ़कर समझना व शिक्षक द्वारा बीच–बीच में सभी उपसमूहों में आवश्यक मदद करना। एक बड़े समूह में कहानी का सही उतार–चढ़ाव तथा स्पष्ट उच्चारण के साथ पठन करवाना तथा नवीन संदर्भों व शब्दों के समझाने हेतु बातचीत करना। कहानी के काल्पनिक पक्ष को बच्चों के अनुभव से जोड़ने हेतु कहानी के प्रसंगों पर बातचीत करना। पढ़ी गई कहानी में से बच्चों की सबसे पसंदीदा घटना या प्रसंग को सुनना। पठित नवीन शब्दावली का वाक्यों में प्रयोग करवाना। **खासियत की खोज –** बच्चों से बातचीत करना कि आपकी कक्षा में कौन बच्चा किस काम में माहिर है? अपने दोस्तों की खासियत को लिखवाना व उनके नाम लिखवाना। अपने परिवार के संदर्भों में सदस्यों को हम क्या–क्या कहते हैं यह बातचीत करना व उनके नामों को जानते हुए उनके सम्बन्धों को जानना। **अभिनय –** पाठ में दिए गए विभिन्न दृश्यों जैसे– बस स्टैण्ड, बाज़ार, अस्पताल, मेला..... आदि का अभिनय करवाना। विभिन्न जानवरों का अभिनय करवाना। पाठ में आए विभिन्न पात्रों का व्यक्तिगत रूप से चित्रांकन कर संकलन तैयार करवाना तथा उन्हें पोर्टफोलियो फाइल में लगाना। शिक्षक द्वारा 4 से 5 बच्चों के उपसमूह बनाना तथा साक्षात्कार प्रपत्र पर चर्चा करते हुए अन्य व्यक्तियों जैसे– आइसक्रीम वाला, पुलिस वाला, ठेले वाला आदि का साक्षात्कार लेने हेतु प्रश्नावली तैयार करवाना। उपसमूहों में किए गए कार्य का प्रस्तुतिकरण करवाना व प्रश्नावलियों का समेकन करते हुए	**शिक्षक द्वारा आकलन** • बच्चों से संवाद करते हुए उनका अवलोकन दर्ज़ करना। • उपसमूह में कार्य के दौरान उनकी स्थिति को अवलोकित करते हुए शिक्षक डायरी में नोट करना। • बच्चों के कार्य की जाँच करके टिप्पणी लिखना। **बच्चों द्वारा परस्पर आकलन** • बच्चों के उपसमूह द्वारा परस्पर आकलन करना। • परियोजना कार्य की जाँच करना। दिए गए अभ्यास कार्यों को

साक्षात्कार हेतु एक नवीन प्रश्नावली तैयार करवाना।

उपसमूह में ही आस–पास से किसी ठेले/थड़ी वाले का साक्षात्कार लेने हेतु भेजना।

साक्षात्कार से मिले प्रमाणों का समूह में प्रस्तुतिकरण करवाना।

प्रस्तुतिकरण के दौरान एक–दूसरे उपसमूहों का आकलन करवाना। (बोर्ड पर प्रपत्र बनाकर बताया जाएगा।) जैसे–

परस्पर आकलन प्रपत्र

सूचक	हाँ	नहीं
समूह ने जानकारी को ठीक ढंग से प्रस्तुत किया।		
साक्षात्कार के लिए गए सभी प्रश्नों की जानाकरी ली गई		
समूह में आपस में तालमेल रहा।		

कहानी पर आधारित प्रश्नों पर सामूहिक रूप से बातचीत करना व बच्चों के विचारों को जानना।

व्यक्तिगत कार्य प्रथम समूह –

पुस्तक आधारित अभ्यास कार्यों को करवाना।

व्याकरण –

सर्वनाम शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करना।

अनुच्छेद देकर उसमें आए सर्वनाम शब्दों को रेखांकित करवाना।

अनुनासिक व अनुस्वार युक्त शब्दों को बोर्ड पर लिखकर उच्चारण करवाना व ध्वनि विभेद पर कार्य करते हुए दोनों प्रकार के शब्दों की सूची बनवाना।

पाठ्यपुस्तक में से अनुनासिक व अनुस्वार युक्त शब्दों को छँटवाना व लेखन करवाना। (उपसमूह बनाकर यह कार्य करवाया जाएगा)

जाँचना और उचित दिशा निर्देश के साथ टिप्पणी को दर्ज करना।

उपसमूह–2 के लिए विशेष अधिगम उद्देश्य : पठन – मात्रायुक्त शब्दों को चित्र के साथ व स्वतंत्र रूप से पढ़ पाना। लघु व दीर्घ मात्राओं में ध्वनि विभेद कर उच्चारण कर पाना। शब्दों व वाक्यों का पठन कर पाना।

लेखन – मात्रायुक्त शब्दों का लेखन कर पाना। सीखी गई मात्राओं का अनुप्रयोग कर पाना।

शिक्षण योजना (1. सामूहिक कार्य 2. उपसमूहों में कार्य 3. व्यक्तिगत कार्य की योजना)	सतत आकलन योजना
बच्चों को मात्रायुक्त शब्दों के चित्र कार्ड उपलब्ध करवाना व दो–दो के जोड़ों में इनका पठन एक–दूसरे की मदद करते हुए करना। जैसे– (–**छतरी** , –**मटका**) (मात्रायुक्त शब्द कार्ड माला–ताला, बाजा–छाता, नीला–पीला) मात्रायुक्त शब्द कार्ड द्वारा पठन करवाना। (व्यक्तिगत रूप से) बच्चों को मात्रायुक्त शब्दों व सरल वाक्यों को पढ़ने का अभ्यास करवाना तथा इसके लिए आवश्यक सामग्री का उपयोग करना। दिए गए चित्र के अनुसार मात्राओं का प्रयोग करते हुए वाक्यों को पूरा करवाना।	• बच्चों द्वारा पढ़ने से सम्बन्धित स्थितियों को नोट करना। • बच्चों के कार्यपत्रक की जाँच करना।

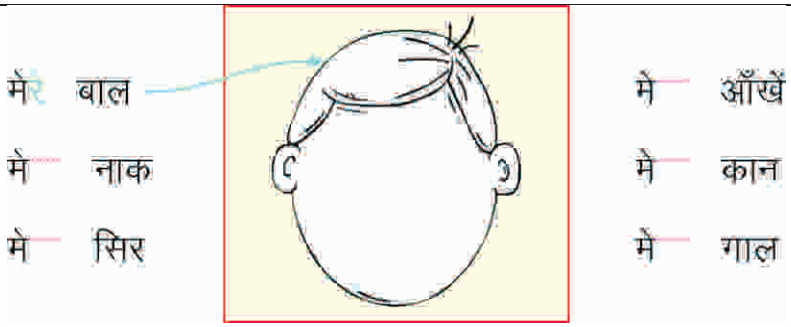

अखबार/पत्र–पत्रिकाओं/पाठ्यपुस्तक/पुस्तकालय की पुस्तकें आदि में से सीखी गई मात्राओं से युक्त शब्दों को खोजकर लेखन करवाना।

उपसमूह में मात्रायुक्त शब्दों को एक–दूसरे की मदद से पढ़वाना, सुनना और श्रुतलेख करवाना।इ की मात्रा (ि) वाले शब्द – ए की मात्रा (े) वाले शब्द

श्रुतलेख करवाना मात्रायुक्त शब्दों का।

अखबार/पत्र–पत्रिका/पाठ्यपुस्तक में से सीखी गई मात्राओं के शब्दों को छाँटकर लिखने को देना।

छोटे उपसमूह बनाकर – मात्राओं के ध्वनि भेद को लेकर एक–दूसरे से शब्दों को पढ़वाना एवं सुनने का कार्य देना।

- श्रुतलेख के माध्यम से लिखने के कौशल को देखना।
- कक्षा कार्य की कॉपी चैक करना।

बच्चों के सीखने की प्रक्रिया एवं उपलब्धि के सन्दर्भ में दिनांक :

1. **कार्य के दौरान बच्चों की सहभागिता की स्थिति के बारे में** :– कार्य के दौरान लगभग सभी बच्चों की प्रत्येक कार्य में सहभागिता रही। सभी ने कहानी को पढ़ने में रुचि दिखाई और आनन्द लिया। बातचीत में अधिकांश का उत्साह दिखाई दिया। अपने अनुभव एवं विचारों को समूह में रखा।
2. **बच्चों को आ रही कठिनाई के बारे में** :– समूह नं. 2 में ई की मात्रा पर कार्य करते समय जहाँ दोनों (आ व ई) मात्राएँ एक साथ आ जाती उसे समझने में कठिनाई हुई। जिसके लिए चित्र कार्ड से ज्यादा मदद ली गई।
3. **बच्चों के अधिगम उपलब्धि के बारे में** :– लक्ष्य के अनुसार मात्राओं को पहचानना और सही उच्चारण के साथ पढ़ने और स्वयं उनके प्रयोग से शब्द बनाने का कार्य उपसमूह – 2 के बच्चे करने लगे हैं।

उपसमूह –1 पाठ को स्वयं पढ़कर उसमें नीहित मुख्य बातों को समझे एवं प्रश्नों के उत्तरों को विस्तार के साथ कर पाए।

योजना का कक्षा–कक्ष में क्रियान्वयन ; नमूना

इस योजना के क्रियान्वयन के दौरान सभी गतिविधियों को ठीक से करवाने में लगभग 12 – 13 दिन लगे। यहाँ पर सभी गतिविधियों से संबंधित क्रियान्वयन की प्रक्रिया को नहीं दिया जा रहा है, कुछ गतिविधियों के क्रियान्वयन से संबंधित प्रक्रियाओं का उल्लेख किया जा रहा है जिससे कि शिक्षक साथियों को मदद मिल सके।

कक्षा – कक्षीय प्रक्रिया

'पापा जब बच्चे थे' कक्षा 4 की पाठ्यपुस्तक में दी गई कहानी है। यह बच्चों के जीवन से जुड़ी हुई एक मज़ेदार कहानी है। जिसमें पापा जब छोटे थे तो उनसे अकसर पूछा जाता था कि वह बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं? तब हर बार उनका अलग–अलग जबाव होता था। जिन–जिन के सम्पर्क में वे आते और

उनके काम के बारे में वे जानते तो उसी काम को करने की उनकी हर बार उत्सुकता बनती जाती। इस उम्र के बच्चों के साथ भी ऐसा ही होता है, वे वास्तव में स्वयं नहीं जानते कि आखिर वे क्या बनना चाहते हैं, लेकिन अकसर वे अपने परिवार के लोगों की बातों को ध्यान से सुनते हैं, और उनके द्वारा की जा रही अपेक्षा को ही अपना मकसद बनाने लग जाते हैं। लेकिन यह कहानी कुछ हटकर है जिसमें बच्चे की वास्तविक स्थिति को बहुत ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

सामूहिक कार्य : समूह में बातचीत

जब मैंने इस पाठ की योजना बनाई तो बहुत से सवाल मेरे मन में भी उभरे और मैं भी कहानी को पढ़ते–पढ़ते अपने बचपन की मनःस्थिति पर एक बार फिर से गोते लगाने लगी। खैर, कक्षा में जाने के बाद कक्षा में उपस्थित सभी बच्चों के चेहरों को मैंने देखा, मेरे इस तरह से देखने पर बच्चों के मन में भी बहुत से सवाल उमड़ने लगे। जैसे – आज क्या करेंगे? क्या कोई कहानी या कविता सुनाएंगे या पहले किए काम पर सवाल तो नहीं पूछेंगे....आदि–आदि। मैंने बच्चों की हैरत भरी खामोशी और उमड़ते प्रश्नों की लड़ियों को तोड़ते हुए गुस्ताखी की, और बच्चों को संबोधित करते हुए पूछा कि–चलो आज कुछ बात करते हैं और तुम्हारे मन की बात को भी जानते हैं। सब तैयार हो गए।

मैंने पूछा– एक–एक कर बताओ कि तुम बड़े होकर क्या–क्या बनना चाहते हो ?

करन , अरुण, मीनू ,मनीषा ,सीमा, चंचल और **पूजा** ने कहा कि वे **'डॉक्टर'** बनना चाहते हैं।

निशा, नेहा, एकता टोपिया, एकता बिवाल और **मंजू** ने कहा कि वे **टीचर** बनना चाहते हैं। **विरेन्द्र** और अन्नू **पुलिस** बनना चाहते हैं।

किशन फौजी और **पायल** का सपना है कि वह **इंजीनियर** बनेगी।

अन्नू के पुलिस बनने की बात कहने के साथ ही अधिकांश बच्चे बोल उठे कि ये तो संध्या की तरह आईपीएस बनेगी, है ना! अन्नू ठीक, चंचल ने कहा।

अन्नू ने हँसकर जवाब दिया– हाँ, क्यों नहीं बन सकती ? मेहनत करुँगी, और मुझे तो पहले से ही पुलिस का काम अच्छा लगता है इसलिए मैं बनना चाहती हूँ।

अन्नू ने किशन से पूछा– लेकिन किशन तुम फौजी क्यों बनना चाहते हो, किशन के कुछ कहने से पहले ही मीनू तपाक से बोली अरे! ये तो फौज वाली कोई पिक्चर देखकर फौजी बनने की सोच रहा होगा। किशन ने कहा– ' हाँ तो, मुझे फौजी का काम अच्छा लगता है, इसलिए फौजी बनना चाहता हूँ।'

इसी बातचीत को आगे बढ़ाते हुए मेरे द्वारा दूसरा प्रश्न पूछा गया ' कि आपके पापा क्या–क्या काम करते हैं?

जिसमें से सभी के द्वारा बताया गया। कुछ बच्चों के पापा खाना बनाने का काम करते हैं, तो कुछ के मजदूरी, कुछ के ड्राइवर हैं, कुछ के ऑफिस में जाते हैं, लेकिन उन्हें पता नहीं था कि वहाँ पर वह क्या काम करते हैं, अरुण के द्वारा कुछ नहीं बताया गया उससे मैंने पूछा तो वह बड़ी मुश्किल से धीमी आवाज़ में बोला – 'मिस्त्री'। मेरे द्वारा उसके साथ बात की गई कि 'नहीं, कोई काम छोटा और बड़ा नहीं होता है। काम कोई सा भी हो उसके लिए मन में सम्मान होना चाहिए।' (इस दौरान अन्य सभी बच्चे भी गंभीरता के

साथ इस बात को सुन रहे थे।) मेरी बात के खत्म होते ही नेहा ने कहा – मेरे पापा भी पेंट का काम करते हैं, वह भी तो मजदूरी ही होती है, ना, दीदी। मैंने हाँ, में सिर हिलाया।

फिर तीसरा प्रश्न पूछा – कि 'आपको इन सब कामों में से सबसे अच्छा काम कौन–सा लगता है?' इस पर अधिकांश बच्चों का जवाब वही रहा, जो उन्होंने पूर्व में स्वयं के लिए बताया था।

अवलोकन अभिलेखन : बातचीत के दौरान अपने काम करने के सपने को बताने में सभी बच्चों को उत्सुकता थी। अपने पापा के काम को बताने में अरुण को शर्म आ रही थी। काम के सन्दर्भ में बात करने पर सभी बच्चों के द्वारा सहमति जताई गई कि सभी कामों का सम्मान करना चाहिए।

पायल, पूजा, अन्नू, किशन, निशा ने आत्मविश्वास के साथ अपने सपने को कहा।

अन्य बच्चों ने थोड़ा शर्माकर अपने सपने को शेयर किया। मंजू ने शायद पहले कभी सोचा नहीं था, इसलिए बहुत वक़्त लगाने के बाद धीरे से टीचर बनने की बात उसने कही।

काल्पनिक अभिव्यक्ति :

बच्चों को कुछ देर के लिए से पुलिस वाला, कुल्फी वाला और चौकीदार के काम के बारे में सोचने के लिए कहा, इस कार्य में भी सभी बच्चों को सम्मिलित किया गया।

करन ने पूछा – 'दीदी क्या तीनों के बारे में सोचें ?' मैंने बच्चों से ही पूछा कि वे क्या करना चाहते हैं, आपस में बात करके मुझे बता दें। तब सभी बच्चों ने आपस में बात करते हुए तय किया कि अभी एक–एक पात्र के बारे में ही सोच सकते हैं, इसमें भी जिसे जो अच्छा लगे उसके बारे में बता सकता है।

कुछ देर सोच–विचार करने के बाद बच्चों ने अपनी–अपनी बात बतानी प्रारम्भ की।

विरेन्द्र – 'पुलिस वाले खाकी वर्दी पहनते हैं, उनके पास एक डंडा और पिस्तौल होती है, जिससे वे बदमाशों और चोरों को पकड़ कर जेल में बंद कर देते हैं।'

अन्नू– ' कुल्फी वाला अपने ठेले में मटके रखता है जिसे वह लाल कपड़े से बाँधे रखता है, और उसके अंदर खूब सारी कुल्फियाँ रखता है। वह दिन भर ठेले को घुमाता रहता है, कभी तो उसकी ब्रिकी अच्छी हो जाती है, कभी कम होती है, अब सभी बच्चे रोज–रोज तो कुल्फी खा नहीं सकते हैं, क्योंकि उनके पास पैसे कहाँ होते हैं।'

चंचल– ' हमारी गली में कुल्फी वाला शाम होने के बाद आता है उसने अपने ठेले में एक रस्सी में घंटी लगा रखी है जिसे वह बजाता है, उसकी घंटी की आवाज़ सुनकर मुझे कुल्फी खाने का मन कर जाता है।'

एकता बिवाल – ' है ना, पुलिस वाले बहुत रौबदार होते हैं, उनके कपड़े है, ना, मुझे बहुत अच्छे लगते हैं, उनकी गाड़ी में ना नीले रंग की बत्ती भी लगी होती है, मैं तो जब पुलिस वालों को देखती हूँ, तो घबरा जाती हूँ।'

इसी प्रकार अन्य बच्चों ने भी अपनी समझ के अनुसार बताया। चौकीदार के बारे में किसी बच्चे द्वारा नहीं बताया गया।

अवलोकन अभिलेखन : इस कार्य के दौरान सभी बच्चों ने अपने पूर्व के अनुभव एवं अवलोकन को जोड़ते अपने विचारों को बताने की पहल की। एक साथ निर्णय करने में सभी बच्चों ने पायल की बात को ध्यान से सुनकर उसमें हामी भरी। पायल किसी भी प्रकार के कार्य में समूह में लीडिंग रोल को बखूबी निभाती है।

उपसमूहों में कार्य : (कक्षा में नामांकित सभी बच्चों के साथ)

पुस्तक में से कहानी को पढ़कर समझने के लिए कक्षा – स्तर व कक्षा – स्तर से नीचे के स्तर के बच्चों के मिश्रित उपसमूह बनाकर मैंने कहानी को मिलकर पढ़ने और उसकी खास बातों को नोट करने को कहा। कुल पाँच उपसमूह बनाए गए। उपसमूह में कार्य के दौरान मेरे द्वारा अवलोकन का कार्य किया गया।

सभी समूहों के द्वारा पढ़ने का कार्य कर लेने के बाद समूह में प्रस्तुत करने का कार्य किया गया। जिसमें लगभग सभी समूहों के द्वारा पापा के बचपन में क्या–क्या बनने की इच्छाएँ हुआ करती थीं, उसको चिह्नित किया गया। कहानी के बारे में उनके अपने विचार रहे। सभी ने कहा कि उनको कहानी को पढ़ना अच्छा लगा। बारी –बारी से पैराग्राफ बाँटकर सभी समूह के बच्चों को पढ़वाया।

निशा ने बताया कि उनके समूह में थोड़ा तालमेल कम रहा। पूजा बार–बार खुद ही ज्यादा पढ़ने को ले रही थी।

अवलोकन –अभिलेख : उपसमूहों में कार्य के दौरान मनीषा पहले पढ़ने में संकोच कर रही थी, पायल उसे बार–बार पढ़ने के लिए प्रेरित कर रही थी। जहाँ जिस शब्द में वह अटक जाती वह उसे प्यार से समझाती व उसका उच्चारण बता देती। जिससे मैंने देखा कि थोड़ी ही देर में वह सहज होकर पढ़ने का प्रयास करने लगी।

विरेन्द्र के द्वारा पढ़ने के दौरान अटकने में निशा चिढ़ जाती और जोर से कहती तुझे समझ में नहीं आता क्या कितनी बार बताएं ? इस पर मीनू समझाने लगती कि देख, पायल कैसे समझा रही है कोई बात नहीं, अब ठीक से पढ़ लेगा।

सभी समूहों में बच्चों का एक–दूसरे को सहयोग करना, स्वयं सुधार करने की पहल करना रहा।

जिन बच्चों को दिक्कत आ रही थी उनको सहयोग मिलने से और दूसरों को देखकर पढ़ने के प्रति रुचि बन रही थी और वे अपना पूरा प्रयास भी कर रहे थे।

पूजा व सोना अपने समूह में किताब को ध्यान से पढ़ते हुए खास बातों को चिह्नित करते जा रहे थे।

अन्नू और मीनू तल्लीनता के साथ पढ़ रहे थे।

खासियत की खोज (व्यक्तिगत कार्य)

बच्चों को मेरे द्वारा कहा गया कि– 'अब सभी बच्चे अपने–अपने खास दोस्त या सहेली का नाम लिखकर उसकी एक या दो खास बातें कागज पर लिख दें।' सभी को एक छोटा सा कागज का टुकड़ा दिया गया। कार्य करते समय सभी बच्चे सोचने लगे कि वह किस के बारे में लिखें? कुछ मुझसे पूछने लगे कि वे किस

के बारे में लिखें, कुछ आपस में एक–दूसरे से कह रहे थे कि हम दोनों आपस में एक–दूसरे के बारे में लिख लेते हैं। इस समय थोड़ी देर कक्षा में चहल–कदमी हुई।

सभी द्वारा लिख लेने के बाद कागज मुझे दे दिया गया, इस कार्य को करने में लगभग 15 से 20 मिनट लगे।

करन ने अरुण के लिए लिखा– यह किसी को मारता नहीं है।

मीनू ने एकता बिवाल के बारे में लिखा कि – वह उससे खूब मजाक करती है।

किशन ने अरुण के बारे में लिखा कि – जब वह हँसता है तो बहुत प्यारा लगता है, वह चुपचाप रहता है।

सोना ने पायल के बारे में लिखा कि – वह सबको बहुत अच्छी तरह से समझाती है और हर चीज़ याद रखती है। **अन्नू** के बारे में लिखा कि – अन्नू अपने दोस्तों को कभी नाराज़ नहीं करती है।

नेहा ने पूजा के बारे में लिखा कि – पूजा किसी से बात नहीं करती है।

पायल ने निशा के बारे में लिखा कि – निशा कभी भी मेरे बारे में बुराई नहीं करती है। **निशा ने पायल** के बारे में लिखा कि – पायल पढ़ाई में ज्यादा ध्यान देती है।

अन्य सभी बच्चों ने भी अपने दोस्तों के बारे में खास बातों को लिखा।

अवलोकन अभिलेख : चंचल और एकता टोपिया ने अपने दोस्तो की खास बात को लिखने की बजाए वह क्या बनना चाहते हैं, को लिखा। ये दोनों प्रश्न को ठीक से नहीं समझ पाए।

मंजू को अभी स्वयं लिखने में परेशानी है, उसे स्वयं वाक्य सृजन करने पर ही ज्यादा कार्य करवाने की आवश्यकता है, साथ ही मात्रा आदि की पहचान करवाना भी आवश्यक है।

विरेन्द्र, नेहा बुनकर और मनीषा को भी लेखन कार्य में मात्राओं की स्पष्टता व वाक्य सृजन पर कार्य करवाने की आवश्यकता है।

उपसमूह 1 व **उपसमूह 2** के साथ पृथक–पृथक रूप से कार्य करवाने के लिए मेरे द्वारा बच्चों को दो समूह में बाँटा गया। चूंकि इस कक्षा में चार बच्चे ही ऐसे हैं, जिनको मात्रा से संबंधित अवधारणा एवं प्रयोग से कार्य प्रारंभ करने की आवश्यकता है, अतः इन चार बच्चों को मैंने अपने साथ जोड़ा और अन्य बच्चों को पुस्तक से कहानी को व्यक्तिगत रूप से पढ़ते हुए उसके अभ्यास 'पढ़ो, समझो और लिखो' के प्रश्न संख्या 4 से 9 को करने के लिए कहा। इस कार्य को करने से पहले मेरे द्वारा दो–दो बच्चों को साथ मिलकर प्रत्येक प्रश्न पर बातचीत करने को कहा गया, उसके बाद एक–दूसरे से बिना पूछे अपनी–अपनी कॉपी में इस कार्य को करने के लिए कहा गया था।

समूह की कार्य की स्थिति के बारे में ; *"इस समूह के साथ इस तरीके कार्य करवाने का अनुभव मेरा लगभग पाँच– छः माह का रहा है। समूह में कार्य करने की परम्परा, दिए गए कार्य को बिना किसी व्यवधान के निर्देशानुसार स्व संचालित होकर करने की खूबी इन सभी बच्चों में बनी है, लगातार प्रयास एवं जिम्मेदारी को देते रहने से बच्चों में निश्चित रूप से परिवर्तन आता है, यह मैं इन बच्चों के साथ जुड़े रहने से सीख पाई हूँ।"*

उपसमूह 2

गतिविधि 1 : ध्वनि और लिपि चिह्न की पहचान

मेरे द्वारा पूर्व में बच्चों के साथ **आ** की मात्रा को बनने की प्रक्रिया पर कार्य करवाया गया । जिसके लिए मैंने बच्चों को बोर्ड पर समझाया, जिसमें आवाज़ को सुनकर पहचानना और बताना कि कैसी आवाज़ आ रही है। आवाज़ को पहचानकर बता पाने की स्वतंत्रता बच्चों को दी गई, जिससे कि उन्हें आवाज़ को रटना न पड़े क्योंकि मेरा मानना है कि अगर शिक्षक ही यह कार्य कर देगा तो बच्चों को स्वयं सोचने और बताने

का मौका कहाँ मिलेगा, उसे खोजकर बताने में जो आनन्द आना चाहिए उसे हम शिक्षकों को नहीं छीनना चाहिए। बहुत सारे शब्दों के माध्यम से आवाज़ों को पहचानने का कार्य हुआ। पहले तो बच्चे स्वयं बताने में हिचक रहे थे लेकिन जैसे ही उन्हें अपने द्वारा बताने पर विश्वास हुआ तो चारों बच्चे ही बड़े आत्मविश्वास के साथ आवाज़ों को पहचानकर बताने लगे।

गतिविधि 2 : मात्रायुक्त वर्ण को पहचानना और लिखना

मौखिक कार्य करने के बाद एक कार्यपत्रक देकर उस पर कार्य करवाया गया। जिसे बाद में चैक करने के बाद बच्चों के पोर्टफोलियो में लगवाया गया। इसी प्रकार से अन्य और वर्णों के साथ आ की मात्रा को लगाकर पढ़ने और लिखने का कार्य बच्चों को घर पर भी करने को कहा गया।

अवलोकन अभिलेखन : दोनों ही गतिविधियों को करने में चारों बच्चों की रुचि बनी रही। मैंने पाया कि जब वे कार्य पत्रक पर कार्य कर रहे थे तो मुझे उन्हें समझाने में वक़्त नहीं लगा। बड़ी तल्लीनता के साथ कार्य को उनके द्वारा किया गया। मंजू बहुत खुश थी उसके चेहरे की मुस्कुराहट से बयाँ हो रहा था कि आज वह जो भी बता रही है वह सही हो रहा है। इससे उसका आतमविश्वास बढ़ा।

चैकलिस्ट में दिए गए सूचकों को भी इस दौरान भरा गया– (उदाहरण)

आकलन सूचक	मंजू	विरेन्द्र	नेहा	मनीषा
पठन कौशल : मात्राओं की ध्वनि एवं चिह्नों को समझते हुए पढ़ पाना।	ए	ए	ए	ए
लेखन कौशल :सीखे गए वर्णों से नवीन शब्द बना पाना। (मात्रा का प्रयोग करते हुए)	ए	ए	ए	ए

गतिविधि 3 : आ की मात्रा का दोहरान एवं ई की मात्रा को पहचान पाना।

इस कार्य को करवाने के लिए मेरे द्वारा मनीषा और मंजू तथा विरेन्द्र और नेहा का जोड़ा बनाया गया। उनको कार्डों पर बने चित्र के माध्यम से शब्द को पढ़ने के लिए दिया गया, और यह कार्य लगभग 15 मिनट तक चला (जिसके लिए लगभग 20–25 कार्ड बनाए गए थे।) दोनों जोड़ों के मध्य आधे–आधे कार्ड दिए थे, जिन्हें पढ़ने के बाद एक–दूसरे से बदलने का निर्देश पूर्व में ही दे दिया गया था।

कुछ कार्ड के नमूने नीचे दिए गए हैं –

छतरी

मटका

मछली

माला

गतिविधि 4 : बिना चित्र के मात्रायुक्त शब्दों को पढ़ व लिख पाना।

इसी क्रम में बिना चित्र के मात्रायुक्त कार्डस् के ज़रिए पढ़ने का कार्य व्यक्तिगत रूप से करवाया गया। पहले बच्चों द्वारा स्वयं पढ़ा गया और बाद में मेरे द्वारा कार्ड दिखाकर प्रत्येक से पढ़वाया गया। जैसे –

छतरी	मटका	मछली	माला
काला	जाला	रीबन	कमीज

सीखने–सिखाने के दौरान आकलन :

1. मनीषा ने चित्र के द्वारा बिना अटके हुए पढ़ा। लेकिन बिना चित्र के द्वारा पढ़ने में उसे थोड़ा दिमाग पर ज्यादा जोर लगाना पड़ा।
2. विरेन्द्र ने आ की मात्रा वाले सभी शब्दों को सही व बिना अटके हुए पढ़ा। ई की मात्रा में थोड़ा बहुत अटका।
3. नेहा ने दोनों मात्राओं के शब्दों को सहजता से पढ़ा।
4. मंजू ने आ की मात्रा वाले शब्दों को सही पढ़ा ई की मात्रा वाले शब्दों में कहीं–कहीं थोड़ा ज्यादा समय लगाया।

गतिविधि 5 : ए की मात्रा से संबंधित कार्य

उपर्युक्त प्रक्रिया के द्वारा ए की मात्रा पर कार्य करवाते हुए कार्यपत्रक पर कार्य करवाया गया। जिसमें पहले कार्यपत्रक पर दिए गए चित्र पर बातचीत की गई और उसके बाद उस पर बच्चों से स्वयं बिना किसी की मदद से कार्य करवाया गया।

बातचीत के दौरान विरेन्द्र ने चित्र देखते ही अपनी प्रतिक्रिया दी – अरे दीदी ! इसकी आँखें कहाँ गई ? क्या आँख हमको बनानी हैं। मनीषा ने कहा कि– इसके तो नाक और मुँह भी नहीं हैं।

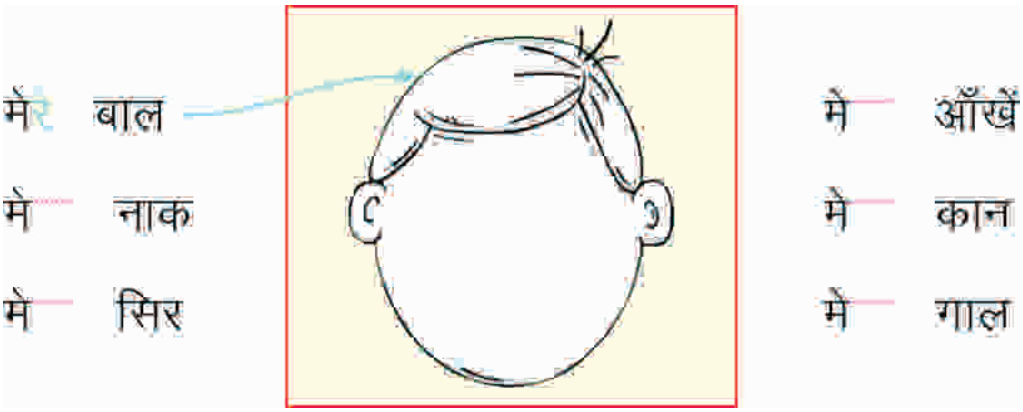

नोट : इस प्रकार इस समूह को विशेष रूप से आ, ई व ए की मात्राओं पर अलग से कार्य करवाया गया। जिससे इनके कार्य में सुधार आया। बीच–बीच में पाठ में आए ऐसे शब्दों को छाँटने उन्हें लिखने और पढ़ने का कार्य भी किया गया। ऐसा करने से ये बच्चे पाठ से लगातार जुड़े रहे, क्योंकि सामूहिक एवं उपसमूहों में पाठ से संबंधित की जाने वाली गतिविधियों में इनको हमेशा जोड़े रखा गया।

आपने देखा कि पापा जब बच्चे थे, कहानी को किस प्रकार से प्रस्तुत किया गया, बच्चों के अपने स्वयं के अनुभवों से जोड़ते हुए, स्वयं पढ़कर उपसमूह में समझना, अपनी समझ को प्रस्तुत करना, दूसरे की प्रस्तुति को सुनना, उसपर अपनी प्रतिक्रिया देना आदि। इससे बच्चों का सीखने के प्रति जुड़ाव और रुझान की स्थिति बनी।

हर पल बच्चों की गतिविधियों का बारीकी से अवलोकन करना, उनके जवाबों , भावों से पता करना कि उनके दिमाग में क्या चल रहा है, सबकी बराबर की भागीदारी को सुनिश्चित करना, उनकी अपनी आवश्यकता के अनुसार कार्य करवाना जिससे कि जो बच्चे कक्षा स्तर से पीछे हैं, उनके साथ भी कार्य करते हुए स्तर पर लाने का प्रयास उसी कक्षा में रहते हुए किया जा सके।

बच्चों की प्रत्येक गतिविधि के अवलोकन को टिप्पणी के रूप में दर्ज़ किया जाता रहा इससे बच्चों के भाषायी कौशलों और आपस में कार्य करने की स्थिति एवं संलग्नता आदि के बारे में बहुत–सी बातें पता कर ली गईं।

शिक्षण–आकलन योजना

कक्षा– 1

पाठ/इकाई : चक चक चैया , अवधारणा/थीम : .....

सम्पूर्ण कक्षा समूह के लिए अधिगम उद्देश्य : 1. पहल और आत्मविश्वास के साथ अपनी बात समूह में रख पाना। 2. सुनी हुई कविता का हाव.भाव के साथ गायन कर पाना एवं कविता सुनकर एवं गाकर आनंद की अनुभूति कर पाना। 3. परिवेश में उपलब्ध चित्रों को पढने एवं उन पर बातचीत करने हेतु उत्सुक हो पाना। 4. शब्द को चित्र के साथ एवं बिना चित्र की सहायता से पढ़ एवं पहचान पाना। 5. शब्दों को सुनकर उनकी प्रथम ध्वनि को पहचान पाना एवं बोल पाना, मोटर शब्द में प्रयुक्त तीनों वर्णों की ध्वनि एवं चिह्न की पहचान कर पाना एवं मो/ट/र वर्णों से युक्त शब्दो को पढ़ पाना। अनुकरण से वर्ण एवं शब्द का लेखन कर पाना। 6. रुचि के साथ अधूरा चित्र पूरा कर पाना।

शिक्षण योजना (1. सामूहिक कार्य 2. उपसमूहों में कार्य 3. व्यक्तिगत कार्य की योजना)	सतत आकलन योजना
1. सामूहिक कार्य – गतिविधि : **समूह में बातचीत** – बच्चों के साथ अनौपचारिक बातचीत के (साथ आज आप लोग विद्यालय कैसे आए , किसमें बैठकर)? साथ चक–चक चैया कविता पर कार्य प्रारंभ करना। सभी बच्चों की बात को सुना जाएगा जिससे कि सभी को मौका मिल सके। **गतिविधि : कविता सुनना–सुनाना और पढ़ना** – शिक्षक द्वारा कविता चक–चक चैया का उचित उतार–चढाव एवं अभिनय के द्वारा बच्चों को गवाया जाएगा। एक से अधिक बार गायन किया जाएगा।	• बच्चों से संवाद करते हुए उनका अवलोकन दर्ज़ करना। • पठन एवं चर्चा के दौरान

गतिविधि : बच्चों को भी मौका देते हुए अन्य और कविता भी गाने को कहा जाएगा, जो उन्हें आती हो।

गतिविधि : पुस्तक में लिखी कविता को अँगुली लगाकर पढ़वाना।

गतिविधि : कविता पर बातचीत – कविता गायन एवं पठन के बाद कविता से सम्बन्धित बातचीत करना जिससे कि बच्चों को कविता को समझने में मदद मिल सके।

गतिविधि : परिचित चित्रों की पहचान और मिलान – बच्चों से यातायात के साधनों के दिये गये चित्रों के बारे में बातचीत करना कि उन्होनें इन में से किस–किस वाहन की सवारी की है और उन्हें कैसा लगा ?

पुस्तक में दिए अभ्यास में जिन वाहनों की सवारी की है उन्हें लाइन खींचकर मिलाने में बच्चों की मदद करना।

गतिविधि : मोटर शब्द को चित्र के साथ पढ़वाना। बिना चित्र के मोटर शब्द को पहचान कर पढ़ने को कहा जाएगा।

– सभी बच्चों को घेरे में बिठाकर उनके बीच में 'मोटर' एवं अन्य शब्द लिखे कार्ड्स रखकर एक–एक कर **मोटर** शब्द का कार्ड छाँटने को कहना।

– अलग–अलग अक्षरों के कार्डस् समूह में रखना और **मोटर** शब्द बनाने को कहना।

गतिविधि : खेल–खेल में पहचान

बच्चों को एक सीधी लाईन में खड़े होने को कहा जाएगा और ज़मीन पर छोटे–छोटे घेरे बनाकर उनके बीच में ऐसे शब्दों को लिखा जाएगा जिनमें मो प्रारंभ में आता हो जैसे – मोर, मोटा, मोटर, मोल, मोपेट.....। और एक–एक बच्चे से मोटर शब्द पर कूदने को कहा जाएगा।

गतिविधि : मो/ट/र अक्षरों की पहचान

– बच्चों से **मो/ट/र** शब्द का उच्चारण करवाना।

– मोटर शब्द में सबसे पहले बोली जा रही आवाज़ पर बच्चों का ध्यान केन्द्रित करवाना और उस आवाज को सुनकर ठीक से पहचानते हुए बताने को कहना। यह कार्य लगभग सभी बच्चों के साथ बारी–बारी से करवाया जाएगा।

– इसी प्रकार मोटर शब्द में से ही क्रमशः उसकी अन्तिम एवं मध्यम आवाज को भी सुनकर पहचानते हुए बताने को कहा जाएगा। (उच्चारण के साथ आवाज और आकार को पहचानने का कार्य बदलते क्रम में अलग–अलग समय में करवाया जाण्गा जिससे कि बच्चे उनको पहचान पाएं।)

व्यक्तिगत कार्य – कार्यपत्रक पर कार्य :

– बच्चों को शब्द लिखे कार्यपत्रक में से सही लिखे मोटर शब्द पर मोटर शब्द पर घेरा लगाने को देना।

– दोहरी आकृति में लिखे मोटर शब्द पर रंग भरने को देना।

उपलब्ध चैकलिस्ट में भी बच्चों की स्थिति को दर्ज़ करना।

- खेल के दौरान बच्चों की भागीदारी, सहयोग, निर्देश समझने आदि से सम्बन्धित स्थितियों को नोट किया जाएगा।
- बच्चों द्वारा कार्ड से शब्द बनाने की प्रक्रिया का अवलोकन करते हुए टिप्पणी का लेखन करना।
- बच्चों के कार्यपत्रक की जाँच करके टिप्पणी लिखना।

– डॉटेड से लिखे मोटर शब्दों पर पेंसिल फेरकर पूरा करने को देना और चित्र बनाने को कहना। – मोटर के चित्र के साथ विभिन्न शब्दों को लिखकर देना और चित्र के साथ सही शब्द को मिलाने एवं चित्र में रंग भरने को देना। **गतिविधि : मो/ट/र अक्षरों की पहचान कर मिलान करवाना।** – बच्चों से **मो/ट/र** शब्द के अक्षरों को विभिन्न शब्दों में से छाँटकर घेरा लगवाना। यह कार्य बोर्ड पर करवाना और अलग–अलग बच्चों से अलग–अलग वर्ण बोलकर घेरा लगाने को कहना। जैसे– मटर में से – ट का उच्चारण करके उस पर घेरा लगवाना।.....आदि। – **डिब्बा पास खेल** द्वारा **वर्ण** को पहचानाकर बोलना।(एक डिब्बे में बहुत सी मो/ट/ र वर्ण की पर्चियाँ एवं मोटर शब्द की पर्चियाँ डालकर बच्चों को घेरे में बिठाकर ताली बजाते हुए एक–एक के पास डिब्बे को पास किया जाएगा और जैसे ही किसी बच्चे के पास ताली बन्द होगी उसे उस डिब्बे में से एक पर्ची निकालकर उसे पहचाने और बोलकर बताने को कहना ऐसे यह खल जारी रहेगा, जब तक कि सभी बच्चों की बारी नहीं आ जाएगी।) **इसके अतिरिक्त आवश्यकतानुसार बीच–बीच में पुस्तिका में दिए अभ्यास कार्यों को भी करवाया जाएगा।**	• पुस्तक में किए गए कार्य की जाँच करना और उसमें टिप्पणी लिखना।

बच्चों के सीखने की प्रक्रिया एवं उपलब्धि के सन्दर्भ में **दिनांक :** .....

1. **कार्य के दौरान बच्चों की सहभागिता की स्थिति के बारे में :–** कार्य के दौरान लगभग सभी बच्चों की प्रत्येक कार्य में सहभागिता रही। सभी ने कविता गायन व अभिनय में आनन्द लिया। बातचीत में अधिकांश का उत्साह दिखाई दिया। अपने अनुभव एवं विचारों को समूह में रखा। चित्र को देखकर खुश हुए।
2. **बच्चों को आ रही कठिनाई के बारे में :–** मोनू एवं रिंकी को शब्दों के उच्चारण एवं वर्ण ध्वनि से सह–सम्बन्ध बनाने में कठिनाई महसूस हुई। सलमान परिचित शब्दों को अभी नहीं पढ़ पा रहा है।
3. **बच्चों के अधिगम उपलब्धि के बारे में :–** 1. वर्ण पहचान के कार्य में बच्चों ने स्वयं ही वर्ण की आवाज़ को बताया जो आश्चर्यजनक रहा। इन सभी ने पहली बार वर्ण पर कार्य किया। 2. खेल के दौरान एक–दूसरे का सहयोग करना एवं शब्द पहचान में मदद करना रहा।

योजना का कक्षा–कक्ष में क्रियान्वयन नमूना :

कक्षा – कक्षीय प्रक्रिया

गतिविधि 1 : समूह में बातचीत

शिक्षक ने कक्षा में प्रतिदिन की भाँति जाते ही बच्चों के साथ बातचीत शुरु की। बातों ही बातों में उन्होंने बच्चों से पूछना प्रारम्भ किया कि आप आज विद्यालय कैसे आए ?

बच्चों ने अपने–अपने बारे में बताना शुरु किया। (हम पैदल आए हैं। साइकिल से आए हैं। पापा की मोटर साइकिल से आए हैं। दादा जी ने ट्रैक्टर से छोड़ा..... आदि।

कीर्ति – मेरे पापा के पास तो कार है, परन्तु मैं कार से नहीं आती हूँ।

शिक्षक – क्यों नहीं आती हो ?

कीर्ति – मेरा घर तो पास में ही है। (तभी रीतेश बोला मैं तो साइकिल से आया।)

मोहित – साइकिल पर किसके साथ आए ?

रीतेश – मैं मेरे बड़े भैया के साथ आया।

नेहा – मैं तो अपनी छोटी साइकिल से आई हूँ।

मोहित – मेरी मम्मी कहती है साइकिल धीरे–धीरे संभल कर चलाना चाहिए।

रीतेश – वरना तुम गिर जाओगी।

मोनू – आज तो मैं मोटर साइकिल से आया हूँ।

पुष्पा – तुम्हारा घर तो पास ही है तुम मोटर साइकिल से कैसे आए ?

मोनू – मैं अपने मामा के घर से आया हूँ।

तान्या – तुम्हें मोटर साइकिल से आना कैसा लगा ?

सीखने–सिखाने के दौरान आकलन– 1

इस गतिविधि के दौरान शिक्षक ने अपनी डायरी में नोट किया–

- रीतेश, कीर्ति, मोहित, नेहा, मोनू ने उत्साह के साथ बाचतीत में भाग लिया।
- मोहित की बात से लग रहा था कि वह अपने साथियों के प्रति संवेदनशील है।
- रीतेश का अपने भाई से लगाव है।
- मोनू यह जानता है, कि दूरी से आने के लिए हमें यातायात के किन साधनों का उपयोग करना चाहिए।
- आदित्य बातचीत के दौरान कंकड़ से खेल रहा था।
- तान्या को यह जानने की जिज्ञासा थी कि मोटर साइकिल पर बैठना कैसा लगा?

विशेष : *इस प्रकार शिक्षक ने कक्षा में बच्चों से बातचीत करते हुए सहज वातावरण बनाया। उन्होंने बच्चों को बोलने का अवसर दिया। उनके मन की बात को जानने का प्रयास किया। उन्हें अपने घर की बोली में बोलने का अवसर उपलब्ध कराया ताकि बच्चे बिना किसी संकोच के सीखने की प्रक्रिया में शामिल हो सकें।*

गतिविधि 2 – कविता सुनाना–सुनना और पढ़ना

शिक्षक ने **"चक–चक चैया"** कविता को उचित सुर, लय, ताल के साथ अभिनय करते हुए सुनाई और बच्चों से कविता की प्रत्येक पंक्ति को अभिनय के साथ पुनः दोहराने को कहा। इस कार्य को शिक्षक द्वारा दो बार किया गया।

इस दौरान शिक्षक ने देखा कि सभी बच्चे आनन्द के साथ कविता की पंक्तियों को दोहरा रहे थे कुछ बच्चे बीच–बीच में पंक्तियों को छोड़ते हुए गा रहे थे। अनुकरण से अभिनय भी कर रहे थे।

कविता गायन के बाद शिक्षक ने कहा – ''अब सब अपनी किताब खोलो और हम मिलकर कविता को पढ़ेंगे। पहले मैं कविता की एक–एक पंक्ति पढ़ूँगा आप मेरे साथ अँगुली रखकर दोहरान करना।

सीखने–सिखाने के दौरान आकलन–2

कीर्ति, मोहित, मोनू, तान्या स्पष्ट उच्चारण के साथ कविता की पंक्तियों को दोहरा रहे थे। रीतेश, नेहा एवं आदित्य बीच–बीच में शब्द छोड़कर पंक्तियाँ दोहरा रहे थे। रेखा ने मोटर शब्द की ओर संकेत करते हुए शिक्षक से पूछा यह लाल रंग में क्यों लिखा है ? सलमान कविता पठन के दौरान चुप बैठा था।

कार्य के दौरान ही शिक्षक द्वारा चैकलिस्ट में भी बच्चों की स्थिति को दर्ज़ किया गया –

1	2	3	4	5	6	7	8	9
कीर्ति	रीतेश	मोहित	नेहा	मोनू	आदित्य	तान्या	सलमान	रेखा
सुनना–सुनाना बोलना : 1.1 स्तर के अनुरुप सुनी गई सरल छोटी कविता को स्पष्ट शब्दों में दोहरा पाना।								
A	B	A	B	A	B	A	-	A
1.2 स्तरानुसार सुनी हुई कविता को सुर और लय के साथ सामूहिक रुप से सुना पाना।								
A	B	A	B	A	B	A	-	A

गतिविधि 3 : कविता पर बातचीत

कविता सुनने, दोहराने और पढ़ने के बाद शिक्षक के द्वारा कविता पर बातचीत की गई ताकि बच्चों को कविता समझने में मदद मिल सके। बातचीत के दौरान निम्न बिन्दुओं को शिक्षक ने पूर्व से ही योजना में लिखा हुआ था। (पुस्तक में दिए गए यातायात के साधनों का चार्ट दिखाकर शिक्षक ने बातचीत की।)

1. अब तक आप इनमें से किन–किन साधनों में बैठे हो ?
2. उन चीज़ों के नाम बताओ जिनमें पहिया होता है ?
3. सोचो अगर पहिया नहीं होता तो क्या होता ?
4. बारिश में आप क्या–क्या करते हो ?

सीखने–सिखाने के दौरान आकलन – 3 : शिक्षक की डायरी से (अवलोकन –अभिलेख)

- बातचीत में सभी बच्चे उत्साह से भाग ले रहे थे। ज्यादातर सभी को वाहनों की समझ है।
- कीर्ति ने कहा यदि पहिया नहीं होगा तो ट्रेक्टर कैसे चलेंगे?
- तान्या ने कहा मैं खेत पर कैसे जाऊँगी?
- मोनू ने कहा फिर तो साइकिल, बस, मोटर कुछ भी नहीं चल सकेंगे।
- नेहा ने कहा फिर मेरी साइकिल कैसे चलेगी ?
- तभी तो ! पहिया बहुत जरूरी है। आदित्य बैठा हुआ बोला अरे, नाव में तो पहिए की जरूरत ही नहीं होती।

सलमान – नाव कैसे चलती होगी ?
रीतेश – मैंने देखा है नाव तो आदमी डण्डे से चलाता है।
मोहित को छोड़कर सभी बच्चे विचार कर रहे थे।

गतिविधि 4 – परिचित चित्रों की पहचान एवं मिलान – शिक्षक ने बच्चों को पुस्तक में दिए गए चित्रों को दिखाते हुए पूछा कि– इसमें किस–किस चीज़ के चित्र बने हैं ? सभी बच्चे एक साथ बताने लगे, फिर शिक्षक द्वारा कहा गया कि– ऐसे नहीं देखो, मैं बारी–बारी से सभी से पूछूँगी। फिर सभी द्वारा बारी–बारी से इस कार्य का सहजता के साथ किया। इसके बाद अपनी–अपनी पुस्तक के अभ्यास कार्य को किया।

गतिविधि 5 – मोटर शब्द की पहचान

चरण – 1 शिक्षक द्वारा रुनझुन में से पृष्ठ 3 पर दिया गया चित्र एवं शब्द दिखाया गया और पूछा कि यह किसका चित्र है ? बच्चों ने चित्र को देखते ही कहा – मोटर शिक्षक ने चित्र के साथ नाम भी पढ़कर बताया।

शिक्षक ने फ्लैश कार्ड्स के द्वारा अक्षरों को जोड़कर मो/ट/र =मोटर शब्द बनाने को कहा। कीर्ति ने अक्षरों को इस प्रकार से जोड़ा –

मो	ट	र

सलमान ने फ्लैश कार्ड के अक्षरों को इस प्रकार जमाया

मो	र	ट	

सलमान को शिक्षक ने मोटर लिखा शब्द कार्ड दिया और कहा अब इसे देखकर फिर से बनाओ। दो–तीन बार कार्डस में से अक्षरों को जोड़–जोड़कर सलमान ने अभ्यास किया।

सीखने के दौरान आकलन – 4

कीर्ति मोटर के अक्षरों को साथ लगाकर ताली बजाने लगी। कीर्ति को ताली बजाते देख आदित्य, तान्या, मोनू भी मोटर शब्द के फ्लैश कार्ड जोड़ने का प्रयास करने लगे। सलमान को थोड़ी अम्यास की आवश्यकता हुई।

चरण – 2 अगले दिन शिक्षक ने बच्चों को 'मोटर' शब्द लिखा हुआ एक कार्यपत्रक बनाकर दिया और कहा कि जो सही लिखा है उस पर गोले का निशान लगाओ और मोटर का चित्र बनाकर रंग भरो।

नाम :..... दिनांक :.....

मोअर	मोरट	मौटर	मोटर	मोरर	मोटट
मोटर	मोपट	मोटर	मोटल	मोटर	मोलट

इस काम को करवाने के बाद शिक्षक ने पूछा कि अच्छा बताओ कि इसमें कितने मोटर सही लिखे हुए थे। सभी बच्चों ने सलमान सहित ने कहा कि 'चार' । यह सुनकर और कार्यपत्रकों को देखकर मिलान किया गया तो सभी को इस शब्द की पहचान हो गई थी। अतः इसके बाद उनको लिखने का कार्य यानि कि डॉटेड लाइन में पेंसिल फेरने का कार्य करने को दिया गया।यह कार्य सभी बच्चों के द्वारा रुचि के साथ किया गया। उनके चेहरे की चमक बता रही थी उनको लिखना भी आने लगा है।

सलमान को शिक्षक के द्वारा दोहरी आकृति वाला कार्यपत्रक दिया गया, जिसमें उसने रंग भरने का कार्य किया।

....

सीखने के दौरान आकलन एवं अनुभव – 5

मोटर शब्द की पहचान उसके नाम को आवाज के साथ मिला पाना उसे पहचान कर अलग कर पाने के कार्य में आज सभी बच्चों का कार्य सराहनीय रहा। सलमान के द्वारा कल किए कार्य की सफलता मुझे आज नज़र आई। चित्र बनाने में भी सभी बच्चों की रुचि रही। मोनू और तान्या को छोड़कर सभी बच्चों ने अपनी कल्पना के अनुसार मोटर का चित्र बनाने का प्रयास किया जबकि इन दोनों बच्चों ने पुस्तक में दिए चित्र की तरह ही बनाने का प्रयास किया। लेखन के कार्य में बच्चों की रुचि ज्यादा दिखाई दी लगभग सभी बच्चों के द्वारा शब्दों में पेंसिल को बहुत ही सावधानी से फेरा।

गतिविधि 6 – सुनें और बोलें

मैंने सभी बच्चों को सामूहिक रूप से बिठाकर **'मोटर'** शब्द में आने वाली आवाजों को ध्यान से सुनने को कहा। एक बार सुनाने के बाद पुनः बच्चों से कहा कि अब आप फिर से आवाज को ध्यान से सुनना और खुद बोलकर भी अपनी आवाज को ध्यान से सुनना। मैं फिर आपसे पूछुँगी कि कब कौन–सी आवाज आ रही थी ? इस बार सभी बच्चे खामोश हो मेरी आवाज को सुनने का प्रयास करने लगे। मेरे कहने पर स्वयं बोलते हुए अपनी–अपनी आवाज़ को सुनने लगे। सभी के एक–दो बार प्रयास कर लेने के बाद मैंने उनसे पूछा कि अब बताओ मोटर में सबसे पहली आवाज़ क्या आई ? सभी बच्चे समवेत स्वर में बोल उठे – **मो**..... .... पुनः मैंने मोटर मे सबसे आखिर में कैसे आवाज आई पूछा तो कुछ बच्चे ही बोल पाए – **र**.....। आज

तीन–चार बार बच्चों के साथ मोटर शब्द की पहली और अन्तिम ध्यनि को बोलने और पहचानने का कार्य किया। साथ ही फ्लैश कार्ड में से मेरे द्वारा बच्चों से कभी र तो कभी मो वाला वर्ण कार्ड भी माँगा गया, जिससे कि मैं स्पष्ट हो पाऊँ कि किस–किस को आवाज के साथ–साथ इन वर्णाकृतियों की भी पहचान हो पाई है?

इस कार्य के दौरान कीर्ति ने पूछा कि दीदी! बीच वाली आवाज़ को क्यों नहीं पूछ रही हो? मुझे तो वह आवाज़ भी आ रही है। और स्वयं ही उसने बताया कि बीच की आवाज़ **ट** है। और हामी में मुझसे पूछा कि सही है न ! इस प्रकार आज की कक्षा में अक्षर पहचान पर कार्य हुआ सभी बच्चे कार्य के प्रति सतर्क दिखाई दिए।

गतिविधि 7 – और भी नाम

पूर्व दिवस में **मोटर** शब्द की पहली और अंतिम ध्वनि पर किए कार्य को एक बार दोहरान करने कार्य किया ये दोनों आवाज़ें सभी बच्चों को याद थीं। आज शब्द की मघ्य ध्वनि/आवाज़ के बारे में बात की और उसे ध्यान से सुनकर पहचानने को कहा तो लगभग सभी बच्चों ने **ट** की आवाज़ को स्पष्टता के साथ बोलने का प्रयास किया।

इसके बाद बच्चों से मो, र, ट की आवाज से और कौन–कौन से नाम हो सकते हैं सोचकर बताने को कहा गया। इस कार्य में भी सभी बच्चों का उत्साह देखने लायक था। सभी सोचने का कार्य अपने–अपने तरीके से कर रहे थे।

सीखने–सिखाने के दौरान आकलन – 6

गतिविधि के दौरान बच्चे शब्द को बोल–बोल कर उच्चारित कर रहे थे। घर, कक्षा–कक्ष, आसपास की वस्तुओं के नामों का उच्चारण करके देख रहे थे और यह जानने का प्रयास कर रहे थे कि मो, ट, र किन–किन शब्दों में आ रहा है।

कीर्ति, मोहित, सोहन, तान्या, रिंकी, मीना आदि ने काफी वस्तुओं के नाम बताए।

रीतेश, मोनू द्वारा ट, र ध्वनि वाले 2–3 शब्द ही बताए गए। त व ट के उच्चारण में अन्तर नहीं कर पा रहे थे।

नेहा खुद तो शब्द सोचकर बता ही रही थी साथ में अन्य बच्चों की भी मदद कर रही थी।

पुस्तक में दिए गए अभ्यास कार्यों के अतिरिक्त कुछ और कार्य पत्रकों पर भी इस दौरान कार्य करवाया गया।

कार्यपत्रक–1 **नाम : चाँदनी**

मोटर शब्द की पहचान कीजिए और घेरा लगाइए –

कार	(मोटर)		ऊँट
(मोटर)	चक	(मोटर)	मोल
रेल	मोर	बस	मोपेट

शिक्षक टिप्पणी – मोटर शब्द की पहचान है।

कार्यपत्रक–2 **नाम : रिंकी**

पहचानो और घेरा लगाओ –

मो पर

(मो)गर (मो)हन स(मो)सा (मो)रनी अन(मो)ल

ट पर

(ट)माटर फा(ट)क म(ट)का खा(ट)

र पर

(र)थ औ(र)त अखबा(र) (र)मजान

शिक्षक टिप्पणी – मो व र अक्षर की पक्की पहचान है। ट की पहचान पर पुनः कार्य की आवश्यकता है।

कार्यपत्रक –3

अक्षरों का मिलान कीजिए –

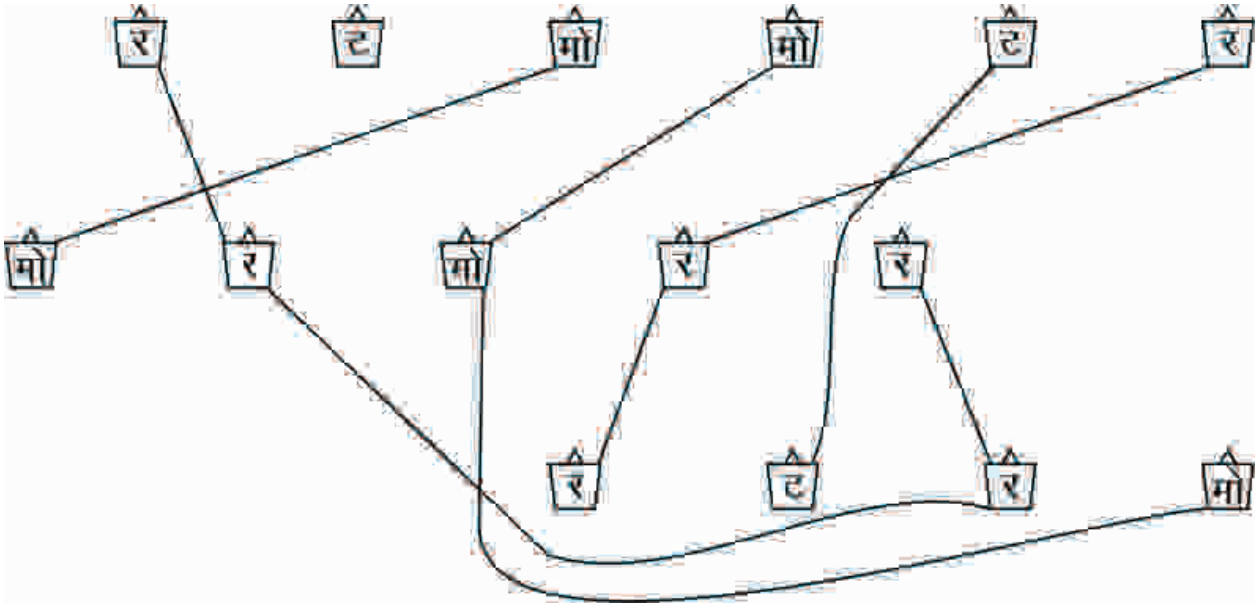

शिक्षक डायरी से : सीखने–सिखाने के दौरान आकलन– 7

- तान्या, आदित्य, पुष्पा द्वारा अक्षरों की पहचान कर मिलान किया गया।
- सलमान, मोनू, रीतेश द्वारा अक्षरों की पहचान में थोड़ा सी दोहरान कराया गया।
- नेहा को अक्षरों की पहचान करने की आवश्यकता है।
- तान्या द्वारा सभी अक्षरों को पहचान कर मिलान करने का अच्छा प्रयास किया।

अध्याय–6

विषय की प्रकृति एवं ज्ञान निर्माण प्रक्रिया : पर्यावरण अध्ययन

प्रस्तावना

मान लीजिए हम किसी विद्यालय की प्राथमिक कक्षा में हैं हम किस आधार पर कह सकते हैं कि वह कक्षा पर्यावरण अध्ययन की है या किसी अन्य विषय की है ?

क्या बच्चे कक्षा में निष्क्रिय बैठ कर शिक्षक द्वारा दी जा रही सूचनाओं को ग्रहण कर रहे हैं? और बच्चों से यह अपेक्षा की जा रही है कि वे ये सूचनाएँ याद रखें या याद कर लें।

आम तौर पर हमारे विद्यालयों में ऐसी कक्षाएँ बहुत कम देखने को मिलती हैं जिनमें बच्चों को अवलोकन करने, उन अवलोकनों को अपने अनुभव से जोड़ने, खोज एवं प्रयोग करने, जानकारी एकत्रित करने के लिए दूसरे लोगों से प्रश्न पूछने या सर्वे द्वारा एकत्रित जानकारियों को कक्षा–कक्ष में प्रस्तुत करने जैसी गतिविधियों में संलग्न किया जाता है।

क्या हम ऐसी कक्षाओं को सही मायने में पर्यावरण अध्ययन की कक्षा कह सकते हैं जिनमें बच्चे निष्क्रिय होकर ज्ञान ग्रहण करते हैं ?

पर्यावरण अध्ययन की कक्षा किस प्रकार की होनी चाहिए ? यह बात पर्यावरण अध्ययन शिक्षण के लिए निर्धारित उद्देश्य एवं पाठ्यक्रम पर निर्भर होगी। आइए, हम पर्यावरण अध्ययन शिक्षण के उद्देश्यों पर चर्चा करते हैं।

6.1 पर्यावरण अध्ययन शिक्षण के उद्देश्य

एनसीएफ–2005 के नीति निर्देशक सिद्धांतों में कहा गया है कि ज्ञान को विद्यालय के बाहरी जीवन से जोड़ना, पढ़ाई की रटन्त प्रणाली से मुक्ति, पाठ्यचर्या पाठ्यपुस्तक केन्द्रित न हो कर बच्चों को चहुँमुखी विकास के अवसर मुहैया करवाए, परीक्षा को लचीला बनाना और कक्षा की गतिविधियों से जोड़ना तथा एक ऐसी अधिभावी पहचान का विकास जिसमें प्रजातांत्रिक राज्य व्यवस्था के अन्तर्गत राष्ट्रीय चिंताएँ समाहित हों। एन.सी.एफ 2005 की इन्हीं भावनाओं को आत्मसात् करते हुए तथा इसके व्यापक फलक को समाहित करते हुए राजस्थान की प्राथमिक कक्षाओं के लिए पर्यावरण अध्ययन विषय का एक नया पाठ्यक्रम विकसित किया गया है।

पर्यावरण अध्ययन शिक्षण के मुख्य उद्देश्य –

- सृजनात्मक अभिव्यक्ति के अवसर मिलें।
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर प्रारम्भिक अभ्यास का अवसर मिलें।
- अवलोकन, वर्गीकरण,प्रयोग व निष्कर्ष निकालने के अवसर मिलें।

- ड़िजाईन,मापन व अनुमानीकरण के अवसर मिलें।
- व्यक्तिगत व स्थानीय अनुभवों के आधार पर यथार्थ का विश्लेषण करने का अवसर मिल सके।
- अपने आसपास की विविधता और जटिलता को बेहतर रूप से समझ कर सहजीवी विकास की आवश्यकता पर चिन्तन के अवसर मिल सकें।
- पर्यावरण की रक्षा के लिए जागरूक होने के अवसर मिल सकें।
- सामाजिक बदलावों एवं राष्ट्रीय सरोकारों पर चर्चा करते हुए समता के विभिन्न आयामों को समझने के अवसर मिल सकें।

स्रोतःपर्यावरण अध्ययन पाठ्यक्रम कक्षा 3–5,राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

उपरोक्त उद्देश्यों को यदि गौर से पढ़ें तो मालूम होता है कि इनकी पूर्ति हेतु हमें वर्तमान पाठ्यक्रम एवं शिक्षण पद्धति में काफी परिवर्तन लाने होंगे। बच्चे कैसे सीखते हैं व उन्हें किस प्रकार का माहौल देना है इनके बारे में पुनः चिंतन करने की आवश्यकता है।

6.2 ज्ञान निर्माण प्रक्रिया

ज्ञान की कल्पना संगठित अनुभवों के रूप में की जाती है, जो भाषा, विचार – श्रंखला के माध्यम से अर्थ बोध पैदा करती है, जिसके माध्यम से हमें अपने संसार को समझने में सहायता मिलती है। इसकी कल्पना गतिविधियों की श्रंखला, शारीरिक कुशलता के साथ विचार, विश्व के कार्यों में सहभागिता और चीज़ों की रचना करने के रूप में भी की जा सकती है।

NCF 2005

प्राथमिक कक्षाओं में आने वाला बच्चा अपने साथ कई ऐसे अनुभव एवं सवाल लेकर आता है जिसके आधार पर वह अपने ज्ञान को आगे बढ़ाता है। आस–पास की घटनाओं या वस्तुओं के बारे में बच्चे का अपना ज्ञान एवं सोच होती है, ये हमेशा वैज्ञानिक हो यह आवश्यक नहीं है। उदाहरण के तौर पर प्राथमिक कक्षा के एक शिक्षक के प्रश्न – जिन पेड़–पौधों को कोई पानी नहीं देता अन्हें पानी कहाँ से मिलता होगा ? इसके जवाब में बच्चों ने कहा – बारिश से पानी पीते हैं.....

बच्चे के संबंध में यह उसका ज्ञान है। अब इसी ज्ञान को आधार मानकर आगे के चरण पर बच्चा खोज एवं प्रयोग में संलग्न होता है तथा क्रियाओं के परिणाम के आधार वह अपनी पूर्व धारणाओं को बदलता है और वैज्ञानिक निष्कर्ष पर पहुँचता है। यह बात हम सब जानते हैं कि हम पूर्व में प्राप्त ज्ञान के आधार पर नये ज्ञान की रचना करते हैं। विचारों की रचना एवं पुनः रचना ज्ञान के विकास हेतु आवश्यक है।

पूर्व ज्ञान के आधार पर नए ज्ञान का निर्माण किस प्रकार होता है ? आइए एक उदाहरण देखते हैं।

- जमीन पर विविध प्रकार के जीव–जंतु और पेड़–पौधे हैं।
- खेती और अन्य दैनिक जरूरत जैसे खाना बनाने,नहाने,साफ–सफाई आदि के लिए हमें पानी की आवश्यसकता हैं।
- पानी हमें नल, तालाब, कुआँ, हैण्डपम्प,बरिश आदि से मिलता है।

ये सब बच्चे का पूर्व ज्ञान है। हम अपने आस पास चारों ओर देखें तो खेती का ज़मीन धीरे–धीरे कम होती जा रही है। गर्मियों में अक्सर पानी की किल्लत हो जाती है और कई स्थानों पर तो तीन या चार दिन में एक बार पानी आता है। इस प्रकार की बातें बच्चों के दैनिक अनुभव है। इस प्रकार के वास्तविक अनुभव के विश्लेषण और विमर्श में बच्चों को संलग्न किया जाना चाहिए। इसी प्रकार के कुछ ओर प्रश्नों को लेकर बच्चों के साथ बातचीत कर सकते हैं जैसे –

- खेती की ज़मीन को काटकर प्लॉट बनाने से या फैक्ट्रियाँ बनाने से कौन–कौन लोग प्रभावित हो सकते हैं ?
- खेती का खत्म होना हमें किस प्रकार से प्रभावित करता है ?
- कुछ लोगों के घर में पानी आता है, जबकि कुछ लोगों को पानी लेने के लिए बहुत दूर जाना पड़ता है ऐसा क्यों ?

इन समस्याओं के कारण क्या–क्या हैं, समाधान के क्या–क्या तरीके हो सकते हैं ? इस प्रकार के विचार बच्चे के मन में एक प्रश्न का संदर्भ बनाते हैं। ऐसे प्रश्न बच्चे को खोजबीन की कोशिश के लिए अवसर तैयार करते हैं। इस तरह अकेले या समूह में वे खोजबीन की प्रक्रिया में संलग्न हो सकते हैं।

उपरोक्त समस्या या इसी प्रकार के अन्य समस्या के संदर्भ में बच्चे कई स्रोतों से जानकारी एकत्रित करते हैं जैसे फील्ड– ट्रिप के ज़रिए सीधे–सीधे समस्या का अवलोकन करके, पाठ्यपुस्तक के माध्यम से, शिक्षक द्वारा दिए जा रहे पठन सामग्री एवं अन्य संदर्भ पुस्तकों, सीडी, चार्ट आदि। तत्पश्चात एकत्रित जानकारियों का वे विश्लेषण करते हैं। इस प्रकार की परिस्थिति जन्य समस्या से उत्पन्न स्थितियों को समझ कर ज्ञान की मौजूदा स्थिति से तुलना करके देखते हैं, स्थिति की आलोचना करते हैं, इसके बारे में अपना एक रुख अपनाते हैं और समस्या के समाधान के लिए विचार एवं सुझाव रखते हैं। इन प्रक्रियाओं के माध्यम से बच्चे ज्ञान को निर्मित करते हैं एवं अपने पूर्व ज्ञान को पुनरावलोकित करते हैं।

ऊपर बताई बातों को हम संक्षिप्त में देखें तो ये निम्न प्रकार हैं –

- सभी बच्चों में सीखने की क्षमता होती है और वे स्वाभाविक रूप से सीखने के लिए प्रेरित रहते हैं।
- अर्थ निकालना, अमूर्त सोच की क्षमता विकसित करना, विवेचना करना और कार्य (Work) करना सीखने की प्रक्रिया के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पहलू हैं।
- बच्चे विभिन्न तरीकों से सीखते हैं जैसे अनुभव के माध्यम से, वस्तुओं को बनाने से या स्वयं करने से, प्रयोग करने से, पढ़ने से, विमर्श करने से, पूछने से, उस पर सोचने व मनन करने से तथा लिखकर अभिव्यक्त करने से। ये क्रियाएँ उनके विकास के लिए आवश्यक हैं जो वे स्वयं तथा दूसरों के साथ मिलकर संपन्न कर सकते हैं।
- सीखने की प्रक्रिया स्कूल से बाहर व भीतर दोनों जगह चलती है। इन दोनों के मध्य संबंध रहे तो सीखने की प्रक्रिया पुष्ट होती है।
- ज्ञान निर्माण प्रक्रिया का एक सामाजिक पहलू यह भी है कि जटिल कार्य के लिए आवश्यक ज्ञान समूह परिस्थितियों में निहित होता है। इस संदर्भ में सहयोगी शिक्षण के लिए पर्याप्त जगह दी जानी चाहिए।
- आस–पास के वातावरण, प्रकृति, चीज़ों व लोगों से क्रिया व संवाद दोनों के माध्यम से परस्पर विचार–विमर्श (अन्तःक्रिया) करना सीखने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग है।

6.3 पर्यावरण अध्ययन में ज्ञान के घटक

एन.सी.एफ.2005 – प्राथमिक कक्षाओं में विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान विषय को अलग–अलग विषय के रूप में न पढ़ाकर, इन विषयों को एकीकृत करके पर्यावरण अध्ययन के रूप पढ़ाने की सुझाव दिया गया हैं। पर्यावरण अध्ययन क्या है इस पर बात करें हम में से अधिकांश लोग इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते है कि हमारे आसपास का संपूर्ण वातावरण जिससे हम प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होते हैं वह पर्यावरण है। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करने वाले हवा, पानी, पेड–पौधे, जीव–जंतु , मौसम,जलवायु, जनजीवन,रीति–रिवाज़, परम्पराएँ आदि के बारे में जानना ही पर्यावरण अध्ययन है।

यदि हम पर्यावरण अध्ययन विषय के शिक्षण उद्देश्यों पर गौर करें तो यह स्पष्ट होगा कि इस विषय के अध्ययन से बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास के अवसरों के साथ–साथ सामाजिक बदलावों और राष्ट्रीय सरोकारों पर चर्चा करते हुए समझ विकास करना हैं। पर्यावरण अध्ययन में ज्ञान के निम्न लिखित पक्षों को देख सकते है :–

- अवधारणाएँ,
- प्रक्रिया कौशल,
- वैज्ञानिक प्रवृत्ति / दृष्टिकोण

प्रक्रिया कौशल (Proceses Skill)*

प्रक्रिया कौशलों को समझने के लिए आइए नीचे दिए गए चित्र को गौर से देखते हैं।

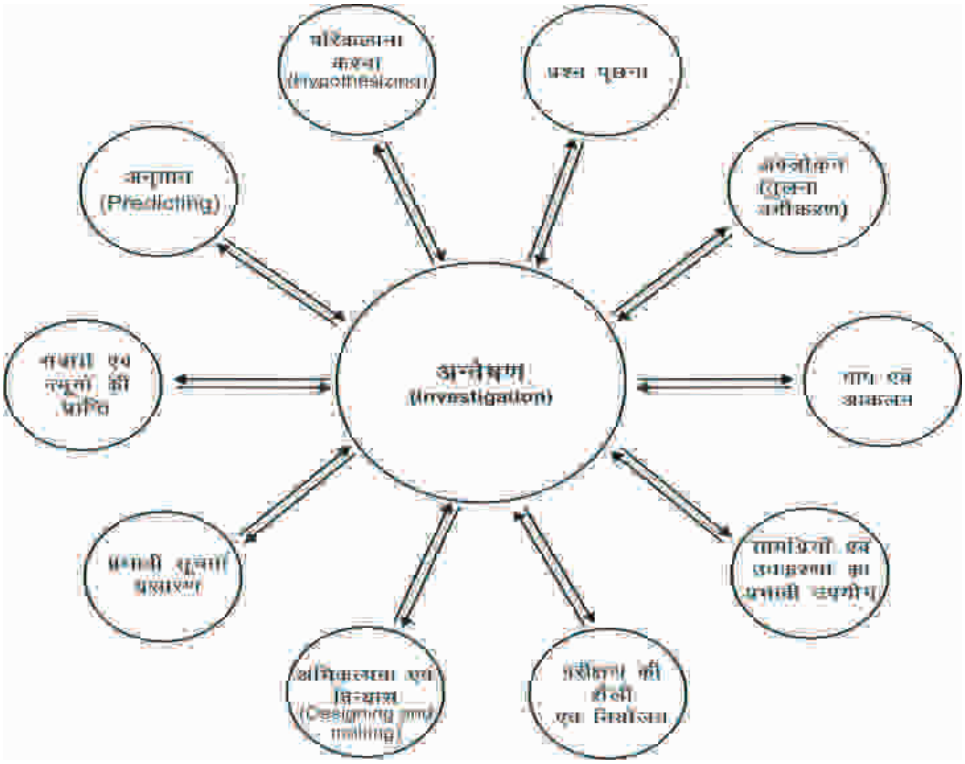

*यह भाग प्राथमिक विद्यालय के लिए यूनेस्को की विज्ञान स्रोत पुस्तक से लिया है।

चित्र में क्रिया कौशलों के उपयोग में किसी भी प्रकार की वरीयता क्रम एवं सामान्य क्रमबद्धता के संकेत नहीं हैं। चित्र से यह भी स्पष्ट है कि ये क्रिया कौशल एक संपूर्ण प्रक्रिया, वैज्ञानिक अन्वेषण (Scientific Investigation) के अंग हैं।

बच्चा स्वयं द्वारा निर्मित अवधारणा (Concept) के द्वारा दुनिया को समझता है। अवधारणाओं का निर्माण, प्रक्रिया कौशलों के विकास पर निर्भर है। आस–पास की दुनिया का अवलोकन एवं अन्वेषण करके युक्ति संगत तरीके से ईमानदारी से (तुलना करने वाली वस्तुओं की सटीक, पक्षपात रहित जाँच परख करने से) समस्याओं का समाधान खोजने से ही प्रक्रिया कौशलों का विकास होता है। सीखने की प्रक्रिया में बच्चे का सरल से जटिल अवधारणा में प्रवेश करने की क्रिया से प्रक्रिया कौशल उत्तरोतर बेहतर होता जाता है। आइए अब हम प्राथमिक स्तर पर किन प्रक्रिया कौशलों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए इस पर विचार करते हैं।

- अवलोकन
- वर्गीकरण
- मापन
- निष्कर्ष निकालना

इसके अलावा कुछ और प्रक्रिया कौशल समस्या समाधान की क्रिया में उपयोगी होते हैं। सीखने के विभिन्न अनुभवों के माध्यम से इन्हें भी सशक्त किया जाना है। इस प्रकार के प्रक्रिया कौशल निम्न हैं –

- अनुमान लगाना (Predicting)
- आँकड़ों का संकलन
- आँकड़ों की व्याख्या करना
- समस्या समाधान
- प्रश्न करना

आपके मन में सवाल आता होगा कि अवलोकन, वर्गीकरण आदि कौशलों का इस्तेमाल बच्चे सीखने में कैसे करते होंगे ?

आम तौर पर शारीरिक रूप से बच्चे क्रियाओं में संलग्न होते हैं। साथ ही उसी से संबंधित कुछ विचार उसके दिमाग में चलते हैं। इन विचारों को हम देख नहीं सकते हैं। परन्तु प्रत्येक प्रक्रिया कौशल के इस्तेमाल से बच्चे के मन में चल रहे विचार कौन–कौन से हो सकते हैं ? इसे हम जाँच सकते हैं।

वैज्ञानिक प्रवृत्ति / दृष्टिकोण

वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हमारे संवैधानिक मूल्यों एवं पाठ्यक्रमणीय उद्देश्यों का मूलभूत तत्व है। यह एक समग्र दृष्टिकोण (देखने, सोचने व समझने का तरीका) है ना कि कोई ज्ञान विशेष है। कहने का तात्पर्य है कि यह कोई एक नियम, सिद्धान्त एवं व्याख्या ना होकर जानने, ज्ञान का सृजन व खोज़बीन करने का तरीका है। इस तरीके की यह विशेषता है कि यह हमें एक वृहद एवं स्पष्ट रूपरेखा देता है, जिसके द्वारा हम किन्हीं भी दी गई परिस्थितियों में विश्वसनीय एवं सर्वाधिक संभावित सिद्धान्तों का निर्माण कर सकते हैं क्योंकि यह जानने या खोज़बीन का एक तरीका है, इसलिए इसे सीखने के एक तरीके के रूप में देखा जा सकता है। जिसमें हम विश्व, उसमें उपस्थित वस्तुओं, घटनाओं, संबंधों, मानव समाज एवं खुद के बारे में भी बेहतर रूप से जान सकते हैं। पर्यावरण अध्ययन को प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ाने का लक्ष्य इस वैज्ञानिक दृष्टिकोण, समझ एवं तरीकों को किन्हीं भी रूपों में पूर्णतः विकसित कर देना नहीं है, अपितु बच्चों में यह आभास कराना है कि जानने की प्रक्रिया में व्यवस्था हो सकती है, व उस व्यवस्था के स्पष्ट अनुभव द्वारा समझ का विकास किया जा सकता है।

यहाँ पर मूल प्रश्न यह है कि अगर बच्चे को ज्ञान निर्माण की इस प्रक्रिया से गुजारे बिना प्राथमिक स्तर पर सिर्फ जानकारियाँ देने से क्या लाभ होगा ? बच्चे स्वतः ही जिज्ञासु होते हैं एवं सहज रूप से खोज़बीन करने, ज्ञान का निर्माण करने एवं उसको परिष्कृत करने की प्रक्रिया में संलग्न होते हैं। उन्हें इस प्रक्रिया में जोड़ना एक सुगम एवं सहज कार्य है। ज्ञान निर्माण की एक व्यवस्थित प्रक्रिया को विभिन्न ऐसे चरणों के रूप में देखा जा सकता है, जो कि पृथक भी है और एक–दूसरे से संबंधित भी है, इसलिए इस प्रक्रिया को कहीं से भी अन्य और विषयों के साथ भी शुरू किया जा सकता है।

ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया मूलतः एक सामाजिक प्रक्रिया है, जिसमें दूसरों के विचार, मान्यताएँ एक अहम किरदार निभाती हैं। एक ही विषय पर अलग–अलग समझ रखने वालों से वार्तालाप हमें ज्यादा आलोचनात्मक दृष्टि से सोच पाने की ज़रूरत महसूस कराता है। जिससे कि हमारा अपना ज्ञान परिष्कृत होता है। दूसरा नई जानकारी व नये अनुभव ही हमारी समझ को बदलते हैं एवं परिष्कृत करते हैं, इसलिए खुले रूप से विचारों का आदान–प्रदान एवं अनुभवों की जगह सुनिश्चित किए बिना वैज्ञानिक दृष्टिकोण की बात नहीं की जा सकती है। विज्ञान हमेशा पहले से परिष्कृत ज्ञान की खोज की प्रक्रिया है, इसलिए इसे संवाद एवं समालोचनात्मक दृष्टि से देखा जाना चाहिए। इस प्रक्रिया में आखरी कसौटी हमारा व्यक्तिगत अनुभव ना होकर ऐसा अनुभव है जो कि सामान्य रूप से प्रक्रिया की एक प्रमाणिकता (integrity) को बनाए रखते हुए उसका निरीक्षण सभी के द्वारा किया जा सकता है। यही गुण इसकी वस्तुनिष्ठता एवं सामाजिक पृष्ठभूमि प्रदान करते हैं। इस प्रक्रिया द्वारा हम अपने सामाजिक, सांस्कृतिक एवं व्यक्तिगत परिस्थितियों का भी तथ्यपरक एवं आलोचनात्मक विश्लेषण कर सकते हैं। इस विश्लेषण की गैर मौजूदगी में सामाजिक एवं व्यक्तिगत मूल्य अपना आधार खो बैठते हैं एवं कोरे उपदेशों का रूप धारण कर लेते हैं। इस प्रकार विज्ञान का महत्त्व केवल भौतिक जगत से ही नहीं अपितु इसका सामाजिक एवं व्यक्तिगत महत्त्व भी है।

हमारा कक्षा–कक्ष एवं सीखने सिखाने की प्रक्रिया इस बात का जितना समायोजन कर पाए उतना ही हम बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास सुनिश्चित कर पाएंगे एवं पाठ्यक्रमणीय उद्देश्यों की प्राप्ति कर पाएंगे।

पर्यावरण अध्ययन से संबंधित अवधारणाएँ – इसका विस्तार स्रोत पुस्तिका के अध्याय – 4 में एसआईईआरटी पाठ्यक्रम के अन्तर्गत दिया गया है।

सीखने की विशेषताएँ

- बच्चे में निर्मित ज्ञान केवल जानकारियों का संकलन नहीं है।
- समस्या के समाधान हल करने के लिए की गई खोजबीन का निष्कर्ष उसका ज्ञान है।
- बच्चे में विषय से संबंधित समझ कौशल एवं प्रवृत्तियाँ साथ–साथ विकसित होती हैं।

6.3.1 पर्यावरण अध्ययन में प्रक्रिया कौशल – क्षेत्र एवं सूचक*

बच्चे अक्सर वस्तुओं को सतही तौर पर देखते हैं और उसके संबंध में अपने विचारों की पुष्टि करना चाहते हैं। वे खुले दिमाग से सभी प्रमाणों को सामने रखकर नहीं सोचते हैं। इस बात को हम जानते ही हैं कि बच्चों का पहला अनुमान उनके पूर्व ज्ञान पर आधारित होता है उन्हें सही अनुमान नहीं कहा जा सकता है। उनके परीक्षण भी सही और नियंत्रित नहीं होते हैं और वे अपने अवलोकनों और नाप– तौल की पुष्टि पुनः नहीं कर सकते हैं। जिस प्रकार बच्चों के विचार या परिकल्पनाएँ सीमित होती हैं, उसी प्रकार उनके क्रिया–कौशल भी अपरिपक्व होते हैं। इसका तात्पर्य है कि इस उम्र में दोनों के विकास की बहुत संभावनाएँ होती हैं। क्रिया कौशल अन्य अवधारणाओं की तरह धीरे–धीरे ही विकसित होते हैं।

*यह भाग प्राथमिक विद्यालय के लिए यूनेस्को की विज्ञान स्रोत पुस्तक से लिया है।

आइए अब मुख्य क्रिया कौशलों के विकास, विकास के लिए आवश्यक वातावरण एवं व्यवहार के बारे में बातचीत करते हैं।

अवलोकन करना :

हम लगातार आस–पास की घटनाओं/वस्तुओं को देखते हैं या विचार करते हैं। लगातार इन घटनाओं को देखने के क्रम में हम कुछ वस्तुओं की ओर आकर्षित होते हैं और उन्हें हम अधिक ध्यानपूर्वक देखते हैं। इसी प्रक्रिया को अवलोकन कहते हैं। जब हम पहली बार किसी वस्तु को देखते हैं तब उस वस्तु की विशेषताओं को देखते हैं और इन्हीं विशेषताओं के आधार पर हम ऐसी वस्तु को किसी विशिष्ट श्रेणी में रखते हैं।

बच्चों के अवलोकन कौशल को विकसित करना इसलिए जरूरी है कि इससे वे अपनी सभी इन्द्रियों का प्रयोग करके अपनी जाँच संबंधित जानकारी और प्रमाण एकत्रित कर पायेंगे। यहाँ कौशल के विकास में दो पक्ष सम्मिलित हैं : एक पक्ष बारीकियों पर ध्यान देना दूसरा किसी विशेष जाँच के लिए संबंद्ध वस्तुओं की पहचान करना।

बच्चों के साथ हुए शोध से पता चलता है कि भिन्नता की अपेक्षा समानताओं को ढूँढ़ पाना ज्यादा मुश्किल है यह कर पाना अवलोकन कौशल की निशानी है। जैसे–जैसे बच्चों का अनुभव बढ़ता है वे अपने अवलोकन को उन सूक्ष्म बारीकियों पर केन्द्रित करते हैं जो समस्या के हल के लिए अनिवार्य हैं।

वस्तुओं और घटनाओं को क्रम में व्यवस्थित करने से पहले कुछ महत्वपूर्ण बातों की ओर ध्यान केंद्रित होता है। क्रम में बदलने वाली चीजों जैसे दिन में परछाइयों के अवलोकन करने से बच्चे विशेष लक्षण खोजना सीख जाते हैं। बच्चों को संपूर्ण घटना का अवलोकन करने में सहायता करनी चाहिए न कि उसके अंत और शुरू में । बच्चे, अपनी अवलोकन क्षमता से क्या हो रहा है, सीखने के साथ–साथ क्यों हो रहा है की भी जानकारी हासिल करते हैं। अवलोकन की प्रक्रिया पर चिंतन करना और सोच समझ कर पूर्व मान्यताओं से मुक्त होना, इस बात का विकास प्राथमिक स्तर पर मुश्किल है परन्तु प्राथमिक स्तर ही इसकी शुरूआत है। अवलोकन कौशल के क्रमबद्ध विकास में शिक्षक किस प्रकार मदद कर सकते हैं आइए देखते हैं।

- अवसर उपलब्ध करा कर, बच्चों को प्रोत्साहित करके जिसमें वे व्यापक और केंद्रित अवलोकन कर सकें।
- कक्षा का नियोजन कुछ इस प्रकार करें कि जिसमें वे अपने अवलोकन के बारे में अन्य बच्चों और शिक्षकों को बता सकें।
- बच्चों के अवलोकन को सुनना और उनके आधार पर आगे प्रश्न पूछना। (जैसे तुमने और क्या–क्या देखा ?)
- जाँच/प्रयोग के दौरान जैसे–जैसे घटनाएँ घट रही हैं वैसे–वैसे बच्चों को उनका अवलोकन करने का अवसर देना। बच्चे इन्हीं अवलोकनों को प्रमाण मान कर जो कुछ हुआ उसकी व्याख्या कर सकें। (यहाँ हम कह सकते हैं कि बच्चे सैद्धांतिक कल्पना के विकास की ओर अग्रसर हो रहे हैं।)

संप्रेषण

सीखने के लिए भाषा में दक्षता ज़रूरी है। भाषा आस पास की चीज़ों को सहज नाम देना भर नहीं है। यह सिद्धांत निर्माण या धारणाओं के बनने में भी औज़ार का काम करती है। यह अनुभवों के होने और उन्हें अभिव्यक्ति प्रदान करने का माध्यम भी है। सूचनाओं और जानकारी प्रदान करने और परीक्षण के लिए संप्रेषण महत्त्वपूर्ण कौशल है। जैसे वस्तुओं के एक वर्ग का प्रतिनिधित्व करने में हमें किसी नाम, लेबल या प्रतीक आदि की आवश्यकता होती है। सूचनाओं को संकलित करने एवं संप्रेषण के लिए संप्रेषण कौशल भी एक महत्वपूर्ण भाग है। दुनिया को समझने में, विचारों को नई घटनाओं से संबंध जोड़ने में, विचारों और प्रमाणों के संबंध पर चिंतन करने में संप्रेषण की क्षमताओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। संप्रेषण में चित्रात्मक और लिखित सामग्री के साथ–साथ मौखिक रूप में शब्दों को सही ढ़ंग से चुनना और उनका प्रभावशाली इस्तेमाल करना भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। किसी बात की रिपोर्ट लिखने का मुख्य उद्देश्य है कि कोई दूसरा उसे सुने और पढ़े। लोगों को हम सही जानकारी देना चाहते हैं तो किसी भी रिपोर्ट में घटनाओं का वर्णन एक उचित क्रम में करना जरूरी है।

संप्रेषण आदान–प्रदान की एक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में यह महत्त्वपूर्ण है कि लोगों की बातें ध्यान से सुनने या पढ़ने से अपनी बातों को स्पष्ट शब्दों में कहने की क्षमता बढ़ती है। साथ ही हमें दूसरों के विचारों का भी पता चलता है। जानकारी के आदान–प्रदान के लिए लिखित स्रोतों का इस्तेमाल किया जाए क्योंकि जानकारियों में एक रूपता ढूँढ़ पाने के लिए यह जरूरी है कि उसे ऐसे रूप में पेश किया जाए जिसे लोग आसानी से समझ सकें। वैज्ञानिक शब्दावली का अर्थपूर्ण उपयोग भी संप्रेषण की क्षमता में विकास की निशानी है।

इस क्षमता के विकास में शिक्षक निम्न सहायता प्रदान कर सकते हैं :–

- कक्षा का इस प्रकार नियोजन करें कि जिनमें बच्चे अपने काम के बारे में एक दूसरे से संवाद कर सकें। (कभी सामान्य तरीके से तो कभी औपचारिक तरीके से)
- उन्हें रिकॉर्ड रखने और संप्रेषण के विभिन्न तकनीकों से परिचय कराएँ जिनमें पारम्परिक विधियाँ और शब्द शामिल हों।
- बच्चों को तालिकाओं, ग्राफ, चार्ट आदि के माध्यम से जानकारी का उपयोग करने के अवसर प्रदान करें।
- बच्चों को चर्चा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

व्याख्या / विश्लेषण

- **परिकल्पना करना** : परिकल्पना में पूर्व अनुभवों या अवधारणाओं का उपयोग करते हुए अवलोकनों की व्याख्या करनी होती है। किसी भी अभिकल्पना को वैज्ञानिक बनाने में दो कारण महत्त्वपूर्ण है पहला, वह प्रमाणों के अनुकूल हो तथा दूसरा किसी परिकल्पना का प्रामाणिक परीक्षण करना संभव हो।

  बच्चे व्याख्या करते समय सभी गुणधर्मों का समावेश तो करेंगे नहीं परन्तु धीरे–धीरे उनका कौशल इस दिशा में प्रगति करेगा। किसी घटना की व्याख्या के लिए इसके मुख्य लक्षणों को पहचान पाना इसका पहला कदम होगा। घटना को किसी पूर्व अनुभव के साथ जोड़ना अगला कदम होगा।
- **अनुमान लगाना** : अनुमान लगाने का मतलब तुक्केबाजी और अटकलबाजी नही है। अनुमान लगाते समय उपलब्ध प्रमाणों और पूर्व अनुभवों का उपयोग करना होता है। जिस स्तर तक बच्चे अपने अनुमान का आधारा स्पष्ट कर सकें वह उनके कौशल का प्रतीक होगा। शुरू में शायद उन्हें अनुमान और उपलब्ध प्रमाण के बीच कोई रिश्ता नहीं दिखे। परन्तु बाद में वे अपने अनुमान का आधार और कारण समझ जायेंगे। ऐसे में शिक्षक निम्न तरीकों से बच्चों की प्रगति में सहायता कर सकते हैं:–

- बच्चों को अनुमान लगाने के लिए प्रोत्साहित करें और वास्तविक अवलोकन और जाँच करने से पहले वे तर्कों के आधार पर अपने अनुमान को सिद्ध करें।

  किसी विशेष परिस्थिति में कोई भरोसेमंद अनुमान लगा पाना संभव है या नहीं, इस बात पर चर्चा करें।

- **नियमितताओं और पैटर्न को खोजना** – इस कौशल में एक प्रमाण के साथ दूसरे का संबंध जोड़ना होता है। इस कौशल के कारण ही बच्चे अनेक तथ्यों और जानकारियों के अंबार का कुछ मतलब निकाल पाते हैं। एक वस्तु का दूसरी वस्तु के साथ संबंध जोड़ते समय चीज़ों के मुख्य लक्षण को चुनें और जिन चीजों में कोई पैटर्न नहीं है उनकी ओर ध्यान न दें। एक घटक का दूसरे घटक के मध्य पैटर्न को सुनिश्चित करने के लिए कम से कम तीन बार का अवलोकन जरूरी है। व्याख्या की पुष्टि के लिए अतिरिक्त जानकारी एकत्रित करना क्षमता के बेहतर होने की निशानी है।
  - बच्चों को ऐसी गतिविधियाँ उपलब्ध करायें जिन्हें करने के दौरान वे सरल स्तर के पैटर्न और संबंध खोज सकें।
  - प्रयोगों के नतीजों में बच्चों ने जो संबंध पाये हैं, के विषय में बच्चों को विचार प्रकट करने के लिए कहना।
  - अनुमान लगाने में किसी भी संबंध का उपयोग किया हो तो जाँच में उसकी पुष्टि करें।

  बच्चों से अपेक्षा रखें कि वे हरेक संबंध की सावधानी पूर्वक जाँच–परख करें और उनका निष्कर्ष निकालते समय सतर्कता बरतें।

- **मापना और गणना करना –** अवलोकन के दौरान एकत्रित विवरणों को मापकर नोट करने की आवश्यकता होती है। मापन में दोनों प्रकार के माप जैसे अंदाज़ लगाकर मापना, सूक्ष्मता से मापना दोनों हो सकते हैं। प्राथमिक स्तर के बच्चों में लंबाई, ऊँचाई, गहराई, समय आदि की मानक व अमानक इकाइयों को इस्तेमाल करने की योग्यता होनी चाहिए।

  मापन कर पता करने वाले विवरण का पता लगा पाना।

  मापन के लिए उचित उपकरणों का प्रयोग कर पाना।

  सही तरीके से मापन करके रेखांकित कर पाना।

वर्गीकरण :

अवलोकन के पश्चात एकत्रित वस्तुओं एवं विचारों को क्रमबद्ध रूप से रखने तथा उनके बीच समानता, भिन्नता, परस्पर संबंध आदि के आधार पर वर्गीकृत करने की योग्यता बच्चों में विकसित होती है। विशेषताओं के आधार पर तुलना करके वर्गीकरण किया जाता है।

इस स्तर पर व्याख्या करते समय बच्चे सभी गुणधर्मों का समावेश तो करेंगे नही परन्तु धीरे–धीरे उनका कौशल इस दिशा में प्रगति करेगा। किसी घटना की व्याख्या के लिए उसके मुख्य लक्षण को पहचान पाना इसका पहला कदम होगा।

- अवलोकन के आधार पर 2 से 4 वस्तुओं की तुलना करना। अवलोकन के आधार पर क्रम से लगाना (4 से 5 तक)
- विभिन्न वस्तु – समूहों के बीच अंतर बताना तथा समानता बताना।

प्रयोग करना :

परिकल्पना की जाँच के लिए प्रयोग किये जाते हैं। प्रयोग करने और उसके ढाँचे का निर्माण करने के लिए विभिन्न कौशलों की आवश्यकता होती है। (इसका विस्तार स्रोत पुस्तिका के अध्याय 5 व 6 के अन्तर्गत दिया गया है।)

प्रश्न करना :

प्रश्न करना एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक क्षमता है, इसका संबंध उन प्रश्नों से जिनका उत्तर जाँच द्वारा पाया जा सके। यह एक ऐसी क्षमता है जिसमें प्रश्नों द्वारा बच्चे अपनी आस–पास की चीज़ों के बारे में बेहतर समझ बना पायेंगे। इसका आरम्भ किसी भी प्रकार के प्रश्न पूछने से होगा चाहे उसका संबंध विज्ञान से हो या नहीं। यह प्रश्न करने के कौशल को अर्जित करने की दिशा में पहला कदम है।

इस स्तर पर बच्चे जाँच के सवाल और अन्य सवालों के बीच अन्तर को स्पष्ट समझ नहीं पाते हैं। परन्तु इस बात को समझना कि कुछ प्रश्न जाँच द्वारा हल किये जा सकते हैं अन्य नहीं, अपने आप में प्रगति का संकेत है। अगर एक बार बच्चे इस अन्तर को समझ पायेंगे तो वे अनिश्चित प्रश्नों को बदलकर ऐसा रूप दे पायेंगे जिससे कि वे उन्हें भी जाँच द्वारा हल कर सकें।

शिक्षक निम्न तरीके से बच्चों के इस कौशल के विकास में सहायक हो सकते हैं।

- बच्चों के प्रश्नों को गम्भीरता से लें जिससे बच्चे स्वयं देख पायें कि उनका उत्तर कैसे खोजना है।
- विज्ञान के प्रश्नों को इस तरह प्रस्तुत करें कि जिससे उनकी जाँच संभव हो।
- बच्चों को प्रश्नों को स्पष्ट करने में मदद दें जिससे बच्चे खुद उसका उत्तर खोज सकें।
- बच्चों को प्रश्न पूछने का भरपूर अवसर दें।

6.3.2 बच्चों की वैज्ञानिक प्रवृत्ति के विकास में सहायता करना

प्रवृत्तियाँ हमारे व्यवहार का एक सामान्य पक्ष हैं। जिस प्रकार हम किसी क्रिया में जल्दी से किसी क्रिया कौशल को पहचान पाते हैं वैसे प्रवृत्ति को पहचान पाना कठिन है। प्रवृत्तियों की पहचान अलग–अलग स्थितियों में लोगों की क्रियाओं और व्यवहार से होती है। प्रवृत्ति के कुछ सामान्य लक्षण हैं यहाँ उनके विकास के कुछ उपाय सुझाए गए हैं।

- प्रवृत्ति ज्ञान और कौशल से भिन्न है यह ऐसा विषय नहीं जिसमें आप बच्चों को निर्देश दे सकें। प्रवृत्ति का पता व्यवहार से लगता है। प्रवृत्ति को सिखाया नहीं जाता बल्कि बच्चे के व्यवहार में देखा जाता है इसलिए शिक्षक खुद उदाहरण बन कर बच्चों में प्रवृत्ति विकसित कर सकते हैं।
- प्रवृत्ति का विकास उन बातों से होता है जिन्हें स्वीकृत या अस्वीकृत किया जाता है। अतः सही प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के लिए हमें बच्चों के सही व्यवहार को समर्थन देना चाहिए और उनके खराब व्यवहार को अस्वीकार करना चाहिए। अगर ऐसा लगातार किया जाये तो यह कक्षा के माहौल का एक हिस्सा बन जायेगा और फिर बच्चे उसी के अनुरूप एक दूसरे को बढ़ावा देंगे।
- किसी कार्य को हम कैसे करते हैं ? उससे हमारी प्रवृत्ति झलकती है।

यहाँ विषय विशेष की आवश्यकता को देखते हुए हम कुछ विशेष मूल्यों का उल्लेख कर सकते हैं जैसे –

प्रमाण एकत्रित कर उनके प्रयोग करने की इच्छा।

नये प्रमाणों के आधार पर अपनी सोच को बदलना (इसके लिए व्यापक सोच और खुला दिमाग चाहिए)

कार्य–प्रणालियों को बारीकी से जाँचना/परखना।

आकलन/मूल्यांकन के सूचक

आकलन/मूल्यांकन सूचक	आकलन/मूल्यांकन सूचकों के घटक
अवलोकन और दर्ज़ करना। **(Observation and Reporting)**	• इन्द्रियों की मदद से आवश्यक सूचनाओं का संग्रह कर पाना। • मिलती–जुलती घटना/वस्तुओं के बीच अन्तर व समानता खोज पाना। • एक निश्चित क्रम में होने वाली (घटने वाली) घटनाओं के क्रम को पहचान पाना। • तस्वीरों, मानचित्रों व सारणियों को जटिलता के बढ़ते क्रम में पढ़ पाना।
संप्रेषण कौशल (Communication Skill) (अभिव्यक्ति/चर्चा)	• वर्णन, टिप्पणी, नोट आदि से अपने अवलोकन, जानकारियों एवं विचार को व्यवस्थित एवं स्पष्ट रूप से व्यक्त कर पाना। (मौ खिक/लिखित/रेखाचित्रों/तालिकाओं/चार्ट आदि के माध्यम से) • अपने पूर्व अनुभवों को याद करके सुनाना। • समूह में अपने (स्वयं के) विचार, राय को अभिव्यक्त कर पाना। • हो रही चर्चा में दूसरों के विचार व राय सुनना और उचित प्रतिक्रिया व्यक्त कर पाना।
वर्गीकरण करना (Classification)	• अवलोकन के आधार पर स्पष्ट अभिलक्षणों को देखकर समान वस्तुओं के समूह को पहचान पाना। • किसी एक विशेषता के आधार पर वस्तुओं के बड़े समूह में से उपसमूह निर्मित कर पाना।
व्याख्या/ विश्लेषण करना।	• किसी घटना या तथ्य के संभावित कारणों को पहचानना या अनुमान लगाना। • अवलोकन तथा संबन्धों की व्याख्या करने हेतु सरल परिकल्पनाओं का निर्माण करना। • प्रयोग/अनुभवों से मिली जानकारियों, तथ्यों, मापों और अवलोकनों के आधार पर निष्कर्ष निकाल पाना।
प्रश्न करना (Questioning)	• वस्तुओं, घटनाओं अथवा लोगों के विषय में जानकारी एकत्रित करने की दृष्टि से परिचित एवं अपरिचित लोगों से प्रश्न कर पाना। • यह समझना कि कुछ प्रश्नों का उत्तर पूछताछ के माध्यम से नहीं मिल सकता।
प्रयोग करना (Experimentation)	• प्रयोग के उपकरण व सामग्री का सावधानीपूर्वक उपयोग करना (व्यक्तिगत व सामूहिक कार्य के दौरान)। • मापन व तुलना करने के लिए मानक व अमानक इकाईयों का प्रयोग कर पाना। • गतिविधि/जाँच के दौरान प्रत्येक चरण को क्रमबद्ध कर पाना (व्यक्तिगत एवं सामूहिक कार्य के दौरान)। • विषय वस्तु के अनुसार तात्कालिक या परिवेश में उपलब्ध सामग्रियों का उपयोग करते हुए नई चीज़ें बनाना (व्यक्तिगत एवं सामूहिक क्रियाओं के दौरान)।
न्याय व समता के प्रति सरोकार **(Concern for justice and equality)**	• अन्यथा सक्षम व सुविधा वंचित व्यक्तियों के प्रति संवेदनशील होना। • सामाजिक एवं पारिवारिक असमानताओं के प्रति सचेत रहना, उनके संदर्भ में चिंतित होना व प्रश्न कर पाना। • पर्यावरण (जानवरों एवं पेड़–पौधों सहित) को महत्त्व देना।

अध्याय– 7

सीखना और आकलन

शिक्षा का सरोकार एक सार्थक व उत्पादक जीवन की तैयारी से होता है और मूल्यांकन विश्वसनीय प्रतिपुष्टि देने का तरीका होना चाहिए। यह प्रतिपुष्टि इस बात की होती है कि हम ऐसी शिक्षा लागू करने में किस हद तक सफलता प्राप्त कर पाए। इस प्ररिप्रेक्ष्य से देखें तो वर्तमान में चल रही मूल्यांकन की प्रक्रियाएँ जो केवल कुछ ही योग्यताओं को मापती हैं और आकलित करती हैं बिलकुल ही अपर्याप्त हैं और शिक्षा के उद्देश्यों की ओर प्रगति की संपूर्ण तस्वीर नहीं खींचती हैं।

लेकिन मूल्यांकन का यह सीमित प्रयोजन भी, अकादमिक और शैक्षिक विकास पर प्रतिपुष्टि देने वाली, तभी बन सकती है जब शिक्षक पढ़ाने से पहले ही न केवल आकलन के तरीकों की तैयारी करें बल्कि मूल्यांकन के मानकों और उसके लिए प्रयुक्त होने वाले औजारों की भी तैयारी करें। विद्यार्थियों की उपलब्धि की गुणवत्ता की जाँच के अलावा एक अध्यापक को विभिन्न विषयों में उनकी उपलब्धि की जानकारी इकट्ठा कर उसका विश्लेषण कर और उसकी व्याख्या करनी होगी। तभी अध्यापक विभिन्न क्षेत्रों में विद्यार्थियों के अधिगम की सीमा की एक समझ बना पाएँगे। आकलन का प्रयोजन निश्चय ही सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं एवं सामग्री का सुधार करना है और उन लक्ष्यों पर पुनर्विचार करना है जो स्कूल के विभिन्न चरणों के लिए तय किए गए हैं।

साभार : एनसीएफ 2005

7.1 सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के दौरान आकलन

सीखने के दौरान प्रत्येक चरण में बच्चे के वांछनीय परिणाम प्राप्ति के लिए विभिन्न तरीकों से दी जा रही प्रतिपुष्टि, समर्थन, आकलन को हम **सीखने के लिए आकलन** की श्रेणी में रख सकते हैं। आइए, इसे एक उदाहरण द्वारा समझते हैं।

पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तक मेरी दुनिया – कक्षा 5 के **बीज से बनता** पौधा पाठ पर कार्य का आरम्भ शिक्षक ने कुछ सवालों से किया। जैसे –

1. क्या सभी पेड़–पौधों को हम बीज से उगाते हैं ?
2. क्या ऐसे भी कोई पेड़–पौधे हैं जिन्हें हम बीज से नहीं उगाते हैं ?
3. आप लोग कौन–कौन से बीज खाते हो ?

शिक्षक के इन प्रश्नों को बच्चे कार्य करने के लिए या सोचने के लिए समस्या/चुनौती के रूप में लेते हैं। वे अपने–अपने स्तर पर इन सवालों के उत्तर अपने पूर्व अनुभव के आधार पर खोजने में संलग्न होते हैं। सभी बच्चों की प्रतिक्रिया सुनने के बाद शिक्षक बच्चों को अपने अनुभव लिखने के लिए कहते हैं।

इस गतिविधि के द्वारा शिक्षक को बच्चों की पूर्व जानकारी एवं पूछे गए सवाल/समस्या से जोड़कर कार्य कारण संबंध खोजने और इस आधार पर आरम्भिक निष्कर्ष तैयार करने में बच्चे की स्थिति एवं यहाँ किस

प्रकार की मदद या पृष्ठपोषण देना है इस बात को समझने, तय करने एवं इसे योजना में शामिल करने के लिए शिक्षक को इस आकलन की आवश्यकता है।

अब इस चरण में आकलन के उद्देश्य क्या–क्या हैं ? आइए विचार करते हैं।

- प्रत्येक बच्चा कैसे सीखता है ? यह जानने और उसके अनुसार शिक्षण प्रक्रिया में बदलाव लाने के लिए। यानि सीखने में बच्चों द्वारा इस्तेमाल की जा रही योग्यता, प्रक्रिया, अनुभव, दृष्टिकोण आदि को समझ कर उसे सीखने के उद्देश्य से जोड़ कर क्रियाकलाप आयोजित करने के लिए।
- सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को अधिक उपयुक्त तरीके से नियोजित करने के लिए।
- सीखने के लिए उचित माहौल बनाकर, आवश्यक पृष्ठपोषण एवं मदद देकर बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए।
- सीखने के प्रमाणों की समीक्षा करके बच्चों को आवश्यक पृष्ठपोषण देने के लिए।

इस प्रकार सीखने के प्रत्येक चरण में सक्रिय रूप से संलग्न होकर निर्मित ज्ञान के गुणात्मक पहलुओं को पहचानने की कोशिश करके तथा आवश्यक पृष्ठपोषण देकर बच्चों का आत्मविश्वास और सीखने की योग्यता को पुष्ट करने वाली जैविक प्रक्रिया को हम **सीखने के लिए आकलन** कह सकते हैं।

7.1.1 स्व आकलन और प्रतिपुष्टि

बच्चे के साथ की गई प्रत्येक कक्षायी अंतःक्रिया की माँग होती है कि बच्चे अपने काम का स्वयं मूल्यांकन करें। बच्चों से इस बात पर चर्चा भी हो कि किस कार्य का आकलन किया जाना चाहिए और किन क्षमताओं का विकास हुआ है या नहीं इसे पता करने का क्या तरीका हैं ? बहुत छोटे बच्चे भी इस बात का आकलन कर सकते हैं कि कौन से काम वे ठीक से कर पाते हैं और कौन से नहीं।

साभार : एन सी एफ 2005

पाठ ''बीज से बनता पौधा'' में विषय के संबंध में निर्मित अवधारणा, विचार, दृष्टिकोण आदि को लेकर बच्चे स्वयं की समझ का विश्लेषण कर सकें ऐसा अवसर देने हेतु शिक्षक बच्चों के साथ एक चर्चा आयोजित करते हैं जिसमें शिक्षक बच्चों के सामने कुछ सवाल प्रस्तुत करते हैं –

1. पाठ में अभी तक हमारे द्वारा की गई क्रियाओं में से कौन सी क्रियाएँ आपको सबसे अच्छी लगी और क्यों ?
2. कार्य के दौरान आप के द्वारा सोचा गया या निकाला गया निष्कर्ष सभी संदर्भों में ठीक रहा? यदि हाँ, तो कहाँ–कहाँ ?
3. इस पाठ में कौन–कौन सी बातें हैं जो आपको अच्छी तरह समझ में आ गयी हैं ?
4. इस पाठ की कौन–कौन सी बाते हैं जो आपको ठीक से समझ में नहीं आया हैं ?

इस प्रकार के प्रश्नों से बच्चे को उसके द्वारा संपन्न क्रियाओं के बारे में एकत्रित जानकारी, समस्या का समाधान, निकाले गए निष्कर्ष आदि के बारे में बारीकी से आलोचना करने और आकलित करने का अवसर मिलता है।

समालोचनात्मक चिंतन (Critical Thinking) के लिए अवसर प्रदान करने वाले कक्षा–कक्ष में इस प्रकार के आकलन के लिए बच्चों को प्रेरित किया जाना चाहिए। बच्चों को स्वयं के ज्ञान के बारे में सोचने/विचारने के लिए प्रेरित करने के अवसर प्राथमिक कक्षाओं में जानबूझ कर देने चाहिए। तभी बच्चे अपने अधिगम का आकलन करने और उस पर चिंतन करने की प्रक्रिया प्रारम्भ कर पायेंगे।

स्वयं के सीखने के बारे में इस प्रकार के आकलन अनुभव से बच्चा ज्ञान निर्माण की गहन प्रक्रिया की ओर बढ़ता है। पर्यावरण अध्ययन विषय में व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों स्तर पर ऐसे अभ्यास बनाये जा सकते हैं जिसमें बच्चों को अपने अधिगम का आकलन करने और उस पर चिंतन करने के पर्याप्त अवसर मिल सकें। बच्चे की वैज्ञानिक सोच भी इस आकलन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है क्योंकि इस प्रक्रिया से स्वयं की वैज्ञानिक सोच को आकलित करने और उसमें आवश्यक परिवर्तन करने की आंतरिक इच्छा विकसित होती है।

स्व आकलन के और क्या–क्या उद्देश्य है ? आइए, इस पर विचार करते हैं।

- निर्मित ज्ञान/समझ के संदर्भ में पुनः चिंतन करने की प्रक्रिया को विकसित करने में मदद करते हैं।
- स्व आकलन करने के अवसर बच्चे को स्व अध्ययन की तरफ ले जाते हैं।
- स्वयं के ज्ञान/समझ, रुख एवं सीखने की प्रक्रिया को विवेचनात्मक दृष्टि से देखने की स्थिति बच्चे में विकसित होती है।

7.1.2 सीखने का आकलन/मूल्यांकन

आइए, अब हम सीखने का आकलन/मूल्यांकन के बारे में बातचीत करते हैं। एक निश्चित समयावधि में या कुल मिलाकर (यूनिट या टर्म) बच्चे के सीखने में आये बदलाव को व्यापक रूप में समझने के लिए किए जाने वाले मूल्यांकन को हम सीखने का आकलन/मूल्यांकन कह सकते हैं।

यहाँ किए गए मूल्यांकन का महत्त्व क्या है ? आइए, विचार करते हैं –

- एक निश्चित समय अवधि के बाद बच्चों के सीखने में आये बदलाव के प्रमाण तय करना और माता–पिता से शेयर करना व उनकी टिप्पणी/राय लेना।
- कक्षा में चल रही सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को बेहतर बनाना।
- शिक्षक द्वारा किए गए नियोजन, कार्य की सार्थकता व उपयुक्तता को देख पाना।
- प्राप्त अनुभवों की उपयुक्तता को देखकर बच्चे के लिए आगामी शैक्षिक कार्य के लक्ष्य निर्धारित करना।

7.2 शिक्षण का तरीका और आकलन/मूल्यांकन

सतत आकलन की प्रक्रिया में सीखना एवं आकलन दोनों ही साथ–साथ चलने वाली प्रक्रियाएँ हैं। कक्षा में सीखने के लिए उपयुक्त वातावरण एवं तरह–तरह के अवसर एवं तरीके उपलब्ध कराना नियोजन का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है। शिक्षण के कई तरीके/एप्रोच हैं, इसमें महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हम जिस पाठ्यपद्धति को आधार मानकर नियोजन करते हैं उस आधार पर हमारा तरीका, उसके उद्देश्य, इस्तेमाल किये जा रहे उपकरण आदि भिन्न होंगे। ये बातें आकलन संबंधित जानकारियों को भी प्रभावित कर सकती हैं।

नीचे शिक्षण के कुछ तरीकों को उदाहरण सहित स्पष्ट किया है। इसमें कार्य का तरीका, विभिन्न प्रकार के आकलन– समूह आकलन, परस्पर आकलन, स्व आकलन, शिक्षक द्वारा आकलन आदि का विस्तार से उल्लेख किया है जो आपको सीखने की प्रक्रिया में विभिन्न प्रकार के आकलन के समावेश को समझने में मदद करेंगे।

विधाएँ एवं आकलन के प्रकार – उदाहरण

भ्रमण

फील्ड विजिट अध्यापकों को बच्चों के आकलन से जुड़े विभिन्न पहलुओं को समझने का एक अच्छा अवसर प्रदान करते हैं, जैसे– जाने से पूर्व, भ्रमण के दौरान और लौटते समय क्या–क्या किया ? भ्रमण के जरिये चीज़ें संग्रहित करने, रिकॉर्ड करने, चर्चा करने और सूचनाओं को वास्तविक और अर्थपूर्ण संदर्भों में प्रस्तुत करने के अवसर मिलते हैं।

पर्यावरण अध्ययन – मेरी दुनिया कक्षा 3 के एक अध्याय 10 **पेड़–पौधे और पत्तियाँ** पाठ पर कार्य का आरम्भ एक शिक्षक ने भ्रमण क्रियाकलाप द्वारा किया। आइए इस योजना का विस्तार से अध्ययन करते हैं।

इस क्रियाकलाप को शिक्षक ने तीन चरणों में सम्पन्न करने की योजना तैयार की है। **विषयवस्तु की प्रस्तुति के चरण :** सर्वप्रथम विषयवस्तु से संबंधित बच्चों के पूर्व ज्ञान जानने की दृष्टि से बातचीत की गई जैसे–

- आपके आस–पास कौन–कौन से पेड़–पौधे पाये जाते हैं ?
- क्या उन सभी पेड़–पौधों के नाम आप जानते हैं ?
- उनमें से कौन–कौन से पेड़ों को आप बचपन से देखते आए हैं ?
- क्या उन पर कोई जीव–जंतु भी रहते हैं ? आदि।

इस बातचीत के बाद शिक्षक ने पास के ही पार्क का अवलोकन करने की योजना तैयार की जो निम्नवत है–

प्रथम चरण (भ्रमण पूर्व तैयारी)

बच्चों का ध्यान अवलोकन क्रिया की ओर केंद्रित करने के उद्देश्य से शिक्षक ने कुछ प्रश्न पूछे जैसे–

शिक्षक – कल हम पास के पार्क में जाएँगे, क्या तुम बता सकते हो हम वहाँ क्या–क्या देख सकते हैं ?
बच्चे (अपने पूर्व ज्ञान के आधार पर) – पेड़, फूल, चिड़िया, तितली, कौआ, गिलहरी आदि विविध प्रकार के जानवरों के नाम बताते हैं।
शिक्षक – अच्छा ठीक है अब तुम अपने उप समूह में इस बात पर बातचीत करके लिखो कि भ्रमण के दौरान पार्क में क्या–क्या देखना है ? और इस भ्रमण के लिए किन–किन चीजों की आवश्यकता है ?

बच्चे उप समूह बनाकर आपस में बातचीत करके अवलोकन की योजना तैयार करते हैं अपनी कॉपी में लिखते हैं। इस दौरान शिक्षक प्रत्येक उप समूह में जाकर बच्चों को आवश्यकता के अनुसार कार्य करने में सहयोग करते हैं। प्रत्येक उपसमूह अपनी बात को कक्षा में प्रस्तुत करता है। शिक्षक इन बातों का

सामान्यीकरण करके ब्लैक बोर्ड पर लिखता है। कक्षा में बच्चों द्वारा तैयार की गई अवलोकन सूची निम्न प्रकार है।

पार्क में हमें क्या–क्या देखना है –

1. पार्क में कितने पेड़/पौधे हैं, उनकी सूची तैयार करना।
2. क्या सभी पेड़–पौधे एक ही तरह के हैं ?
3. पेड़–पौधों में कौन–कौन से जीव–जंतु दिखाई दे रहे हैं, उनके नाम लिखिए ?
4. इन जीव–जंतुओं का भोजन क्या–क्या है ?
5. कितने जानवर ऐसे हैं जो पेड़–पौधों के बिना रह सकते हैं ? उनके नाम लिखिए।
6. आपके सामने पार्क में घूमने के लिए कितने लोग आये हैं ?
7. यहाँ पेड़–पौधों के अलावा और क्या–क्या दिखाई दे रहा है ?

द्वितीय चरण – अवलोकन करना एवं जानकारी एकत्रित करना

सवाल तैयार करने के बाद बच्चे समूह बनाकर शिक्षक के साथ अवलोकन के लिए जाते हैं। वस्तुओं के सूक्ष्म अवलोकन के लिए शिक्षक ने हैण्ड लैंस भी साथ में ले लिया है। (विद्यालय के विज्ञान किट से) अवलोकन के दौरान कक्षा में तैयार किए प्रश्नों के अनुसार बच्चे जानकारियों को नोट करते हैं।

तीसरा चरण – अवलोकित जानकारियों का विश्लेषण एवं प्रतिवेदन तैयार करना।

भ्रमण के बाद बच्चे कक्षा में पुनः बैठ कर वे भ्रमण से संबंधित अपने अनुभवों को सुनाते हैं। उसके बाद बच्चों को एकत्रित जानकारियों से निष्कर्ष निकालने में मदद करने हेतु कुछ सवाल शिक्षक ने बच्चों से पूछा।

शिक्षक – अच्छी बात है सबने बहुत अच्छा बताया हैं। अब हम को इस अवलोकन में से कुछ ख़ास बातों पर अपने अपने दोस्तों के साथ बातचीत करके लिखना है। जैसे –

- आपने जिन पेड़ों को देखा है वे उसमें रहने वाले जीव–जन्तुओं को किस प्रकार मदद करते हैं ?
- क्या जीव–जंतु पेड़ों के लिए भी कुछ मदद करते हैं ?
- जीव–जंतु और पेड़ पौधे आपस में किस प्रकार एक–दूसरे के लिए उपयोगी हैं ?
- पेड़/पौधे दूसरे लोगों के लिए किस प्रकार उपयोगी हैं ?

बच्चे इन सवालों को ले कर अपने–अपने उप समूह में विचार विमर्श करके बात को लिखते है, उप समूह के निष्कर्ष कक्षा में प्रस्तुत करते हैं । शिक्षक इन बिन्दुओं का सामान्यीकरण करते हुए बच्चों को संबंधित अवधारणा को समझने में मदद करते हैं।

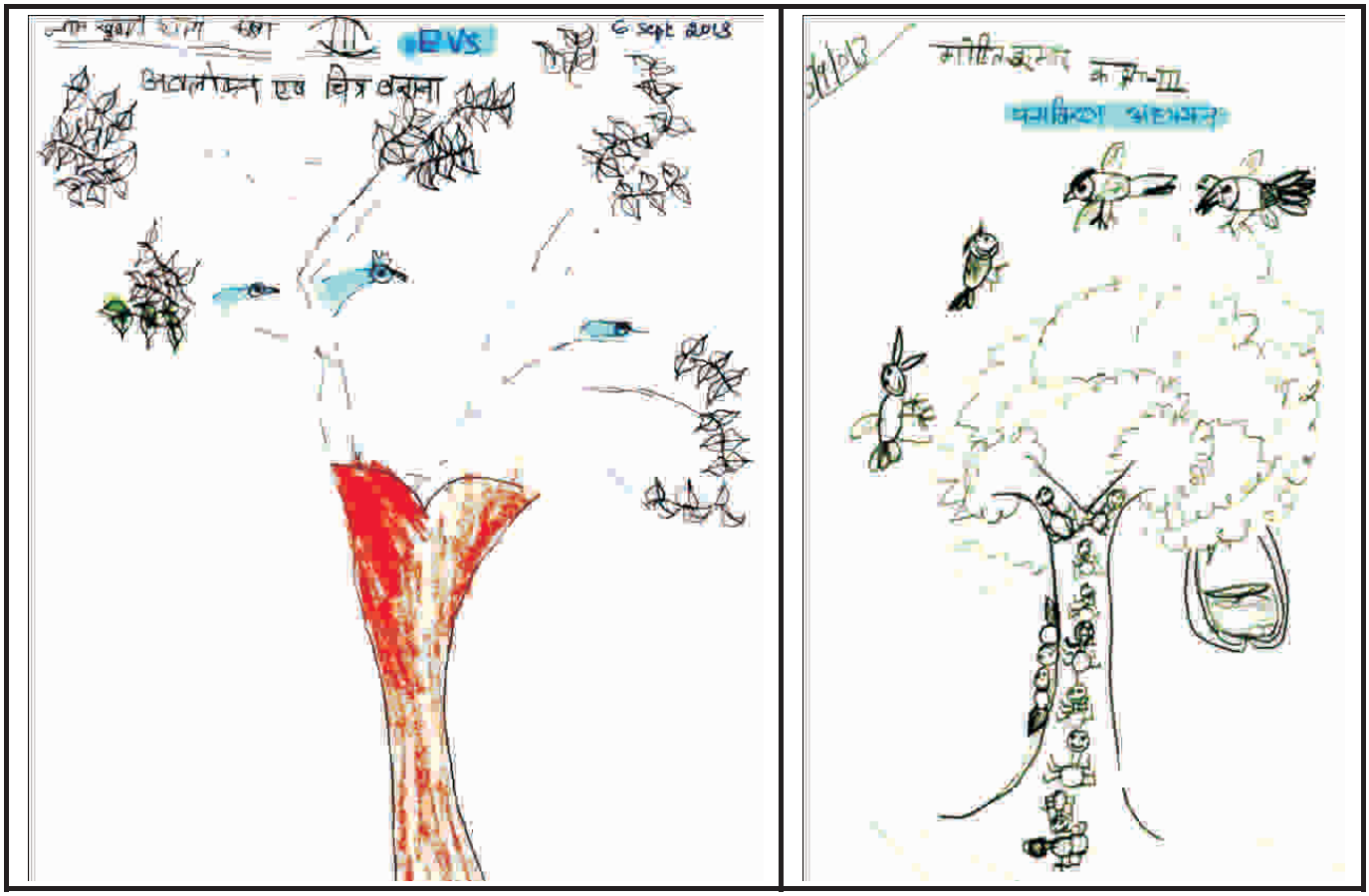

शिक्षक द्वारा आकलन

बच्चों के सीखने की स्थिति का आकलन करना, एक शिक्षक के दैनिक काम का महत्त्वपूर्ण भाग है। शिक्षक के संदर्भ में इस आकलन के क्या–क्या उद्देश्य है ? इस बात को आप जानते ही हैं। आइए एक कार्यशाला में शिक्षक साथियों द्वारा तैयार किए गए इन बातों को देखते हैं।

- सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में निर्धारित उद्देश्य बच्चों ने प्राप्त किया है, यह जाँचने के लिए।
- एक निश्चित समयावधि में बच्चों की प्रगति को जानने के लिए।
- विविध क्षेत्र में प्राप्त स्थिति एवं गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए।
- बच्चों के विकास के विभिन्न क्षेत्रों को समझने, उसकी प्रगति एवं परिणाम को समझ कर आगे की योजना तैयार करने के लिए।

प्रयोग कार्य

बच्चों को स्वतंत्र रूप से प्रयोग डिजाइन करने, क्रियाओं में संलग्न होने, जानकारियों को विश्लेषित करके निष्कर्ष निकालने और समस्या का समाधान खोजने के अवसर कक्षा–कक्ष में उपलब्ध कराने हैं। बच्चों द्वारा किए गए प्रयोगों से निर्मित ज्ञान एवं सीखने की प्रक्रियाओं का समग्र रूप से आकलन कर सकते है। उदाहरण के तौर पर **कक्षा 4** के पाठ **"पानी के अजब गजब करतब"** नामक पाठ में धूप व छाया में रखे ग्लास के पानी की मात्रा में आए अन्तर जाँचने का प्रयोग करवा रहे हैं।

प्रयोग का विषय/समस्या

समान आकार के दो गिलास में बराबर मात्रा में पानी डालकर एक गिलास धूप में व एक गिलास छाया में रखें। दो दिन बाद गिलास के पानी में क्या अन्तर आ सकते है ? शिक्षक के इस सवाल पर बच्चे अपने स्तर पर अनुमान लगाते है व अपने–अपने विचारों को कॉपी में नोट करते हैं। –

प्रयोग चरण – 1. अनुमान लगाना

प्रकरण के बारे में बच्चों को विचार करने में मदद करने के लिए अध्यापक क्या–क्या प्रश्न पूछ सकते हैं ?

- क्या गिलास के पानी में कोई अन्तर आ सकता है ?
- कौन से गिलास में और क्यों ?

बच्चों के उत्तरों में विविधता हो सकती है। बच्चों ने अमुक उत्तर किस आधार पर दिया है उसे अपनी–अपनी कापी में दर्ज़ करने के लिए अध्यापक कहते हैं। इस चरण में हम निम्न पक्षों का आकलन कर सकते हैं ?

बच्चों की प्राप्त जानकारी एवं प्राथमिक अवलोकन के आधार पर उनके अनुमान लगाने की योग्यता का आकलन कर सकते हैं। प्रयोग के अन्त में प्राप्त निष्कर्ष एवं प्रथम चरण के अनुमान की तुलना करने से, बच्चे में निर्मित समझ का आकलन अध्यापक कर सकते हैं, साथ ही बच्चा स्व आकलन भी कर सकता है।

चरण – 2. प्रयोग डिज़ाइन करना

इस चरण में बच्चे अपने समूह में चर्चा करके एक उचित प्रयोग की प्रक्रिया निकालते हैं। समूह चर्चा के माध्यम से उचित उपकरणों का चयन, प्रयोग कैसे करेंगे, प्रयोग के सही परिणाम को प्रभावित करने वाले कौन–कौन से घटक हो सकते हैं उन्हें नियंत्रित कैसे कर सकते हैं ? आदि के बारे में बच्चों के सोच–विचार का आकलन कर सकते हैं।

चरण – 3. क्रियान्वयन

बच्चों के द्वारा डिज़ाइन किए हुए प्रयोग के क्रियान्वयन के विभिन्न चरणों में उपकरणों के इस्तेमाल, मापन, समूह कार्य में सहभागिता, संप्रेषण, विश्लेषण करने एवं निष्कर्ष निकालने की योग्यता का आकलन कर सकते हैं।

चरण – 4. निष्कर्ष तैयार करना

प्रयोग के दौरान दर्ज़ की गई जानकारियों को कार्य–कारण सहित विश्लेषित करके निष्कर्ष तैयार करते हैं। यहाँ पर अवलोकनों की युक्तिसंगत तरीके से व्याख्या करने, निष्कर्षों को तैयार करने की योग्यता आदि का आकलन कर सकते हैं।

चरण –5. प्रयोग के परिणाम की प्रस्तुति

परिणाम की प्रस्तुति में प्रत्येक उपसमूह से अन्य उप समूह के बच्चे सवाल पूछ सकते हैं तथा स्पष्टीकरण माँग सकते हैं। यहाँ निम्न बातों का आकलन कर सकते हैं।

- बच्चों की संप्रेषण योग्यता का आकलन।
- अन्य बच्चों के सवालों के जवाब देने में बच्चों को स्व आकलन करने के साथ–साथ प्रयोग के विभिन्न चरणों पर पुनः चिंतन करने का अवसर भी उपलब्ध होता है।

7.3 सीखना एवं समूह कार्य – सहभागिता शिक्षण एवं समूह शिक्षण

सहभागितापूर्ण सीखने और अध्यापन को, भावनाओं एवं अनुभव को कक्षा में एक निश्चित और महत्त्वपूर्ण जगह मिलनी चाहिए। हालांकि सहभागिता एक सशक्त कार्यनीति है लेकिन अगर इसे महज कर्मकाण्ड या अनौपचारिक बना दिया जाए या वह शिक्षकों द्वारा उनके अपने लक्ष्य प्राप्त करने का माध्यम बन जाए तो इसका शिक्षा शास्त्रीय महत्त्व समाप्त हो जाता है। अध्यापक व शिक्षार्थी दोनों के अनुभवों से ही सच्ची सहभागिता शुरू होती है।

साभार : एन.सी.एफ 2005

सहभागिता एवं समूह शिक्षण के बारे में आपके मन में कई सवाल होंगे । आइए एक उदाहरण से इस विचार को समझते है।

कक्षा 5 के पाठ्यपुस्तक मेरी दुनिया – के पाठ **तैराएँ, घोले और मापें** में **क्या तैरा क्या डूबा** प्रयोग पर कार्य आरम्भ करने से शिक्षक ने पहले बच्चों से सवाल किया। शिक्षक– ''इन में से कौन–कौन सी चीज़ें पानी में डूब सकते हैं ? कौन–कौन सी चीज़े पानी के ऊपर तैरते है'' बच्चों ने अपने पूर्व के अनुभव पर अटकलें लगा कर जवाब देने लगे।

शिक्षक – क्या आप इन चीज़ों को पानी में डालकर देख कर फिर बता सकते हो ?

अन्नु – दीदी इसके लिए सामान चाहिए।

शिक्षक – चलो अब हम समूह में बट जाते हैं फिर आप अपने समूह में सामान एकत्रित करना। प्रयोग के लिए परात/टब और पानी तो मैं तैयार करती हूँ

बच्चों ने पाँच–पाँच के उप समूह बनाकर चर्चा करना आरम्भ किया कि क्या–क्या सामान लेना है। इसी कार्य में वे पाठ्यपुस्तक के भी मदद ले रहे थे। इस चर्चा प्रत्येक बच्चे ने अपने मन के विचारों को प्रस्तुत किया। कुछ ने आपस में एक–दूसरे के विचारों का खंडन किया। बच्चे अपने–अपने विचारों के स्पष्टीकरण देने लगे इस प्रकार के वाद–विवाद के बाद वे एक नतीजे पर पहुँचे।

उप समूह में से किशन एवं पायल कक्षा के बाहर जाकर कुछ वस्तुओं को चुनकर लाए और प्रयोग करने लगे, प्रयोग के दौरान ज़रूरत के अनुसार बदलाव करते रहे। अपने कॉपी में प्रत्येक वस्तु से प्रयोग के बारे में नोट भी तैयार की गई।

दो बच्चों ने मिलकर कक्षा के सामने प्रयोग के नतीजे प्रस्तुत किए, पूछे गए सवालों के जवाब भी दिये गये। प्रत्येक समूह की प्रस्तुति को अन्य समूह द्वारा आकलित करके आवश्यक सुझाव दिये गये। प्राप्त सुझावों के अनुसार प्रत्येक समूह अपने प्रयोगों को पुनः संशोधित करने का कार्य करने लगे।

आइए, इस समूह में चल रहे कार्य की व्याख्या करते हैं :–

भिन्न योग्यताएँ और सामाजिक परिस्थिति से आये बच्चों के एक समूह के समक्ष एक प्रश्न है कौन–कौन सी चीज़ें पानी में डूबते है ? कौन–कौन सी चीज़े पानी के ऊपर तैरते है इस प्रश्न को लेकर प्रत्येक बच्चे के मन में कुछ विचार है जो आपस में शेयर करते हुए उसकी विवेचना करते हैं। आपसी चर्चा के द्वारा एक नतीजे पर पहुँचते हैं जिसे प्रयोग द्वारा करके देखते हैं। आवश्यकता के अनुसार बदलाव करके अपने प्रयोग को ओर सही करने का कार्य करते हैं।

यहाँ समस्या का समाधान अपने–अपने समूह में निकालने मात्र से समूह का कार्य खत्म नहीं होता है। प्रत्येक समूह को अपने कार्य को प्रस्तुत करने का मौका दिया जाता है जिसमें समस्या समाधान के लिए अपनाए तरीकों तथा नतीजों पर समूह अपने अनुभव प्रस्तुत करता हैं। प्रत्येक समूह के नतीजे को अन्य समूहों के नतीजों से तुलना करते हैं यानि आपस में आकलन करते हैं। इस प्रकार एक कक्षा–कक्ष में चल रहे सहयोगात्मक–सहभागिता शिक्षण की विशेषताएं निम्न हो सकती हैं :

- समूह का सामूहिक लक्ष्य होता है।
- भिन्न सामाजिक–आर्थिक परिस्थिति के बच्चों के समूह का सदस्य होना।
- समस्या समाधान की प्रक्रिया में प्रत्येक बच्चा स्वयं सीखता है साथ ही अन्य बच्चों को सीखने में मदद करता है।
- सीखने की प्रक्रिया के प्रत्येक चरण में शिक्षक बच्चों को आवश्यक पृष्ठपोषण देते हैं।
- एक से अधिक लोगों के अनुभव, सोचने का तरीका, हल करने की रणनीति आदि से तुलना करके देखना तथा स्वयं की सोच में किस प्रकार का बदलाव लाना है इसे समझने का अवसर प्रत्येक बच्चे को मिलता है।
- इस विधि से बच्चों में स्व आकलन करने की योग्यता साथ ही पहले किए कार्य में सुधार करने की इच्छा भी प्रबल होगी।
- दूसरों की भावनाएँ, विचार एवं इच्छा को समझना तथा उसे शामिल करते हुए उचित तरीके से प्रतिक्रिया करने की योग्यता विकसित करने में उपयोगी है।

समूह शिक्षण एवं आकलन

प्रत्येक समूह कार्य में बच्चों के सतत समग्र आकलन के लिए अनेक संभावनाऐं निहित हैं। कब, कहाँ, कैसे एवं किन–किन तरीकों/तकनीकों से आकलन किया जाना है इसके बारे में सटीक धारणा शिक्षक को अपनी योजना में निर्धारित करनी है।

समूह कार्य से आकलन के कौन–कौन से तरीके को शिक्षक अपना सकते हैं ? आइए निम्न लिखित कथनों को पढ़ते है।

- समूह ने कैसे व कितने उपयोगी तरीके से कार्य किया है शिक्षक इस बात को आकलित कर सकते हैं। (**शिक्षक द्वारा आकलन**)
- स्वयं के समूह की ताकत (सकारात्मक पक्ष) एवं आगामी सामूहिक कार्य में और किन–किन बातों का ध्यान रखना है इन बातों पर **समूह स्व आकलन** कर सकता है।
- समस्या के समाधान के लिए समूह द्वारा चुने गए तरीके एवं उसमें प्रत्येक सदस्य के योगदान के बारे में समूह सदस्य आपस में/**परस्पर आकलन** कर सकते हैं।
- प्रत्येक समूह द्वारा चुने गए तरीके एवं उनके द्वारा निकाले गए निष्कर्ष/नतीजों के बारे में प्रत्येक **समूह आपस में आकलन** करेगा साथ ही अन्य समूहों की अपेक्षा स्वयं के समूह की ताकत एवं सीमाओं को भी पहचान सकेगा।

7.4 आकलन/मूल्यांकन तकनीकों व उपकरणों के प्रकार

यदि हम इस बात को मानते हैं कि हर बच्चा अपनी ही शैली से सीखता है और वह केवल स्कूल में नहीं सीखता है। ऐसे में आकलन करते समय दो चीज़ों पर ध्यान देना अनिवार्य है –

- बच्चे वास्तव में क्या सीख रहे हैं यह जानने और समझने के लिए आकलन की बहुत सी विधियाँ उपयोग में लेना।
- बच्चे के बारे में तरह–तरह के स्रोतों से जानकारी एकत्रित करना।

इस बात को ध्यान में रखते हुए यहाँ सतत एवं व्यापक आकलन के कुछ उपकरणों व तकनीकों के बारे में विवरण दिया गया है। ये उदाहरण विभिन्न तकनीकों एवं उसमें सतत आकलन किस प्रकार किया जा सकता है इनके बारे में समझ बनाने में आपका सहयोग करेंगे।

यहाँ हम अवलोकन, चैकलिस्ट, पोर्टफोलियो, परियोजना कार्य, प्रदत्त कार्य के बारे में बातचीत करेंगे।

7.4.1 चैक लिस्ट :

चैकलिस्ट की आवश्यकता क्यों ?

इस बात से आप सहमत होंगे कि, बच्चों के किसी खास व्यवहार/क्रिया के बारे में सुव्यवस्थित तरीके से दर्ज़ किए गए उल्लेख या विवरण हमें उनके सीखने समझने या व्यवहार संबंधित पहलु की तरफ ध्यान केन्द्रित करने में मदद करते हैं। चैक लिस्ट सीखे गए का परिणाम आकलित करने, सीखने की Performance को आकलित करने के लिए एक उपयोगी उपकरण है। आप चैकलिस्ट का उपयोग निश्चित लक्ष्य को आधार मानकर अपेक्षित विवरण प्राप्त करने, सीखने–सिखाने के महत्त्वपूर्ण घटकों को आकलित करने के लिए कर सकते हैं।

अब आपके मन में यह प्रश्न होगा कि हम चैकलिस्ट कैसे बनायें? कुछ चैक लिस्ट आप कक्षा में कार्य की आवश्यकता को देखते हुए बच्चों के साथ मिलकर तैयार कर सकते हैं, जैसे–उप समूह कार्य का आकलन, परस्पर आकलन, कोई खास अवलोकन, भ्रमण, सामूहिक कार्य आदि.... जबकि कुछ अन्य प्रकार की चैकलिस्ट शिक्षक बच्चों के सतत आकलन के लिए नियोजित कर सकते हैं। प्रत्येक चरण का उद्देश्य भिन्न होने पर उपकरण में भिन्नता भी होगी।

विभिन्न संदर्भ में कक्षा की आवश्यकता के अनुसार शिक्षकों और बच्चों द्वारा मिलकर तैयार की गई कुछ चैकलिस्ट के नमूने इस प्रकार हैं :–

1. **परस्पर आकलन चैकलिस्ट :** इस प्रकार की चैकलिस्ट बच्चों द्वारा अपने काम के परस्पर आकलन के लिए कक्षा में किए जा रहे कार्य के अनुरूप तैयार की जा सकती है। उदाहरण के तौर पर कक्षा 5 में प्रयोग कार्य के समूह आकलन के लिए तैयार की गई चैकलिस्ट के सूचक इस प्रकार हैं –

कक्षा : दिनांक.....

कार्य के सूचक	समूह 1	समूह 2
समूह ने अलग– अलग प्रयोग करके देखे हैं ?		
समूह ने प्रयोग के प्रतिवेदन में मुख्य बातों को शामिल किया गया है ?		
क्या प्रतिवेदन में आवश्यक चित्रों को भी बनाया है ?		
अन्य समूह द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दे पाये हैं ?		
समूह की प्रस्तुति में एवं बातचीत में सभी सदस्यों ने भाग लिया है ?		

समूह सदस्य.....

2. **समूह सदस्यों का आपस में आकलन चैकलिस्ट –** जैसा कि ऊपर उल्लेखित किया गया है, किसी एक विशेष कार्य/व्यवहार या कौशल को लेकर समूह में कार्यरत बच्चे अपनी सहमति से चैक लिस्ट तैयार कर सकते हैं। इस प्रकार का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत है।

   कक्षा 4 की 'शबाना' द्वारा अपने समूह के अन्य सदस्यों के अवलोकन कौशल के लिए इस्तेमाल की गई चैक लिस्ट निम्नवत् है –

क्र. सं.	अवलोकन	मेरे समूह के सदस्य				
		मीना	राकेश	साजिता	परमजीत	जीतू
1.	अवलोकन कार्य में आवश्यक सूचनाओं/बातों को नोट करके लाए हैं ?	✓	✓	✓	×	✓
2.	वस्तुओं के बीच के फ़र्क समझ गए हैं।	✓	✓	✓	✓	×
3.	विवरणों को क्रमबद्ध रूप से नोट किया है।	✓	×	✓	✓	✓
4.	एकत्रित जानकारी को तालिका बनाकर लिखा है?	✓	×	×	×	×

3. **शिक्षक द्वारा तैयार की गई चैक लिस्ट –** इस प्रकार की चैकलिस्ट में पाठ्यक्रम के अनुसार अधिगम क्षेत्रों के अन्तर्गत विभिन्न सूचकों/कौशलों का निर्धारण किया जाता है। कक्षा कक्ष में कार्य करवाने के दौरान बच्चों के सीखने में आए परिवर्तनों को विशिष्ट उद्देश्य के संदर्भ में माह में एक से दो बार आकलन कर सकते हैं।

इस प्रकार की चैकलिस्ट से आप को निम्न बातों को समझने में मदद मिल सकती है –

- अवधारणा में बच्चे की सीखने की स्थिति को समझने में तथा उसे किस प्रकार की मदद की आवश्यकता है इसे पता करने में।
- विशिष्ट स्थिति के अनुरूप नियोजन करने में।

4. **स्व–आकलन चैकलिस्ट** – आकलन सीखने की प्रक्रिया का ही हिस्सा है, बच्चे स्वयं ही अपने अधिगम और प्रगति का आकलन करने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षक बच्चों की स्वयं का आकलन करने में मदद कर सकते हैं। बच्चों से क्या अपेक्षा की जा रही है, इसकी बेहतर समझ विकसित करने में मदद की जा सकती है, अपने काम और प्रदर्शन को आलोचनात्मक नज़रिए से देखने के लिए अनुभव प्रदान किए जा सकते हैं।

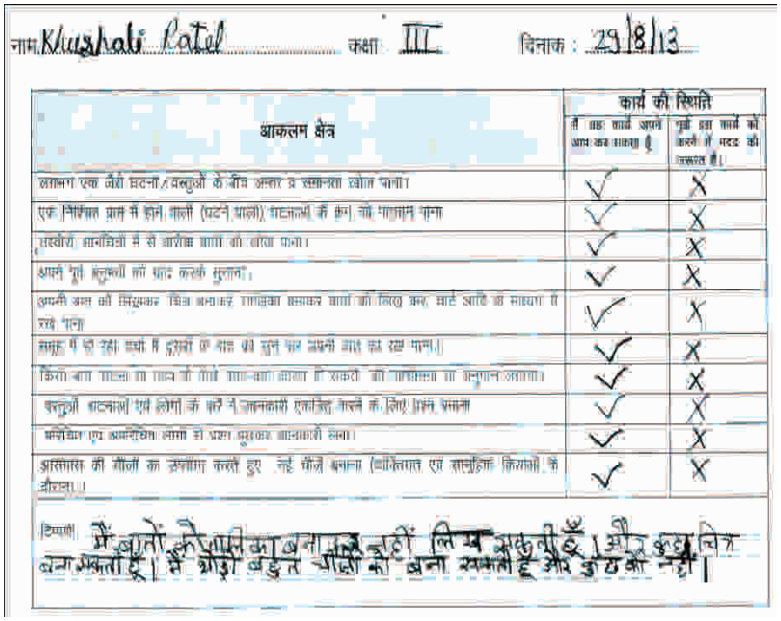

7.4.2 अवलोकन टिप्पणी

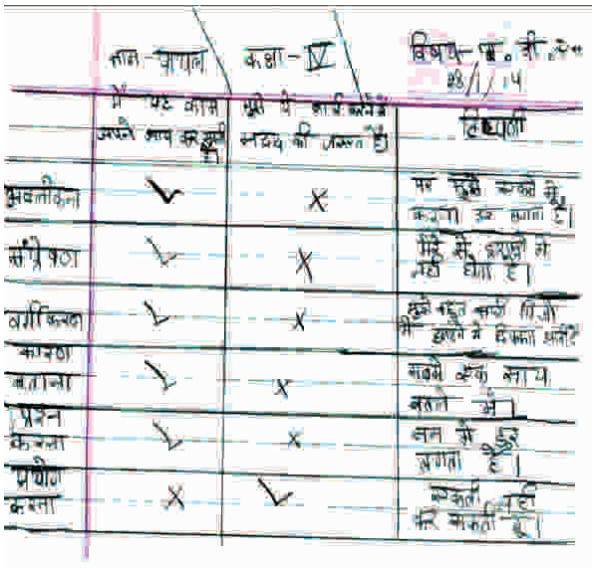

शिक्षण कार्य के दौरान आप लगातार हर बच्चे की कार्य की स्थिति जैसे उसने क्या सीखा है, उसे किसी कार्य को करने में किस प्रकार की समस्या आई है ? अब उस बच्चे के साथ आगे क्या कार्य करवाना है आदि के बारे में लगातार सोचते रहते हैं। इस प्रकार की बातें जो एक बच्चे के कार्य को समझने, आगे का कार्य नियोजित करने एवं बच्चे को पृष्ठपोषण देने में आप को बहुत मदद करते हैं। इन बातों को यदि आप कुछ समय के अन्तराल में नोट करते रहें तो आवश्यकता के अनुरूप आप इन जानकारियों का प्रयोग बच्चों के साथ शिक्षण कार्य के नियोजन में और बच्चे को सीखने में मदद करने के लिए पृष्ठपोषण देने में कर सकते हैं।

कार्यशाला में एक शिक्षक का सवाल था "अवलोकन टिप्पणी किन–किन तरीकों व संदर्भों में ली जा सकती है" ?

जैसा कि आपने उपर्युक्त उदाहरणों में देखा कि कुछ सूचनाएँ आप पढ़ाने के दौरान किए गए अवलोकन के आधार पर प्राप्त कर सकते हैं। कुछ सूचनाएँ बच्चों के कार्य के पूर्व नियोजित अवलोकन पर भी आधारित हो सकती हैं।

उदाहरण के तौर पर एक विद्यालय के कक्षा 3, मेरी दुनिया के पाठ पर कार्य के दौरान एक शिक्षिका द्वारा लिखे गए अवलोकन नोट्स का विवरण आप देख कसते हैं –

मोहित कुमार – (6 सितम्बर 2013) मोहित बहुत बारीकी से अवलोकन करता है। अवलोकित पेड़ के चित्र में उसने चींटियों को भी बनाया, जो उस वक्त पेड़ पर चढ़ रही थी। चित्र द्वारा अभिव्यक्ति की स्थिति ठीक है परन्तु लेखन कार्य में मदद की आवश्यकता है।

(24 अक्टूबर 2013) मोहित नींबू और आम के पत्ते लाया था। इनमें अन्तर को आसानी से समझ पा रहा था परन्तु समानता को खोजने में मदद की आवश्यकता है।

इस प्रकार के अवलोकनों के मज़बूत पक्ष ये हैं कि अलग–अलग समयावधि के दौरान आकलन किया जा सकता है। यहाँ भिन्न–भिन्न गतिविधियों के दौरान भी बच्चे की स्थिति नोट कर सकते हैं। विषयगत कार्यों के अलावा बच्चे की रुचियाँ, व्यवहार सम्बन्धित पक्षों के बारे में भी अवलोकन नोट कर सकते हैं।

7.4.3. पोर्टफोलियो

समय की एक निश्चित अवधि में बच्चों द्वारा किए गए कार्यों का संग्रह, जो उसके अधिगम की प्रगति को दर्शाने वाले कार्य के नमूने भी हो सकते हैं। इससे उसकी सालभर में हुई प्रगति को बताया जा सके। इस प्रकार के कार्यपत्रक में प्रतिबिम्बात्मक टिप्पणी भी दर्ज़ करना चाहिए। पोर्टफोलियो के द्वारा बच्चे की वास्तव में क्या उपलब्धियाँ रही हैं इस बारे में अध्यापक और अभिभावक दोनों की समझ बनती है। हम पोर्टफोलियो में बच्चों के शैक्षिक कार्य से संबंधित निम्नलिखित तथ्यों को शामिल कर सकते हैं –

- कार्यपत्रक।
- अवलोकन टिप्पणी, प्रयोग कार्य के दौरान या बाद में तैयार किए गए नोट्स।
- फील्ड रिपोर्ट, साक्षात्कार– प्रश्नावली, रिपोर्ट, चित्र, तालिका, ग्राफ।
- सर्वे–फॉरमेट, सर्वे का प्रतिवेदन।
- प्रगति आकलन पत्रक।
- स्व आकलन टिप्पणी।
- सृजनात्मक कार्य।

पोर्टफोलियो के संधारण में बच्चे की भागीदारी भी महत्वपूर्ण पक्ष है। इसे हम कार्यपत्रकों के चयन एवं व्यवस्थित संधारण के रूप में सुनिश्चित कर सकते हैं।

7.4.4 परियोजना कार्य

शब्दकोश में इसका अर्थ योजना या रूपरेखा तैयार करने से है। परियोजना कार्य एक प्रकार का अन्वेषण है जो बच्चों द्वारा व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से किया जाता है। एक सत्र में बहुत सी परियोजनाएँ करवाई जा सकती हैं। आम तौर पर इन परियोजनाओं के माध्यम से सूचनाओं, तथ्यों, आँकड़ों का संग्रह और विश्लेषण करवाया जाता है। थीम पर आधारित सीखने की प्रक्रिया में परियोजना कार्य महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। परियोजना कार्य द्वारा छात्रों में कौन–कौन से कौशल विकसित हो सकते हैं, इस बारे में चर्चा करते हैं:–

- परियोजना के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए कार्य की योजना तैयार करना, विभिन्न स्रोतों से जानकारी/आँकड़े एकत्रित करना, सुसंगत सामग्री का चयन करना, अवलोकन करना, प्रयोग करना, परिणामों का विश्लेषण करना, प्राप्त ज्ञान का संश्लेषण करना।

- समूह में मिलकर कार्य करने से सहयोग की भावना विकसित होती है।
- सहपाठियों, वयस्कों से तर्क करना, विचारों का आदान–प्रदान करना जैसे कौशलों के विकास के लिए अवसर उपलब्ध होते हैं।

परियोजना कार्य कैसे आयेजित करें ? – इस कार्य में बच्चे एवं शिक्षक दोनों की सहभागिता अपेक्षित होती है। किसी थीम पर परियोजना कार्य की योजना बनाने के दौरान आप निम्न चरणों को अवश्य ध्यान रखें –

(1) परियोजना कार्य की तैयारी (2) क्रियान्वयन (3) कार्य के प्रतिवेदन प्रस्तुति एवं समेकन।

कक्षा 3 के बच्चों के साथ **थीम भोजन** पर कार्य के दौरान करवाए गए परियोजना कार्य का विवरण इस प्रकार है।

शिक्षिका – "मैंने भोजन थीम की योजना में ही परियोजना संबंधित गतिविधि शामिल की थी। पाठ–3 'कहाँ–कहाँ से भोजन' पर कार्य के दौरान पुस्तक में पृष्ठ संख्या 16 पर दिए गए राजस्थान के विभिन्न भागों की खाने की चीज़ों पर बातचीत करने के लिए मैंने सूची में से कुछ व्यंजनों के चित्र दिखाया (क्योंकि बच्चों ने खाने की कई चीज़ें देखी नहीं)। बातचीत के बाद बच्चों से पूछा कि क्या आप भी इस तरह के चार्ट तैयार करना चाहते हो। बच्चे बहुत खुश हुए और 'हाँ' में जवाब दिया। आरम्भिक बातचीत में ही जिन बच्चों के घर में अख़बार आता था उन्हें खाने की चीजों/व्यंजनों के चित्र काट कर लाने की जिम्मेदारी दी गई। उपसमूह बनाने के दौरान ऐसे बच्चों को प्रत्येक उपसमूह में रखा गया।

थीम पर कार्य के समाप्ति तक बच्चों ने काफी चित्र एकत्रित किए है। बच्चों ने उपसमूह (चार–चार) में चार्ट पर चिपकाने का कार्य किया। प्रत्येक समूह द्वारा तैयार किए गए चार्ट को कक्षा में प्रदर्शित किया गया। एक चार्ट उदाहरण के तौर पर यहाँ प्रस्तुत है।

शिक्षक अवलोकन टिप्पणी – इस कार्य के बारे में शिक्षक का अनुभव निम्न प्रकार है।

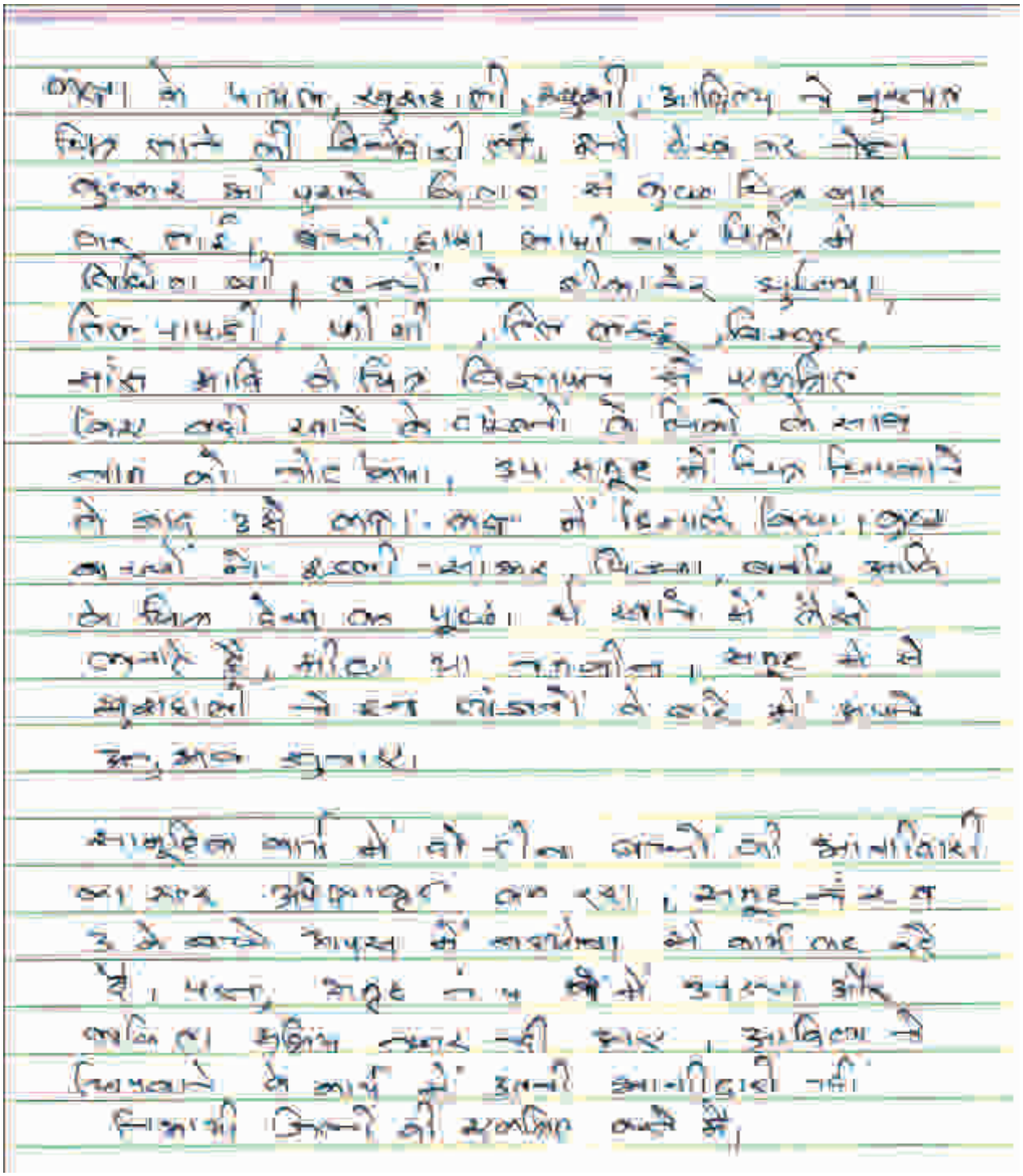

परियोजना कार्य से सम्बन्धित अन्य उदाहरण के लिए ''अध्याय–8 कक्षा–कक्ष से गतिविधियों'' में भी भी देखें।

अध्याय–8

कक्षा–कक्ष से गतिविधियाँ

प्रस्तावना

हमारे विद्यालयों में इस्तेमाल की जा रही पर्यावरण अध्ययन पुस्तक **मेरी दुनिया** के अनुरूप शिक्षण कार्य कराते हुए सतत आकलन करने के कुछ उदाहरण विभिन्न विद्यालयों से लिए हैं। शिक्षक साथियों के ये अनुभव आपको कक्षा–कक्ष में बालकेन्द्रित और गतिविधि आधारित शिक्षण कराने एवं सतत आकलन करने में मदद करेंगे।

यहाँ पाठ्यपुस्तक एवं पाठ्यपुस्तक के अतिरक्त कक्षा में आयोजित की गई गतिविधियाँ आयोजित करने के चरण, प्रत्येक चरण में सतत आकलन किन–किन पक्षों पर कर सकते हैं ? तथा प्रत्येक गतिविधि में विषय विशेष के किन–किन सूचकों का सतत आकलन कर सकते हैं ? शिक्षक अवलोकन टिप्पणी किस प्रकार दर्ज़ कर सकते हैं आदि के संदर्भ में कुछ उदाहरण लेकर विस्तार से बताया गया है।

दी गई गतिविधियाँ, कार्यपत्रक एवं पाठ्यपुस्तक की सहायता से विषयवस्तु एवं बच्चों की ज़रूरत और सीखने की शैली के अनुसार आप स्वयं भी अच्छी गतिविधियों का सृजन कर पाएंगे। हमें आशा है कि आपको इनसे कुछ मदद मिल पाएगी।

8.1 पर्यावरण अध्ययन में सीखने के सबूत

बच्चों के सीखने की जानकारी के स्रोत उनकी क्रियाएँ (वे क्या करते हैं और क्यों नहीं करते हैं?) और उनके काम के परिणाम या उत्पादन (वे जो लिखते हैं, चित्र बनाते हैं, निर्माण करते हैं) होते हैं। इनमें से क्रियाओं का आकलन उसी समय करना होता है जब बच्चा उसमें संलग्न रहता है। यह प्रायः अवलोकन के माध्यम से संभव हो पाता है। जहाँ तक संभव हो बच्चों के आकलन में दोनों स्रोत (क्रिया और उत्पादन/परिणाम) का इस्तेमाल करना चाहिए क्योंकि दोनों में से एक अकेले बच्चे की स्थिति को समझने में पर्याप्त नहीं है। अध्ययन के साथ– साथ बच्चों ने क्या सीखा ? इसे दर्शाने वाले प्रदर्शन, उत्पादन, प्रतिक्रिया होनी चाहिए जो यह बताये कि बच्चों के सीखने का स्तर क्या है ? इन तथ्यों के आकलन के माध्यम से हम बच्चों के गुणात्मक मूल्यांकन करने का प्रयास करते हैं। नीचे तालिका में पर्यावरण अध्ययन में सीखने की क्रियाएँ एवं उत्पादन को दिखाया गया है। आइए इनके बारे में विस्तार से अध्ययन करते हैं।

क्रियाएँ	उत्पादन
बच्चों के समूह कार्य	अवलोकन नोट
व्यक्तिगत कार्य	निष्कर्ष के नोट/टिप्पणी
बच्चों की प्रस्तुतियाँ	प्रतिक्रिया टिप्पणी
प्रयोग कार्य	तालिका, ग्राफ, प्रयोग के प्रतिवेदन
चर्चा	सर्वे – फॉर्मेट एवं सर्वे का प्रतिवेदन

वाद – विवाद भूमिका परक खेल नाटक	साक्षात्कार – प्रश्नावली , प्रतिवेदन फील्ड ट्रिप और प्रतिवेदन चित्र, मॉडल, संकलन, एल्बम मैप, स्केच, सृजनात्मक लेखन पोस्टर,

अब आपके मन में सवाल होंगे कि इन सबूतों के आधार पर आकलन कैसे करेंगे? इनमें किन–किन बातों को देखा जा सकता है? आदि। आइए इनमें से कुछ क्रियाएँ एवं उत्पादन के आकलन किस प्रकार कर सकते हैं इसके बारे में विस्तार से चर्चा करते हैं।

8.1.1 सर्वे

खोजपरक अध्ययन में सर्वे के द्वारा जानकारी एकत्रित करना, सर्वे के लिए प्रश्न/समस्या को पहचानना एवं समस्या का समाधान करने के लिए विकल्पों पर विचार करना एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है। जब हम सर्वे की बात करते हैं तो समस्याओं को पहचानना, संबंधित विषयवस्तु के बारे में जानने के लिए प्रश्न तैयार करना, तैयार किए प्रश्नों के आधार पर जानकारी एकत्रित करना, एकत्रित जानकारियों के विश्लेषण करके प्रतिवेदन तैयार करना सामूहिक विचार–विमर्श द्वारा संभावित हल खोज पाना आदि। इस गतिविधि के महत्त्वपूर्ण पक्ष हैं। कक्षा–कक्ष में सर्वे कार्य को तीन मुख्य चरणों में आयोजित किया जाना चाहिए। ये निम्नलिखित हैं –

प्रथम चरण – इस चरण में बच्चे व्यक्तिगत/उपसमूह में बातचीत करके सर्वे के लिए प्रश्न तैयार करते हैं। व्यक्तिगत/प्रत्येक उपसमूह द्वारा तैयार प्रश्नों को कक्षा में प्रस्तुत किया जाता है। बातचीत एवं सामान्यीकरण द्वारा एक सामान्य प्रश्न/फॉर्मेट तैयार करते हैं।

यहाँ बच्चों के सीखने के सबूत के रूप में अपने उप समूह में तैयार किए सर्वे प्रश्न/प्रारूप है। इसके आकलन से आपको बच्चों के सीखने की स्थिति के बारे में निम्न जानकारियाँ मिल सकती हैं। जैसे –

- बच्चों ने समस्या को कितना समझा ?
- क्या तथा किस प्रकार की जानकारी एकत्रित करनी हैं ? इसके बारे में बच्चों की समझ।
- प्रश्न/फॉर्मेट की संरचना जानकारियाँ को व्यवस्थित रूप से रिकॉर्ड करने में कितनी सहायक है ? इस बारे में बच्चों की समझ।

द्वितीय चरण – इस चरण में बच्चे सर्वे कार्य में संलग्न होते है। कक्षा में तैयार किए गए प्रश्नों के आधार पर जानकारियाँ एकत्रित करते हैं।

तृतीय चरण – सर्वे कार्य से संबंधित प्रतिवेदन तैयार करना। यह कार्य सामूहिक/व्यक्तिगत रूप से कर सकते हैं। कक्षा में प्रतिवेदन की प्रस्तुति करना। इस प्रकार विभिन्न उपसमूह द्वारा एकत्रित जानकारी/अनुभव के विश्लेषण एवं चर्चा द्वारा शिक्षक सामन्यीकरण करने में सहयोग करते है। इस प्रतिवेदन से बच्चों के सीखने से संबंधित किन–किन तथ्यों का आप सतत आकलन कर सकते हैं।

- सर्वे कार्य से एकत्रित डाटा/जानकारियों को व्यवस्थित करके प्रस्तुत करने की स्थिति।

- कार्य के दौरान बच्चों के मन में उभरे विचार/सवाल।
- सर्वे के दौरान आई समस्याएँ/उपलब्धियाँ।
- बच्चे के अपने आस–पास के क्षेत्र की समस्या के बारे में उसकी की प्रतिक्रिया/विचार।

उदाहरण–1 यहाँ एक विद्यालय के कक्षा–5 के बच्चों द्वारा पाठ खेती काम के प्रारम्भ में किए गए सर्वे का विवरण प्रस्तुत हैं।

शिक्षिका – खेती के कार्य के बारे में बच्चों से की गई आरम्भिक बातचीत में यह पता चला कि अधिकांश बच्चों को इस कार्य के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है। अतः मैंने अपनी योजना में परिवर्तन करते हुए सर्वप्रथम खेत में चल रहे काम व खेती के उपकरणों की जानकारी करने के लिए सर्वे करना निश्चित किया। इस काम में निम्न प्रकार कार्य किया गया –

बच्चे उपसमूह में बातचीत करके सर्वे के प्रश्न पत्र तैयार किये। उपसमूह द्वारा तैयार प्रश्नों को समूह में बातचीत करके एक प्रपत्र तैयार किया गया। प्रश्न को समेकित करने के दौरान मैं प्रश्नों की उपयुक्तता पर भी बातचीत की गई। इन प्रश्नों को बच्चों ने पाठ्यपुस्तक में दिए गए प्रश्नों से तुलना करके आवश्यक संशोधन किया गया। उपसमूह द्वारा तैयार किये गये प्रश्नों का नमूना इस प्रकार है –

प्रश्न बनाना

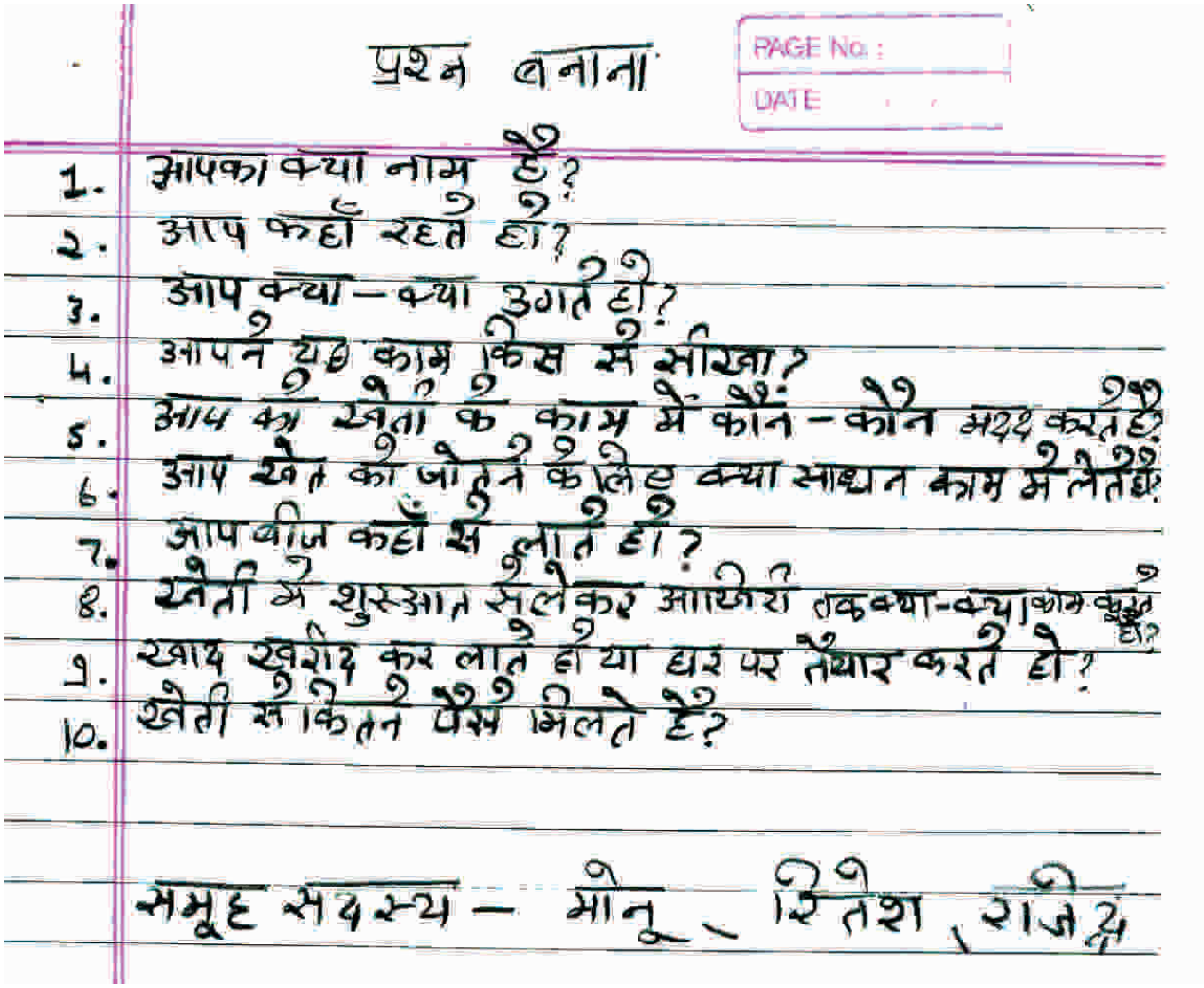

PAGE No.:
DATE

1. आपका क्या नाम है?
2. आप कहाँ रहते हो?
3. आप क्या–क्या उगाते हो?
4. आपने यह काम किस से सीखा?
5. आप के खेती के काम में कौन–कौन मदद करते हैं?
6. आप खेत को जोतने के लिए क्या साधन काम में लेते हैं?
7. आप बीज कहाँ से लाते हो?
8. खेती में शुरुआत से लेकर आखिरी तक क्या–क्या काम करते हो?
9. खाद खरीद कर लाते हो या घर पर तैयार करते हो?
10. खेती से कितने पैसे मिलते हैं?

समूह सदस्य – मोनू, रितेश, राजेन्द्र

हमने विद्यालय के पास में ही रहने वाले एक किसान को बातचीत के लिए आमंत्रित किया। जिनके साथ बच्चों के संवाद का विवरण इस प्रकार हैं –

विषय –पर्यावरण अध्ययन

पता करो– किसान से खेती के बारे में जानकारी प्राप्त करना। (पूछताछ / साक्षात्कार द्वारा)

कक्षा: V समूह सदस्य: सावित्री, संगीता, मंजु, निशा, राजेंद्र, मोनू

1. आपका नाम क्या है ?

बाबूलाल जी।

2. क्या आपके पास स्वयं के खेत हैं ? हाँ खुद के खेत हैं।

3. आप अपने खेत में क्या–क्या बोते हैं ?

गेहूं, चने, सरसों, जौ, मूली, पालक धनिया बोते हैं।

4. आपको क्या बोना है और कब बोना है, यह आप कैसे तय करते हैं ?

अभी तो हम गर्मियों की बाड़ी में टमाटर, बैंगन, मिर्च, भिण्डी आदि बोते हैं बाद में गेहूं बोते हैं। बारिश में मक्का बाजरा बोते हैं।

5. आप बीज कहाँ से लाते हैं ?

हम बीजों की दुकान से लाते हैं।

6. बीज बोने से लेकर फसल काटने तक आप क्या–क्या करते हैं ?

पहले खेत में बीज बोने की तैयारी करते हैं तैयारी में खेत की जुताई करना, खाद डालना खेत को लेवल करने के लिए पाटा फेरते हैं। उसके बाद क्यारियाँ बनाते हैं फिर बीज लगाया जाता है। बीज बोने के बाद में पानी दिया जाता है, जो भी बीज बोया है वो बीज 5-7 दिन में निकल आएगा, उसके बाद में गुड़ाई करना खरपतवार निकालना, पौधों का ध्यान रखना, समय से दवाई देना आदि कार्य करते हैं।

7. क्या आपकी फसल कभी खराब हुई है ? हाँ हुई है बहुत बार

8. फ़सल किन–किन कारणों से खराब होती है ?

बिना मौसम के बारिश होने पर फसल खराब हो जाती है। अधिक गर्मी से भी होते हैं।

9. सर्दी, गर्मी, बारिश का फसल पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

सर्दी में बहुत पाला पड़ने से फसल खराब हो जाती है।
गर्मी में अधिक ज्यादा गर्मी पड़ने पर भी, बाढ़ आने पर भी फसल खराब होती है।

अनुभव – किसान से बातचीत बच्चों के लिए कए अलग अनुभव था। प्रश्न के जवाब ध्यान से सुनना एवं समझ न आने पर पुनः पूछना रहा। 'पाला पड़ना', शब्द बच्चों के लिए नया था। गर्मी और सर्दी में बोने वाली फसलों की जानकारी भी नया ही था। खेती के कार्य को समझने का एक अच्छा अनुभव था।

प्रतिवेदन प्रस्तुति पर चर्चा के दौरान कुछ बच्चों का यह कहना था कि किसान पूरे परिवार के साथ बहुत मेहनत करते हैं। इस चर्चा में बच्चों ने खेती की प्रक्रिया को जानने के साथ–साथ एक किसान के जीवन के कठिन परिश्रम को भी समझने का अवसर मिला।

किसान से बातचीत के बाद प्रत्येक बच्चे अपने अनुभव लिखे, एक बच्चे का अनुभव इस प्रकार है–

मेरा अनुभव

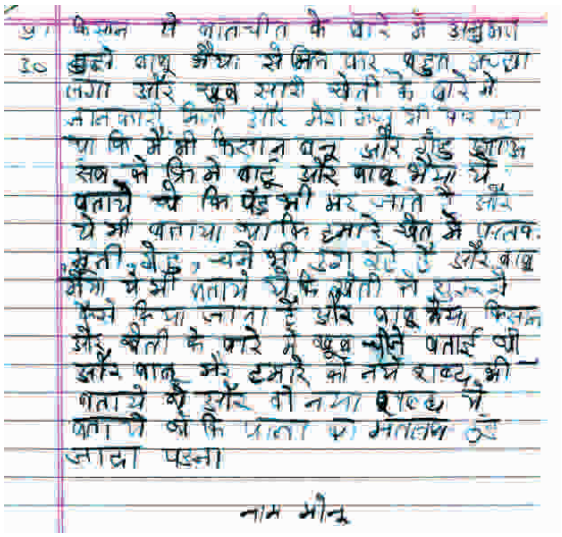

उदाहरण–2 पानी थीम पर कक्षा–4 के बच्चों के साथ किए गए सर्वे का विवरण यहाँ प्रस्तुत है। इस सर्वे में बच्चों ने अपने विद्यालय के शौचालय एवं उसमें पानी की व्यवस्था के अवलोकन करके निम्नलिखित प्रारूप में दर्ज़ किया गया –

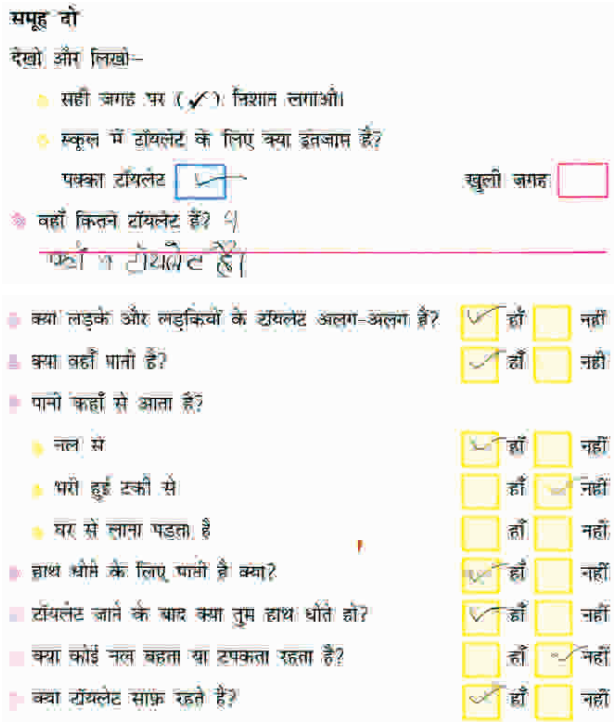
समूह दो

देखो और लिखो–

- सही जगह पर (✓) निशान लगाओ।
- स्कूल में टॉयलेट के लिए क्या इंतजाम है?

पक्का टॉयलेट ☑ खुली जगह ☐

- वहाँ कितने टॉयलेट हैं? 4

लड़कों के टॉयलेट हैं।

क्या लड़के और लड़कियों के टॉयलेट अलग-अलग हैं?	✓ हाँ	☐ नहीं
क्या वहाँ पानी है?	✓ हाँ	☐ नहीं
पानी कहाँ से आता है?		
नल से	☑ हाँ	☐ नहीं
भरी हुई टंकी से	☐ हाँ	☑ नहीं
घर से लाना पड़ता है	☐ हाँ	☐ नहीं
हाथ धोने के लिए पानी है क्या?	☑ हाँ	☐ नहीं
टॉयलेट जाने के बाद क्या तुम हाथ धोते हो?	✓ हाँ	☐ नहीं
क्या कोई नल बहता या टपकता रहता है?	☐ हाँ	☑ नहीं
क्या टॉयलेट साफ़ रहते हैं?	✓ हाँ	☐ नहीं

आकलन – सर्वे गतिविधि में आप निम्न क्षेत्र व सूचकों के आकलन कर सकते हैं।

आकलन के क्षेत्र	सूचक
संप्रेषण	समूह में बातचीत करना, रिपोर्ट तैयार करना।
प्रश्न करना	बच्चे जो कुछ जानना चाहते थे उसके लिए उनके द्वारा तैयार किए गये प्रश्न तथा प्रश्नों की उपयुक्तता।
सहयोग	बच्चों की मिल–जुलकर काम करने की स्थिति।

8.1.2 साक्षात्कार (प्रश्नावली तैयार करना, प्रतिवेदन)

जानकारी एकत्रित करने का एक अन्य महत्त्वपूर्ण उपकरण के रूप में हम साक्षात्कार को देख सकते हैं। पाठ्यपुस्तक में **पता करो** के नाम से संबंधित गतिविधि में कई अवसर दिए गए हैं। आप इनमें से या इसके अलावा आपके परिवेश के अनुरूप भी कार्य चुनकर करवाएँ। साक्षात्कार कार्य के क्रियान्वयन को हम तीन चरणों में देख सकते हैं।

प्रथम चरण – संबंधित विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए साक्षात्कार प्रश्न व्यक्तिगत रूप से तैयार करना। उपसमूह में बातचीत करके प्रश्नावली तैयार कराना। इसे पुनः कक्षा में शेयर करके बातचीत एवं सामान्यीकरण द्वारा प्रश्नावली को अन्तिम रूप देना।

एक बच्चे द्वारा व्यक्तिगत स्तर पर तैयार की गई साक्षात्कार प्रश्नावली से बच्चे के किन पक्षों के बारे में आकलन कर सकेंगे ? इस संदर्भ में मोटे स्तर पर हम दो बातों को देख सकते हैंः–

- प्रश्न बच्चे के विचार के बारे में स्पष्ट जानकारी दे सकने वाले होंगे।
- प्रश्नों के माध्यम से सटीक जानकारी सुनिश्चित करने के संबंध में बच्चे की योग्यता स्पष्ट होगी।

द्वितीय चरण – उप समूह में या व्यक्गित स्तर पर साक्षात्कार करना।

साक्षात्कार के दौरान प्राप्त उत्तरों के आधार पर बच्चे नये प्रश्न कर सकते हैं, तभी साक्षात्कार में जीवन्तता आएगी।

तीसरा चरण – साक्षात्कार प्रतिवेदन तैयार करना एवं स्वयं के काम का अनुभव एवं समीक्षा लिखना।

साक्षात्कार के बाद बच्चों द्वारा तैयार किए गए प्रतिवेदन शिक्षक को किस प्रकार के सबूत/साक्ष्य देते हैं–

- साक्षत्कार में बच्चों द्वारा प्राप्त नई जानकारी।
- पूर्व के विचारों के साथ इस नई जानकारी को जोड़कर व्याख्या करने की योग्यता।
- साक्षात्कार के दौरान बच्चे की संप्रेषण योग्यता।

उदाहरण 1 – आइए साक्षात्कार में एक विद्यालय के कक्षा–3 के बच्चों द्वारा किए गए काम के उदाहरण से समझते हैं–

चरण 1 साक्षात्कार पूर्व तैयारी –

अ. **सवाल की प्रस्तुति –** सब्जी वाले के सर्वे के समय ही यह तय था कि साक्षात्कार संबंधित कार्य बच्चों के समूह में पुनः कराना है। इसी श्रंखला को आगे बढ़ाते हुए शिक्षक ने एक बढ़ई का साक्षात्कार बच्चों से कराने की योजना तैयार की। इसी के ही अगले कदम के रूप में बच्चों से व्यक्तिगत स्तर पर प्रश्न तैयार कराना रहा।

ब. **सवाल तैयार करना –** व्यक्तिगत स्तर पर तैयार सवालों को लेकर उप समूह में बातचीत करके अन्तिम रूप देना रहा।

चरण 2 क्रियान्वयन – इस चरण में प्रत्येक बच्चे ने साक्षात्कार किये। बच्चों द्वारा लिए साक्षात्कार का एक नमूना इस प्रकार है –

27.1.2014 नाम=हरीशा कक्षा=III

पाठ-काम अपने-अपने

लकड़ी का काम करने वालों से उनके काम की प्रश्न पूछकर जानकारी एकत्रित करना-

प्र.1 आपका क्या नाम है?
उ.1 मेरा नाम श्री विद्यपाल जांगिड़ है।

प्र.2 आप लकड़ियाँ कहां से लाते हैं?
उ.2 मैं लकड़ियाँ बाजार से लाता हूँ।

प्र.3 आप ये काम कबसे करते हो?
उ.3 मैं ये काम बचपन से कर रहा हूँ।

प्र.4 आपने ये काम किससे सीखा?
प्र.4 मैंने ये काम अपने पिता से सीखा है।

प्र.5 आप कितने बजे दुकान खोलते हो?
उ.5 मैं नौ बजे दुकान खोलता हूँ।

प्र.6 आपको घर से दुकान आने में कितना समय लगता है?
उ.6 मुझे घर से दुकान आने में बीस मिनट लगते हैं।

प्र.7 आप कहाँ रहते हो?
उ.7 मैं खोरा बीसल रहता हूँ।

प्र.8 आपकी और कौन-कौन सी दुकान है?
उ.8 मेरे सीर्फ एक ही दुकान है।

प्र.9 आपका फोन न: क्या है?
मेरा फोन न: 8890482348 है।

प्र.10 आपके साथ और कौन-कौन यहां काम करता है?

उ.10 मेरे साथ नाथू अंकल और काम करते हैं।

आकलन – इस गतिविधि में शिक्षक निम्नलिखित क्षेत्र व सूचकों का आकलन कर सकते हैं।

आकलन के क्षेत्र	सूचक
संप्रेषण	समूह में बातचीत करना, रिपोर्ट तैयार करना।
प्रश्न करना	बच्चे जो कुछ जानना चाहते थे उसके लिए उनके द्वारा तैयार किए गये प्रश्न तथा प्रश्नों की उपयुक्तता।
सहयोग	बच्चों की मिल–जुलकर काम करने की स्थिति।

8.1.3 प्रयोग प्रतिवेदन –

प्रयोग को डिज़ाइन करने तथा उसके क्रियान्वयन के साथ ही प्रयोग का प्रतिवेदन भी तैयार होता है। इस प्रतिवेदन के आधार पर बच्चे प्रयोग के नतीजों/परिणाम को दूसरों के सामने प्रस्तुत करते हैं। प्रयोग के दौरान अवलोकन से शिक्षक, बच्चों के प्रयोग करने का तरीका, प्रस्तुत करने का तरीका आदि का आकलन कर सकते हैं, परन्तु प्रयोग के प्रतिवेदन को बाद में भी देखा जा सकता है यह बच्चे के पोर्टफोलियो का हिस्सा भी बनता है।

कक्षा 4 के छात्र प्रकाश का प्रश्न है कि मुझे अपने प्रयोग के प्रतिवेदन में किन–किन चरणों के बारे में लिखना चाहिए ? यह सवाल शिक्षक के मन में भी हो सकता है। प्रयोग का प्रतिवेदन लिखने के बिन्दु निम्नलिखित हैं –

- प्रयोग के लिए आवश्यक सामग्री।
- प्रयोग करने का तरीका–चित्र के साथ।
- प्रयोग के दौरान क्या–क्या देखा ?
- प्रयोग के निष्कर्ष/नतीजे।

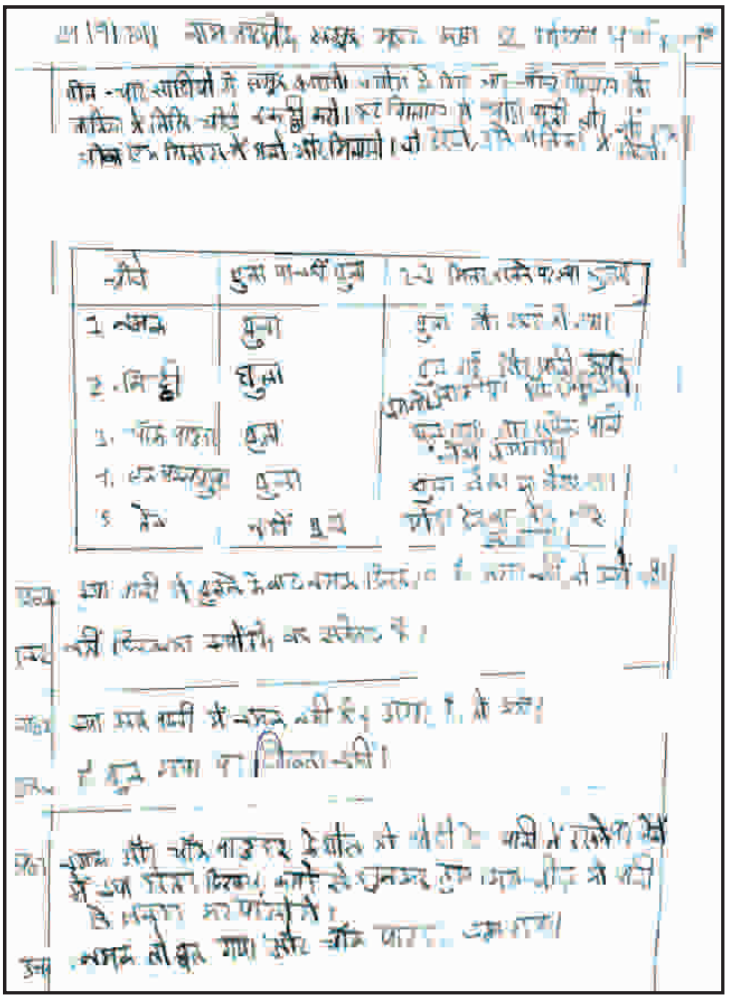

आम तौर पर बच्चे प्रयोग का डिज़ाइन एवं क्रियान्वयन समूह में करते हैं परन्तु प्रत्येक बच्चे को स्वयं का प्रतिवेदन तैयार करना है। यहाँ शिक्षक सीखने की सन्दर्भ में बच्चे के किन बातों का आकलन करता है?

- प्रयोग कार्य में बच्चे के स्वयं के अनुमान को उसके निष्कर्ष से तुलना करके, विचार/चिंतन में आये परिवर्तन का आकलन शिक्षक कर सकता है।
- इसके अलावा बच्चे के संप्रेषण कौशल को भी देख सकता है।

यहाँ पर कक्षा 5 के बच्चे द्वारा तैयार किए गए प्रतिवेदन का एक नमूना आप देख सकते हैं–

8.1.4 मॉडल बनाना :

कार्यशाला में एक शिक्षक ने पूछा ''पर्यावरण अध्ययन में मॉडल बनाने का क्या स्थान है ?'' हो सकता है यह सवाल आपके मन में भी हो।

सुनकर, पढ़कर या देखकर पहचानी गई कई वस्तुओं की तस्वीरें प्रत्येक बच्चे के मनो मस्तिष्क में होती हैं। इन्हें मूर्त रूप देने का कार्य मॉडल बनाने के जरिए किया जा सकता है। उदाहरण के तौर पर आप के विद्यालय का मॉडल बनाना है तो आप विद्यालय के बारे में ओर गहराई से जानेंगे– कितने कमरे है, कमरों के साइज, दरवाजे–खिड़कियों की संख्या, आंगन में पेड़ एवं अन्य वस्तुएँ आदि। इस प्रकार जानकारी प्राप्त कर मॉडल बनाने के बाद उसके बारे में बच्चे की अवधारणा और गहरी होगी।

इस बात का विशेष ध्यान रखे कि मॉडल न तो दुकान से खरीदें न ही घर के वयस्कों से बनवायें। बच्चे खुद मॉडल बनाएँ तथा मदद के रूप में आपकी भूमिका होनी चाहिए। जैसे– पाठ्यसामग्री उपलब्ध कराना, प्रोत्साहित करना, विचार में विविधता लाने हेतु बीच–बीच में प्रश्न करना आदि। बच्चे द्वारा तैयार इस प्रकार के मॉडल विज्ञान कॉर्नर में या कक्षा–कक्ष में प्रदर्शित अवश्य करें।

उदाहरण 1 – पत्र पेटी का मॉडल बनाना।

कक्षा–3 में यात्रा थीम पर कार्य के दौरान शिक्षक ने बच्चों से पत्र पेटी बनाने का कार्य करवाया। पत्र पेटी के मॉडल बनाने के लिए बच्चों ने पुनः इसका (पत्र पेटी का ठोस एवं चित्र रूप में) बारीकी से अवलोकन किया तत्पश्चात आवश्यक सामग्री की एक लिस्ट तैयार की गई। कुछ सामग्री विद्यालय से उन्हें मिल गयी परन्तु कुछ सामग्री (घेवर के गोल एवं लम्बे डिब्बे, रंग–बिरंगे कागज) बच्चों ने अपने स्तर पर जुटायी।

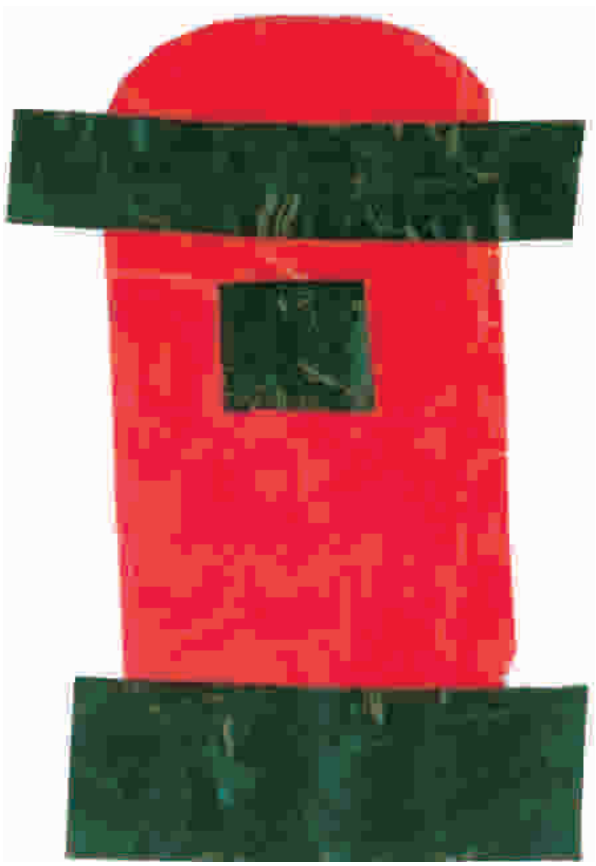

सामग्री को लेकर अपने–अपने उप समूह में कार्य आरम्भ किया। समूह में मिलकर कार्य करने और अपने विचारों को प्रस्तुत करने, चर्चा करके एक दूसरे की बात को मानने व खारिज करने का एक जीवन्त उदाहरण यहाँ देखने को मिला।

पत्र पेटी तैयार होने के बाद बच्चों ने अपने–अपने मन पसंद लोगों को पत्र लिखकर पेटी में ड़ालने का कार्य किया।

आकलन : इस कार्य में आकलन के क्षेत्र एवं सूचक निम्नलिखित हैं।

आकलन के क्षेत्र	सूचक
अवलोकन	डाक पेटी तैयार करने के लिए आवश्यक सूचनाओं को एकत्रित करना।
संप्रेषण	समूह में बातचीत करना। एक दूसरे की बात को सुनना।
प्रयोग	मॉडल तैयार करने के लिए आवश्यक सामग्री को जुटाना, उसका चयन करना। निर्माण के दौरान प्रत्येक चरण को क्रमबद्ध रूप से संपन्न करना।
सहयोग	बच्चों की मिल जुलकर काम करने की स्थिति। एक–दूसरे को सहयोग करना।
चित्रकला	संलग्नता, अभिव्यक्ति।

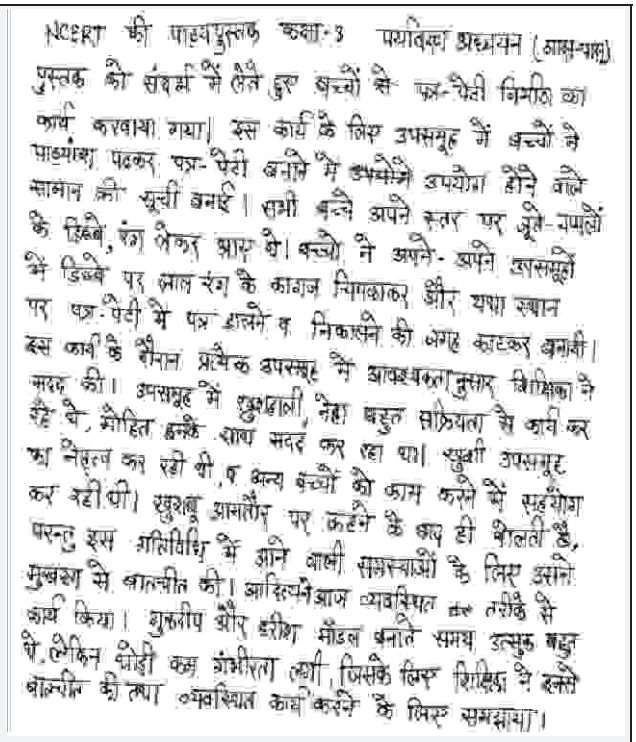
NCERT की पाठ्यपुस्तक कक्षा-3 पर्यावरण अध्ययन (आस-पास) पुस्तक को संदर्भ में लेते हुए बच्चों से पत्र-पेटी निर्माण का कार्य करवाया गया। इस कार्य के लिए उपसमूह में बच्चों ने पाठ्यांश पढ़कर पत्र-पेटी बनाने में उपयोगी होने वाले सामान की सूची बनाई। सभी बच्चे अपने स्तर पर जूते-चप्पलों के डिब्बे, रंग लेकर आए थे। बच्चों ने अपने-अपने उपसमूहों में डिब्बे पर लाल रंग के कागज चिपकाकर और यथा स्थान पर पत्र-पेटी में पत्र डालने व निकालने की जगह काटकर बनाई। इस कार्य के दौरान प्रत्येक उपसमूह में आवश्यकतानुसार शिक्षिका ने मदद की। उपसमूह में खुशबाली, नेहा बहुत सक्रियता से कार्य कर रही थे, मोहित इनके साथ मदद कर रहा था। खुशी उपसमूह का नेतृत्व कर रही थी व अन्य बच्चों को काम करने में सहयोग कर रही थी। खुशबू आमतौर पर कहने के बाद ही बोलती है, परन्तु इस गतिविधि में आने वाली समस्याओं के लिए उसने मुखरता से बातचीत की। आदित्य ने आज व्यवस्थित ढंग तरीके से कार्य किया। गुरुदीप और हरीश मॉडल बनाते समय उत्सुक बहुत थे, लेकिन थोड़ी कम गंभीरता थी, जिसके लिए शिक्षिका ने इनसे बातचीत की तथा व्यवस्थित कार्य करने के लिए समझाया।

उदाहरण 2 – एक अन्य शिक्षक द्वारा माचिस की डिब्बियों से रेलगाड़ी बनाने का कार्य कक्षा 3 की आस–पास पुस्तक से संदर्भ लेते हुए करवाया गया। इस कार्य में शिक्षक का अनुभव निम्नानुसार है।

शिक्षक अनुभव – (कक्षा 3) माचिस की डिब्बियों से रेल बनाने के कार्य में बच्चों ने ही सामग्री एकत्रित करने की जिम्मेदारी ली । कक्षा में मनीष को छोड़कर शेष सभी बच्चों ने सामग्री एकत्रित की। परन्तु इस कार्य में रोहित, निशा, सन्नी कविता, प्रिया ने ज्यादा पहल के साथ काम किया।

बच्चों ने उप समूह बनाकर रेल बनाना प्रारम्भ किया। इसमें डिबिया को जोडने में कोई मदद नहीं ली परन्तु खाली ढक्कन को तार से जोड़ने में व उसे रेल से जोड़ने में मदद की ज़रूरत पड़ी। जब मैं यह कार्य कर रही थी तब अनिल, चन्दु ने मेरे कार्य को गौर से देखा और मेरे जैसे ही अन्य बच्चों को मदद करने लगे। इन बच्चों की गौर से अवलोकन करके बारीकियों को समझने का स्तर व अन्य बच्चों को मदद करने की स्थिति ठीक है। रितिक, रोहित ने जितनी उत्सुकता से सामग्री एकत्रित की, उतनी उसे बनाने में नही रही। कुछ देर बाद वे ही सामग्री को अव्यवस्थित करके छोड़ गए। उनके द्वारा छोड़ी गई सामग्री को समूह के रजनी व संजना ने पूरा किया।

8.1.5 चित्र बनाना

आपके मन यह सवाल आ सकता है कि ''पर्यावरण अध्ययन में चित्र बनाने और अभिनय करने जैसे कार्य का क्या औचित्य है ?'' नई पाठ्यपद्धति के दृष्टिकोण के अनुसार बच्चे की बहु बुद्धिमता (मल्टीपल इंटेलीजेंसीज) का विकास प्रत्येक विषय से जोड़कर करना है, तभी समग्र विकास संभव हो सकेगा। पर्यावरण अध्ययन विषय में संगीत,चित्रकारी,मॉडल बनाना आदि कार्य की बहुत संभावना है। इन कार्यों के माध्यम से बच्चे अपने विचार को अभिव्यक्त कर रहे होते हैं।

उदाहरण 1 – कक्षा तीन के "हम और हमारा परिवार" पाठ पर कार्य की शुरूआत एक शिक्षक द्वारा बच्चों के परिवार से की गई जिसमें बच्चों से मौखिक सुनने के बाद प्रत्येक बच्चे को अपने परिवार के सदस्यों के चित्र बनाना था। बच्चे चित्र बनाने की प्रक्रिया में संलग्न होते हैं।

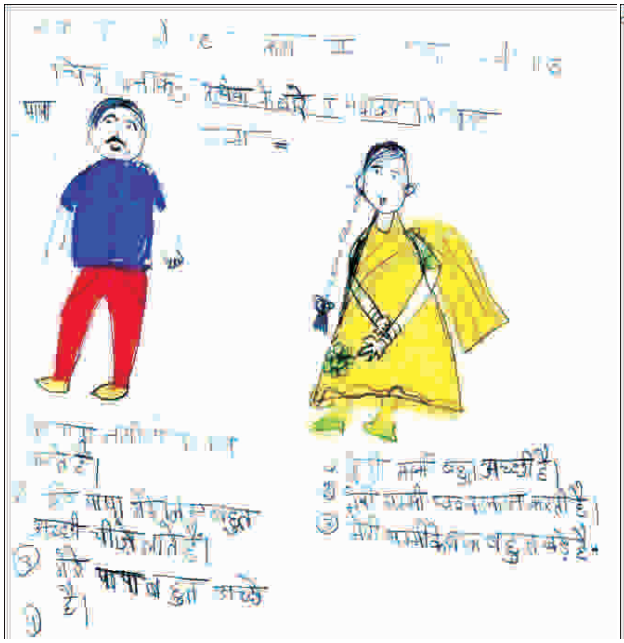

शिक्षक अनुभव - चित्र बनाने के कार्य में सभी बच्चों ने भाग लिया। उनके चित्रों में अधिक बारीक जानकारियाँ हैं। सुमन ने तो अपने चित्र में अपनी मम्मी को कान कटते हुए बनाया है। खुशबू ने अपने छोटे भाई का चित्र अन्य सदस्यों की तुलना में छोटा सा बनाया है। खुशहाली ने अपनी मम्मी के लंबे बालों को भी चित्र में दिखाने का प्रयास किया।

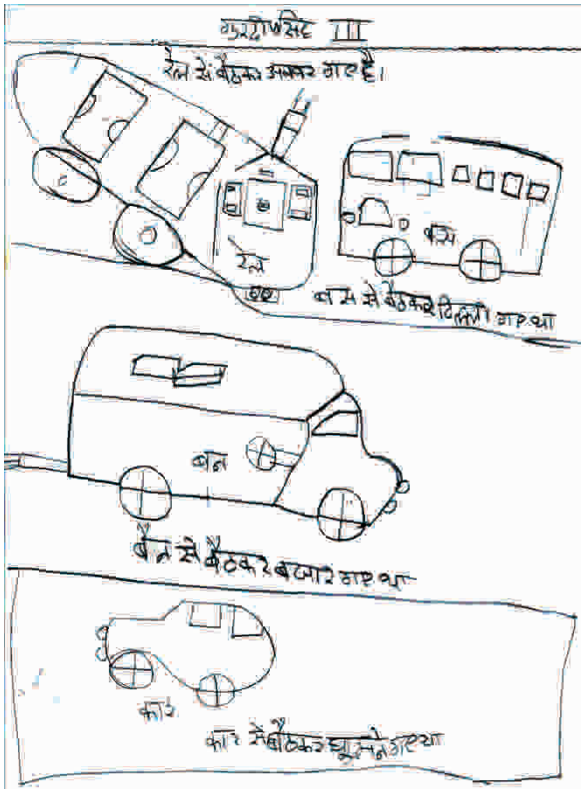

बच्चों के सीखने से संबंधित कई जानकारियाँ उनके चित्रों से प्राप्त होती है जैसे –

- बच्चों के विचार की व्यापकता एवं गहराई।
- आस–पास को अवलोकित करने का तरीका तथा एक्यूरेंसी।
- चित्र के माध्यम से विचार को अभिव्यक्त करने की योग्यता।

8.1.6 अभिनय करना

पर्यावरण अध्ययन में बच्चों के अभिनय करने के कौशल का उपयोग किस प्रकार करते हैं कुछ उदाहरणों से समझते हैं –

पानी थीम पर कार्य के दौरान शिक्षक ने कक्षा 3 के 30 बच्चों को पाँच से छः बच्चों के उपसमूह में विभाजित किया और बच्चों से कहा कि पानी की बरबादी को रोकने के लिए आप क्या–क्या कर सकते हो? प्रत्येक समूह को कोई एक उपाय सोचना है व इस बात को अभिनय के द्वारा प्रस्तुत करना हैं। बच्चे अपने उपसमूह में बातचीत करके क्या व कैसे करना है को निर्धारित करते हैं। बीच–बीच में आवश्यकता के अनुसार शिक्षक मदद करते है।

समूहवार प्रस्तुति का विवरण इस प्रकार है –

समूह एक ने दिखाया कि भाई नल को खुला रख कर ब्रुश कर रहा है और पानी बेकार बह जा रहे है।

समूह दो का दृश्य कुछ इस तरह से था, आँटी जी मोटर चालू करके पाईप से गाय को नहला रही हैं और उसके शरीर के मैल को रगड़ कर निकालते समय मोटर को बंद करना भूल जाती है।

समूह तीन के दृश्य में माँ सब्जियाँ धोकर पानी नाले में फेंकती है तो बेटी कहती है, माँ इस पानी को हम गमले में भी डाल सकते हैं।

समूह चार की प्रस्तुति में घर के टपकने वाले नल को दिखा कर बेटी अपने पिताजी से इसे तुरन्त ठीक कराने की बात करती है।

इस प्रकार अन्य समूहों ने भी प्रस्तुतियाँ दी। इन प्रस्तुतियों में मुख्य रूप से निम्न बातें सामने आई –

- पानी बरबाद किन–किन संदर्भों में होता है ?
- पानी को बरबाद होने से कैसे रोका जा सकता है?

इन गतिविधियों के अधिगम परिणाम में बच्चों ने कक्षा में चर्चा किए गए विभिन्न संदर्भों और उपायों के अलावा अपने परिवेश के अन्य स्थितियों को लेते हुए प्रस्तुतियाँ तैयार की है। कार्य के दौरान बच्चों ने अपने उप समूह में भिन्न–भिन्न संदर्भों पर निर्णय लिए जैसे– कौन किस तरह की भूमिका निभाएगा? किसे क्या बोलना है ? शारीरिक गतियों व चेहरे के हावभाव से उपयुक्त संप्रेषण करना।

उपर्युक्त गतिविधि के माध्यम से शिक्षक निम्नलिखित सूचकों पर बच्चों के आकलन कर सकते हैं–

आकलन के क्षेत्र	सूचक
अभिव्यक्ति	दूसरे लोगों की बात सुनना, राय व्यक्त करना, हाव–भाव द्वारा विचार व्यक्त करना, सृजनात्मक लेखन।
विश्लेषण	परिकल्पना करना, निष्कर्ष निकालना, अनुमान लगाना।
सहयोग	पहल करना, सहभागिता।

शिक्षक अवलोकन टिप्पणी

खुशी – खुशी ने दृश्य चुनने से लेकर अभिनय करने तक सक्रिय भूमिका निभाई तथा समूह के प्रत्येक सदस्य के साथ हर तरह का सहयोग किया। वह अपने अंग संचालन तथा संवाद द्वारा सहज अभिव्यक्त

कर रही थी। **आदित्य**– आदित्य को शुरूआत में झिझक महसूस हो रही थी। अपने साथियों के सहयोग से उसने संवाद बोलने का प्रयास किया। अभिनय कार्य में पहल करने के लिए आदित्य को और प्रोत्साहन की आवश्यकता है।

खुशबू – खुशबू ने अभिनय में भैंस वाली आँटी को समझाने की भूमिका चुनी थी। संवाद को स्पष्टता एवं आवश्यक अंग संचालन के साथ बोलने का प्रयास पूर्व से अच्छा था। उसने समूह के अन्य सदस्यों को भी अभिनय करने में सहयोग किया। स्क्रिप्ट लिखने के कार्य एवं समूह में व्यवस्था बनाए रखने के कार्य में भूमिका सराहनीय है।

8.1.7 फील्ड विजिट – भ्रमण

फील्ड विजिट अध्यापकों को बच्चों के आकलन से जुड़े विभिन्न पहलुओं को समझने का एक अच्छा अवसर प्रदान करते हैं जैसे जाने से पूर्व, भ्रमण के दौरान और लौटते समय क्या–क्या किया ? भ्रमण के जरिये संग्रह करने, रिकॉर्ड करने, चर्चा करने और सूचनाओं को वास्तविक और अर्थपूर्ण संदर्भों में प्रस्तुत करने के अवसर भी मिलते हैं।

यह भ्रमण गतिविधि **कक्षा 4** के बच्चों ने **मंडी के सैर नामक** पाठ को समझने के लिए की है। शिक्षक ने पास की ही सब्जी मंडी का भ्रमण आयोजित किया। जैसा कि पूर्व में बताये अनुसार शिक्षक ने अवलोकन पर जाने से पूर्व जानकारी एकत्रित करने के लिए बच्चों से प्रश्न बनवाये हैं। ये प्रश्न निम्न लिखित हैं –

- आपका नाम क्या है ?
- आप कितने सालों से यह काम कर रहे हैं ?
- आप कितने बजे से कितने बजे तक यह काम करते हैं ?
- इन फल और सब्जियों को कौन उगाता है ?
- आप ये सब्जियाँ कहाँ से लाते हैं ?
- सबसे ज्यादा कौन–सी सब्जी बिकती है ?
- कौन–सा फल सबसे ज्यादा बिकता है ?
- मंड़ी में कुल कितनी दुकानें हैं ?
- कौन से फल आप गिन कर बेचते हैं ?
- कौन से फल आप तोल कर बेचते हैं ?

अवलोकन के बाद कार्य

अवलोकन के पश्चात बच्चे इस पर आधारित व्यक्तिगत प्रतिवेदन/नोट तैयार करते हैं। उसके बाद अपने उपसमूह में इसे शेयर करते हैं तत्पश्चात् उपसमूह मिलकर रिपोर्ट तैयार करके कक्षा में प्रस्तुत करते हैं। एक समूह का प्रतिवेदन यहाँ प्रस्तुत है –

''हमने एक सब्जी बेचने वाली आंटी से बातचीत की। उन्होंने बताया कि वे सब्जियाँ मुहाना मंडी से ले कर आती हैं। सभी सब्जियाँ तोलकर बेची जाती हैं। मंडी सुबह 8–9 बजे खुल जाती है और रात को 10 बजे बन्द हो जाती है।''

मीनाक्षी व तन्नु के समूह ने कहा– ''सब्जी वाले ने हमारे आधे सवालों का ही जवाब दिया है । वह चिढ़ गया और हमसे पूछा तुम लिख क्यों रहे हो ? कहीं पुलिस में तो रिपोर्ट नहीं करोगे?'' उसने आगे जवाब देने से मना कर दिया।

एक अन्य समूह ने अपने प्रतिवेदन में चित्र बनाकर प्रस्तुत किया जिसमें देखे गए प्रत्येक स्थान को नाम सहित दर्शाया है।

एक छात्र का **व्यक्तिगत प्रतिवेदन** इस प्रकार है – ''दुकान में पपीते सेब के ऊपर रखे हुए थे, नींबू और अनन्नास एक तरफ रखे हुए थे। अंगूर दुकान में टंगे हुए थे। हमारे द्वारा सवाल पूछने पर दुकान वाला हँसने लगा। वह इस मंडी में 10 साल से दुकान चला रहा है।''

इस गतिविधि के द्वारा शिक्षक किन–किन सूचकों का आकलन कर सकते हैं, आइए देखते हैं –

आकलन के क्षेत्र	सूचक
संप्रेषण	रिपोर्ट तैयार करना, वृतांत सुनाना, और चित्र बनाना। फल बेचने वालों को सुनना, उनसे बातचीत करना।
वर्गीकरण	अलग–अगल दुकानों में फल और सब्जियाँ रखने के तरीकों में फ़र्क करना, भिन्न–भिन्न प्रकार के फलों के आकारों में तुलना करना।
प्रश्न करना	बच्चे मंडी के बारे में बहुत कुछ जानना चाहते थे उसके लिए बच्चों द्वारा तैयार किए गए प्रश्न, प्रश्नों की उपयुक्तता।
सहयोग	बच्चों की मिल जुलकर काम करने की स्थिति ।

शिक्षक अवलोकन टिप्पणी – इस कार्य के संदर्भ में शिक्षक के विचार निम्नवत हैं –

''सर्वे के प्रथम चरण में बातचीत के दौरान कुछ बच्चों ने शंका व्यक्त की थी कि सब्जी वाले से कैसे प्रश्न पूछें ? वो बतायेगा भी या नहीं ? कहीं हमें डाँट न दें। यदि वे पूछें ये सवाल क्यों पूछ रहे हो तो हम क्या जवाब दें ? बच्चों की शंकाओं और समस्याओं पर बात करना जरूरी लगा। इस मुद्दे पर बातचीत में राहुल व राजेन्द्र का कहना था कि पहले से क्यों घबरा रहे हो? पूछ कर देखें। कुल मिलाकर इस कार्य के प्रथम चरण से लेकर अंतिम चरण तक बच्चों की भागीदारी का स्तर बहुत अच्छा रहा। सब्जी वाले से सवाल करने का पक्ष सभी बच्चों के लिए बहुत ही रोमांचक रहा। प्रश्न पूछने में घबराने वाले बच्चों ने भी इस कार्य में अच्छी तरह भाग लिया। सब्जियों के दाम पूछने वाला कार्य एक समूह ठीक प्रकार से नहीं कर पाया। कक्षा में बातचीत करके ठीक से दाम निकालने का कार्य समझाना रहा। बच्चों का कहना था कि इस प्रकार के कार्य हम आगे भी करना चाहते हैं।''

8.1.8 कारण बताना – अनुमान लगाना और परिकल्पना करना

उदाहरण 1 – कक्षा 5 के पाठ **चित्तौड़गढ़ की सैर** पर कार्य का आरम्भ आमेर के किले के बारे में बच्चों के अनुभव सुनने के बाद शिक्षक ने किले की कुछ तस्वीर दिखाई। ये तस्वीर उन बच्चों को ध्यान में रखकर ली गई जिन्होंने किला नहीं देखा है। तत्पश्चात बच्चों को पाठ के चित्तौड़गढ़ के किले के बारे में बातचीत करते हुए व्यक्तिशः प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए दिये गये जो इस प्रकार हैं –

प्रश्न : किले के दरवाज़े इतने बड़े क्यों बनाए गए होंगे ?

प्रश्न : किले के दरवाजे में छोटा दरवाज़ा क्यों बनाया होगा ?

प्रश्न : आपने इस तरह के दरवाजे और भी कहीं देखे हैं ?

इस चरण में बच्चे अपने अनुमान के आधार पर संभावित कारणों पर विचार करते हैं और लेखन द्वारा अभिव्यक्त करते हैं। यहाँ मुद्दे पर बच्चों की प्रारम्भिक सोच को शिक्षक जान सकते हैं।

शिक्षक– "अच्छा अब तुम पहले सवाल के बारे में जो लिखा हैं एक–एक बच्चा पढ़कर सुनाओ।'' बच्चों के विचार को सुनते हैं और ब्लैक बोर्ड पर सामान्यीकरण करके लिखते हैं। प्रथम सवाल के बारे में बच्चों के विचार इस प्रकार हैं –

- किसी का स्वागत करने के लिए बड़े दरवाजे बनाए होंगे।
- उन्हें बड़े दरवाज़े अच्छे लगते होंगे इसलिए बनाया होगा।
- चोर और डाकुओं के डर से बड़े दरवाज़े बनाए जाते थे।
- क्योंकि पहले राजा महाराजाओं के बड़े–बड़े रथ,हाथी, ऊँट गाडियाँ, पालकी आदि निकला करते थे। इस कारण से बड़े गेट बनाए जाते थे।

उक्त बिन्दुओं को लेकर बातचीत की गई। प्रत्येक पर विचार–विमर्श करते हुए बच्चे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि इन में से सबसे ज्यादा उपयुक्त जवाब चौथे नम्बर का है। इस प्रक्रिया में बच्चे स्वयं के विचार को बेझिझक होकर रखने और उस पर पुनःचिंतन करते हुए एक सुलझे हुए विचारक बनने की दिशा की ओर शुरूआत करते हैं। इस प्रकार बच्चे एक तार्किक निर्णय पर पहुँचने की प्रक्रिया को समझ रहे होते हैं।

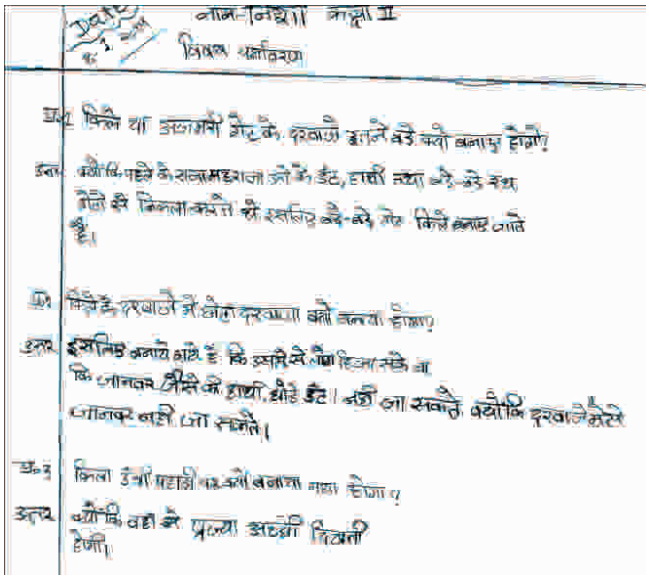

शिक्षक टिप्पणी

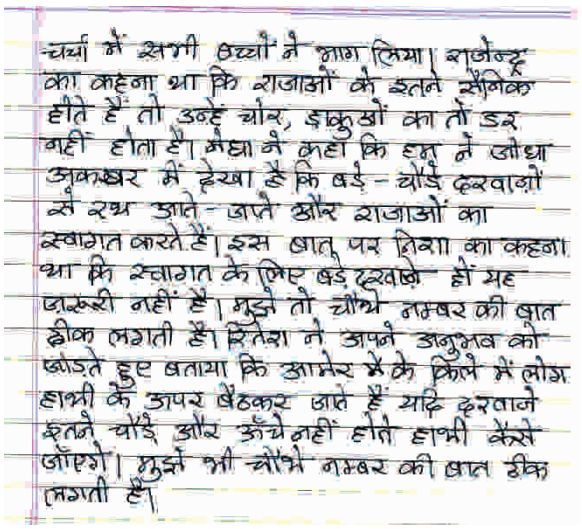

चर्चा में सभी बच्चों ने भाग लिया। राजेन्द्र का कहना था कि राजाओं के इतने सैनिक होते हैं तो उन्हें चोर, डाकुओं का तो डर नहीं होता है। मेघा ने कहा कि हम ने जोधा अकबर में देखा है कि बड़े - चौड़े दरवाजों से रथ आते - जाते और राजाओं का स्वागत करते हैं। इस बात पर निशा का कहना था कि स्वागत के लिए बड़े दरवाजे हों यह जरूरी नहीं हैं। मुझे तो चौथे नम्बर की बात ठीक लगती है। रितेश ने अपने अनुभव को जोड़ते हुए बताया कि आमेर के किले में लोग हाथी के ऊपर बैठकर जाते हैं यदि दरवाजे इतने चौड़े और ऊँचे नहीं होते हाथी कैसे जाएगें। मुझे भी चौथे नम्बर की बात ठीक लगती है।

उदाहरण 2 – एनसीईआरटी कक्षा 4 के पाठ **'पहाड़ों से समुन्दर तक'** के पानी कैसे गन्दा हो जाता होगा ? इसे समझने हेतु पानी में घुलने एवं नहीं घुलने वाली वस्तुओं को पहचानने के प्रयोग में एक उप समूह के विचार विमर्श का कुछ भाग इस प्रकार हैं –

किशन – देखो, पानी का रंग कुछ बदल गया हैं तेल पानी में घुल गया है।

पायल – ध्यान से देखो पानी के ऊपर छोटी–छोटी बूंदें दिख रही हैं ये क्या हैं ?

मीनू– ऐसे लगता है पानी में तेल घुला नहीं है। जैसे शक्कर घुला था।

अन्नू – अभी–अभी हमने नमक भी तो पानी में घोल कर देखा है।

किशन – पर चाय बनाने के लिए पानी और दूध मिलाते हैं तब दोनों मिल जाते हैं।

मीनू – परन्तु चायपत्ती पानी में नहीं घुलती है, मम्मी इसे छानकर अलग निकालती है।

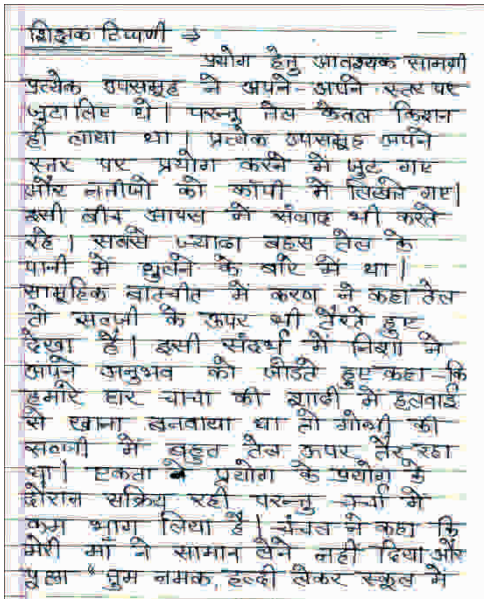

शिक्षक टिप्पणी ⇒
प्रयोग हेतु आवश्यक सामग्री प्रत्येक उपसमूह ने अपने-अपने स्तर पर जुटा लिए थे। परन्तु तेल केवल किशन ही लाया था। प्रत्येक उपसमूह अपने स्तर पर प्रयोग करने में जुट गए और नतीजों को कॉपी में लिखते गए। इसी बीच आपस में संवाद भी करते रहे। सबसे ज्यादा बहस तेल के पानी में घुलने के बारे में था। सामूहिक बातचीत में करण ने कहा तेल तो सब्जी के ऊपर भी तैरते हुए देखा है। इसी संदर्भ में निशा ने अपने अनुभव को जोड़ते हुए कहा – कि हमारे चाचा की शादी में हलवाई से खाना बनवाया था तो सब्जी की सब्जी में बहुत तेल ऊपर तैर रहा था। एकता प्रयोग के प्रयोग के दौरान सक्रिय रही परन्तु चर्चा में कम भाग लिया है। चंचल ने कहा कि मेरी माँ ने सामान लेने नहीं दिया और पूछा "तुम नमक, हल्दी लेकर स्कूल में

इस चर्चा में बच्चे अपने अवलोकन के माध्यम से अर्थ ढूँढ़ने की कोशिश कर रहे हैं। परिकल्पना बनाने का यह आरम्भिक चरण है। सवालों पर गौर करें तो यह स्पष्ट होगा कि स्थिति विशेष पर हांसिल किए ज्ञान का उपयोग अन्य स्थिति में उपजी समस्या को समझने के लिए कर रहे हैं। परिकल्पना निर्मित करने का यह दूसरा चरण है। यहाँ इस बात पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है कि बच्चे स्वाभाविक तरीके से परिकल्पनाओं का निर्माण नहीं करते धीरे–धीरे इस दिशा की ओर बढ़ते हैं।

क्या खाना बनाने जाते हो'?
इस चर्चा में बच्चे अपने पूर्व अनुभव को जोड़ते हुए समस्या का हल खोजने का प्रयास कर रहे थे।

8.1.9 न्याय और समता के प्रति सरोकार

नए पाठ्यपुस्तक में थीम भोजन एवं कार्य और खेल में लिंग संबंधित भूमिका पर बच्चों के साथ बातचीत करने का अलग–अलग अवसर दिए गए हैं। इन पर काम करते हुए यह पाया कि कक्षा में इस पर हो रही बातचीत/चर्चाएँ बच्चों को लैंगिक भेदभाव से जुड़ी रूढ़ियों के प्रति सोचने और बोलने का मौका देती है। इन मुद्दों पर बच्चे प्रचलित पूर्वाग्रहों व रूढ़ियों पर पुनर्विचार कर पाए या बात कर पाए इस काम में मदद करने की दृष्टि से शिक्षक जरूरत के अनुरूप बातचीत के दौरान सवाल भी करते रहे। यहाँ हमने इस कार्य की शुरूआत कुछ चित्रों के माध्यम से की है जिस का विवरण इस प्रकार है।

उदाहरण 1 – कक्षा 4 में उपस्थित बच्चों को 4 उपसमूहों में बाँट दिया गया है और दी गई तस्वीरों को देख कर आपस में बातचीत करते हुए दिए गए सवालों के उत्तर लिखने को कहा गया।

- चित्र में कौन–कौन से पात्र दिखाए गए हैं?
- चित्र में लोग किस–किस तरह के काम में संलग्न हैं?
- चित्र में लोगों द्वारा किए जा रहे कार्यों को देख कर कुछ विशेष या अलग से क्या लग रहा है?
- आपके घर या आस–पास के घरों में भी क्या आपने लोगों को चित्र में दिखाए अनुसार काम करते हुए देखा है?

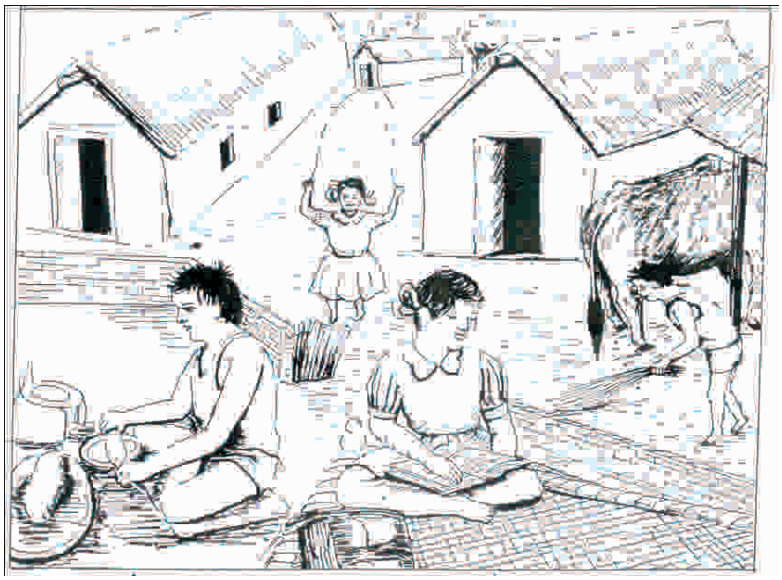

शिक्षिका प्रत्येक उपसमूह में शामिल होकर तस्वीरों के बारे में बच्चों से बातचीत की। बच्चे अपने विचार खुलकर रख पाए इस दृष्टि से बीच–बीच में सवाल भी करती रही।

चित्र देखकर बच्चों की निम्न प्रतिक्रियाएँ रही जैसे –

- चित्र में तो कार्य उल्टे हो रहे हैं।
- हमारे घर में ऐसा नहीं होता है। हम काम करते हैं और हमारे भाई खेलते हैं।

सामूहिक बातचीत में मेघा का कहना था कि "जब मैं और मेरी मम्मी घर पर नहीं होते हैं तब पापा/भाई काम करते हैं।'' एक अन्य बच्ची ने कहा "यदि पापा घर पर रोटी बनाते रहे तो कमाई का काम कौन करेगा ?''

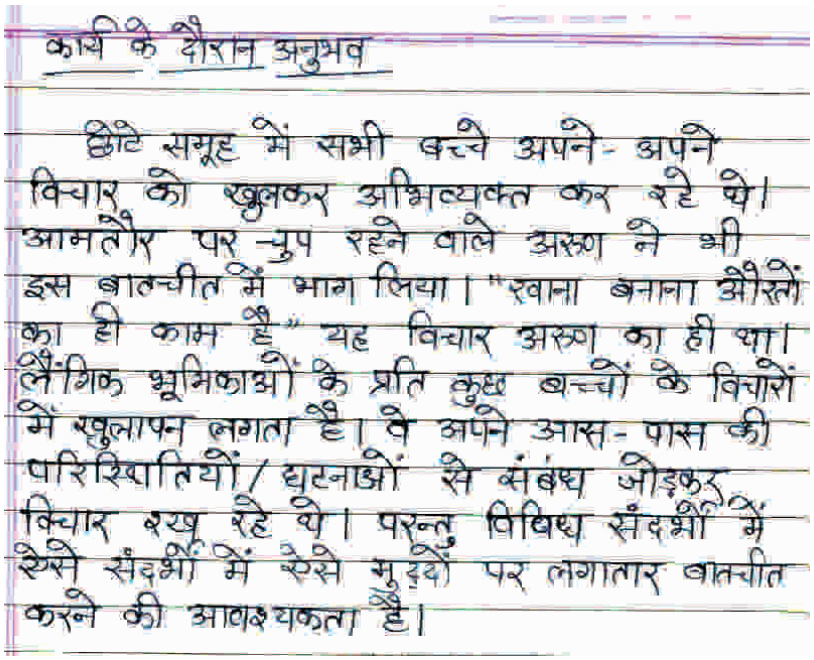
कार्य के दौरान अनुभव

छोटे समूह में सभी बच्चे अपने-अपने विचार को खुलकर अभिव्यक्त कर रहे थे। आमतौर पर चुप रहने वाले अस्ग ने भी इस बातचीत में भाग लिया। "खाना बनाना औरतों का ही काम है" यह विचार अस्ग का ही था। लैंगिक भूमिकाओं के प्रति कुछ बच्चों के विचारों में खुलापन लगता है। वे अपने आस-पास की परिस्थितियों/घटनाओं से संबंध जोड़कर विचार रख रहे थे। परन्तु विविध संदर्भों में ऐसे संदर्भों में ऐसे मुद्दों पर लगातार बातचीत करने की आवश्यकता है।

पूजा ने कहा "हमारे घर में पापा कभी–कभी खाना बनाते हैं।'' निशा का कहना था कि हमारे पास ढाबे में आदमी खाना बनाते हैं और बर्तन भी साफ करते हैं। समूह की एक अन्य बच्ची अन्नु का कहना था" कि मेरे पापा होटल में खाना बनाते हैं परन्तु घर में मम्मी बनाती हैं।'' किशन का भी यही कहना था" कि मेरे पापा गेस्ट हाउस में खाना बनाते हैं और वहाँ सफाई भी करते हैं परन्तु घर पर ज्यादातर मम्मी या मेरी बहन खाना बनाती हैं।''

उदाहरण 2 – कक्षा में उपस्थित 35 बच्चों को 5 उपसमूहों में बाँट दिया गया है और नीचे दी गई दो तस्वीरों को देखने के लिए कहा गया।

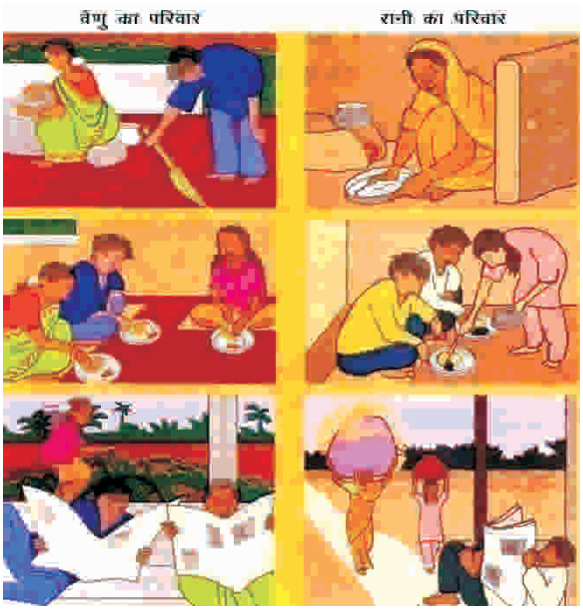

चित्र साभार : आसपास कक्षा–3

- चित्र में कौन–कौन से पात्र दिखाए गए हैं ?
- आपको किसका परिवार अच्छा लगा और क्यों ?
- परिवार के लोग किस–किस तरह के कार्य में संलग्न हैं ?
- क्या आपको व्यक्तियों द्वारा किए जा रहे कार्यों को देखकर कुछ विशेष या अलग से लग रहा है ?

शिक्षिका प्रत्येक समूह में थोड़ी–थोड़ी देर के लिए बैठी और तस्वीरों के बारे में बच्चों से बातचीत की। इससे वे और सोच पाए या बातचीत कर पाए। इस कार्य में मदद करने की दृष्टि से सवाल भी करती रही। इस प्रकार बच्चे अपने उप समूह में इस चित्र को लेकर चर्चा करने लगे।

उपसमूह–1 की मालती ने कहा– मुझे वेणु का परिवार अच्छा लगा क्योंकि यहाँ सब लोग एक साथ खाना खा रहे हैं। मेरे परिवार में भी सभी मिलकर खाना खाते हैं।

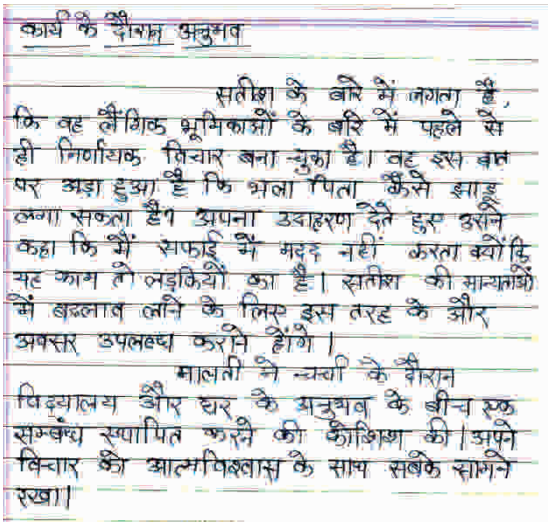

कार्य के दौरान अनुभव

सतीश के बारे में लगता है, कि वह लैंगिक भूमिकाओं के बारे में पहले से ही निर्णायक विचार बना चुका है। वह इस बात पर अड़ा हुआ है कि भला पिता कैसे झाड़ू लगा सकता है? अपना उदाहरण देते हुए उसने कहा कि मैं सफाई में मदद नहीं करता क्योंकि यह काम तो लड़कियों का है। सतीश की मान्यताओं में बदलाव लाने के लिए इस तरह के और अवसर उपलब्ध कराने होंगे।

मालती ने चर्चा के दौरान विद्यालय और घर के अनुभव के बीच एक सम्बंध स्थापित करने की कोशिश की। अपने विचार को आत्मविश्वास के साथ सबके सामने रखा।

प्रत्येक उप समूह ने अपने निष्कर्ष को कक्षा के समक्ष प्रस्तुत किया। इस प्रकार कक्षा में खाना बनाने और खाने में लिंग संबंधित भूमिका को लेकर खुले तौर पर विचार–विमर्श करना रहा।

आकलन के संदर्भ में – प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम में इस क्षेत्र के तहत निम्न सूचकों को शामिल किया है :–

- विभिन्न जीवन अनुभवों व सांस्कृतिक परिवेश से आए हुए बच्चों के विचारों के प्रति संवेदनशील होना।
- अन्य सक्षम व सुविधा वंचित लोगों के प्रति संवेदनशील होना।
- सामाजिक एवं पारिवारिक असमानताओं के प्रति सचेत रहना, इनके संदर्भ में चिंतन व प्रश्न करना।
- पर्यावरण (जानवरों एवं पौधों सहित) को महत्त्व प्रदान करना।

उपरोक्त सूचकों के आकलन के लिए आपको कार्य के दौरान बच्चों के काम से संबंधित अनेक प्रदत्त कार्यों और आपके अवलोकन टिप्पणियों को आधार बनाने की जरूरत है। क्यों कि इन सूचकों को किसी कार्य पत्रक या उपकरण द्वारा जाँचना संभव नहीं है। यहाँ विभिन्न संदर्भों जैसे कक्षा में कार्य के दौरान, अपने सहपाठियों के साथ कार्य के दौरान, बच्चे से व्यक्तिगत बातचीत में, अन्य शिक्षकों के साथ बच्चे के बारे में बातचीत करके, अभिभावकों के साथ बातचीत करके, शाला से बाहर कार्य के दौरान अवलोकन आदि के जरिए उसके व्यवहार में आए बदलाव के बारे में हम राय बना सके हैं। यहाँ इस बात का ध्यान रखना ज़रूरी है कि एक या दो अवलोकन से हम किसी बच्चे के बारे में राय न बनाएँ। अलग–अलग संदर्भों में बच्चे के बारे में अवलोकन को नोट करते जाएं और इस प्रकार दर्ज़ की गई अवलोकन टिप्पणी के आधार पर राय बनाना उचित रहेगा।

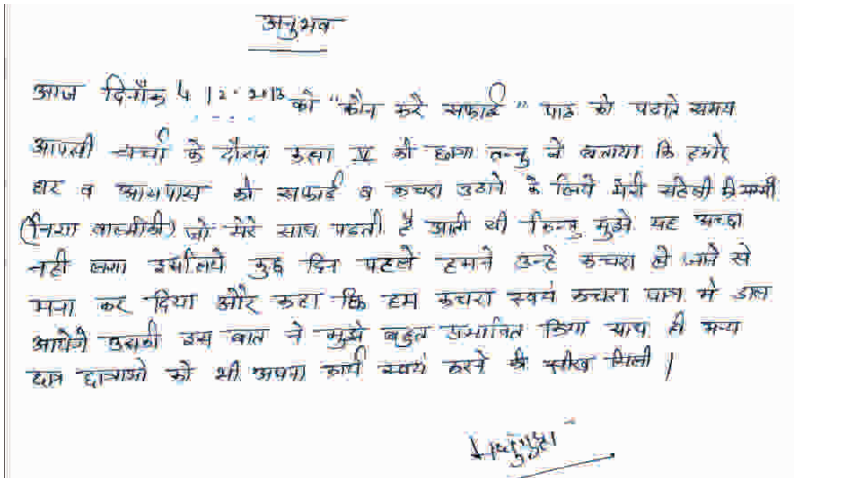

अनुभव

आज दिनांक 4/12/2013 को "कौन करे सफाई" पाठ को पढ़ाते समय आपसी चर्चा के दौरान कक्षा V की छात्रा तन्नु ने बताया कि हमारे घर व आसपास की सफाई व कचरा उठाने के लिये मेरी सहेली की मम्मी (निशा वाल्मीकि) जो मेरे साथ पढ़ती है आती थी किन्तु मुझे यह अच्छा नहीं लगा इसलिये कुछ दिन पहले हमने उन्हें कचरा ले जाने से मना कर दिया और कहा कि हम कचरा स्वयं कचरा पात्र में डाल आयेंगे उसकी इस बात ने मुझे बहुत प्रभावित किया साथ ही अन्य छात्र छात्राओं को भी अपना कार्य स्वयं करने की सीख मिली।

8.1.10 चित्र पठन (अर्थ और भाव ढूँढ़ निकालने) से जुड़े क्रियाकलाप

उदाहरण 1 – बाज़ार के दृश्य का अवलोकन एवं चर्चा

कार्य – चित्र की मदद से अपने आस–पास के काम को पहचानना एवं उस पर बातचीत करना। कक्षा 3 के बच्चों के साथ उप थीम – खेल और कार्य के दौरान किए कार्य का विवरण इस प्रकार है–

पहला चरण – बच्चों के पूर्व अनुभव को जानने के लिए शिक्षक सवाल पूछते हैं। जैसे क्या आप कभी बाज़ार गए हैं ?बाज़ार में क्या – क्या देखा ?बच्चों के अनुभव सुनने के बाद उन्हें उपसमूह में चित्र पठन के लिए कार्य देते हैं।

दूसरा चरण – इस चरण में बच्चे उपसमूह में चित्र पठन करते हैं और संबंधित प्रश्नों को ध्यान में रखकर बातचीत करते हैं एवं उसे लिखते हैं।

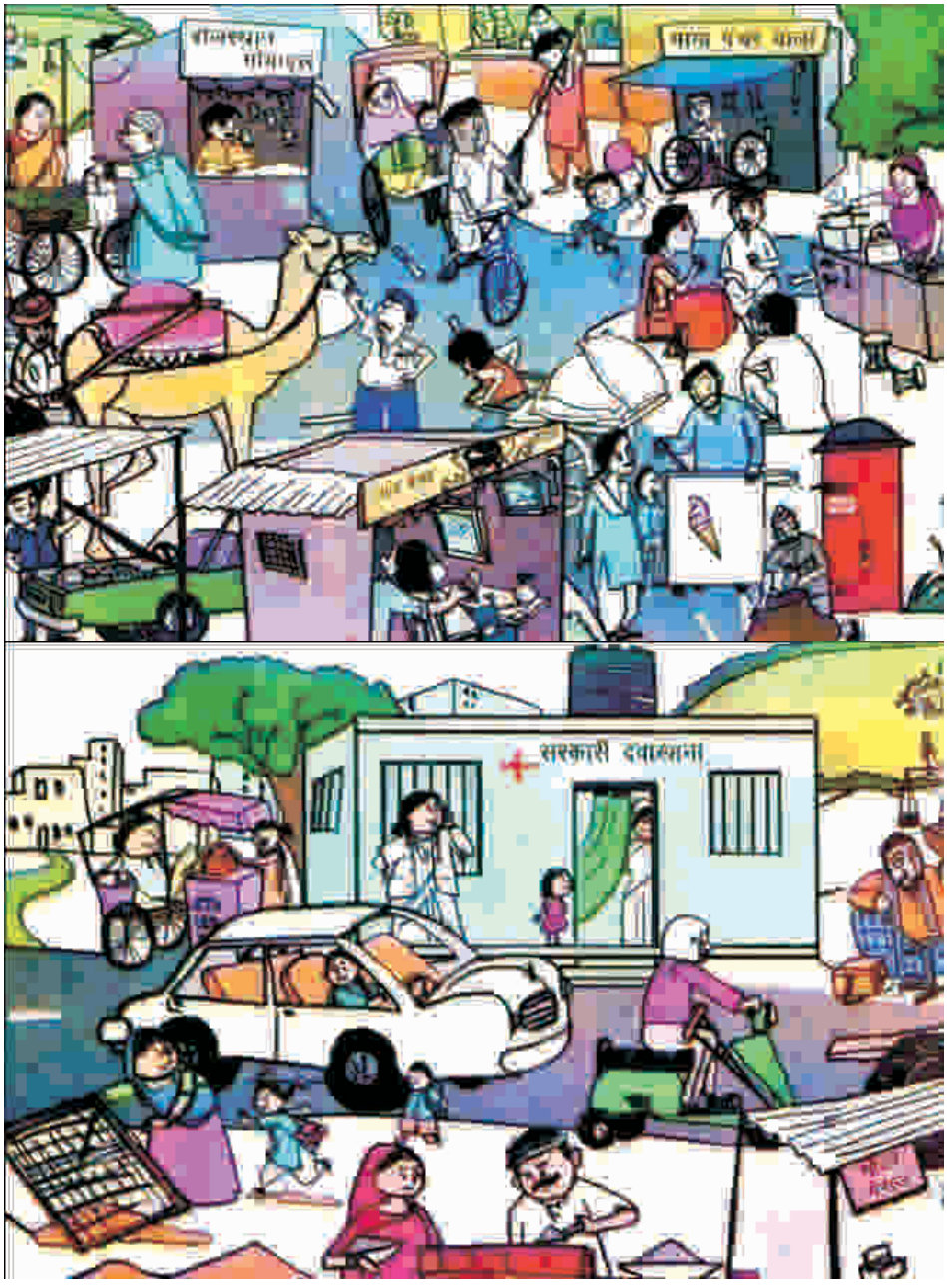

प्रश्न इस प्रकार है –

1. बाज़ार में लोग क्या–क्या काम कर रहे हैं ?
2. बड़े होकर आप इनमें से क्या काम करना चाहोगे और क्यों ?

1. बजार में लोग क्या-क्या कर रहे हैं?
सुधी [illegible] |
3. कोई रिक्सा चला रहा है, कोई आइसक्रिम बेच रहा है, कोई बालों कि हेयरस्टाइल बनवा रहा है, कोई मोबाइल बेच रहा है, एक डाकिया चिट्ठी लेजा रहा है, कोई कट [illegible] रहा है, कोई दवा खा रहा है, कोई इस्तरी की दुकान पर [illegible] रहा है, बच्चे भाग रहे हैं, एक औरत कचरा साफ कर रही है, मामा पंचर वाला साईकिल ठीक कर रहा है, एक आदमी स्कुटर चला रहा है, कोई दीवार पुत रहा है, कोई चाय पी रहा है, एक बुढी आमा सब्जी बेच रही है, एक आदमी अपनी रेड़ी पर अनाज रख कर लेजा रहा है। औरत सड़क पर झाडू लगा रही है।

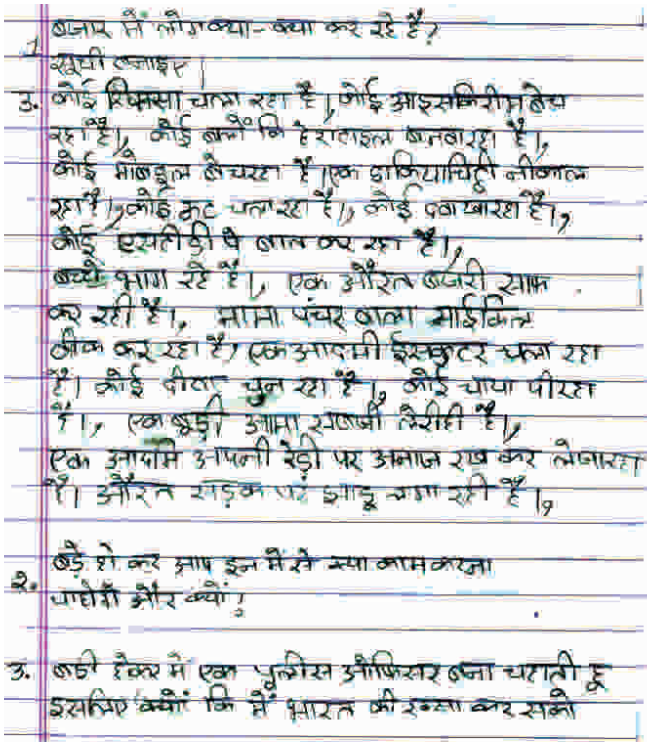

2. बड़े हो कर आप इन में से क्या काम करना चाहोगे और क्यों?

3. बड़ी होकर मैं एक पुलीस ऑफिसर बना चाहती हूं इसलिए क्योंकि मैं भारत की रक्षा कर सकूं

उदाहरण 2 – पहले के जमाने में इमारतें कैसे बनती थी? और आज कैसे बनती हैं ?इस पर कक्षा–5 के बच्चों के साथ निम्न प्रकार से कार्य किया।

पहला चरण – शिक्षक सवाल प्रस्तुत करते हैं और बच्चे अपने विचार व्यक्तिशः लिखते हैं।

दूसरा चरण – उपसमूह में अपनी–अपनी टिप्पणी को पढ़कर सुनाते हैं और विचारों का सामान्यीकरण करते हैं। उसके बाद कक्षा में प्रस्तुत करते हैं।

तीसरा चरण– इस चरण में शिक्षक द्वारा मुगल कालीन तस्वीर को समूह में प्रस्तुत किया जाता है और बच्चों से सवाल करते हैं कि इस तस्वीर से हमें पुराने समय के निर्माण के बारे में क्या–क्या जानकारियाँ मिल सकती हैं। साथ ही निम्नलिखित सवालों के उत्तर खोजकर लिखिए।

1. क्या आप अंदाज़ा लगा कर बता सकते हो कि यहाँ हो रहे कार्य में कितने लोग जुटे हुए हैं ?
2. कौन से ऐसे कार्य हैं जो मुख्य रूप से पुरूष करते हैं ? कुछ ऐसे कार्य भी है, जो महिला और पुरूष दोनों मिलकर करते हैं ? क्या बच्चे भी निर्माण कार्य में जुड़े हुए हैं ?
3. क्या इसमें कुछ ऐसे लोग भी हैं जो सीधे रूप से इमारत चिनने के काम से नहीं जुड़े हैं? वे कौन हो सकते हैं ? वे क्या सोच रहे होंगे ?
4. उन साधनों के नाम बताइए जिनकी मदद से कच्चा सामान निर्माण स्थल तक पहुँचाया जा रहा है। निर्माण स्थल पर पानी कैसे पहुँच पा रहा है ?

चित्र साभर : आस–पास कक्षा–5

5. चित्र में दिखाए गए लोगों के बारे में आपका क्या कहना है ? क्या वे खुश, व्यस्त, आलसी, चिंतित, थके हुए, उक्ताए हुए, कर्मठ या उत्साह से भरे हुए हैं ?
6. यह इमारत कौनसी व किसकी हो सकती है ?

इन प्रश्नों के माध्यम से शिक्षक पर्यावरण अध्ययन से संबंधित किन–किन सूचकों का आकलन कर सकते हैं? आइए इस बात को समझते हैं :–

अवलोकन और दर्ज करना	चित्र का बारीकी से अवलोकन करना। विद्‌यार्थियों को अपने परिवेश के अवलोकन से इस चित्र को समझने में मदद मिलेगी। बच्चे अपने आप–पास या बाहर कोई निर्माण स्थल का अवलोकन कर सकते हैं।
संप्रेषण	उप समूह में एक दूसरे की बात को सुनना व अपनी राय व्यक्त करना।
व्याख्या / विश्लेषण	व्याख्या करने से तर्कपूर्ण संबंध जोड़ने और भिन्न–भिन्न समय पर होने वाले निर्माण कार्यों की तुलना करने से नतीज़ों पर पहुँच सकते हैं। निर्माण कार्य की पूरी प्रक्रिया में बच्चे माल की लदाई से लेकर ढुलाई तक को गहन अवलोकन करके समझ सकते हैं तथा आर्थिक गतिविधि के संदर्भ में विश्लेषण और अनुमान लगा सकते हैं।
न्याय और समता के प्रति सरोकार	महिला और पुरूष के कार्य में अन्तर बताना। यह अन्तर बच्चों को श्रम विभाजन के संदर्भ में तब और अब की लैंगिक भूमिकाओं को समझने और उसके प्रति संवेदनशील होने में मदद करेगा।

उदाहरण 3 – थीम– पानी पर कार्य करने के दौरान एक शिक्षक ने कक्षा 4 के बच्चों के साथ इस चित्र को किस प्रकार प्रयोग में लिया है, आइए देखते हैं :–

कार्य – चित्र में एक नदी के पहाड़ से निकलकर समुद्र तक पहुँचने का दृश्य है। इस चित्र का पठन करके दिए गए सवालों के उत्तर लिखिए।

पहला चरण – बच्चों के पूर्व अनुभव को जानने के लिए शिक्षक सवाल पूछते हैं।

दूसरा चरण – इस चरण में शिक्षक कुछ सवाल बच्चों को देते हैं जिनका उत्तर दिए गए चित्र के आधार पर देना है।

फिर से चित्र को देखो और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखो–
प्र॰ जहाँ से नदी निकलना शुरू हो रही है, वहाँ पानी का रंग कैसा है?
जहाँ नदी शुरू हो रही है। वहां पानी आसमानी आ रहा है।
प्र॰ गाँव में पहुँचने से पहले, नदी में क्या-क्या दिखाई दे रहा है?
मछलियाँ और बतख बगुला हंस दिखाई दे रहे हैं?
प्र॰ चित्र में दिखाई गई जगहों में से तुम किस जगह रहना पसंद करोगे?
पहाड़ियों में रहना पसंद करूंगी क्योंकि वहाँ बीलकुल साफ पानी रहता है और वहाँ कोई जानवर भी पानी भी नहीं पियेगा।

आकलन – इन प्रश्नों के माध्यम से शिक्षक पर्यावरण अध्ययन से संबंधित किन–किन सूचकों का आकलन कर सकते है? आइए इस बात को समझते हैं :–

अवलोकन और दर्ज़ करना	बच्चों द्वारा चित्र के सूक्ष्म विवरणों को पहचानने की योग्यता का आकलन कर सकते हैं।
संप्रेषण	अपने अवलोकन को लिखित/मौखिक रूप में अभिव्यक्त करना।
व्याख्या/विश्लेषण	तुलना करना, परिस्थिति का विचार करके स्वयं का रूख बनाना।
न्याय व समता के प्रति सरोकार	जल स्रोतों के प्रदूषण के कारणों एवं इन्हें रोकने के प्रति स्वयं की पहल पर विचार करना।

परस्पर आकलन टिप्पणी

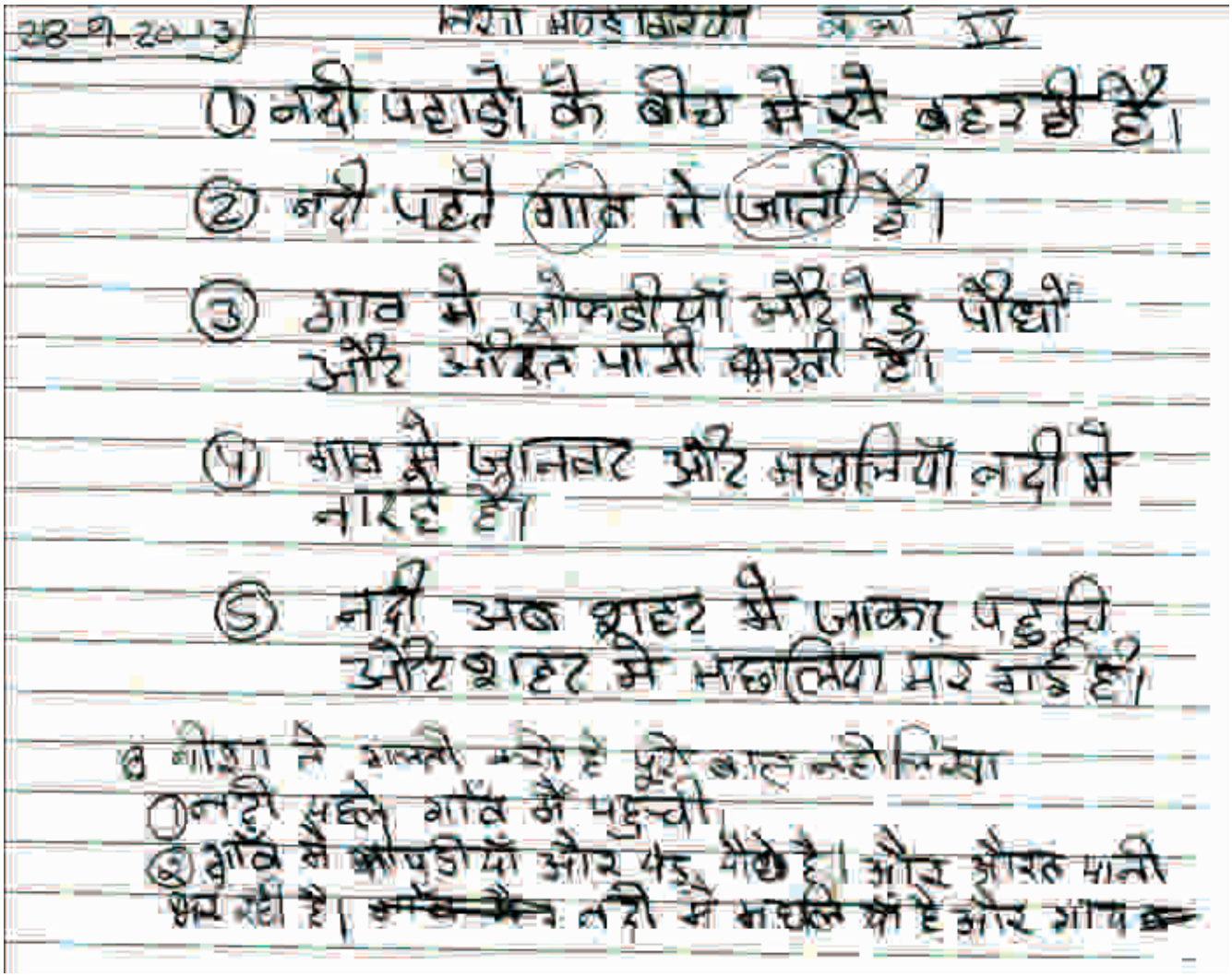

8.1.11 परियोजना कार्य

उदाहरण 1 – कक्षा 3 के बच्चों के साथ उप थीम–'पेड़–पौधों' पर कार्य के दौरान करवाए गए परियोजना कार्य का विवरण इस प्रकार है –

शिक्षिका –योजना में परियोजना संबंधित गतिविधि शामिल थी। बच्चों के साथ आरम्भिक बातचीत में ही यह विचार बना कि हम दो फाईल तैयार करेंगे। एक पत्तियों की व दूसरी फूलों की। इस गतिविधि के अन्तर्गत फूल और पत्तियाँ इकट्ठे करने थे। इस कार्य को आरम्भ करने से पहले बच्चों से बातचीत की गई कि हमें सिर्फ गिरी हुई पत्तियाँ और फूल ही उठाने हैं, इस बात के कारण को भी स्पष्ट किया।

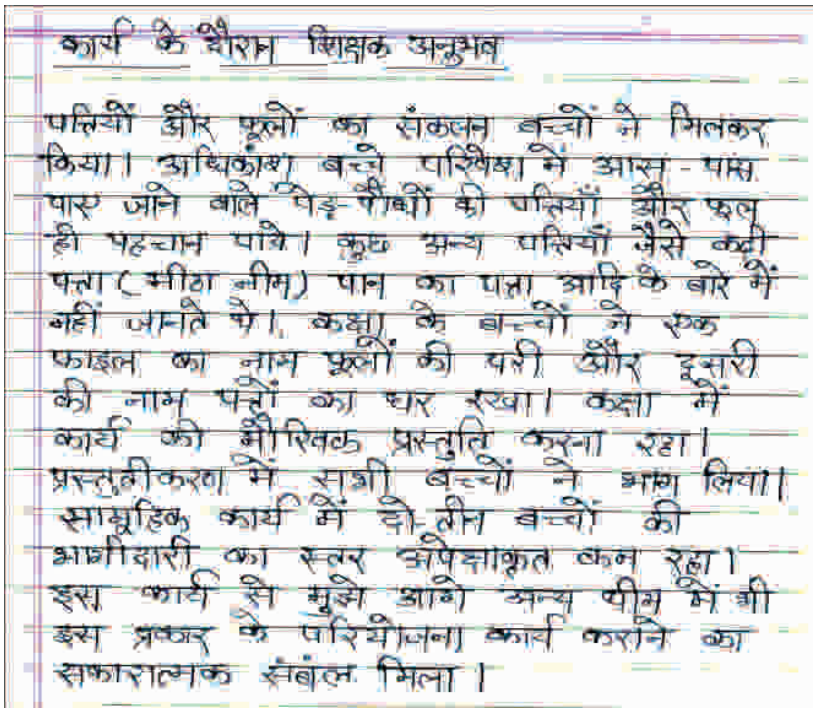
कार्य के दौरान शिक्षक अनुभव

पत्तियों और फूलों का संकलन बच्चों ने मिलकर किया। अधिकांश बच्चे परिवेश में आस-पास पाए जाने वाले पेड़-पौधों की पत्तियाँ और फूल ही पहचान पाये। कुछ अन्य पत्तियाँ जैसे कढ़ी पत्ता (मीठा नीम) पान का पत्ता आदि के बारे में नहीं जानते थे। कक्षा के बच्चों ने एक फाइल का नाम फूलों की परी और दूसरी का नाम पत्तों का घर रखा। कक्षा में कार्य की मौखिक प्रस्तुति करना रहा। प्रस्तुतीकरण में सभी बच्चों ने भाग लिया। सामूहिक कार्य में दो-तीन बच्चों की भागीदारी का स्तर अपेक्षाकृत कम रहा। इस कार्य से मुझे आगे अन्य थीम में भी इस प्रकार के परियोजना कार्य करने का सकारात्मक संबल मिला।

कक्षा के बच्चों को चार–चार के उप समूह में यह कार्य करना तय किया। बच्चों के समूह में यह भी तय किया कि इकट्ठे किए गए फूल–पत्तों को साफ कागज़ पर चिपकाना है और उसके नीचे जहाँ से यह प्राप्त किया है उस स्थान का नाम, पेड़ जिससे यह फूल–पत्ती प्राप्त की हैं, का नाम लिखना एवं तारीख लिखनी है। साथ ही बच्चों को उस पेड़ / फूल / पत्ती के बारे में अपना– अपना अवलोकन भी लिखना है।

उदाहरण 2 – बचपन की कहानी

सम्बन्धों का ताना–बना थीम के पाठों पर योजना तैयार करने के दौरान एक शिक्षिका ने बच्चों से अपने बचपन के बारे में लिखने के कार्य को परियोजना कार्य के तहत चिह्नित किया था।

इस कार्य में प्रत्येक बच्चे को अपनी माँ से बचपन के बारे में पता करके आना था। जैसे कहाँ जन्म हुआ ?बचपन में क्या–क्या खेलते थे ?क्या खाना पसन्द था ?किस नाम से प्यार से बुलाते थे आदि।

प्रत्येक बच्चे के बचपन के किस्से को कक्षा में सुनना रहा। तत्पश्चात अपनी कहानी को एक पन्ने पर लिखकर उस में फोटो चिपकाकर अपने–अपने पोर्टफोलियो में लगाए।

अनुभव – इस कार्य में अधिकांश बच्चों ने भाग लिया एवं घर में बातचीत करके बात को व्यवस्थित लिखा। फोटो उपलब्ध नहीं होने की स्थिति में कुछ बच्चों ने चित्र बनाया वहीं कुछ ने अखबार या मैगज़ीन से छोटे बच्चों के तस्वीर काटकर लगाए।

कक्षा–4 के छात्र अरूण के पिता उसे बचपन के बारे में बताने से मना किया और कहा ये बातें स्कूल में करने की है क्या ?

उदाहरण 3 – खिलाड़ियों के कॉलाज़

कक्षा–4 के बच्चों को कार्य और खेल थीम पर कार्य करवाने के लिए पाठ **'हु तू तू, हु तू तू'** (एनसीईआरटी पुस्तक कक्षा–4 से) की योजना में एक परियोजना कार्य को चिह्नित किया गया। जिसके अन्तर्गत बच्चों से खेलों व खिलाड़ियों के बारे में चित्र व जानकारी एकत्र करवाना एवं उसका कॉलाज़ बनवाना तथा खेलों के विविधिता पर बातचीत करना।

अनुभव – प्रारम्भ में जब बच्चों से खेलों के बारे में बातचीत की गई तब वे केवल क्रिकेट खिलाड़ियों के बारे में ही जानते थे। वे किसी भी महिला खिलाड़ी के बारे में नहीं जानते थे। बच्चों से विभिन्न खिलाड़ियों के चित्र व जानकारी समाचार पत्रों के खेल पेज से एकत्र करवाई गई।

8.1.12 तालिका, ग्राफ

बच्चे विविध तरीकों से जानकारी एकत्रित करते हैं जैसे अवलोकन, पाठ्यपुस्तक, अन्य प्रकार की पठन सामग्री, चित्र, वयस्कों से बातचीत, सी.डी.आदि। तालिका, इन माध्यमों से एकत्रित जानकारियों को प्रश्न हल करने की दृष्टि से व्यवस्थित रूप से दर्ज़ करने का एक उपकरण है। अब इस प्रकार व्यवस्थित रूप से दर्ज करने का क्या फायदा हो सकता है ? दरअसल यह जानकारियों के विश्लेषण करने तथा इसमें से कुछ पैटर्न निकालने में बच्चों को मदद करता है।

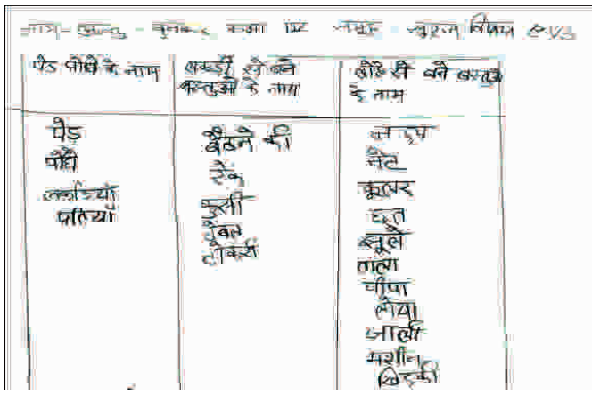

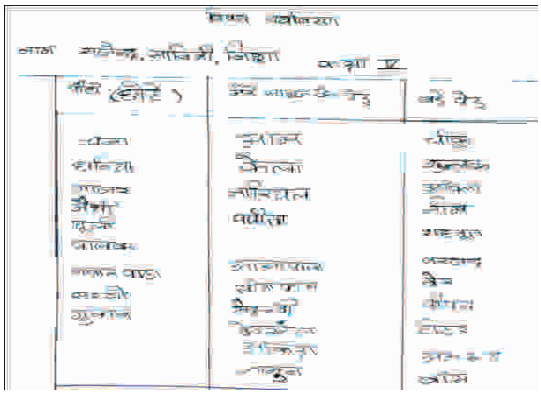

अपने नतीजे या खोज को ग्राफिक प्रतीकों के रूप में व्यक्त करने के लिए उच्च मानसिक क्रिया की आवश्यकता है जिसकी गुंजाइश आगे की कक्षाओं में ज्यादा है परन्तु कक्षा 3 से इसके प्राथमिक चरण से परिचय कराया जा सकता है।

तालिका, ग्राफ आदि को डिज़ाइन करके अपनी बात को संप्रेषित करना संप्रेषण कौशल का उच्च स्तर है। विज्ञान शिक्षण से इस प्रकार की योग्यता विकसित करने से बच्चा एक चरणबद्ध तरीके से आगे बढ़ेगा। बच्चे के लिए इस प्रकार के अनेक अवसर कक्षा–कक्ष में उपलब्ध कराने चाहिए।

8.1.13 प्रश्न पूछना (शिक्षक द्वारा)

कक्षा–कक्ष में किए गए एक प्रयोग में विभिन्न चरण के दौरान बच्चों ने कुछ निष्कर्ष निकाले हैं। प्रयोग के विभिन्न चरण में बच्चों द्वारा निर्मित विचार स्व आकलन के लिए किस प्रकार मदद करेंगे ? स्व आकलन करने के लिए बच्चे को मदद करने की दृष्टि से शिक्षक द्वारा पूछे गये कुछ प्रश्न देखिए –

- घटना/प्रयोग के बारे में आपका अनुमान क्या था?
- अनुमान सही था ?
- कार्य के बाद आपके निष्कर्ष क्या रहे ?
- अनुमान एवं निष्कर्ष के बीच में कोई अन्तर रहा है ? यदि हाँ तो क्या फ़र्क रहा ?
- निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए आपको किन–किन बातों ने मदद की ?

शिक्षक के इस प्रकार के प्रश्न जो बच्चे को स्वआकलन करने में मदद करें, इन प्रश्नों में क्या–क्या विशेषता/गुण होने चाहिए ?

- हरेक बच्चा सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को किस प्रकार देखते हैं? इसे समझने में मदद मिले।
- बच्चे का आत्मविश्वास एवं सीखने की योग्यता को स्पष्ट करने लायक हो।
- सीखने के संदर्भ में बच्चे के प्रश्न व दृष्टिकोण को व्यक्त करने लायक खुले सवाल हों।
- सीखने के संदर्भ के अनुरूप बच्चे को अगले चरण में प्रवेश करने में मदद करने वाले सवाल हों।

प्रश्न से प्राप्त प्रतिक्रियाओं को विश्लेषित करके शिक्षक को किस प्रकार की प्रतिपुष्टि देनी है इस बारे में निर्णय लेना चाहिए।

योजना एवं कक्षा–कक्ष में क्रियान्वयन नमूना

शिक्षण योजना व समीक्षा

बच्चों में अपेक्षित समझ और योग्यताओं का विकास तभी संभव होगा जब विभिन्न स्थितियों में और विभिन्न तरीकों से उनको प्रयोग करने का अवसर बार–बार मिले। यह उस परिस्थिति में हो पायेगा जब आप अपने नियोजन में इन पक्षों को शामिल करेंगे। इस बात से आप भी सहमत होगें कि सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में योजना एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है। इसमें हम निम्न बातों पर ही तो सोच विचार करते हैं कि बच्चों को क्या सिखाना है, किस तरीके से सिखाना है ? इसके लिए मुझे किन–किन सामग्रियों की आवश्यकता है ? आकलन कब करना है ? इसके लिए क्या उपकरण (Tools) उपयोग में लेने है ?

पर्यावरण अध्ययन में पाठवार शैक्षिक योजना बनाने एवं समीक्षा करने का कार्य किया जा सकता है। एक पाठ पर कार्य करने की अनुमानित समयावधि 10 से 12 दिन हो सकती है।

अब आपके मन में पाठ योजना तैयार करने के बारे में कई प्रश्न होंगे। यहाँ हम कुछ प्रश्नों को लेकर बातचीत करते हैं, जिन्हें अक्सर कार्यशाला के दौरान शिक्षक साथी पूछते रहे हैं। जैसे–

पाठ योजना बनाने से पूर्व हमें किस प्रकार की तैयारी करनी चाहिए ?

- सर्वप्रथम आप जिस पाठ को बच्चों को पढ़ाना चाहते हैं उसका अच्छी तरह से अध्ययन कर उस पाठ के मुख्य उद्देश्यों को पहचान कर नोट कर सकते हैं। इस कार्य में स्रोत पुस्तिका में दिए गए पाठ्यक्रम की भी मदद ले सकते हैं।
- विषय वस्तु के विभिन्न चरणों के लिए निर्धारित गतिविधियों के माध्यम से संभावित आकलन क्षेत्र तथा उनसे संबंधित उपसूचकों को पहचान कर चिह्नित करें। यह कार्य बच्चों के बारे में सतत अवलोकन दर्ज़ करने में मदद करेगा।
- संभावित सामूहिक, उपसमूह तथा बच्चों के स्तर अनुसार की जाने वाली गतिविधियों को चिह्नित करें ताकि आप योजना निर्माण एवं शिक्षण कार्य सुचारु रूप से कर सकें।
- पाठ से संबंधित परियोजना कार्य, प्रदत्त कार्य, भ्रमण कार्य आदि को भी चिह्नित करें ताकि आप इनसे संबंधित कार्य की पूर्व तैयारी आसानी से कर सकें। (जैसे सामग्री का चयन, स्थान का अवलोकन एवं आवश्यक जानकारी जुटाना आदि)
- गतिविधियों के नियोजन के दौरान कला, संगीत, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा से संबंधित पक्षों का भी ध्यान रखें। यह आपको बच्चों के इन पक्षों के मूल्यांकन करने में मदद करेगा।
- योजना बनाते समय आप निम्न संदर्भ सामग्रियों को साथ रखें, जिन्हें आप आवश्यकतानुसार काम में ले सकते हैं। (जैसे– बच्चों के स्तर का समेकन प्रपत्र, प्रश्न/गतिविधि बैंक, पाठ्य पुस्तकें, स्रोत पुस्तिका, कार्यपत्रक एवं अन्य संदर्भ पुस्तिकाएँ आदि)

पाठ योजना बनाना :– पाठ योजना बनाने हेतु आपकी सुविधा के लिए सुझाव के तौर पर एक प्रारूप प्रस्तुत है। इनमें दिए गए बिन्दुओं की मदद से आप योजना तैयार कर सकते हैं।

1. **संपूर्ण कक्षा के लिए अधिगम उद्देश्य –** यहाँ आपको पाठ में प्रस्तावित मूल अवधारणाएँ लिखनी है। जो आप पूर्व तैयारी के दौरान चिह्नित कर चुके हैं।

2. **शिक्षण योजना –** इस कॉलम में उद्देश्यों के अनुरूप बच्चों की समझ विकसित करने हेतु सामूहिक, उपसमूह एवं व्यक्तिगत स्तर पर बच्चों के लिए निर्धारित योजना लिखना है। गतिविधियाँ आप पाठ्यपुस्तक से भी ले सकते हैं या अपने परिवेशीय उदाहरण/अनुभव एवं अन्य सामग्री भी ले सकते हैं। दोनों प्रकार की गतिविधियों एवं उपयोग में ली जाने वाली सामग्री का भी उल्लेख करें।

3. **सतत आकलन की योजना –** सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में आप द्वारा नियोजित गतिविधियाँ कुछ प्रक्रिया, कौशलों को सुनिश्चित करती हैं या नहीं इसका आकलन करते रहना चाहिए। इस कार्य हेतु अध्यापक योजना डायरी में दिए गए बिन्दुओं की मदद ले सकते हैं।

समीक्षा – समीक्षा से तात्पर्य यहाँ आप द्वारा बच्चों के साथ किए गए काम के बारे में समालोचनात्मक ढंग से अपने विचारों को व्यवस्थित करने से है। एक पाठ पर काम कराते हुए आप बीच में भी एक बार अपनी

योजना की क्रियान्विति व बच्चों की भागीदारी को देख कर उसमें आवश्यक परिवर्तन (संभव हो तो) कर सकते हैं। समीक्षा लिखने में आप की मदद हेतु निम्न बिन्दु प्रस्तावित हैं –

- कार्य के दौरान बच्चों की सहभागिता की स्थिति के बारे में
- बच्चों को आ रही कठिनाई के बारे में
- योजना में किए गए बदलाव के बारे में
- अनुभव एवं आकलन

उपसमूह में शिक्षण कार्य– पर्यावरण अध्ययन विषय में अन्य विषयों की तरह अवधारणा के अनुसार स्तरवार उप समूह बनाकर कार्य करने का सुझाव हम नहीं दे रहे हैं। क्योंकि विषय शिक्षण के उद्देश्य के अनुसार इस विषय में विषय वस्तु से कहीं ज्यादा प्रक्रिया कौशलों पर बच्चों की उपलब्धि महत्वपूर्ण हैं। इस बात पर हम विषय की प्रकृति एवं ज्ञान निर्माण प्रक्रिया भाग में विस्तार से चर्चा कर चुके हैं। कौशलों का विकास क्रमिकता में न हो कर चक्रीय रूप में होता है इस प्रक्रिया में कौशलों की पुख्ता समझ को सुनिश्चित करने के लिए बच्चों के साथ बार–बार कार्य करने की ज़रूरत होती है। किसी भी एक गतिविधि या कम समयावधि के दौरान किए गए कार्यों से सभी कौशलों का विकास हो पाए यह संभव नहीं है।

विषय की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए इस विषय में उपसमूह शिक्षण की निम्न स्थितियाँ हो सकती हैं।

- शिक्षण विधा के रूप में उप समूह में कार्य करना – उदाहरण के तौर में चित्र देख कर बातचीत करना, प्रयोग करना, चित्र बनाना, मॉडल बनाना, कोलाज़ बनाना, अवलोकन करना आदि।
- यदि कक्षा में हिन्दी भाषा में बच्चों का स्तर लिखने–पढ़ने में कक्षानुरूप नहीं है तो वहाँ पढ़ने लिखने के आधार पर उपसमूह बना कर उन कार्यों में सहयोग कर सकते हैं।
- किसी एक थीम की समाप्ति पर समीक्षा में उभरी स्थितियों के अनुरूप कौशलों पर आधारित उपसमूह बनाकर कार्य किया जा सकता है। इसे आप दो प्रकार से देख सकते हैं –

प्रथम – कक्षा में चल रहे कार्य के दौरान शिक्षक बच्चे की स्थिति को ध्यान में रख कर उसे कार्य करने में सहयोग करके या अवसर उपलब्ध करवा कर मदद करना।

द्वितीय – आकलन के कुछ क्षेत्रों पर आधारित विशेष योजना तैयार करके बच्चों को अपनी क्षमता/कौशलों में आगे बढ़ने या अभ्यास करने हेतु अवसर उपलब्ध कराना। इस प्रकार की योजना वर्गीकरण, अवलोकन एवं दर्ज़ करना, प्रयोग, प्रश्न करना आदि कौशलों पर तैयार कर सकते हैं।

शिक्षण–आकलन योजना	कक्षा – 3
पाठ/इकाई : ...3..	अवधारणा/थीम : भोजन
सम्पूर्ण कक्षा समूह के लिए अधिगम उद्देश्य : इस पाठ के तहत निम्नलिखित अधिगम बिन्दुओं को देखा जा सकता है– 1. भोजन की विविधता। 2. राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में खाए जाने वाले विशेष भोज्य पदार्थ। 3. भोज्य पदार्थ प्रदान करने वाले पौधों व जन्तुओं के बारे में आधारभूत अवधारणा।	

शिक्षण योजना (1. सामूहिक कार्य 2. उपसमूहों में कार्य 3. व्यक्तिगत कार्य की योजना)	सतत आकलन योजना
सामूहिक कार्य 1. कक्षा में बच्चों से पूछना कि उन्होंने क्या–क्या खाया है? बच्चों की प्रतिक्रिया बोर्ड पर नोट करते हुए सूची तैयार करना एवं उस पर बातचीत करना। 2. अपने गाँव या शहर के आस पास लगने वाले हाट बाजार एवं वहाँ मिलने वाली खाने की वस्तुओं के बारे में बच्चों के अनुभव जानना। पाठ्यपुस्तक में से कोहिमा के बाज़ार का चित्र दिखा कर उसके बारे में बातचीत करना। 3. ऐसी खाने की चीज़ें जो बच्चों के आसपास नहीं हैं या बच्चों ने कभी खाई ही नहीं हैं उनके चित्र दिखा कर उनका नाम एवं वे किन चीज़ों से बनती हैं व किन इलाकों में अधिक तर खाई जाती हैं, पर बातचीत करना। उदाः उपमा, इडली, खमण आदि.... सामग्री– संबंधित चित्र चार्ट, अख़बार एवं मैग्ज़ीन से कटिंग आदि.. **5.** बच्चों द्वारा एकत्रित जानकारी को कक्षा में बताना एवं शिक्षाक द्वारा ब्लैक बोर्ड पर सूचीबद्ध करना। जैसे– अलवर का मावा। इस प्रकार तैयार सूची को पुस्तक की पृष्ठ संख्या 16 में दी गई सूची से मिलान करके देखना। **उपसमूह में कार्य –** 1. खाने की चीज़ें जो अपने घर में नहीं बनती हैं परन्तु कहीं और खाई हैं उसके बारे में अपने अनुभव तालिका बना कर लिखना एवं कक्षा में प्रस्तुत करना। (तालिका पाठ्यपुस्तक पृष्ठ संख्या 15 के अनुसार)। 2. पृष्ठ संख्या 17 –18 पर दिए गए कार्यपत्रक पर बातचीत करके लिखना। 3. उप समूह में प्रयोग करके देखना। (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ संख्या 20 के अनुसार) **व्यक्तिगत कार्य** 1. अपने इलाके या आस पास के भागों में बनाए जाने वाली खाने की विशेष चीज़ों के बारे में, घर के बड़ों से पता करके लाना। 2. एक विशेष प्रकार की कच्ची खाद्य सामग्री जैसे गेहूँ से क्या–क्या खाने की चीज़ें अपने घर बनाई जाती हैं के बारे में व्यक्तिशः लिखना – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ संख्या 17, 18, 19, 20 के कार्यपत्रक के अनुसार	**शिक्षक आकलन –** **(अवलोकन अभिलेख)** विषय के बारे में बच्चों के पूर्व जानकारी समझना। बच्चों की सहभागिता पहल, अभिव्यक्ति **शिक्षक आकलन–** **(अवलोकन अभिलेख एवं बच्चे के समूह कार्य सम्बन्धित दस्तावेज़)** उप समूह में कार्य में भागीदारी एवं सहयोग की स्थिति, प्रयोग हेतु सामग्री जुटाना, सामग्री का चयन एवं निष्कर्ष निकालने की स्थिति **शिक्षक आकलन–** **(कक्षा कार्य एवं होम वर्क जाँच)** प्रश्न करना– जानकारी एकत्रित करने की स्थिति अवलोकन एवं दर्ज़ करना – अपने अवलोकन एवं जानकारी को व्यवस्थित दर्ज़ करने की स्थिति।
सतत आकलन हेतु तैयार कार्यपत्रक पर कार्य।	**कार्यपत्रक** (टिप्पणी दर्ज़ करके पोर्टफोलियो में लगाना)
परियोजना कार्य – हमारे राजस्थान के विभिन्न भागों में खाये जाने वाले विभिन्न व्यंजनों के चित्र एकत्रित करके उसे चार्ट पर चिपकाना।	**सहयोग, आत्मविश्वास एवं पहल**
कला पक्ष 1. मनपसन्द खाने की चीज़ के चित्र बनाना। कुछ स्थानीय पौधों के चित्र बनाना जिनसे खाने की चीज़ें मिलती हों। 2. खाने की चीज़ों से संबंधित स्थानीय गीत, कविता कक्षा में गाना।	**संगीत एवं चित्र कला –** संलग्नता एवं अभिव्यक्ति

गतिविधि 1

शिक्षिका – अच्छा बच्चों! आज हम नया पाठ पढ़ेंगे। यह पाठ भोजन के बारे में है। अच्छा बताओ आप लोगों ने आज सुबह क्या–क्या खाया है ?

कमला – मैं तो सुबह ब्रेड और दूध पीकर आई हूँ।

शीला – मैं तो छाछ–राबड़ी खाकर आई हूँ।

सलमान – मैंने तो कुछ भी नहीं खाया।

सीता – मैं परांठा और अचार खाकर आई हूँ।

रतन – मैं चाय और टोस्ट खाकर आया हूँ। मुझे टोस्ट बहुत पसन्द है।

गुरुमीत – बीजी गुरुद्वारे से प्रसाद लेकर आई थी। मैंने दूध के साथ वही खाया है। मुझे प्रसाद बहुत पसन्द है।

सोनू – मेरी मामी ने आज सुबह अण्डे की भुजिया बनाई थी। वह खाकर आया हूँ।

सलमा – मेरे भैया ने आज सुबह नूडल्स बनाए थे। मुझे नूडल्स बहुत पसन्द है।

इस प्रकार कुछ बच्चों की प्रतिक्रया सुनने के बाद शिक्षक के द्वारा कक्षा में बच्चों से अपनी मन पसंद खाने की वस्तुओं के नाम कॉपी में लिखने को कहा जाता है। तत्पश्चात कक्षा में बच्चों के द्वारा कॉपी में लिखी गई सूची को पढ़कर सुनाने के लिए कहा जाता है और खाने की चीज़ों की सूची ब्लैक बोर्ड पर लिखकर बातचीत की जाती है।

नोट – इस गतिविधि के द्वारा शिक्षक को विषयवस्तु के बारे में बच्चों की जानकारी को समझने का अवसर मिला। यहाँ शिक्षक को योजना की रूपरेखा को पुनः देखने व आवश्यक परिवर्तन करने में मदद मिलेगी।

समीक्षा एवं अनुभव से

अनुभव – बातचीत में बच्चों ने खाने की चीज़ों के नाम बताए। पीज़ा का नाम शीला ने बताया और साथ में यह भी बताया कि उसने टी.वी में तस्वीर देखी। मनपसंद भोजन में आम तौर पर बच्चों ने उन चीज़ों के नाम भी बताए, जो उन्होंने खाई नहीं हैं परन्तु सुना या टी.वी आदि में देखा है। रतन ने कहा कि उसे आलू का परांठा बहुत पसन्द है।

गतिविधि 2

उप समूह में कार्य – उपसमूहों में बातचीत करके खाने की वो चीज़ें जो उनके घर में नहीं बनती हैं परन्तु कहीं और खाई हैं उनकी सूची तालिका बना कर लिखना एवं कक्षा में प्रस्तुत करना।

(तालिका पाठ्यपुस्तक पृष्ठ संख्या 15 के अनुसार)। प्रस्तुति के पश्चात इस सूची के आधार पर राजस्थान में आम तौर पर खाए जाने वाले कुछ भोजनों के स्वाद एवं उसे बनाने के लिए आवश्यक सामग्रियों के बारे में बातचीत की जाए।

शिक्षण कार्य के दौरान आकलन – बच्चों द्वारा किए जा रहे कार्य के दौरान शिक्षक कक्षा में घूम कर बच्चों के काम का अवलोकन करता/करती है। यहाँ निम्न बिन्दुओं का सतत आकलन कर सकते हैं।

सहयोग–उप समूह में कार्य के दौरान सहयोग करना। सामूहिक कार्यों में पहल करना।

गतिविधि 3

पहेली हल करना एवं कार्यपत्रक पर व्यक्तिशः कार्य करना।

शिक्षिका कक्षा में सभी बच्चों को संबोधित करते हुए – आज हम कुछ पहेलियाँ हल करेंगे जो खाने की चीजों से संबंधित हैं। जिसमें मैं आप को खाने की चीज़ों के बारे में सुनाऊँगी और आप को इसे समझ कर खाने की चीज़ का नाम अपनी कॉपी में लिखना है।

उदाहरण के तौर पर कुछ पहेलियाँ –

(1) चक्कर पे चक्कर, चक्कर पे चक्कर
गोल–गोल घुमाकर। मुझे बनाकर तेल
में तल कर, चीनी की चाशनी में डालकर
खाते हो तुम। मुझे बताओ मैं कौन हूँ ?

(2) मैं हूँ गोल मटोल, मुझे आग में सेंक कर
घी डालकर, संग दाल के तुम खाते हो
बताओ मैं कौन हूँ ?

(3) पहले हरा बाद में पीला
गर्मी में लगता बड़ा रसीला।

शिक्षक/शिक्षिका – अच्छा! अब आप लोगों में से कौन इस तरह की और पहेलियाँ पूछ सकता है ? इस गतिविधि के बाद बच्चों को नीचे दिए गए कार्यपत्रक पर व्यक्तिशः कार्य करवाना अपेक्षित है।

कार्यपत्रक 1

निर्देश – नीचे कुछ खाने की चीज़ो के नाम दिए गए हैं, उन्हें पढ़ कर उसके स्वाद के आगे सही का निशान लगाइए। इस सूची में 7 से 10 नाम आप अपने मन से भी लिखिए।

नाम ..... कक्षा ..... तारीख .....

खाने की चीज़ का नाम	खट्टा	मीठा	नमकीन
जलेबी			
नमकीन			
कैरी			

नोट –

1. बच्चों द्वारा कार्यपत्रक में काम हेतु संलग्न होने की स्थिति में शिक्षक कक्षा में बच्चों के कार्य का अवलोकन करें या चर्चा के दौरान बच्चों की प्रतिक्रिया के बारे में अपनी कॉपी में आवश्यक टिप्पणी नोट कर सकते हैं।
2. बच्चों के द्वारा कार्यपत्रक में किए गए काम को यथा संभव उसी समय देखें और बच्चों को प्रतिपुष्टि दें। संभव हो तो उस पर संक्षिप्त में टिप्पणी भी दर्ज करें। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि कार्यपत्रक में बच्चों द्वारा किए कार्य को सही या गलत का लेबल न लगाए, बल्कि इस बात को जानने का प्रयास करें कि बच्चे ने यह उत्तर क्यों लिखा है ? ताकि आप उपयुक्त कार्य के जरिए बच्चे को अवधारणा समझने में सहयोग करने की ओर विचार कर पाएं।

समीक्षा एवं अनुभव से

खाने की चीजों से संबंधित पहेली में अनुमान लगाने में सब को आनंद आया। थोड़ा कठिन पहेली (पहेली नं 3) पूछने पर जवाब सिर्फ सीता ही दे पाई। अपनी ओर से पहेली पूछने में सलमान और गुरुमीत ने पहल की है। अब गुरुमीत पूर्व की अपेक्षा कार्यों में पहल करने लगा है। कमला और सोनू को लिखने में समस्या है अतः दोनों ने चित्र बनाए हैं। कमला की चित्र में स्पष्टता पूर्व की अपेक्षा अधिक है। बातचीत में चुप रही। रतन बातचीत के दौरान सबकी बारी का ध्यान रखता है।

गतिविधि 4

इस गतिविधि में शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को भोजन की विविधता के बारे में चर्चा करने के लिए एक गतिविधि का आयोजन करता/करती है जो इस प्रकार है :–

पर्ची खेल – एक डिब्बे में पृ.संख्या 16 में दिए गए व्यंजनों की सूची में से कुछ का नाम लिख कर पर्चियाँ बनाएंगे और कक्षा में बच्चों को उन पर्चियों में से एक–एक पर्ची को उठा कर पढ़ कर सुनाना है तथा उसके बारे में दो से तीन बात बोलनी हैं जैसे –

- यह स्वाद में कैसा होगा ?
- इसे तैयार करने में क्या–क्या सामग्री चाहिए ?
- इसके नाम के साथ जगह का नाम क्यों जुड़ा है ? इनमें से आपने कौन–कौन से खाए हैं ? आदि....

शिक्षक द्वारा बच्चों को पुस्तक के पृष्ठ संख्या – 16 में दी गई लिस्ट पढ़ा कर राजस्थान के अलग–अलग भागों में खाई जाने वाली खाने की चीजों की सूची से अवगत कराया जायेगा।

कार्यपत्रक 2

दी गई सूची में लिखित सामग्रियों से आपके घर में क्या –क्या बनाया जाता है ? नीचे दी गई तालिका में लिखिए।

नाम : ..... कक्षा : ..... तारीख : .....

गेहूँ				
बाजरा				
पालक				
दूध				
आलू				
अण्डे				
दाल				

योजना में परिवर्तन

अवलोकन के दौरान शिक्षिका ने देखा कि कुछ बच्चे इस काम को नहीं कर पा रहे हैं। बातचीत करने पर पता चला कि बच्चों को अभी इस पर और कार्य करने की जरूरत है। अतः शिक्षक/शिक्षिका ने अपनी योजना में इस पक्ष को शामिल करते हुए अगले दिन की योजना में परिवर्तन किया। जैसे पिछले दिन बच्चों द्वारा किए गए कार्यपत्रक को कक्षा में पढ़ कर सुनना एवं उस पर बातचीत करना। इस बातचीत से उन बच्चों की सोच को ओर विस्तृत दायरा मिल गया है। कालांश के अन्त तक वे चर्चा में सक्रियता से भाग ले रहे थे।

इसी क्रम में अगले दिन के कार्य के संदर्भ में बातचीत करते हुए शिक्षक बच्चों से कहते हैं– ''आज तुम अपने घर की रसोई में काम आने वाले खाने के सामानों के नाम अपनी कॉपी में लिख कर लाना। कल का कार्य इसी से शुरू करेंगे।''

समीक्षा एवं अनुभव से

अनुभव – घर से सूची बनाकर लाने के बारे में चंदु द्वारा बनाई गई सूची अन्य की अपेक्षा लम्बी थी। अनिल व शीला इस कार्य को नहीं कर पाए पर बातचीत में उन्होंने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया।

कार्यपत्रक में सलमा ने दिए गए नाम के अलावा सहजने का फूल, धनिया पत्ती और बथुए का नाम भी अपने मन से जोड़ा।

गतिविधि 5

रसोई में काम आने वाली विभिन्न खाने की चीज़ों को पौधों के विभिन्न भागों से जोड़ कर देखना।

शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों से रसोई में काम आने वाली विभिन्न चीज़ों के नाम पूछते हैं। बच्चों की प्रतिक्रिया बोर्ड पर नोट करते हैं। तत्पश्चात लिस्ट में एक वस्तु का नाम लेकर बच्चों से सवाल करते हैं कि ये किन –किन से मिलते हैं ? बच्चों से प्रश्न करना कि क्या ये इसी रूप में पेड़ पर लगती है ? इस प्रकार करीब 7 से 8 वस्तुओं के बारे में बातचीत करते हुए इस गतिविधि को समेंटें।

कार्यपत्रक 3

निर्देशः नीचे दी गई चीजों के नाम पढ़ कर उनका उचित चित्र से मिलान कीजिए।

नाम ..... कक्षा ..... दिनांक .....

पुदीना **पालक**

चाय

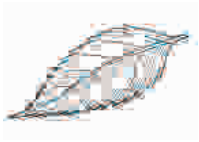

मैथी **केसर** **फूल गोभी**

गतिविधि 6

प्रयोग किन–किन चीजों से खाने का तेल मिलता है करके देखना –

शिक्षक/शिक्षिका कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व बच्चों से सवाल करते हैं, तुम्हें क्या लगता है खाने का तेल किन–किन चीजों से मिलता होगा ? बच्चों की प्रतिक्रिया बोर्ड पर नोट की जाती है। हो सकता है बच्चों ने तिलहनों के अलावा अन्य चीजों के नाम भी बताये हों।

इस सवाल के माध्यम से शिक्षिका को इस विषय के बारे में बच्चों के पूर्व समझ को जानने का अवसर मिलता है।

शिक्षक/शिक्षिका – आपके द्वारा लाई गई चीजों में से किन–किन चीजों में तेल है व किन–किन में नहीं है इसका पता कैसे चल सकता है ? यहाँ शिक्षक/शिक्षिका बच्चों की प्रतिक्रिया धैर्य पूर्वक सुनते हैं तथा बच्चों को सोचने के लिए प्रेरित करते हैं।

इस सवाल के माध्यम से शिक्षक/शिक्षिका बच्चों के अनुमान लगाने की योग्यता का पता कर सकते हैं। इस अनुमान की तुलना प्रयोग के पश्चात प्राप्त निष्कर्ष से भी कर सकते हैं।

उपसमूह में कार्य

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को उपरोक्त सवाल का संदर्भ देते हुए स्पष्ट करते हैं कि हमें आज यह प्रयोग करके देखना है कि कौन सी वस्तु में तेल मिलता है ? इसके लिए क्या करना है ? यह पाठ्य पुस्तक के पेज नं 20 पर लिखा है । आप इसे पढ़ कर अपने उप समूह में प्रयोग करके देखें। (यदि बच्चों को पढ़ना नहीं आता है तो उन्हें पढ़ कर सुनाएं) उप समूह में बिठाकर उन्हें प्रयोग करके देखने का अवसर देते हैं। आवश्यकता पड़ने पर बच्चे को सहयोग करते हैं।

शिक्षण कार्य के दौरान आकलन

इस कार्य के माध्यम से शिक्षक/शिक्षिका बच्चों के प्रयोग करने से संबंधित कौशलों जैसे– सामग्री एवं उपकरणों का चयन, जाँच के दौरान स्थिति का सही अवलोकन करना एवं उसे दर्ज करने में बच्चों की स्थिति का पता कर सकते हैं। प्रयोग कार्य के दौरान बच्चों की आपस में सहयोग की स्थिति को भी देखा जा सकता है। प्रयोग परिणाम की प्रस्तुति के दौरान बच्चों की संप्रेषण योग्यता का भी आकलन कर सकते हैं।

समीक्षा एवं अनुभव से

बच्चों ने उप समूह बनाकर प्रयोग करना प्रारम्भ किया। समूह दो के अनिल और चन्दू बार–बार सामग्री को ले कर आपस में बहस कर रहे थे। चन्दू का कहना था कि सोयाबीन में भी तेल निकलता है परन्तु अनिल मानने को तैयार नहीं था। समूह 3 में से कमला और सलमान ने मिल कर प्रयोग के प्रत्येक चरण को व्यवस्थित रूप से समूह के सामने रखा। समूह एक के बच्चों में से रतन, मनीषा, सलमा को अधिक मदद की जरूरत है। इनके समूह को मैंने ज्यादा समय दिया।

सतत अवलोकन अभिलेखन (शिक्षक डायरी)

इस पाठ पर कार्य करते हुए शिक्षक द्वारा विविध संदर्भों या गतिविधियों के दौरान बच्चों के कार्य की प्रगति, कार्य की शैली एवं स्थिति के बारे में लिए गए नोट्स के कुछ उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है।

सोनू – चर्चा में सोनू ने हमेशा की तरह अपने विचार रखे तथा अन्य बच्चों के विचार पर प्रतिक्रिया भी व्यक्त की। कार्य पत्रक में सोनू ने अपने पास में बैठी शीला से मदद लेकर कार्य पूर्ण किया है।

सलमा – कक्षा में सलमा ने सबसे पहले कार्य पत्रक पर काम पूरा किया। चर्चा में भाग कम लिया उसने सिर्फ अपनी बारी की पर्ची के संदर्भ में ही बात की है बाकी समय चुप रही।

गुरुमीत – अण्डे से बनने वाले व्यंजनों के नाम लिखने वाले बच्चों को गुरुमीत ने यह कह कर चिढ़ाया कि तुम अण्डे खाते हो। अभी भी गुरुमीत अपने दोस्तों को चिढ़ाता है। इस बारे में कई बार बात कर चुके हैं परन्तु व्यवहार में अपेक्षाकृत परिवर्तन देखने को नहीं मिला है।

मनीषा – कक्षा में अक्सर शांत बैठी रहती है। पूछने पर ही जवाब देती है। मनीषा के जवाब काफी सटीक होते हैं। उपसमूह के कार्य में पहल कम करती है। कार्यपत्रक में उद्देश्य के अनुरूप कार्य करती है। प्रयोग कार्य में मदद की जरूरत है।

रतन – प्रयोग के लिए आवश्यक सामग्री एवं चरणवार क्रियान्वयन में संलग्न नहीं रहता है। उसे इस कार्य में विशेष मदद की जरूरत है। संप्रेषण कौशल में अन्य की बात को सुनकर प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। स्वयं की बात को कारण के साथ प्रस्तुत करता है। अवलोकन बारीकी से करता है और मौखिक भी बताता है। अपने विचार को चित्र के माध्यम से व्यक्त करता है।

चन्दू – प्रयोग कार्य में कम रुचि लेता है। सामग्री जुटाने में तो हाँ करता है परन्तु लाता नहीं। कई बार अन्य सदस्यों के कार्य में व्यवधान भी उत्पन्न करता है।

कमला – प्रयोग के दौरान सक्रिय रूप से कार्य किया। उपसमूह में चर्चा के दौरान कमला ने कहा आलू से तो पानी निकलेगा, देखना कुछ देर बाद सूख जायेगा। तेल से पन्ने चिकने रहते हैं।

शीला – शीला प्रयोग के लिए मूँगफली के दाने, प्याज, आलू लेकर आई थी। प्रयोग कार्य में रुचि लेती हैं। कार्य के दौरान अपने पूर्व अनुभव को भी जोड़ लेती है। उसने कहा तेल से कागज चिकना हो जाता है। मैंने देखा कि माँ पूड़ी कागज में लपेटती है तो कागज चिकना हो जाता है।

थीम/पाठ की समाप्ति पर मूल्यांकन कार्य

(कक्षा 3 में भोजन थीम से संबंधित 3 पाठ है। इन पाठों पर कार्य होने के बाद आप निम्न लिखित गतिविधियाँ एवं आवश्यकता के अनुरूप कार्यपत्रक तैयार करके बच्चों के मूल्यांकन कर सकते हैं। काम की समाप्ति के बाद कार्यपत्रकों पर आवश्यक टिप्पणी दर्ज कर सकते हैं, साथ ही बच्चों के लिए उचित पृष्ठपोषण भी प्रदान कर सकते हैं। इन कार्यपत्रकों को आप बच्चों के पोर्टफोलियो में भी लगाएँ)

प्र .1 ***उप समूह में कार्य*** – कुछ पर्चियाँ दी गई हैं, इसमें व्यंजन बनाने की विधि लिखी गई है, पढ़कर क्रम से जमाइए और पुनः अपने कॉपी में लिखिए। *आकलन क्षेत्र – अवलोकन और दर्ज करना।*

प्र. 2 नाम लिखिए।

खाना बनाने के लिए बर्तन	खाना	खाने के लिए बर्तन
	रोटी	
	खीर	
	लस्सी	
	चटनी	
	चावल	

प्र. 3 नीचे एक शादी में बनाए जाने वाले भोजन का वर्णन है । पढ़ कर भोजन के नाम छाँटकर लिखिए। रमेश को बहुत भूख लग रही थी वह सीधे एक स्टॉल की तरफ दौड़ गया वहाँ बहुत भीड़ थी। भीड़ के बीच में से अन्दर जाने पर देखा लोग पानी – पूरी खा रहे थे। वहाँ से रमेश दूसरी तरफ गया उसने देखा कुछ लोग चाट–पकौड़ी खा रहे थे। उसने भी एक चाट–पकौड़ी की प्लेट ली और स्वादिष्ट चाट–पकौड़ी खाने लगा। इतने में माँ आई और कहने लगी, अरे! ये सब चीजें खा कर पेट भरोगे क्या, खाना नहीं खाना है क्या ? चल खाना खाते हैं, बहुत सारी चीज़ें बनी हैं।

रमेश ने शादी में क्या–क्या खाया	**आपने कभी किसी शादी या दावत में क्या–क्या खाया है लिस्ट बनाईए।**

प्र. 4 रसोई घर में किसी एक चीज़ को बनाने का अवलोकन कीजिए और उसके चरण को क्रम से लिखिए।

अध्याय–9

कला की ज़रूरत : उद्देश्य

कला और मनुष्य

सृजन की प्रवृत्ति मनुष्य की मूल पहचान है और आत्म अभिव्यक्ति उसकी अहम ज़रूरत। इसी प्रवृत्ति और आवश्यकता ने कला को जन्म दिया है। इसका प्रमाण ये है कि कला मनुष्य के सभी प्रकार के कार्यकलापों में बसी हुई है। अपने जीवन के महत्त्वपूर्ण अवसरों पर, संबंधों में प्रगाढ़ता लाने और प्रसन्नता और दुख को व्यक्त करने के लिये वह कला को उपयुक्त मानता है। मनुष्य की समूह में रहने की प्रवृत्ति को भी कला सुदृढ़ बनाती है और अभिव्यक्ति को सुन्दर व सहज। सांस्कृतिक आदान–प्रदान का कला बहुत ही सशक्त ज़रिया है। कला करने की प्रक्रिया में मनुष्य प्रेममय, संतुलित, आनन्दित, उत्पादक, सुसंस्कृत और संवेदनशील बनता है, जीवन के संघर्षों में लगने वाले श्रम की थकान से कला के अनुभव द्वारा पुनः ताज़गी और शक्ति प्राप्त करता है और संत्रास से मुक्ति के कारण मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य भी। कला की कृति के प्रकाश में आने पर मनुष्य स्वयं पर मुग्ध होता है, इससे उसका आत्मविश्वास विकसित होता है, उसे संतुष्टि मिलती है और उसके व्यक्तित्व को विशिष्ट पहचान मिलती है। कला सृजन के दौरान जो सौन्दर्य का तत्व उपजता है वह मनुष्य का मौलिक और आंतरिक व्यक्तित्व है, इस प्रकार वह अपने व्यक्तित्व के सौन्दर्य को प्रकट करता है और अपने जीवन को व वातावरण को भी सुन्दर बनाता है। दरअसल कला करने का मतलब है– सौन्दर्य, ओज और आनन्द से परिपूर्ण जीवन जीना। इस प्रकार कला मनुष्य के जीवन को, व्यक्तित्व को पूर्ण बनाती है और मनुष्य की प्रगति का सूचक भी है। ये एक ऐसे इन्सान को गढ़ने का माध्यम है जो बेहतर समाज के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभा सकता है।

मानवीय समाजों के अस्तित्व और उनमें निहित सक्रियता, गतिशीलता, श्रम, मूल्यों, भावनाओं–अनुभूतियों, ज्ञान, तकनीक, संस्कृति आदि समस्त पक्षों के प्रत्यक्ष प्रमाण एवं अध्ययन का बहुत बड़ा आधार और माध्यम उन समाजों में स्थित कलाएं होती हैं।

मानवीय समाजों में सौंदर्य के मानदण्डों में समय के साथ बदलाव आते हैं तो एक ही काल में दो भिन्न समुदायों में सौंदर्य के मानदण्ड भिन्न हो सकते हैं और यही बात मूल्यों और नैतिकता के विरोधाभासी मानदण्डों की इस संसार में उपस्थिति पर लागू होती है। यह समझ पाना कि ऐसा होना स्वाभाविक और वैज्ञानिक/विज्ञान सम्मत है, इस संसार में उदार और सहिष्णु मानवों का निर्माण करती है और इस प्रकार विविध समाजों में परस्पर आदर, शान्ति और सद्भाव का संचार होगा। इस प्रकार कला का सम्बंध विविधतापूर्ण समाजों के सहअस्तित्व से गहराई से जुड़ा हुआ है।

मानवीय समाजों में सौंदर्यबोध के अस्तित्व, कलात्मक अभिव्यक्ति की चाहत, कला से व्यक्त होने वाली विशिष्ट अनुभूतियों एवं भावनाओं को व्यक्त करने के तरीकों की समझ के प्रमाण तब से हैं जब तक के प्रमाण इन्सानों के समूह में रहने के हैं। असल में अधिकांश प्रमाण ही कलाओं के रूप में हैं जैसे कि शैल चित्र एवं मिट्टी के चाक पर बने बरतन इत्यादि।

ऐसा माना जाता है कि लिपि और ज्यामिति की समझ के पूर्व चरण भी शैल चित्र और चाक पर बरतन बनाते समय खोजा गया रेखाओं का ज्ञान ही है।

इस प्रकार दस–बारह हजार वर्षों से भी पूर्व के इन उदाहरणों से लेकर पाँच हजार वर्ष पूर्व के मिस्र के पिरामिडों से होते हुए आधुनिक समाज की अमूर्त कलाओं तक के मानवीय समाजों में हुए समस्त प्रकार के विकासों और कलाओं के विकास की परस्पर समानुपातिकता को आसानी से देखा जा सकता है।

व्यक्तिगत रूप से हो अथवा सामूहिक रूप से अपनी अनुभूतियों और भावनाओं को अभिव्यक्त करने हेतु कलाएं मानव के लिये सदैव सशक्त माध्यम रही हैं। तीज–त्यौहारों पर घरों–नगरों की सजावट और सामूहिक नृत्य हो अथवा माँडने और रंगोली हो, सामूहिक लोक–गीत हो अथवा टैटू कला अथवा आधुनिक वस्त्राभूषण हो अथवा भवन/स्थापत्य निर्माण में नवीन प्रयोग, समस्त उदाहरण मानवीय चेतना के अभिन्न हिस्से के रूप में कला में होने के प्रमाण हैं।

हजारों वर्षों में मानवीय समाजों ने कलाओं की समस्त सम्भावनाओं को वैसे ही खोजा–इस्तेमाल किया और विकसित किया है जैसे कि ज्ञान के अन्य क्षेत्रों को विकसित किया है। विविध लोक कलाओं में इनके प्रमाण देखे जा सकते हैं। विश्व की लगभग हर जनजाति की अपनी गोदना–गोदने की शैली, विधि, तकनीक और मान्यताएं हैं, मेंहंदी एक जानी पहचानी कला है बालों की सजावट की प्रयोगशीलता के प्रमाण मिस्र की सभ्यता से लेकर भारत की वर्तमान में अस्तित्व में रही जनजातियों में भी हैं, गहनों और वस्त्रों के तो अनगिनत रूप आज भी लोक कलाओं के रूप में संसार के समस्त हिस्सों में अस्तित्व में हैं। ये समस्त उदाहरण तो केवल मानव द्वारा स्वयं के शरीर को कला माध्यम के रूप में प्रयोग करने के हैं, इसके बाद तो पशुओं की सजावट, घर की सजावट, धार्मिक अनुष्ठानों में, धार्मिक स्थलों पर, शिकार और लड़ाई के हथियारों को भी कलात्मक तरीकों से सजाने की सम्भावनाएं खोजी गईं। जीवन का शायद ही कोई पक्ष कला से अछूता रहा होगा। वर्तमान समाज में कलाओं की उपस्थिति को सौंदर्य की चाहत और उससे जुड़े करोबार से समझने का प्रयास करें तो इस बात से ही आसानी से समझा जा सकता है कि वस्त्र उद्योग आज की दुनिया का अग्रणी कारोबार है जिसका पूरा दारोमदार कला या सौंदर्य बोध पर टिका हुआ है।

इस प्रकार हम समझ सकते हैं कि कला मानव और मानव समाज की चेतना का कितना अभिन्न अंग है। फिर चाहे वो चित्रकला, हस्तकला, संगीत अथवा नृत्य जैसी स्थापित–व्यवस्थित शास्त्रीय कलाएं हों अथवा लोक कलाएं और आम जन मानस द्वारा विभिन्न अनौपचारिक माध्यमों से व्यक्त होने वाली कलात्मक अभिव्यक्तियाँ हों।

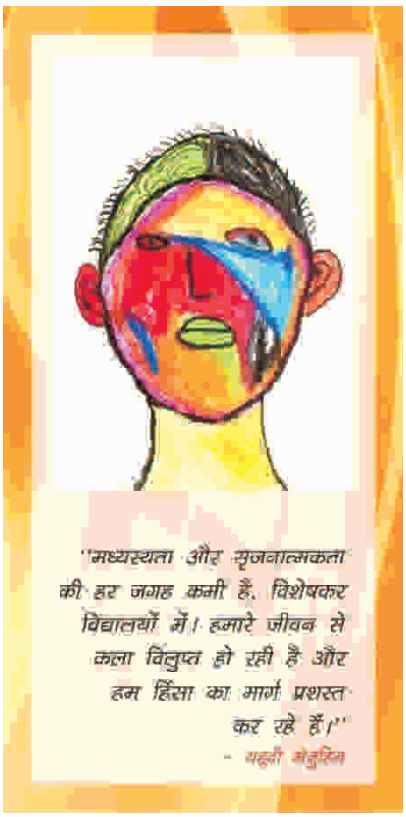

उपरोक्त समस्त प्रमाण ही इस बात के लिये पर्याप्त मज़बूत आधार हैं कि प्राथमिक अथवा प्रारम्भिक शिक्षा में कला का समावेश पूरी गंभीरता से होना चाहिये।

यदि उन समस्त ज्ञान के क्षेत्रों पर भी ठीक प्रकार से विचार करें जो कि अप्रत्यक्षतः मानव के कलात्मक दृष्टिकोण के विकास पर निर्भर हैं तब तो कोई शंका ही नहीं रह जाती कि स्कूलों में कला कितनी महत्त्वपूर्ण है। गणित और कला का सम्बंध तो सहस्त्राब्दियों से ज्ञात ही है। बहुत प्रसिद्ध तथ्य है कि वाद्य–यंत्र हारमोनियम में सफेद और काले बटनों का संयोजन गणित की अवधारणा हरात्मक श्रेढी पर आधारित है जिसे अंग्रेजी में हार्मोनिक प्रोग्रेशन कहते हैं। ज्ञात रहे कि यह नाम पाइथोगोरस द्वारा दिया गया था जो कि अपने काल में गणितज्ञ की बजाय संगीत के विद्वान के तौर पर जाना जाता था।

गणित की अवधारणा ज्यामितीय सममित्ति हो अथवा निर्देशांक ज्यामिति अथवा गणितीय/ ज्यामितीय पैटर्न्स हो ये समस्त अवधारणाएं चित्रकला से गहरे से सम्बन्ध रखती हैं। अंततः ये सब सम्बंध आधुनिक तकनीक के साथ मिलकर कम्प्यूटर ग्राफिक का रूप लेते हैं और अचम्भित करने वाली ऐनिमेशन की कृतियाँ पैदा करते हैं।

निर्देशांक ज्यामिति और चित्रकला तथा क्राफ्ट्स की समझ मिलकर ही कृतियों की विशालता–विहंगमता को तय करती हैं। किसी चित्रकार द्वारा विशाल चित्र बनाने में जिस गणितीय समझ का इस्तेमाल किया जाता है उसी समझ का इस्तेमाल भूगोल के नक्शे बनाने में भी होता है।

ध्वनि विज्ञान की समस्त समझ और संगीत वाद्ययंत्रों के निर्माण और कार्यप्रणाली की समझ का गहरा सम्बंध है। वहीं गणितीय पैटर्न्स संगीत और नृत्य की रचनाओं के आधार भी बनते हैं।

उपरोक्त समस्त तथ्य यह समझने के लिये बहुत पर्याप्त हैं कि समस्त कलाओं में मानव द्वारा बचपन से लिया जाने वाला आनन्द गहरे में कहीं विविध प्रकार के ज्ञान के निर्माण का आधार बनता है।

प्राथमिक शिक्षा में कला के मायने

प्राथमिक शिक्षा के सम्बंध में कला के आशय पर विचार–विमर्श के इस उद्देश्य को समझना सर्वाधिक संगत एवं प्रासंगिक है कि औपचारिक शिक्षा के इन प्रारम्भिक वर्षों में कला की भूमिका बच्चों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण और आधारभूत विकास में किस रूप में है न कि इस रूप में अधिक है कि स्कूली शिक्षा के दौरान बच्चे में क्या और किस स्तर तक के कला कौशल विकसित किये जाने चाहिये।

कला के शिक्षा में समावेश की भारिता इस वजह से अधिक है क्यों कि इसका सम्बंध सौंदर्यबोध के विकास, कल्पनाशीलता के विकास एवं सृजनशीलता के विकास से है।

सौंदर्यबोध अर्थात सुन्दर–असुन्दर का भान उत्तरोत्तर अच्छे–बुरे के भान से और सही–गलत के भान से है और अंततः यही भान विवेकशीलता कहलाता है। चूंकि शिक्षा के कुछ सर्वोच्च लक्ष्यों में से एक लक्ष्य व्यक्ति को विवेकशील बनाना है तो हम समझ सकते हैं कि मानव के निर्माण की प्रक्रिया यानि कि शिक्षा में कला की भूमिका कितनी अधिक निर्णायक है। हम इस बात को सहजता से समझ सकते हैं कि भले–बुरे का निर्णय करने की क्षमता अर्थात नैतिक–अनैतिक की समझ का विकास करने में अप्रत्यक्षतः कला की भूमिका होती है।

कल्पनाशीलता, कला के माध्यम से विकसित होने वाला वह महत्त्वपूर्ण पक्ष है जिसकी भूमिका मानव के ज्ञान निर्माण और सृजन करने की क्षमता विकसित करने में है। सृजन की प्रक्रिया में योजना बनाने हेतु कल्पना करना अथवा वैज्ञानिक खोज की प्रक्रिया में परिकल्पना करना कल्पना के कुछ वे गम्भीर स्वरूप हैं जो कि बाल मन द्वारा परिवेशीय अनुभवों से निर्मित प्रारम्भिक स्मृति बिम्बों के आधार पर किये जाने वाले नवीन रचना प्रयासों यथा चित्रों, वार्तालापों, खेलों इत्यादि से प्रारम्भ हुए अभ्यासों के ही बड़े परिणाम हैं।

कल्पना, सृजन का आवश्यक पूर्व–चरण है। सृजनशीलता यानि नई रचना करना, चिंतन की क्षमता का द्योतक है और चिंतन की क्षमता मनुष्यता का सर्वोपरि लक्षण है। चूंकि सृजन अथवा रचना का यह लक्षण कलाओं से गहरे से सम्बंधित है इसलिये यह माना जाना चाहिये कि कलाएं मनुष्यता की उपस्थिति की द्योतक हैं।

बाल्यावस्था में जब बच्चे विद्यालय में आते हैं तो अपने साथ परिवेश से जुड़े ध्वनि, लय, रंग, रूप के रूप में विभिन्न सौन्दर्यात्मक अनुभव के साथ ज्ञानेन्द्रियों द्वारा ग्रहण बिम्बों का संग्रह भी साथ लाते हैं। विद्यालय में

विभिन्न क्रिया–कलापों, विचार–विमर्श के दौरान वे एक–दूसरे से अन्तःक्रिया करते हैं। अपने विचार दूसरे तक संप्रेषित करने का प्रयास करते हैं। विद्यालय में कला–शिक्षा के अलावा अन्य विषयों से बच्चों के अन्य पक्षों का विकास तो संभव हो पाता है लेकिन उनके सामाजिक भावनात्मक पक्ष पर कार्य नहीं हो पाता जो उनके व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

कलाओं में अभिव्यक्ति के दौरान बच्चों के चिन्तन, विचार, रचना करने को विस्तार मिलता है एवं मौलिक सृजन का मौका भी मिलता है और जब वे अपने मन मुताबिक कोई रचना/सृजन कर पाते हैं तो वह अकथनीय आनन्द में डूब जाते हैं। उस समय वह दूसरों से मिली सकारात्मक टिप्पणी से और गद–गद हो जाते हैं। इस प्रकार बच्चे के मन के आवेग कला अभिव्यक्ति के जरिये प्रकट होते हैं जिससे वे सहज हो पाते हैं और इसका सकारात्मक प्रभाव उनके हृदय पर पड़ता है जिससे बच्चों का हृदय विनम्र बनता है, वे संवेदनशील बनते हैं जो समाज के अच्छे नागरिक होने का द्योतक है।

बच्चा समाज में समय–समय पर कला के विभिन्न रूपों से परिचित होता है व अपने आप को रुचि–रुझान के अनुसार यदा–कला अभिव्यक्त भी करता है। लेकिन प्रत्येक बच्चे के लिए ऐसा अवसर मिले जरूरी नहीं इसलिए जिस प्रकार प्रत्येक बच्चे की शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए विद्यालयी व्यवस्था बनाई गई है उसी प्रकार विद्यालय में ही प्रत्येक बच्चे को कला के संपर्क में लाने हेतु कला शिक्षा की ज़रूरत है। प्लेटो का मत था ''कि बच्चों को बचपन से ही कला रूपों के संपर्क में लाना चाहिए क्योंकि यही वो खास उम्र होती है जब एक नृत्यकार का शरीर सुंदर और छंदमय बन सकता है जो गला छुटपन से सध जाता है उसमें स्वर सदा के लिए समा जाता है। संगीत के लिए कान बचपन से ही सुरीले होते हैं और एक चित्रकार की आँखों में बचपन से ही सौन्दर्य का बोध होता है। बच्चों को विद्यालय में कला शिक्षण कार्य के दौरान उन्हें सृजन हेतु पर्याप्त मौका मिलना चाहिए। बच्चों को रुचि, आनन्द के साथ सृजन करने का पूरा अवसर मिल सके। क्योंकि–

> [1]''बच्चों का सृजनात्मक कार्य उनके आत्मिक जीवन का नितांत मौलिक क्षेत्र है। उनका सृजन उनकी आत्माभिव्यक्ति और आत्मपुष्टि का साधन है। जिसमें प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत विशिष्टता प्रकट होती है।''
>
> [2]''बच्चों के चित्र और चित्र बनाने की प्रक्रिया उनके आत्मिक जीवन का ही एक अंश है। बच्चे अपने चारों और के संसार से किसी एक चीज़ को केवल कागज़ पर उतारते नहीं है बल्कि इस संसार में जीते हैं वे इस संसार में प्रवेश करके सौन्दर्य का सृजन करते हैं और सौन्दर्य का रसपान करते हैं।''
>
> [3]''संगीत– कल्पना–कहानी–सृजन– यह है वह पथ, जिस पर चलते हुए बच्चा अपनी आत्मिक शक्ति को विकसित करता है। संगीत की धुन बच्चों के मस्तिष्क में जीवंत बिम्बों को जन्म देती है। यह बुद्धि की सृजन शक्ति के साधने का अप्रतिम साधन है।''
>
> [4]''संगीत के सुरों से जो बिम्ब बनता है, वह लोगों के सम्मुख यथार्थ जगत की वस्तुओं और परिघटनाओं को नए रूप में प्रस्तुत करता है। बच्चे का सारा ध्यान मानो उन वस्तुओं और परिघटनाओं पर केन्द्रित हो जाता हैं, जिन्हें संगीत ने उसके सामने नए प्रकाश में रखा है और उसका विचार एक भव्य चित्र का सृजन करता है।''

इसी प्रकार नाट्य कला में अभिनय के दौरान स्वयं से बाहर आने का व दूसरे पात्र की भूमिका निभाते हुए उसके जीवन को समझने का मौका मिलता है और जब बच्चों को स्वयं अपने नज़रिये से सोचने–विचारने

एवं प्रस्तुत करने के लिए स्वतंत्र छोड़ा जाये तो उनके नवीन दृष्टिकोण व सृजनात्मक क्षमता से परिचय हो पाता है।

जब बच्चों को विद्यालय में सृजन के आनन्द से गुज़रने का मौका मिलता है तो उसमें बच्चों के आत्मिक सौन्दर्य के दर्शन होते हैं। सृजन–सौन्दर्य व आनन्द से तृप्त बच्चे सहज महसूस करने लगते हैं आत्मविश्वास से भरे होते हैं। एक ऊर्जा का संचार उनके क्रिया–कलाप में देखने को मिलता है और इस यात्रा का अनुभव उन्हें पुनः नये सृजन के लिए प्रेरित करता है।

[5]गुरूदेव रवीन्द्र नाथ जी ने अपनी पाठशाला में सृजनात्मक प्रवृत्तियों को प्रमुख स्थान दिया क्योंकि वे यह मानते थे कि ''चित्रकला, संगीत, साहित्य ऐसी प्रवृत्तियाँ हैं इनके द्वारा मनुष्य अपने स्व को अपने व्यक्तित्व को प्रकट करता है। इनके द्वारा व्यक्ति प्रकृति की ओर उन्मुख होता है। बुद्धि वृत्ति के बदले इनमें हृदय वृत्ति का स्थान है। जो मनुष्य की ध्वंसात्मक वृत्तियों का निकास के द्वारा सृजन करती है।''

गाँधी जी और गुरूदेव ने जिस ''स्वतंत्र मनुष्य'' की कल्पना की थी उसका विकास ऐसी शिक्षा द्वारा ही हो सकता हैं जो बुनियादी तौर पर सृजनात्मकता पर आधारित हो और जिसमें हर प्रवृत्ति और विषय के पीछे व्यक्तित्व के ऐक्य और समाज के ऐक्य की पुनः स्थापना करने वाली कला दृष्टि हो।

गुरूदेव रवीन्द्र नाथ जी ने कलाओं को मनुष्य की अभिव्यक्ति के मुख्य माध्यम के रूप में माना है और इसे आत्म–प्रकटन कहा है।

[6]''बच्चा लकीरें इसलिए मारता है कि वह अपनी आन्तरिक दुनिया को किसी सहानुभूतिपूर्ण दर्शक को बता सके, अपने माँ–बाप के पास अपने भाव प्रकट करे, जिनसे वह समवेदना चाहता है।''

[7]''बच्चों को सहृदय बनाने के लिए उनमें ऐसी आत्मिक क्षमता विकसित करना कि सौन्दर्य को देखकर उनकी भावनाएँ सोती न रह सकें। इसके लिए बच्चों के हृदय में सौन्दर्य पिपासा जगाना कि उनकी आत्मा सौन्दर्यानुभूति की मांग करे अर्थात– सारे शिक्षा और चरित्र निर्माण कार्य का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य यह है कि मनुष्य को सौन्दर्य जगत में रहना सिखाया जाये जिससे कि वह सौन्दर्य के बिना जी न सके और संसार का सौन्दर्य स्वयं उसमें सौन्दर्य का सृजन करे। सुन्दरता के प्रति आकर्षण, उस पर विमुग्ध होना नेक भावनाओं का पहल अंकुर मात्र है, जिसे बढ़ाना विकसित करना चाहिये, ताकि वह कुछ करने की सक्रिय चेष्टा कर सके। नेकी की सहृदयता की जड़, उसका स्रोत सृजन में तथा जीवन और सौन्दर्य की पुष्टि में ही निहित है। सहृदयता और सौन्दर्य के बीच अटूट सम्बन्ध है।''

[8]''कला अनुभव मनुष्य की प्रारंभिक अवस्था से शुरू हो जाता है दुख की बात है कि शिशु–काल और बाल्यवस्था की यह सृजनात्मकता धीरे–धीरे लुप्त होती जाती है। आज के सामाजिक ढाँचे और शिक्षण–पद्धति के कारण यह प्राकृतिक वृत्ति किशोर–अवस्था तक पहुँचते–पहुँचते समाप्त हो जाती है। उसे कायम रखने के लिए और केवल कायम ही नहीं, बल्कि उसका उचित और स्वाभाविक विकास करने के लिए यह जरूरी है कि शिक्षा के कुल ढाँचे को बदला जाये।''

- ''जब आन्तरिक उमंग से, मानो अन्तर को ही खाली करने या व्यक्त करने के लिए जहाँ अन्तर स्वयं प्रकट हो जाता है, वही सृजन कहलाता है। इस प्रकार का सृजन काव्य के, संगीत के, चित्र के अथवा किसी भी ललित कला के माध्यम से हो सकता है। सृजन स्वतन्त्रता की देन है। जब सृजन स्वयं–स्फूर्त होता है, जब सृजन स्वानुभव से उपजता है, जब सृजन आत्मसाक्षात्कार के लिए होता है, तभी वह सच्चा सृजन कहलाता है। जो विद्यालय ऐसे सृजन की व्यवस्था करता है, वह सच्चा विद्यालय है। इससे भिन्न दूसरे विद्यालयों को तो मैं कतलखाने ही कहूँगा। जब तक हमारे विद्यालय ऐसे सृजन के लिए वांछित सभी प्रकार की व्यवस्था नहीं कर लेते, तब तक उन्हें अपना अस्तित्व बनाये रखने का कोई अधिकार नहीं है।''

शिक्षा के ढाँचे में बदलाव यानि बच्चों के विकास में कला के महत्व को समझने के साथ–साथ शिक्षा में कला–शिक्षा को व्यवस्थित रूप में दिये जाने की व्यवस्था हो, अन्य विषयों के समान इसको भी उचित स्थान मिले। जो बच्चों को उसके विद्यालयी जीवन में ही नहीं वरन जीवन पर्यन्त आनन्द व सहृदयता के विकास के साथ समाज का अच्छा नागरिक के रूप में पहचान बनाने में मदद करे एवं वह बच्चा अपने अन्दर नये सृजन की संभावना को हमेशा बनाये रखे।

[10] संस्कृति और कला व्यक्ति के पूर्ण विकास को प्रेरित करने वाली समग्र शिक्षा के आवश्यक तत्व हैं। इसीलिए कला शिक्षा सभी सीखने वालों के लिए एक सार्वभौमिक मानवाधिकार है।

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा मनुष्य के जीवन के कुछ मूल अधिकारों की बात कही गई है कि किसी भी राष्ट्र अथवा राज्य के द्वारा यह मूलभूत अधिकार बिना भेदभाव के हर बच्चे को उपलब्ध करवाने होंगे। इसमें कहा गया है कि शिक्षा को मनुष्य के सम्पूर्ण विकास का साधन होना चाहिए और उसे मनुष्य की आधारभूत स्वतंत्रता के प्रति मनुष्य के सम्मान को सुदृढ़ करने का काम करना चाहिए। वह ऐसी भी हो कि समस्त विश्व के सभी नागरिकों के मध्य समझ, सहनशीलता और मित्रता को बढ़ाये और शान्ति बनाए रखने के लिए कार्य करे। बच्चे की शिक्षा की इस व्यापक अवधारणा में सांस्कृतिक सहभागिता और कला करने व कला का लाभ उठाने की भी बात शामिल है। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षा एक मानवाधिकार है और कला उस शिक्षा का एक पहलू।

व्यक्तिगत क्षमताओं का विकास

कला मनुष्य के लिए एक ऐसा वातावरण तैयार करती है और ऐसा अभ्यास प्रदान करती है जिसमें बच्चा नया बनाने के अनुभवों, नया बनाने के तरीकों और उसके द्वारा अपने अंदर विकास करने में तल्लीन रहता है। शिक्षा के माध्यम से बच्चे का जो बौद्धिक विकास होता है कला के उसमे शामिल होने से उसका असर बढ़ जाता है और कला के योग से शिक्षा यह बता सकती है कि सम–सामयिक समाज की क्या आवश्यकताएँ हैं व इन्हें पूरा करने के लिए विद्यार्थी को क्या सीखने की आवश्यकता है ? कला का ज्ञान समीक्षा करने की क्षमता को उत्पन्न करता है जिससे किसी चीज़ के बारे में अद्वितीय दृष्टिकोण का विकास होता है।

सांस्कृतिक एवं कलात्मक जीवन में बच्चों एवं वयस्कों की पूर्ण भागीदारी होनी चाहिए। इससे वे समझना, अनुभव करना, विवेचना करना सीखते हैं वैश्विक स्तर पर कला–शिक्षा को शिक्षा का अनिवार्य अंग माना गया है। सभी लोगों को सांस्कृतिक एवं कलात्मक गतिविधि के समान अवसर मिलने चाहिए। कलात्मक शिक्षा को सभी के लिए शैक्षिक कार्यक्रम का आवश्यक अंग बनने की आवश्यकता है। कला शिक्षा

सुव्यवस्थित होनी चाहिए और यह एक लम्बी अवधि की प्रक्रिया है, अतः अनेक सालों तक प्रदान की जानी चाहिए।

कला शिक्षा एक ऐसी शिक्षा में योगदान करती है जो शारीरिक एवं बौद्धिक और सृजनात्मक क्षमताओं को एकीकृत (मिलाना) करती है और शिक्षा संस्कृति और कलाओं के मध्य अपेक्षाकृत अधिक गतिशील और सफल रिश्ता सम्भव बनाती है। 21वीं शताब्दी के समाज में उपस्थित चुनौतियों का सामना करने के लिए ये क्षमताएँ विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए परिवार के ढाँचे को प्रभावित करने वाले सामाजिक परिवर्तन के कारण बच्चे अक्सर माता–पिता के ध्यान से वंचित रहते हैं। इसके अतिरिक्त उनके पारिवारिक जीवन में संप्रेषण और रिश्तों के बदलाव में कमी के कारण बच्चे अक्सर अनेक प्रकार की भावनात्मक एवं सामाजिक समस्याओं का अनुभव करते हैं। इससे भी अधिक पारिवारिक वातावरण में सांस्कृतिक परंपराएँ एवं कलात्मक अभ्यास संप्रेषित करना अपेक्षाकृत अधिक कठिन बन गया है खासकर शहरी क्षेत्रों में।

आज के वातावरण में संज्ञानात्मक एवं भावनात्मक प्रक्रिया के बीच विभाजन बढ़ता जा रहा है। यह विचार इससे प्रेरित है कि सीखने के वातावरण में संज्ञानात्मक कौशलों के विकास का अधिक महत्व है और भावनात्मक प्रक्रियाओं का अपेक्षाकृत कम महत्वपूर्ण माना जा रहा है। प्रो. ऐन्टोनियो दमसियो के अनुसार निर्णय लेने के लिए भावनात्मकता एक आवश्यक तत्व है और विचारों और निर्णयों को स्थापित करते हुए क्रियाओं और विचारों के लिए मार्ग–दर्शक के रूप में कार्य करता है। नागरिक की मज़बूत आधारशिला का निर्माण करने वाले अच्छे नैतिक व्यवहार के लिए भावनात्मक भागीदारी की आवश्यकता है। प्रो. दमसियो यह सुझाव देते हैं कि कला शिक्षा भावनात्मक विकास को प्रोत्साहित करके संज्ञानात्मक विकास के मध्य एक अपेक्षाकृत अच्छा संतुलन उत्पन्न कर सकती है और इस प्रकार शान्ति की संस्कृति को समर्थन देने में योगदान दे सकती है।

राष्ट्रों की मूल्यवान सांस्कृतिक पूँजी – कला

21वीं शताब्दी के समाज में ऐसे नागरिकों की आवश्यकता है जो सृजनात्मक हों, नव प्रवर्तनकारी हों। कला शिक्षा विद्यार्थी को कौशलों के साथ तैयार करती है, स्वयं को अभिव्यक्त करने में समर्थ बनाती है और अपने चारों तरफ के संसार का आलोचनात्मक रूप से मूल्यांकन करने में समर्थ बनाती है। कला शिक्षा मानव के अस्तित्व के अनेक पक्षों में सक्रिय रूप से शामिल होती है।

शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने का माध्यम – कला

जबकि बच्चे तक शिक्षा की पहुँच की परिस्थिति पहले से बदली है किंतु संसार के अनेक देशों में शिक्षा में गुणवत्ता में कमी बरकरार है। सभी बच्चों को शिक्षा प्रदान करना महत्वपूर्ण है लेकिन ये भी समान रूप से महत्वपूर्ण है कि विद्यार्थियों को अच्छी गुणवत्ता की शिक्षा दी जाए। ' 'सभी के लिए शिक्षा'' का संकल्प तभी पूरा होगा।

Dakar Framework of Action के अनुसार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए आवश्यक शर्तों के रूप में अनेक तत्व जरूरी हैं। कला के माध्यम से सीखने की प्रक्रिया इन तत्वों में से कम से कम चार तत्वों को बढ़ा सकती है –

सक्रिय सीखने की प्रक्रिया।

एक स्थानीय अनुकूल पाठ्यक्रम जो कि शिक्षार्थियों की रुचि एवं उत्साह को बढ़ावा देता है।

स्थानीय समुदायों एवं संस्कृतियों का सम्मान और उसमें संलग्नता।

प्रशिक्षित और अभिप्रेरित शिक्षक।

सांस्कृतिक विविधता की अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने वाली – कला

किसी भी देश में एवं काल में कलाएँ संस्कृतियों को व्यक्त करने वाली और सांस्कृतिक ज्ञान को एक–दूसरे तक पहुँचाने का साधन दोनों ही हैं। प्रत्येक संस्कृति अनोखी कलात्मक अभिव्यक्ति की क्षमता रखती है और सांस्कृतिक प्रयोग करती रहती है। कला–शिक्षा सांस्कृतिक जागरूकता को बढ़ाती है और संस्कृति के लिए किए जाने वाले प्रयोगों के लिए प्रोत्साहित करती है और कला ऐसा साधन है जिसके द्वारा कलाओं और संस्कृति का ज्ञान और समालोचना एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक फैलती जाती है। क्योंकि शिक्षा व्यवस्था में इनका महत्व नहीं है अथवा भावी पीढ़ियों को प्रदान नहीं किए जा रहे हैं। इसीलिए शिक्षा व्यवस्था में सांस्कृतिक ज्ञान और अभिव्यक्ति को जोड़ने की एवं आगे बढ़ाने की स्पष्ट आवश्यकता है।

समस्त विमर्श के उपरांत यह बात सहजता से समझ में आती है कि यदि स्कूल एक सामाजिक संस्था है तो इसे वृहद–व्यापक वैश्विक समुदाय की आकांक्षाओं के अनुरूप होने के लिये शिक्षा में कलाओं के संतुलित समावेश को गंभीरता से समझना होगा। कला–शिक्षा के प्रति दोयम नज़रिया अथवा शालाओं में 'सहशैक्षिक' के रूप में शिक्षाक्रम के द्वितीयक स्तर के उद्देश्यों के रूप में रखना कालांतर में समाज में कई तरह के असंतुलनों को आमंत्रित करना माना जायेगा।

स्रोत :

1,2,3,4,7 बाल हृदय की गहराइयाँ – वसीली सुखोम्लीन्स्की

5 संगीत पाठ्यक्रम : बोध

6 हर्बर्ट रीड ''शिक्षा का वाहन : कला'' – देवी प्रसाद

8 शिक्षा का वाहन :कला – देवी प्रसाद

9 प्राथमिक शाला में कला–कारीगरी की शिक्षा, गिजुभाई

10 Road Map of Arts Education, A Document on The Word Conference on Arts Education 2006, UNESCO

अध्याय– 10

विषयों और कलाओं का इंटीग्रेशन

दृष्टिकोण

[1]''स्कूली जीवन के पहले ही दिनों में बच्चों के लिये पढ़ना और लिखना कितना कठिन, नीरस और थकाऊ काम हो जाता है। इस सबका कारण यह होता है कि शिक्षा पूरी तरह से किताबी कार्य हो जाती है। पाठों में बच्चे अक्षरों में भेद करने के लिये कितना जोर लगाते हैं और कैसे ये अक्षर उनकी आँखों के सामने नाचते हैं, एक–दूसरे में गुँथ जाते हैं और टेढ़ी–मेढ़ी रेखाओं से बन जाते हैं जो बच्चों की समझ से बाहर होती हैं।''

[2]''अगर यही कार्य उन्हें रुचिकर ढंग संगीत चित्र के साथ जुड़कर करवाया जाये तो बच्चे कितनी आसानी से अक्षर याद कर लेते हैं और अक्षरों से शब्द बनाते हैं जब बच्चे श्रवण और दृष्टि इन्द्रियों से एक साथ बोल पाते हैं और उनका यह बोल दृश्य–बिम्ब तथा शब्द की संगीतमय ध्वनि में निहित विविध भावनात्मक छटाओं से ओतप्रोत होता है। तब बच्चों को एक साथ ही अक्षर भी और पूरा शब्द भी याद हो जाते हैं।''

[3]''बच्चों की चेतना में हर अक्षर किसी ठोस बिंब के साथ जुड़ा हुआ है बच्चे अपने परिवेश के सौन्दर्य से जितने अधिक उत्तेजित होते हैं उतनी ही अच्छी तरह उन्हें अक्षर याद होते हैं।''

[4]''पठन–पाठन बच्चों के जीवन को केवल तभी समृद्ध बनाता है जबकि शब्द उनके हृदय के सबसे अंतरंग तारों को स्पर्श करे। यह काम संगीत, चित्रकला करता है।'' इसलिये भाषा गणित विज्ञान सभी विषयों को प्राथमिक स्तर तक एकीकृत नजरिये से पढ़ाने पर ध्यान दिया है।

बच्चा प्रकृति से सभी विषय क्षेत्र से जुड़ा ज्ञान समग्र रूप में ग्रहण करता है और अभिव्यक्ति के समय भी उसे सभी क्षेत्रों के ज्ञान की आवश्यकता होती है। अतः प्राथमिक शिक्षा में इसे समन्वित रूप में ही बच्चों के सम्पर्क में लाना चाहिए। अगर हम गौर करें तो देखेंगे कि शाला पूर्व से प्राथमिक तक बच्चों के सीखने का जो तरीका होता है। बड़ों से भिन्न होता है वे चीज़ों को अलग–अलग करके नहीं सीखते सब चीज़ों को मिलाकर ही सीखते हैं। अगर हम अलग–अलग करके सिखाने की कोशिश भी करते हैं तो भी स्वाभाविक तौर पर वे स्वयं ही कई चीज़ों को संयुक्त करके सीखते और अभिव्यक्त कर पाते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि इस उम्र में बच्चे इसी तरह से बेहतर सीखते हैं व बेहतर काम कर पाते हैं। कला क्या है– किसी काम को करने का तरीका, अगर शिक्षा कला पर आधारित हो तभी वह तत्काल एक विशिष्ट शैली को झलकाने में समर्थ होती है। प्राथमिक शिक्षा का ध्येय ही अनेकता को पुष्ट करना है।

[1,2,3,4] – 'बाल हृदय की गहराइयाँ' वसीली सुखोम्लींस्की

चूँकि अभी तक कलाओं के प्रति जो दृष्टिकोण है या तो कलाकार बनाने के लिए कला की पृथक से शिक्षा दी जाए या अन्य विषयों को पढ़ाने के माध्यम के रूप में कला शिक्षा को देखते हैं। जबकि अन्य विषयों के साथ कला व कलाओं में अन्य विषय क्षेत्र का ज्ञान इतना गुंथा हुआ है कि प्राथमिक स्तर पर उसे पृथक से नहीं सिखाया जा सकता है। जब भाषा पढ़ाते हैं तो चित्र या दृश्य उसका आधार बनते हैं। बालगीत बच्चे के उच्चारण को सुदृढ़ करने व शब्दकोश को बढ़ाने और अभिनय शब्दों के अर्थ को समझने में आधारभूत भूमिका निभाता है। 'गणित' विषय के क्षेत्रों को समझाने के लिए चित्र/शिल्प आदि की ज़रूरत होती है। इसी प्रकार विज्ञान को समझाने के लिए मॉडल एवं चित्र विशेष भूमिका निभाते हैं इसके विपरीत संगीत में, नाद कैसे उत्पन्न हुआ यह एक विज्ञान है साथ ही गणित का ज्ञान इसमें मदद करता है। श्रुति, स्वर, राग, ताल व लय पूरी तरह 'गणित' के ज्ञान पर आधारित हैं जहाँ निर्धारित मात्राओं, निर्धारित तारता पर स्थित 12 स्वरों व निश्चित आवृति के आरोह–अवरोह क्रम में संगीत को समझा/सीखा जा सकता है।

इसी प्रकार चित्र/शिल्प बनाने में वस्तु के प्रमाण परिप्रेक्ष्य, दृष्टि–बिन्दु, छाया–प्रकाश आदि को गणित व विज्ञान की समझ की ज़रूरत होती है। पर्यावरण यानि इस परिवेश में जहाँ तक हम देख सकते हैं उसमें से किसी भी विषय–वस्तु को कल्पना के योग के साथ अभिव्यक्त कर सकते हैं लेकिन चित्र या शिल्प निर्माण से पहले उनका अवलोकन किस स्तर का है उनके मस्तिष्क में दृश्य बिम्ब किस रूप में ठहरे रहे हैं इसे जागृत करने के लिए/ताजा करने के लिए शिक्षक को बच्चों से उनके स्मृति बिम्ब से जोड़कर संवाद करने की ज़रूरत होगी। पर्यावरण के यथार्थ बिम्बों के साथ चर्चा करते हुए बच्चों से संवाद के दौरान सरल एवं सहज भाषा की ज़रूरत होती है व शिक्षक के द्वारा बच्चों की स्मृति में एक कल्पना लोक तैयार कर उसके बाद चित्र या शिल्प बनाने के लिए स्वतंत्र छोड़ा जा सकता है। चित्र रचना एवं शिल्प निर्माण पर्यावरण के अवलोकन के बिना सम्भव नहीं है

जैसे– एक कक्षा में एक शिक्षिका बच्चों को अभिनय के साथ कहानी सुनाती है तो कक्षा के प्रत्येक बच्चे के मन में कहानी से जुड़े पात्रों एवं दृश्य वर्णन से काल्पनिक दृश्य–बिम्ब बनने लगते हैं यदि कहानी पर चित्र बनवाये जायें तो प्रत्येक बच्चे का चित्र अलग–अलग होगा। ऐसा क्यों व कैसे हुआ ? इस प्रश्न के उत्तर में हम पायेंगे कि सभी बच्चों के अनुभव और बिम्ब अलग–अलग थे कहानी के पात्रों को सभी ने अलग–अलग समय में, अलग–अलग दृष्टिकोण से देखा होगा जो बनाते समय कल्पना में दिखाई दिये। यदि उनमें से किसी बच्चे की देखने वाली इंद्रिय निष्क्रिय हुई तो वह चित्र नहीं बना पायेगा। वह उसके प्रति मौखिक अभिव्यक्ति ही करेगा क्योंकि कहानी में आये पात्र का आकार, रूप, रंग कैसा हो सकता है उस बच्चे की कल्पना से परे है। हाँ यदि छोटी वस्तु को वह स्पर्श के आधार पर आकार की अवधारणा बना भी लेता है तो उसके रंग को स्पर्श से नहीं पहचान सकता क्योंकि रंग–रूप नितांत देखने पर आधारित हैं।

इसी प्रकार संगीत अत्यंत अमूर्त है, दृश्यमान नहीं है। संगीत में जब तक भाषा न जोड़ी जाए बच्चे के लिए तब तक अर्थ निकालना व भाव अभिव्यक्ति संभव नहीं है। प्राथमिक स्तर पर संगीत की तकनीकी चीज़ों को सीधे–सीधे नहीं सिखाते हैं। जैसे– सरगम अलंकार, स्वर आदि। इसे जब तक कविता से न जोड़ें बच्चों के लिए अर्थ निर्माण अत्यंत कठिन है। संगीत के प्रारंभिक विद्यार्थियों को राग के स्वरूप को समझने के लिए लक्षण गीत सिखाया जाता है। जिसमें राग के नियमों के वर्णन के साथ राग की धुन होती है। इसमें राग के स्वरूप के साथ शब्द हैं। जोकि बच्चों के लिये राग को एक मूर्त स्वरूप देते हैं। शास्त्रीय संगीत भी अत्यंत अमूर्त है और स्वर प्रधान है। अतः छोटे बच्चों को सुगम संगीत सिखाया जाता है जोकि भाषा प्रधान है, शब्द

प्रधान है जैसे– गीत, भजन, राष्ट्र गीत, देशभक्ति गीत आदि। यानि बच्चे भाषा के माध्यम से ही संगीत आनन्द ले पाते हैं, अर्थ निर्माण कर पाते हैं और वे संगीत को केवल गायन, वादन या नृत्य के पृथक–पृथक रूप में नहीं देखते है बल्कि उनके लिये ये तीनों मिलकर एक सम्पूर्ण अभिव्यक्ति बनते हैं, साथ में नाट्य भी जुड़ जाता है। उनके लिए कहानी, नृत्य, गाना, हाव–भाव, अभिनय व गाना एक ही है।

गायन भी एक तरह से वैज्ञानिक प्रक्रिया है संगीत का तत्व ध्वनि भौतिक शास्त्र के तत्व हैं। हमारे सारे वाद्ययंत्र जो बनाये गये हैं। वैज्ञानिक प्रक्रिया का ही परिणाम हैं। जैसे– अगर हम बांसुरी को ही लेते हैं तो हम देखते हैं फूँक की हवा जब बांसुरी के मुख में जाती है तो उसमें कम्पन होता है जिसकी आवृति वायु के वेग पर निर्भर है। इस कम्पन से बांसुरी के भीतर की वायु में प्रेरित कम्पन पैदा होता है जिसकी आवृति बांसुरी के भीतर बन्द वायु की मुख से लेकर खुले सुराख तक की लम्बाई पर निर्भर है। इस वायु के स्तम्भ की शक्ति अधिक होने से यह फूँक की वायु की आवृति को दबा देता है और इसकी आवृति से बांसुरी बजती है। इस वाद्ययंत्र की बनावट में विज्ञान की अवधारणाएं हैं उन्हें हम वैज्ञानिक प्रक्रिया के माध्यम से समझा सकते हैं।

नाटक में भाषा व अन्य सभी विषयों की अंतर्निर्भरता है। संवाद अदायगी के लिए भाषा सटीक व भाषा का उच्चारण शुद्ध होना चाहिए। जिस थीम पर नाटक लिखा गया है उस विषय का गहन ज्ञान नाटककार को होना ज़रूरी है। राजनीति पर आधारित नाटक के लिए राजनीति का व्यापक ज्ञान ज़रूरी है, जिसके अभाव में नाटककार नाटक की पटकथा नहीं लिख सकता अर्थात इस प्रकार विषयों एवं कलाओं की अंतर्निर्भरता पर विस्तार से बात की जा सकती है। इसके अलावा कलाओं में आपस में भी एक प्रकार की अंतर्निर्भरता है और नाटक इसका श्रेष्ट उदाहरण है। एक कला में दूसरी कला समावेश करने से नए रूप की सृष्टि होती है और अभिव्यक्ति के प्रभाव में वृद्धि होती है, एक से दूसरे विषय को पुष्ट होने में मदद मिलती है। यहाँ तक कि भरतमुनि ने 'नाट्यशास्त्र' में कलाओं का वर्गीकरण करते हुए लिखा हैं कि नाट्यकला ही मुख्य कला है व अन्य कलाएं गौण हैं चूँकि अन्य कलाओं का समावेश ''नाट्यकला'' में होता है।

विषयों के शिक्षण में कला के समावेश का एक उदाहरण

एसआईआरटी की भाषा–पर्यावरण की पाठ्यपुस्तकों में उपलब्ध पाठ्यसामग्री को विविध कलारूपों में बच्चों के साथ करवाने के सकारात्मक प्रभाव क्या हो सकते हैं ? इसके लिए उदाहरण के साथ निम्न प्रकार देखा जा सकता है। जैसे– एसआईआरटी की हिन्दी भाषा की पुस्तक 'रुनझुन–1'' (कक्षा–1) में से कविता : ''ऊँट' की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं।

लंबी गरदन छोटे कान
कहलाता धोरों का यान
झाड़ी–पत्ते खाता ऊँट
छाक कर पानी पीता ऊँट।

कालांश में इस कविता को शिक्षक बिना ताल, लय, धुन के, साधारण ढंग से बच्चों के बीच पठन के तौर पर करवाए तो ये नीरस व उबाऊ होगी। यदि इसे अच्छी धुन के साथ बच्चों को ताल/लय में गवाई जाये तो

बच्चे कविता गाने में रुचि दिखायेंगे व आनन्द के साथ बच्चों की संलग्नता भी देखने को मिलेगी [2] ***"गीत की बदौलत बच्चे शब्द की ध्वनि की सूक्ष्म छटाओं को ग्रहण कर पाते थे।"***

[3] ***"संगीत के स्वरों से जो बिम्ब बनता है वह लोगों के सम्मुख यथार्थ जगत की वस्तुओं और परिघटनाओं को नए रूप में प्रस्तुत करता है। बच्चे का सारा ध्यान मानों उन वस्तुओं और परिघटनाओं पर केंद्रित हो जाता है जिन्हें संगीत में उनके सामने नए प्रकाश में रखा है।"***

यदि इसके बाद बच्चों से प्रश्न उत्तर किये जायें तो बच्चों के पर्यावरण ज्ञान को भी जाँचा जा सकता है साथ ही दृश्यकला रूप में अभिव्यक्ति के लिए उनके मस्तिष्क में कल्पना दृश्य उभारा जा सकता है जैसे–

प्रश्न : ऊँट जानवर है या पक्षी ?

प्रश्न : अन्य और कौन–कौन से जानवर आपने देखे हैं, उनके आकार व रंग बताइए ?

प्रश्न : क्या आपने ऊँट की सवारी की है?

प्रश्न : क्या सिर्फ जानवरों की ही सवारी होती है ?

प्रश्न : आपने किस–किस की सवारी की है ?

प्रश्न : आपको सवारी करना कैसा लगता है ?

उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर से बच्चों की जानवरों एवं आवागन के साधनों से जुड़ी समझ का पता चल सकेगा व उसकी स्मृति में संग्रहीत दृश्य–बिम्ब याद आने लगेंगे बच्चे अपनी उम्र अनुसार ही उत्तर देंगे और उनके उत्तर उनके अनुभव के आधार पर होंगे प्राप्त उत्तर से जुड़ा दूसरा प्रश्न फिर तीसरा प्रश्न, इस प्रकार प्रश्न उत्तर की श्रृंखला से बच्चों को ऐसे कल्पना लोक में ले जा सकते हैं जहाँ वे यथार्थ दृश्य बिम्बों का कल्पना के योग से ऐसा संयोजन करते हैं जैसा उन्होंने कभी देखा भी नहीं हो और अब उन्हें चित्र बनाने के लिए स्वतंत्र छोड़ा जा सकता है ऐसा कुछ पूछते हुए कि –

प्रश्न – यदि ऊँट के आकार का हमारा घर होता तो कैसा दिखाई देता और हम या परिवार के सदस्य क्या कर रहे होते ? चित्र द्वारा इसे बनाकर दिखाओ एवं इच्छानुसार रंग भरो।

इस प्रकार दृश्य कला रूप में चित्र/शिल्प भी बनवाये जा सकते हैं हालांकि उम्र अनुसार वे उन्हें प्रतीक के रुप में बनायेंगे लेकिन जिस संवाद से शिक्षक बच्चों को प्रेरित करता है एवं कलारूपों में अभिव्यक्ति के समय जब बच्चे कल्पना व आनन्द से जब गुजरते हैं तो उनकी स्मृति में वह अध्याय बैठ जाता है।

2, 3 - 'बाल हृदय की गहराइयाँ' – वसीली सुखोम्लींस्की

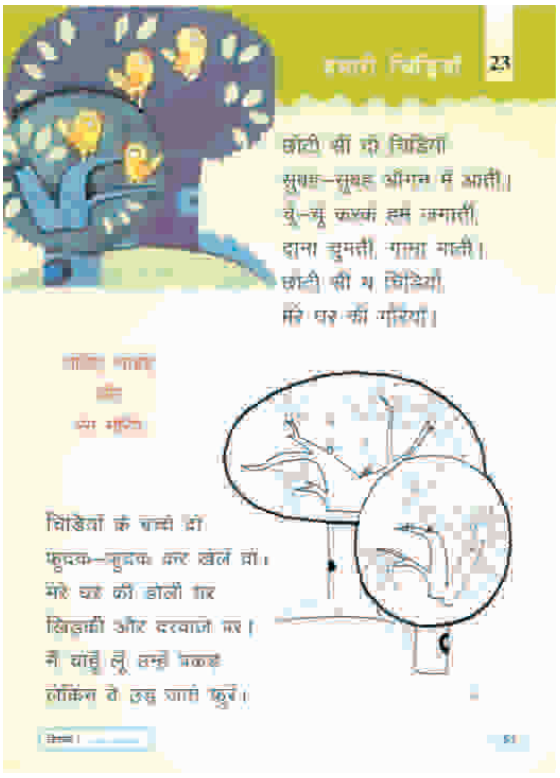

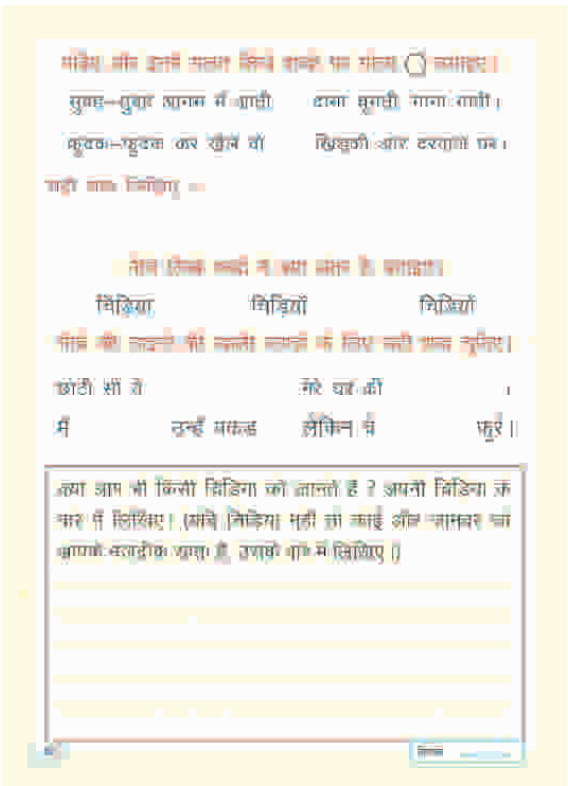

उदाहरणार्थ : पुस्तक ''फुलवारी'' भाषा, संगीत, चित्रकला एवं पर्यावरण अध्ययन की समन्वित पुस्तक से एक अध्याय।

यहाँ बच्चों द्वारा कविता गाने, चित्र बनाने एवं प्रश्न उत्तर के दौरान शिक्षक को बच्चों का भाषा का मौखिक उपयोग, पर्यावरण के ज्ञान, संगीत में स्वर व लय में अभिव्यक्ति व स्वर लय की स्थिति, चित्र अभिव्यक्ति में उसके आकार, रंग, रुप से सम्बन्धित सौंदर्य बोध व प्रमाण से संबंधित उनके ज्ञान का पता चलता है।

अन्य विषयों के शिक्षण को यदि हम कलाओं को जोड़ दें तो विषयों में बच्चे की बौद्धिक संप्राप्ति अथवा सीखने में बहुत उत्तम परिणाम पाए जा सकते हैं। बच्चे की गणित, भाषा, विज्ञान, पर्यावरण अध्ययन आदि विषयों को सीखने के प्रति रुचि बढ़ जाती है। संलग्नता के स्तर में सुधार होता है और इसी वजह से सीखने की गति बढ़ जाती है। वसीली कहते हैं कि– चिंतन का स्रोत भावनात्मक होता है। अतः जब किसी कविता, गद्य अथवा पर्यावरणीय अवधारणाओं से कला जुड़ जाती है तो उस विषय को समझने के लिए किए जाने वाले चिंतन में भावना का समावेश हो जाता है जैसे– किसी कविता को गाते ही बच्चे उसमें भावनात्मक रूप से लिप्त हो जाते हैं या किसी कहानी का अगर पपेट शो बच्चे को दिखाया जाए तो बच्चे को मज़ा आने के कारण वह उसमें मन से जुड़ जाता है और वह उसके बारे में सोचने लगता है। कला के द्वारा उसके मस्तिष्क में सजीव बिम्बों का निर्माण होता है जो किसी अमूर्त अवधारणा को सार्थकता प्रदान करता है। कला से उसे हर विषय अत्यंत आकर्षक लगने लगता है और कला के माध्यम से उसकी अभिव्यक्ति सहज, सुन्दर होती है। अतः विषयों व कलाओं में एकीकरण के द्वारा अनेक स्तरों पर परिणाम में वृद्धि की जा सकती है।

हाँ यह तभी हो सकता है कि शिक्षक समन्वित दृष्टिकोण को अपनाये, अपनी कार्य क्षमता को बढ़ाये, दैनिक योजना बनाते समय जागरूक हो कि अध्याय को पढ़ाते समय कौन–कौन सी गतिविधि करवानी है व उसे कौन सी कला विधा में करवाया जाये और उस दौरान बच्चों का आकलन कैसे हो पायेगा ?

ज़रूरी नहीं कि हर अध्याय को प्रत्येक कला विधा से जोड़ा जाये किसी एक कला विधा के साथ भी उसे करवाया जा सकता है। चूँकि मुख्य उद्देश्य ये है कि बच्चों को पढ़ाते समय उनकी रुचि बढ़ सके उनका ध्यान एकाग्र हो सके व समझ के साथ उनकी स्मृति में जुड़ सके, समय–समय पर चिंतन व कल्पनाशीलता के साथ सृजन करने का मौका भी मिले। जिससे उसके शरीरिक एवं मानसिक विकास के साथ–साथ भावनात्मक पक्ष भी अछूता न रह जाये। कई बार कलाओं को अन्य विषय पढ़ाने के माध्यम के रूप में उपयोग लेते हुए शिक्षक उसे साधन के रूप में ही समझने लगता है कलाओं के बच्चे के मन पर प्रभाव को नज़र अंदाज़ करते हुए आगे बढ़ जाता है कलाओं के ज़रिये विकसित होने वाले पक्ष पर भी शिक्षक का उतना ही ध्यान होना चाहिए जितना अन्य विषयों से विकसित होने वाले पक्षों पर होता है। हाँ यह सब कुछ, स्वयं शिक्षक के कलाओं के प्रति दृष्टिकोण, समझ, रुचि व क्रियान्वयन के ऊपर निर्भर करेगा। यहाँ शिक्षक की अपनी क्षमता एवं रुचि के अनुसार पढ़ाते समय कलाविधा के उपयोग की भिन्नता भी देखने को मिलेगी। जैसे– किसी अध्याय को एक शिक्षक संगीत विधा से व दूसरा चित्रकला या शिल्प विधा से करवाने में रुचि दिखाये और दोनों का शिक्षण प्रभावी हो सकता है। इसलिए यहाँ शिक्षक का दृष्टिकोण प्रमुख हो जाता है इसलिए पहले शिक्षक का अभिमुखीकरण होना ज़्यादा ज़रूरी है इसके लिए प्रशिक्षण व कार्यशाला में शिक्षक के साथ समन्वित दृष्टिकोण के मायने क्या हैं ? को समझना एवं समझाना और अति आवश्यक हो जाता है।

इसी प्रकार पाठ्यपुस्तकों में भी समन्वित दृष्टिकोण से अध्याय रखे जाने चाहिए। एनसीईआरटी द्वारा प्रकाशित पुस्तक इसके अच्छे उदाहरण हैं। प्राथमिक स्तर की भाषा एवं पर्यावरण की पुस्तकों में बच्चों के अनुभव आधारित व विविध कला–रूपों में गतिविधि करवाने के एक स्तर की संभावना इनमें दिखाई देती है। लेकिन भाषा की पुस्तक में भाषा सिखाने की दृष्टि से पाठ्यचर्या का क्रम तय किया गया है जबकि कला की दृष्टि से इसका क्रम बच्चे के अनुभव से गुजरने एवं उसमें प्राप्त आनन्द के आधार पर होना चाहिए। जैसे– सत्र के आरम्भ में जुलाई–अगस्त के महीनों में बरसात होती है जिसमें बच्चे नहाते हैं, बारिश से हुई गीली मिट्टी के खेल खेलते हैं,, इस मौसम में आने वाले फल–सब्जी, तीज–त्यौहार से जुड़े अनुभव जैसे सावन के झूले, भ्रमण, पिकनिक एवं प्रकृति के अवलोकन के अनुभव को चित्र या शिल्प का आधार बनाना चाहिए चूँकि बच्चे जिस क्रिया–कलाप व आनन्द के अनुभव से गुज़र कर आते हैं तो उनके मस्तिष्क एवं मनोभाव पर उसका प्रभाव देखा जा सकता है जो किसी हद तक उनकी अभिव्यक्तियों में दिखाई देता है।

प्रकृति के बदलते मौसम, रूप, रंग व उसके जन मानस पर प्रभाव को गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर की रचनाओं में बहुत स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। स्वयं रवीन्द्र नाथ जी ने प्रकृति गीत बदलते मौसम के आधार पर लिखे हैं इसी प्रकार प्रकृति अवलोकन को दृश्यकला का मुख्य आधार माना है। ''यहाँ तक की गुरूदेव ने तो कला शिक्षा ही नहीं बल्कि पूरी शिक्षा प्रणाली का पहला सिद्धांत ही यह मानते थे कि सच्ची शिक्षा मिलती है प्रकृति के सहवास से एवं मातृभाषा के माध्यम से, ये वो माध्यम हैं जो व्यक्ति को सारे समाज के साथ आदान–प्रदान करा सकते हैं।''

इस प्रकार कला व अन्य विषयों में एक प्राकृतिक अन्तर्गुथन व अंतर्निर्भरता है। उपरोक्त विमर्श में विषयों को कला के माध्यम से एवं कला को अन्य विषयों के माध्यम से सिखाना इन दो दृष्टिकोणों की चर्चा की गई है। इस अंतर्निर्भरता, अंतर्संबंध और रचनात्मक पक्ष को देखते हुए कलाओं को भी अन्य विषयों के माध्यम से सिखाने पर अच्छे परिणाम पाए जा सकते हैं।

विषयों का शिक्षण कला के माध्यम से

- भाषा के अंतर्गत किसी कविता को याद करने के लिए उस कविता की धुन बना दी जाए उसे गीत के रूप में गवाया जाए जो वह कविता बच्चे को याद हो जाएगी।
- किसी घटना को समझने व याद करने के लिए उसे कहानी की तरह से अथवा संवादमय रूप में नाटक बनाकर बच्चों से प्ले करवाया जाए।

- पर्यावरण अध्ययन के तहत पत्ती अथवा पौधे की संरचना और प्रकार के अध्ययन के लिए अवलोकन के द्वारा उनका चित्र बनवाने पर काम किया जाए ऐसे ही विज्ञान को भी सिखाया जा सकता है।
- रेखा गणित पूर्ण रूप से ज्यामितीय आकारों पर आधारित है जो चित्रकला का भी हिस्सा है। अतः चित्रकला के अनुपात निर्माण के लिए गणित से मदद लेना।
- शालापूर्व में भाषा विकास के लिए चित्र पठन व हाव–भाव व अभिनय के साथ बाल गीत करना।

कलाओं का अन्य विषयों के माध्यम से शिक्षण

- ▶ चित्र बनाने के लिए प्रकृति का अवलोकन/पर्यावरण अध्ययन चित्रांकन का एक सशक्त तरीका है।
- ▶ चित्र/शिल्प निर्माण में प्रमाण एवं परिप्रेक्ष्य दिखाने के लिए गणित के ज्ञान की मदद लेना।
- ▶ चित्र में अलंकरण डिज़ाइन के लिए पैटर्न को बनाने में कला के ज्ञान के साथ गणित के ज्ञान की मदद लेना।
- ▶ ऑरीगेमी में कागज़ मोड कर आकृति रचना में गणितीय ज्ञान की मदद लेना।
- ▶ इसी प्रकार मिश्रित रंगों की तान का बनना भी गणित के ज्ञान के आधार पर ही समझा जा सकता है।
- ▶ इसी प्रकार चित्र निर्माण में रेखाओं के प्रयोग व प्रभाव गणितीय ज्ञान पर आधारित है।
- ▶ परिवेश में त्रि–आयाम में वस्तुओं को देखना व द्विआयामी फलक पर त्रिआयामी आभास गणित ही है।
- ▶ राग की धुन अथवा सरगम सिखाने के लिए किसी कविता के शब्दों को रागबद्ध व स्वरबद्ध किया जा सकता है।
- ▶ राग का विवरण सिखाने के लिए लक्षण गीत सिखाया जाए।
- ▶ संगीत के सरल सिद्धांतों को वैज्ञानिक प्रक्रिया व प्रयोग से सिखाया जाए जैसे– वाद्ययंत्रों का प्रयोग, उनकी बनावट व उनकी ध्वनि, स्वर का ऊँचा–नीचा करना आदि सिखाना।
- ▶ अलंकार बनाना सिखाने के लिए पैटर्न के रूप में गणित का प्रयोग किया जाए।
- ▶ लय सिखाने के लिए कविता, कहावत, पहेली, बातचीत को लयबद्ध करके कहा जा सकता है।
- ▶ कविता की रचना के लिए शब्द अथवा शीर्षक लिया जाए।
- ▶ Voice modulation पर काम करने के लिए बाज़ार, स्टेशन, यात्रा, मण्डी व पक्षियों की आवाज़ को सुनाना व अवलोकन कराया जाए।

अब हमें देखना यह है कि अन्य विषय के साथ समन्वित दृष्टि से कलाओं पर कार्य करवाना है या कला का पृथक से कालांश में कार्य होना चाहिए।

कला कालांश में कला शिक्षक द्वारा करवाये जाने वाले कार्य में भी शिक्षक समन्वित दृष्टि का ध्यान रख सकता है साथ ही कला कार्य से प्राप्त किये जाने वाले उद्देश्यों का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए। इसके लिए शिक्षक को योजना बनाते समय ही इस बात का ध्यान रखना होगा।

कला कालांश अवधि एवं आवृति

45–60 मिनिट अवधि कला कालांश के लिए होनी चाहिए। एक कक्षा के साथ सप्ताह में 2–3 दिन एक विधा पर कार्य होना चाहिए। जिससे बच्चों के साथ कार्य की प्रगति को देखा जा सकेगा। जैसे– एक कक्षा के साथ 2–3 दिन चित्रकला तो 2–3 दिन संगीत विधा पर कार्य हो।

इस प्रकार सप्ताह में 3 दिन औसतन कला कालांश के आधार पर माह में 12 दिन कार्य दिवस के लिए कला पाठ्यक्रम में से मासिक कार्य की योजना बनानी चाहिए। और यदि अन्य विषयों की पाठ्यचर्या के साथ कला–कालांश को समायोजित करके देखा जाता है तो अन्य विषयों के अध्याय से सम्बन्धित कला कार्य की समन्वित दृष्टि से योजना बनानी होगी।

अध्याय– 11

स्वास्थ्य एवम् शारीरिक शिक्षा

सभी समाजों के लिए बच्चों का स्वास्थ्य एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा है क्योंकि यह उनके सर्वांगीण विकास में सहायक होता है। बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा महत्त्वपूर्ण हैं और इन तीनों तत्वों को व्यापक ढंग से पेश करने की सख्त ज़रूरत है। स्वास्थ्य और शिक्षा के सम्बन्धों को ऐसी दृष्टि से ज़्यादा देखा जाता है कि शिक्षा की वजह से ही स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता पैदा होती है तथा स्वास्थ्य की स्थिति में भी सुधार आता है। लेकिन इस बहस में स्वास्थ्य और शिक्षा के परस्पर सम्बन्धों को पर्याप्त रूप से पेश नहीं किया जाता है – विशेषकर बच्चों के मामले में। अध्ययन यह दर्शाते हैं कि बच्चों में खराब स्वास्थ्य और पोषण का स्तर उपस्थिति और शैक्षणिक उपलब्धियों के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है। साथ ही यह नामांकन, ठहराव और स्कूली शिक्षा पूरी करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

विषय की अंतर–विषयक प्रवृत्ति के मद्देनज़र इसे अन्य पाठ्यपुस्तकीय शिक्षा की तरह लागू नहीं किया जा सकता। इसके लिए विषयों के एकीकरण और दूसरे पाठ्यक्रमों के साथ सामंजस्य बनाना जरूरी है।

इस विषय के क्षेत्र को परिभाषित करने के लिए हमें उन चीज़ों की पहचान करनी होगी जो किसी बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए ज़रूरी होती हैं। कुछ मूल ज़रूरतों जैसे भोजन, कपड़ा और आवास का पूरा होना मनो–सामाजिक और उच्च आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आवश्यक है। ऐसी व्यापक समझ के तहत इस विषय द्वारा स्कूली शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर इन मूल आवश्यकताओं पर ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। इस रूपरेखा के अंतर्गत योग और शारीरिक शिक्षा दोनों को ही न केवल शारीरिक स्वास्थ्य बल्कि मनो–सामाजिक विकास प्राप्त करने के मार्ग के तौर पर देखा जा सकता है। स्वास्थ्य, योग और शारीरिक शिक्षा के अंतर्गत निम्नलिखित चार क्षेत्र हो सकते हैं :

1. व्यक्तिगत स्वास्थ्य, शारीरिक एवं मनो–सामाजिक विकास।
2. संचलन की संकल्पना और गति सम्बन्धी कौशल।
3. अन्य सार्थक व्यक्तियों के साथ सम्बन्ध।
4. स्वस्थ्य समुदाय और परिवेश।

इन चार मुख्य क्षेत्रों की ओर ध्यान देते हुए राष्ट्रीय फोकस समूह ने पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम योजना में निर्देशित करने के लिए समग्र और विशिष्ट उद्देश्य तय किए हैं।

पाठ्यचर्या में स्वास्थ्य शिक्षा का स्थान :

समग्र उद्देश्य : बच्चों को प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर पर ज़रूरी सैद्धांतिक और व्यावहारिक जानकारियाँ प्रदान करना जिससे कि वे उच्च माध्यमिक स्तरों पर स्वास्थ्य, बीमारी और शारीरिक स्वास्थ्य के बारे में समग्र तथा पूर्ण जानकारी हासिल कर सकें।

विशिष्ट उद्देश्य :

1. बच्चों को स्वास्थ्य के बारे में जानकारी देना और जागरूक करना। जिससे कि उनमें व्यक्तिगत रूप से स्वास्थ्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो सके और वे सामूहिक रूप से इसे हासिल करने की ज़िम्मेदारी समझें।
2. स्कूल में स्वास्थ्य और पोषण कार्यक्रम के ज़रिए पर्याप्त जानकारियाँ उपलब्ध कराना, जिससे बच्चों के स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार आए।
3. सूचनाओं और संवादों के जरिए बच्चों को निश्चित आयु स्तरों पर स्वास्थ्य आवश्यकताओं के प्रति जागरूक करने में मदद करना।
4. घर, स्कूल तथा समुदाय में स्वस्थ जीवन के प्रति व्यक्तिगत और सामूहिक ज़िम्मेदारियों से बच्चों को अवगत कराना तथा इसे स्वीकार करने में उन्हें मदद देना।
5. पोषण सम्बन्धी ज़रूरतों, व्यक्तिगत और पर्यावरणीय स्वच्छता, प्रदूषण, सामान्य बीमारियाँ और उनसे बचाव तथा नियंत्रण के बारे में बच्चों को जानकारियाँ देना।
6. बच्चों को उनके स्वास्थ्य की स्थिति, स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं की पहचान करने और उपचार के उचित उपायों के बारे में जानने में मदद करना।
7. संकटपूर्ण स्थिति में दुर्घटनाओं तथा चोट से बचने के बच्चों को सुरक्षा नियमों से अवगत कराना। कुछ सामान्य बीमारियों और चोटों में प्राथमिक उपचार के उपायों की जानकारियाँ देना।
8. बच्चों को खड़े होने, बैठने, चलने और दौड़ने में सही तरीकों और स्थिति के बारे में जानकारी देना, जिससे कि वे उठने–बैठने की सही आदतें सीख सकें और शारीरिक विकारों का शिकार न हों।
9. बच्चों को विभिन्न शारीरिक गतिविधियों में शामिल करना, जिससे कि उनकी तंत्रिका और मांसपेशियों का संयोजन और बेहतर हो तथा वे शारीरिक रूप से चुस्त–दुरुस्त हों और वे अच्छी तरह जीवन व्यतीत करें तथा बेहतर ढंग से कार्य कर सकें।

शारीरिक एवं स्वास्थ्य शिक्षा का आकलन :

इस क्षेत्र में बच्चों की भागीदारी, रुचि और जुड़ाव तथा जिस स्तर तक की क्षमताओं एवं कौशलों का विकास हुआ, ये कुछ सूचक हैं, जिनके आधार पर शिक्षक यह समझ बना सकते हैं कि बच्चों की इन क्षेत्रों में की गई गतिविधियों से कितना फायदा हुआ है।

एनसीएफ 2005 एवं राष्ट्रीय फोकस समूह के सुझाव के आधार पर स्वच्छता, पोषण, व्यायाम एवं खेल में बच्चों की स्थिति का लगातार आकलन करते हुए वर्ष में दो बार प्रगति दर्ज़ करना प्रस्तावित है। यह प्रगति उक्त क्षेत्रों में बच्चों की स्थिति के बारे में गुणात्मक टिप्पणी के रूप में होंगी।

आधार रेखा मूल्यांकन (प्लेसमेंट/पदस्थापन टूल) नमूना : हिन्दी

परिशिष्ट – 1

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

Assessment for Placement

विषय : हिन्दी　　कक्षा : 2　　समय : 1:00 घंटे

शाला का नाम : ______________ दिनांक : ________

छात्र/छात्रा का नाम : ______________ रोल नं. : ________

(I) पठन–कौशल

प्र.1. सही शब्द पर (✓) का निशान लगाइए –

(अ) कूलर / कुलर　　(ब) पपीता / पपिता

(स) करैला / करेला　　(द) पेढ़ / पेड़

प्र.2. कौन कहाँ रहते हैं, पढ़कर सही जगह पर लिखिए –

मछली , हाथी , बतख , बंदर, गाय , मगर, कुत्ता, मेंढ़क

पानी में	जमीन पर
....	....
....	....

प्र.3. पढ़कर सही वाक्य में सही (✓) का निशान लगाइए –

अ) भेड़िए की चार टाँगें होती हैं।　( )

ब) छाते को हम खाते हैं।　( )

स) बुलबुल एक चिड़िया का नाम है।　( )

द) हम पानी पीते हैं।　( )

प्र.4. पढ़कर सही शब्द पर सही (✓) का निशान लगाइए –

अ) चीं–चीं, चूँ–चूँ करती है –

1) चीड़िया　2) चिड़िया　3) चिड़ीया　4) चीड़ीया

ब) सावन में हम झूलते हैं –

1) झुला　2) जूला　3) झूला　4) जुला

(II) लेखन–कौशल

प्र.5. चित्र देखकर नाम लिखिए –

....　........　........　........

प्र.6. चित्र देखकर कम से कम दो वाक्य लिखिए –

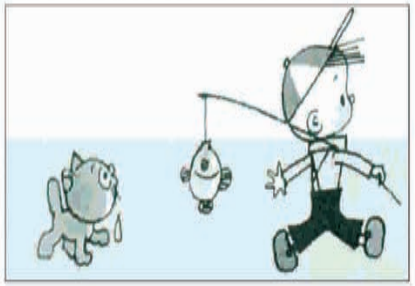

....

शिक्षक टिप्पणी :

....

शिक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर　　दिनांक : ....

'सतत एवं व्यापक मूल्यांकन स्कीम' के विकास एवं कार्यान्वयन में सहभागी संस्थाएँ

Bodh Shiksha Samiti　　unicef

Assessment for Placement

विषय : हिन्दी | **कक्षा : 3** | **समय : 1:30 घंटे**

शाला का नाम ______________________ दिनांक : ________

छात्र / छात्रा का नाम : ______________________ रोल नं. : ________

(I) पठन–कौशल

प्र.1. सही शब्द पर (✓) का निशान लगाइए –

अ) कूलर / कुलर ब) पपीता / पपिता

स) पत्तीयाँ / पत्तियाँ द) मनजिल / मंजिल

प्र.2. कौन कहाँ रहते हैं, पढ़कर सही जगह पर लिखिए –

चीता , मछली , चील , तोता , हाथी , बतख , कौआ , गाय , मगर , बिल्ली , मेंढ़क , कबूतर

आसमान में	पानी में	जमीन पर
....	....	....
....	....	....

प्र.3. हम इनको क्या कहते हैं, सही पर (✓) का निशान लगाइए

अ) जो सूई लगाता है । डॉक्टर / मास्टर

ब) जो गाडी चलाता है। चरवाहा / ड्राइवर

स) जो उड़ते हैं। पक्षी / जानवर

द) जो कपडे सिलता है। नाई / दर्जी

प्र.4. पढ़कर सही शब्द पर सही (✓) का निशान लगाइए –

अ) चीं–चीं, चूँ–चूँ करती है –

1) चीड़िया 2) चिड़िया 3) चिड़ीया 4) चीडीया

ब) सावन में हम झूलते हैं –

1) झुला 2) जूला 3) झूला 4) जुला

स) हम सबको करते हैं –

1) नमश्कार 2) नमसकार 3) नमशकार 4) नमस्कार

(II) लेखन–कौशल

प्र.5. चित्र देखकर नाम लिखिए –

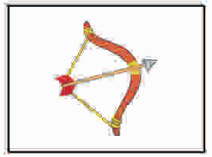

....

....

....

....

....

....

प्र.6. दिए गए प्रश्नों के उत्तर पूरे वाक्य में लिखिए –

अ) आपका मम्मी का क्या नाम है ?

....

ब) आपके पापा क्या काम करते है ?

....

स) आपको क्या खाना पसंद है ?

.....

द) अपने पसंद के खेल का नाम लिखिए।

.....

प्र.7. चित्र देखकर कम से कम चार वाक्य लिखिए –

.....

.....

.....

.....

शिक्षक टिप्पणी :

.....

.....

.....

.....

शिक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

दिनांक : .....

'सतत एवं व्यापक मूल्यांकन स्कीम' के विकास एवं कार्यान्वयन में सहभागी संस्थाएँ

Bodh Shiksha Samiti

unicef

Assessment for Placement

विषय : हिन्दी | **कक्षा : 4** | **समय : 1:30 घंटे**

शाला का नाम : ____________ दिनांक : ________

छात्र/छात्रा का नाम : ____________ रोल नं. : ________

(I) पठन–कौशल

प्र.1. सही शब्द पर (✓) का निशान लगाइए –

अ) कूलर / कुलर ब) पपीता / पपिता

स) पत्तीयाँ / पत्तियाँ द) मनजिल/मंजिल

य) इस्टेशन / स्टेशन र) गुल्लक / गुललक

प्र.2. कौन, कैसे चलता है, पढ़कर सही जगह पर लिखिए –

छिपकली, चीता, मछली, साँप, चील, तोता, हाथी, बतख, केंचुआ, कौआ, गाय, मगर, बिल्ली, मेंढ़क, कबूतर

उड़ने वाले	तैरने वाले
....	....
....	....

रेंगने वाले	चलने वाले
....	....
....	....

प्र.3. शब्दों को सही क्रम में जमाकर वाक्य लिखिए –

(अ) स्कूल / जाती / रमा / है।

....

(ब) रात को / सो / जाते / हम / हैं।

....

प्र.4. पढ़कर सही शब्द पर सही (✓) का निशान लगाइए –

अ) चीं–चीं, चूँ–चूँ करती है –

1) चीड़िया 2) चिड़िया 3) चिड़ीया 4) चीड़ीया

ब) सावन में हम झूलते हैं –

1) झुला 2) जूला 3) झूला 4) जुला

स) हम सबको करते हैं –

1) नमश्कार 2) नमसकार 3) नमशकार 4) नमस्कार

द) हाथी की एक लंबी होती है –

1) सुंड 2) सूड़ 3) सुँड 4) सूँड़

(II) लेखन–कौशल

प्र.5. चित्र देखकर नाम लिखिए –

....

....

....

....

....

....

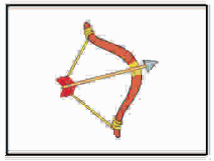

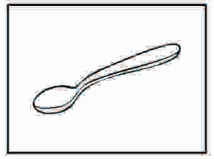

प्र.6. दिए गए प्रश्नों के उत्तर पूरे वाक्य में लिखिए –

अ) आपका मम्मी का क्या नाम है ?

....

ब) आप किस स्कूल में पढ़ते हैं ?

....

स) आपको सबसे अच्छा कौन–सा विषय लगता है ?

.....

द) अपने पसंद के दौड़ने वाले खेल का नाम लिखिए।

.....

प्र.7. चित्र देखकर लिखिए कि कौन किसके पीछे क्या कर रहा है और ऐसा क्यों कर रहे होंगे ? (एक पैराग्राफ में अपनी बात लिखिए)

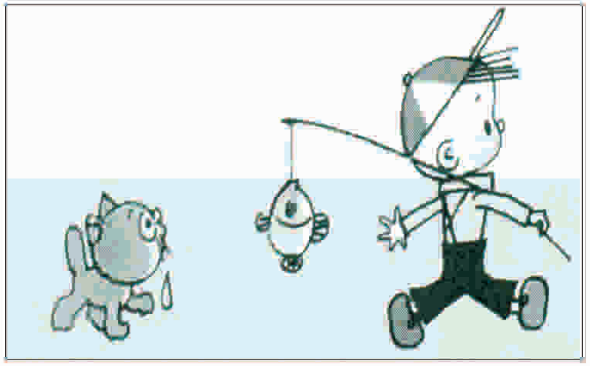

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(III) व्याकरण–कौशल

प्र.8. नीचे दिए गए शब्दों में से नाम व काम वाले शब्दों को छाँटकर उचित स्थान पर लिखिए –

पढ़ना, लम्बा, मेज़, सुन्दर, चलना, मोहन, पेड़, कूदना, हँसना, बोतल, छोटा, चमकीला

नाम वाले शब्द	काम वाले शब्द	विशेषता वाले शब्द
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....

प्र.9. ये सब किसके नाम हैं लिखिए –

समूह	नाम
जैसे : आम, केला, जामुन	**फल**
(1) मूली, आलू, भिंडी	.....
(2) शेर, बकरी, हाथी	.....
(3) मोर, कबूतर, कौआ	.....

शिक्षक टिप्पणी :

.....

.....

.....

.....

शिक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

दिनांक : .....

'सतत एवं व्यापक मूल्यांकन स्कीम' के विकास एवं कार्यान्वयन में सहभागी संस्थाएँ

Bodh Shiksha Samiti

unicef

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

Assessment for Placement

विषय : हिन्दी **कक्षा : 5** **समय : 1:30 घंटे**

शाला का नाम : ______________________ दिनांक : ________

छात्र/छात्रा का नाम : ______________________ रोल नं. : ________

(I) पठन–कौशल

प्र.1. सही शब्द पर (✓) का निशान लगाइए –

अ) पत्तीयाँ / पत्तियाँ ब) मनजिल / मंजिल

स) इस्टेशन / स्टेशन द) गुल्लक / गुललक

य) नीदर्यता / निर्दयता र) अंगढाई / अँगड़ाई

प्र.2. शब्दों को सही क्रम में जमाकर वाक्य लिखिए –

(अ) रात को / सो / जाते / हम / हैं।

....

(ब) रहा / एक / गाँव में / करते / मौलवी / थे / एक

....

प्र.3. अनुच्छेद पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

एक घने जंगल में एक बकरी और एक बकरा रहा करते थे। उनका एक छोटा सा बच्चा था। जंगल में बहुत सारे पत्ते और झाड़ियाँ थीं। उसी जंगल में एक खतरनाक चीता भी रहा करता था। वहाँ पर और भी चालाक व धूर्त जानवर रहते थे। हर सुबह बकरा–बकरी खाने की तलाश में बाहर निकल जाते, जबकि छोटा बच्चा गुफा में ही रहता था। बच्चा बाहर की दुनिया देखना चाहता था मगर उसके माता–पिता उसे ऐसा करने से रोकते थे।

एक दिन चिलचिलाती हुई दोपहर में, बच्चा गुफा से बाहर जंगल को देखने के लिए आ गया। उसने बहुत सारे पेड़ और झरने देखे।

(अ) जंगल में कौन सा खतरनाक जानवर रहता था ?

....

(ब) बच्चा क्या देखना चाहता था ?

....

(स) इस कहानी का नाम (शीर्षक) लिखिए। ....

प्र.4. दिए गए अनुच्छेद में से दो प्रश्न बनाकर लिखिए –

प्रकृति ने हमें बहुत कुछ दिया है। सूर्य हमें प्रकाश और गरमी देता है। सूर्य ही वर्षा करता है, जिससे तरह–तरह की वनस्पतियाँ पैदा होती हैं। सूर्य ही अन्न को पकाता है और फलों में रस भरता है। चन्द्रमा हमें शीतलता देता है, तापमान को कम करता है।

(अ) ....

(ब) ....

(II) लेखन–कौशल

प्र.5. चित्र देखकर नाम लिखिए –

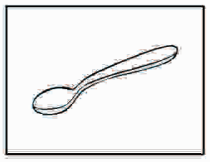

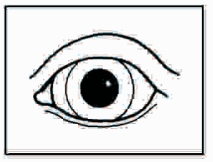

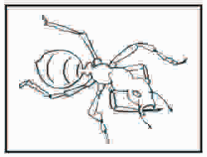

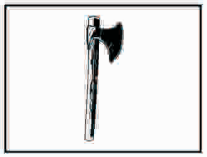

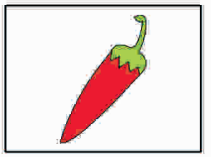

....

....

....

....

....

....

प्र.6. दिए गए प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए –

(अ) आपको कौन–सा विषय पढ़ना अच्छा लगता है और क्यों ?

....

....

(ब) अपने पसंद के खेल का नाम लिखिकर उसके खेलने का तरीका भी लिखिए।

....

....

....

प्र.7. चित्र देखकर एक कहानी लिखिए –

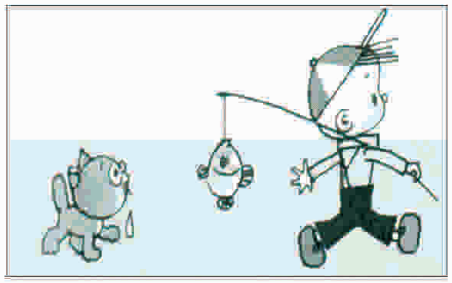

(III) व्याकरण–कौशल

प्र.8. नीचे दिए गए शब्दों में से नाम व काम वाले शब्दों को छाँटकर उचित स्थान पर लिखिए –

पढ़ना, लम्बा, मेज, सुन्दर, चलना, मोहन, पेड़, कूदना, हँसना, बोतल, छोटा, चमकीला

नाम वाले शब्द	काम वाले शब्द	विशेषता वाले शब्द

प्र.9. दिए गए प्रश्नों के अनुसार सही उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाइए –

अ) खुश होना के लिए मुहावरा होता है –

1. हाथ–पैर फूलना 2. फूला न समाना

ब) 'आँखों का तारा' होना मुहावरे का अर्थ है –

1. सबसे प्यारा होना 2. आँख में तारे लगाना

स) दौड़ लगाना है –

1. विशेषण 2. संज्ञा

3. क्रिया 4. सर्वनाम

शिक्षक टिप्पणी

शिक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

दिनांक : ....

'सतत एवं व्यापक मूल्यांकन स्कीम' के विकास एवं कार्यान्वयन में सहभागी संस्थाएँ

Bodh Shiksha Samiti

unicef

Bodh Shiksha Samiti

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन

योगात्मक मूल्यांकन प्रपत्र

विषय : हिन्दी **कक्षा–1 टर्म–1 (लिखित)** **समय 1½ घण्टा**

शाला का नाम : ____________ रोल नं. : ________

छात्र / छात्रा का नाम : ____________ उम्र : ________

माता / पिता का नाम : ____________ दिनांक : ________

पठन कौशल

प्र.1. चित्र पहचानकर नाम से मिलान कीजिए –

प्र.2. पहले क्या हुआ होगा? चित्रों को देखकर क्रम से लिखिए

लेखन कौशल

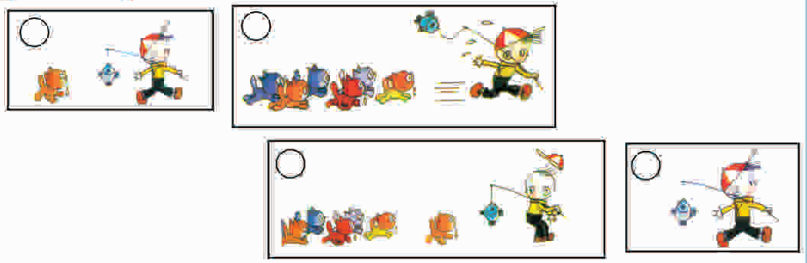

प्र.4. देखकर लिखिए

भरकर लाई टोकरी

प्र.5. चित्र देखकर नाम लिखिए –

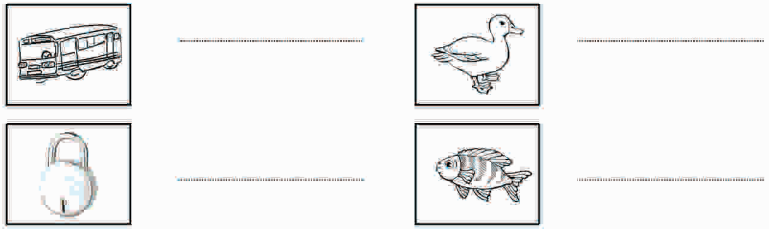

प्र.6. चित्र देखकर दो वाक्य लिखिए –

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

प्र.7. अपने घर का और एक चिड़िया का चित्र बनाइए –

शिक्षक टिप्पणी : ....

दिनांक : ____________ शिक्षक का नाम व हस्ताक्षर

Bodh Shiksha Samiti

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन

योगात्मक मूल्यांकन प्रपत्र

विषय : हिन्दी **कक्षा–5 टर्म–1 (लिखित)** **समय 1½ घण्टा**

शाला का नाम : _____ रोल नं. : _____

छात्र/छात्रा का नाम : _____ उम्र : _____

माता/पिता का नाम : _____ दिनांक : _____

पठन कौशल

प्र.1. दिए गए अनुच्छेद को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

एक दिन सुबह के समय तीन भाई नए घर की तलाश में निकल पड़े। तेज धूप से तपी गरम–गरम सड़क पर वे चलते गए। थोड़ी दूरी पर ही आम का एक बड़ा पेड़ मिला. तीनों भाई उसके नीचे आराम करने बैठे तभी उनकी नज़र पेड़ पर लगे आमों पर पड़ी। उन्होंने पेड़ से पके आम तोड़े और उनका मीठा–मीठा रस चूसने लगे। बड़े भाई को वह जगह पसंद आई और वह वहीं पर झोंपड़ी बनाकर ठहर गया। उसके दोनों भाई आगे चल पड़े। चलते–चलते उन्हें केले का पेड़ मिला। तभी बारिश आ गई। दोनों भाइयों ने केले का एक–एक पत्ता काट लिया, उसके साए में पानी नहीं गिरा। उन्होंने केले के पत्ते पर खाना खाया उसके बाद एक–एक केला भी खाया। मँझले भाई को वह जगह अच्छी लगी और उसने वहीं पर अपना घर बना लिया। तीसरा भाई आगे चल दिया।

(अ) तीनों भाई किस चीज़ की तलाश में निकले थे ?

(ब) वे किस मौसम में निकले थे ?

(स) आम का पेड़ किस–किस काम आता है ?

(द) यदि आपको कोई पेड़ लगाना हो तो आप कौनसा पेड़ लगाओगे, और क्यों ?

(य) इस अनुच्छेद का कोई शीर्षक लिखिए।

प्र.2. पढ़कर सही उत्तर के सामने सही (✓) का निशान लगाइए –

मान लो आप एक अँधेरे कमरे में घुसते हैं और आपके हाथ में एक दियासलाई है। कमरे में एक मोमबत्ती, एक चिमनी और एक लकड़ी का चूल्हा है। बताइए आप सबसे पहले किसे जलाएंगे ?

(अ) मोमबत्ती ☐ (ब) चिमनी ☐ (स) दियासलाई ☐

(द) लकड़ी का चूल्हा ☐

प्र.3. वाक्य में से गलत लिखा शब्द पहचानकर उस शब्द को सही करके लिखिए –

(अ) मेले में से सब खीलोने लेंगे। _____

(ब) राजस्थान में नककाशि का काम देखते ही बनता है। _____

(स) मैं वहाँ जरूर काम करना चाहुगा। _____

(द) दीपावली पर रंग–बिरंगे परिधानों की परदशरनी लगी थी। _____

लेखन कौशल

प्र.4. दिए गए शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए –

(अ) (i) इस्तेमाल _____

_____

(ii) प्रस्ताव _____

_____

(ब) (i) मेला _____

_____

(ii) मैला _____

_____

प्र.5. अपनी माँ के बारे में सोचते हुए नीचे लिखे वाक्यों को पूरा कीजिए –

(अ) मेरी माँ बहुत दुःखी होती हैं जब _____

_____

(ब) मेरी माँ बहुत खुश होती हैं जब _____

_____

(स) माँ मुझे इसलिए डाँटती हैं क्योंकि _____

_____

(द) माँ मुझे प्यार करती हैं क्योंकि _____

_____

प्र.6. दिए गए चित्र को देखकर लगभग 15 वाक्यों में एक कहानी बनाकर लिखिए –

व्याकरण कौशल

प्र.7. 'चुनाव' शब्द 'चुन' क्रिया से पैदा हुआ है। नीचे लिखी संज्ञाओं की 'क्रिया' लिखिए –

(i) **बहाव** _____ (ii) **कटाव** _____

(iii) **लगाव** _____ (iv) **ठहराव** _____

प्र.8. वाक्यों में आए रेखांकित शब्दों के विलोम/लिंग/वचन बदलकर वाक्य को फिर से लिखिए–

(i) कौए ने लोमड़ी को मूर्ख बना दिया।

_____

(ii) आजकल गायक गाने के लिए नहीं मिलते।

_____

(iii) लड़की का खेलना भी अच्छा माना जाता है।

_____

शिक्षक टिप्पणी : _____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

दिनांक : _____ शिक्षक का नाम व हस्ताक्षर

योगात्मक मूल्यांकन नमूना पत्रक अध्ययन : पर्यावरण अध्ययन

परिशिष्ट – 2

शिक्षा का अधिकार

सीसीई विस्तार कार्यक्रम : 2013–14

योगात्मक मूल्यांकन नमूना पत्रक

कक्षा : 3	विषय : पर्यावरण अध्ययन	मॉड्यूल : 1, भाग : प्रथम

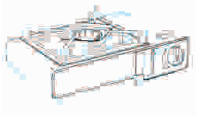

शाला का नाम : -- रोल नं. : ----------------

विद्यार्थी का नाम : -- **दिनांक :** ----------------

पिता का नाम : ------------------------ **माता का नाम :** ------------------------

1. चित्र पहचान कर नाम लिखिए।

....

....

....

2. आप के घर में निम्न से क्या–क्या बनाए जाते हैं ?

आँवला	आलू	गेहूँ

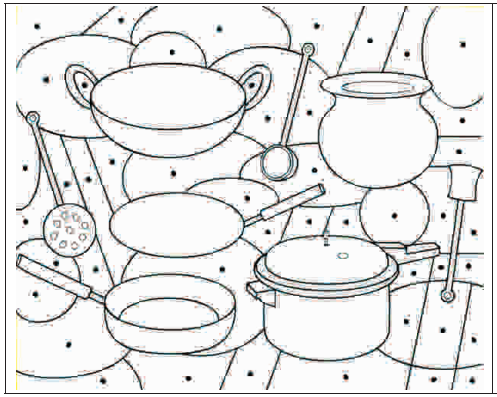

3. चित्र में दिए गए बर्तनों को पहचान कर रंग भरिए एवं बर्तनों के नाम भी लिखिए –

....

4. आस–पास की किन–किन चीज़ों, कौन–कौन से जानवरों और पौधों को पानी की ज़रूरत होती है और किन–किन को नहीं ?

जिन्हें पानी जरूरी है।	जिन्हें पानी जरूरी नहीं है।
....	....
....	....
....	....

5. दी गई वर्ग पहेली में से जल के विभिन्न स्रोतों के नाम खोजकर लिखिए।

बा	व	ड़ी	झी	न
रि	सा	कु	आँ	ल
श	सो	ग	झ	ता
च	न	ह	र	ला
श्मा	दी	टाँ	का	ब

....

6. उचित विधि से मिलान कीजिए।

आलू	तलकर बनाते हैं	चावल
पकौड़ी	सेंक कर बनाते हैं	पूड़ी
मूँगफली	उबाल कर बनाते हैं	रोटी

7. आप पानी की बर्बादी को रोकने के लिए क्या–क्या प्रयास कर सकते हैं ? कोई दो बातें सोचकर लिखिए।

....

8. आप के घर में खाना बनाने के लिए काम में लिए और खाने के लिए काम में लिए जाने वाले 8 से 10 बर्तनों के नाम लिखिए। ये बर्तन किस चीज़ के बने हैं तालिका में लिखिए।

बर्तनों के नाम	बर्तन किस चीज़ से बना है
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

शिक्षक टिप्पणी : ———————————————

शिक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर   दिनांक : ....

'सतत एवं व्यापक मूल्यांकन स्कीम' के विकास एवं कार्यान्वयन में सहभागी संस्थाएँ

unicef

सीसीई विस्तार कार्यक्रम : 2013–14
योगात्मक मूल्यांकन नमूना पत्रक

कक्षा : 3 | विषय : पर्यावरण अध्ययन | मॉड्यूल : 1, भाग : द्वितीय

शाला का नाम : ---------- **रोल नं. :** ----------

विद्यार्थी का नाम : ---------- **दिनांक :** ----------

पिता का नाम : ---------- **माता का नाम :** ----------

1. नीचे दिए गए चित्र को देख कर तीन से चार वाक्य लिखिए।

2. आप के मन पसंद खेल का क्या नाम है ? इस खेल के बारे में तीन बात लिखिए।

3. बताओ मैं कौन हूँ

(अ) आपकी माँ के भाई ..... (ब) आप के पापा के पापा .....

(स) आपकी माँ की बहन ..... (द) आप के पिताजी के छोटे भाई .....

4. आप अपने दोस्त के साथ मिलकर क्या–क्या करते हैं ? सूची बनाइए।

5. चित्र में सुरेश और उसकी पालतू गाय है। आपके घर में या आसपास लोग पालतू जानवरों की देखरेख कैसे करते हैं ? लिखिए।

6. नीचे दिए गए काम आप के घर में कौन–कौन करते हैं ?

खाना बनाना	
बाजार से सामान लाने का काम	
साफ–सफाई	
शादी/ब्याह में जाना	

7. आपके परिवार के सदस्यों के नाम व उनके साथ आपका क्या संबंध है लिखिए।

नाम	संबंध

8. वर्ग जाल में से खेलों के नाम खोजकर घेरा लगाइए और खेलों के नाम भी लिखिए –

क्रि		कै	र	म
के		हॉ	की	
ट	सि	तो	लि	या
	फु	ट	बॉ	ल
चो	र	सि	पा	ही
गि	ल्ली	डं	डा	

....

....

....

शिक्षक टिप्पणी : ——————————————————————————

——————————————————————————

——————————————————————————

——————————————————————————

——————————————————————————

शिक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर दिनांक : ....

"सतत एवं व्यापक मूल्यांकन स्कीम" के विकास एवं क्रियान्वयन में सहभागी संस्थाएँ

Bodh Shiksha Samiti

unicef

सीसीई विस्तार कार्यक्रम : 2013–14
योगात्मक मूल्यांकन नमूना पत्रक

कक्षा : 4 | विषय : पर्यावरण अध्ययन | मॉड्यूल : 1, भाग : प्रथम

शाला का नाम : -- **रोल नं. :** ----------------
विद्यार्थी का नाम : -- **दिनांक :** ----------------
पिता का नाम : ------------------------ **माता का नाम :** ------------------------

1. चित्र को ध्यान से देखिए इसमें छुपे हुए जानवरों को खोजकर उनके नाम लिखिए। चित्र में रंग भी भरिए।

....
....
....
....
....
....

2. **वर्ग पहेली में से फूलों के नाम खोजकर घेरा लगाइए और लिखिए।**

प	**गु**	**ला**	**ब**		गें	दा
च	ल	न	ल		क	ट
स	दा	ब	हा	र	भ	लि
ई	उ	त		च	मे	ली
	दी	फ		म्पा	म	ण
क	च	ना	र	ल	प	चाँ
म		अ	त्र	स	न	द
ल		मो	ग	रा		नी

....
....
....
....
....
....

3. **आपके घर में व आसपास कौन–कौन से जानवर (जीव–जंतु) दिखाई देते हैं ? नाम लिखिए**

....
....
....

4. **ऊपर लिखे जानवरों को छोटे से बड़े के क्रम में लिखिए।**

1. .... 2. .... 3. .... 4. ....
5. .... 6. .... 7. .... 8. ....
9. .... 10. .... 11. .... 12. ....

5. **नीचे कुछ फूलों व पेड़–पौधों के नाम लिखे हैं। उन्हें पढ़कर तालिका में उचित स्थान पर लिखिए –**
सूरजमुखी , गेंदा , तुलसी , नीम , गुलाब , चमेली , एलोवेरा , सहजने का फूल ,
पालक , गोभी का फूल , पुदीना , सदाबहार

फूल व पत्ते जिन्हें हम खाते हैं	फूल जिन्हें हम दवाई के रूप में इस्तेमाल करते हैं	फूल जिन्हें रंग बनाने के लिए इस्तेमाल करते हैं

6. **चित्र में दी गई चोंच को ध्यान से देखिए। इन दोनों के बीच कोई दो अन्तर लिखिए।**

	....
	....

7. **चित्र में दिए गए जानवरों के एक या दो उपयोग लिखिए।**

	1. .... 2. ....
	1. .... 2. ....

8. **किसी फूल बेचने वाले से उस के काम के बारे में पता करने के लिए पाँच प्रश्न बनाकर लिखिए।**

....
....

शिक्षक टिप्पणी : ————————————————————
शिक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर दिनांक : ....

शिक्षा का अधिकार

सीसीई विस्तार कार्यक्रम : 2013–14

योगात्मक मूल्यांकन नमूना पत्रक

कक्षा : 4	विषय : पर्यावरण अध्ययन	मॉड्यूल : 1, भाग : द्वितीय

शाला का नाम : ---------------------------- **रोल नं. :** ----------

विद्यार्थी का नाम : ---------------------------- **दिनांक :** ----------

पिता का नाम : ---------------------- **माता का नाम :** ----------------------

1. पानी के किन्हीं 5 स्रोतों का नाम लिखिए।

....

....

2. पानी में घुलने एवं नहीं घुलने वाली वस्तुओं को शब्द जाल में से ढूँढ कर लिखिए।

पानी में घुलने वाले	पानी में नही घुलने वाले

न		ब	र्फ		ब
म		ची	ते	ज	
क	प	ड़ा	नी	ल	री
	की				आ
	ल	क	ड़ी		टा

3. आप के परिवार में पापा और मम्मी क्या–क्या काम करते हैं। लिखिए।

पापा के काम	....
मम्मी के काम	....

4. आप को अपने दोस्त के परिवार के बारे में जानना है ? तो आप क्या–क्या प्रश्न पूछेंगे ? कोई 5 प्रश्न बनाकर लिखिए।

....

....

....

....

....

....

5. आप एक दिन में किन–किन कामों के लिए पानी का उपयोग करते हैं ?

....

....

6. चित्र में दिए गए कुँए में से आज कल कोई पानी नहीं भरता है, इसके पीछे क्या कारण हो सकता है ?

....

....

....

....

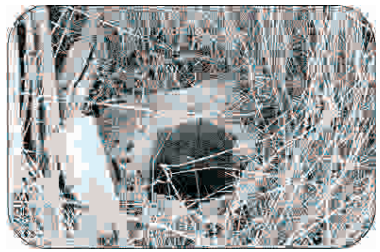

7. ऊपर चित्र में दिए गए कुँए को दुबारा पानी भरने के काम में लेना है तो इस के लिए क्या– क्या काम करना होगा ?

....

....

....

....

8. पानी बचाने के लिए अपने मन से दो नारे बनाकर लिखिए ?

....

....

....

....

शिक्षक टिप्पणी : --

शिक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर दिनांक : ....

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन स्कीम के विकास एवं कार्यान्वयन में सहभागी संस्थाएँ

Bodh Shiksha Samiti

unicef

सीसीई विस्तार कार्यक्रम : 2013–14
योगात्मक मूल्यांकन नमूना पत्रक

कक्षा : 5	विषय : पर्यावरण अध्ययन	मॉड्यूल : 1, भाग : प्रथम

शाला का नाम : ---------- **रोल नं. :** ----------

विद्यार्थी का नाम : ---------- **दिनांक :** ----------

पिता का नाम : ---------- **माता का नाम :** ----------

1. समूह में से जो अलग है उन पर घेरा लगाइए और कारण भी लिखिए।

(अ) कंकड़, चीनी, प्लास्टिक, कील

क्योंकि .....

(ब) आलू, मूली, गाजर, सिंघाड़ा

क्योंकि .....

(स) हैजा, खाँसी, मलेरिया, पेटदर्द

क्योंकि .....

2. निम्नलिखित सामग्री का खराब होने का संकेत क्या–क्या है ? अपने अनुभव के आधार पर लिखिए।

खाद्य सामग्री	खराब होने का संकेत
ब्रेड	
पके हुए चावल	
अचार	
दूध	
बेसन	
आलू की सब्जी	

3. आपने आस–पास बहुत सारी चीज़ें देखी होंगी। दी गई तालिका के अनुसार किन्हीं 8 वस्तुओं के नाम लिखिए।

पानी में घुलने वाली	पानी में नहीं घुलने वाली

4. आपके पास गुड के दो टुकड़े हैं इन्हें पानी में जल्दी घोलने के कोई दो तरीके लिखिए।

.....

.....

.....

5. जिनके दाँत नहीं हैं उन्हे खाना खाने में क्या–क्या कठिनाईयाँ होती होंगी ?

.....

.....

.....

.....

6. आपके आसपास मच्छर न हों इसके लिए आप क्या–क्या करेंगे ? कोई तीन से चार बातें लिखिए।

.....

.....

.....

.....

7. दिए गए नाम पढ़कर तालिका में उचित स्थान पर लिखिए। प्रत्येक में दो–दो नाम अपने अनुभव के आधार पर जोड़िए।

नींबू, जलेबी, हरिमिर्च, इमली, हलवा, नमकीन, लड्डू

मीठा	खट्टा	तीखा

8. पुराने समय में कुँए–बावडियाँ यात्रा करने वालों को क्या–क्या सुविधा देते थे ?

.....

.....

.....

.....

शिक्षक टिप्पणी : ----------

शिक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर दिनांक : .....

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन स्कीम के क्रियान्वयन एवं कार्यान्वयन में सहयोगी संस्थाएं

सीसीई विस्तार कार्यक्रम : 2013–14

योगात्मक मूल्यांकन नमूना पत्रक

कक्षा : 5	विषय : पर्यावरण अध्ययन	मॉड्यूल : 1, भाग : द्वितीय

शाला का नाम : -- रोल नं. : ----------------

विद्यार्थी का नाम : -- दिनांक : ----------------

पिता का नाम : ---------------------------- माता का नाम : ----------------------------

1. चित्र में से सफाई में काम आने वाले उपकरणों को पहचान कर घेरा लगाइए। जिन्हें आप पहचानते हैं उनका नाम भी लिखिए।

2. नीचे दी गई वर्ग पहेली में से खेती के 6 उपकरणों/औजारों के नाम हैं। पहचानकर घेरा लगाइए एवं लिखिए।।

कु	दा	ली		खु	स	ल	म
क	हँ		ह	र	ह	ट	
ल	सि	न	ल	कू	प	र	
या							

3. तालिका में खेलों के नाम उलट–पुलट कर लिखे हैं पहचान कर सही लिखिए एवं खेल में खिलाडियों की संख्या एवं आवश्यक सामग्रियों के नाम भी लिखिए।

खेलों के नाम	खिलाड़ियों की संख्या	आवश्यक सामग्रियों के नाम
श्ती कु		
ट फु ल बॉ		
ड बै ट न मि		

4. चित्र में नेहा का परिवार है जो किसी निर्माण कार्य में मजदूरी करने के लिए शहर आया है। नेहा के परिवार को शहर में किस प्रकार की समस्याएँ हो सकती हैं ?

लोग किन–किन कारणों से अपने गाँव को छोड़ कर अन्य शहर या गाँव बसने जाते हैं ?

5. आप कौन–कौन से काम स्वयं करते हैं ? कौन – कौन से काम घर के लोगों की मदद से करते हैं ? सूची बनाइए।

जो काम स्वयं करते हैं	घर के लोगों के मदद से करते हैं

6. निम्न प्रश्नों को हल कीजिए –

(1) आप अपने घर के किन–किन कामों में मदद करते हैं ?

(2) आप की बहन/भाई घर के किन–किन कामों में मदद करती/करते हैं ?

(3) आप दोनों में से कौन घर के कामों में ज्यादा मदद करते हैं ? क्यों ?

7. मान लीजिए कोई परिवार दूसरे शहर/गाँव से आप के पड़ोस में रहने आया है। आप उनकी मदद किस प्रकार करेंगे ?

8. फसल नष्ट होने पर किसानों को किन–किन समस्याओं को सामना करना पड़ता है ?

शहर में रहने वाले लोग या खेती नहीं करने वाले लोगों को इससे क्या परेशानियाँ होती होंगी ?

शिक्षक टिप्पणी : --

शिक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर   दिनांक : ....

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन स्कीम के विकास एवं क्रियान्वयन में सहभागी संस्थाएँ